भारत का भाषा सर्वेक्षण

[भाग ९ – पंजाबी]

हिन्दी समिति ग्रन्थमाला संख्या—१९७

भारत का भाषा-सर्वेक्षण

[भाग ९—पंजाबी]

संकलनकर्ता तथा संपादक
सर जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन

अनुवादक
डॉ० हरदेव बाहरी
प्रयाग विश्वविद्यालय

हिन्दी समिति
सूचना विभाग, उत्तर प्रदेश
लखनऊ

प्रथम संस्करण
१९७०

मूल्य ८.००
(आठ रुपये)

मुद्रक
सम्मेलन मुद्रणालय, प्रयाग

प्रकाशकीय

भारतीय आर्य परिवार की विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं और लिपियों में शिल्पिक संघटन का बाहरी विभेद होते हुए भी भाव एवं ध्वनि-व्यंजना में पर्याप्त साम्य पाया जाता है। इसी प्रकार व्याकरणिक ढाँचे में संज्ञा, क्रिया, कारक आदि की बहुत कुछ एकरूपता दिखाई देती है। यह इस विशाल देश की एकात्मता या भावात्मक एकता का ज्वलन्त उदाहरण है। भाषा-विज्ञान के विद्वानों ने इस विषय के स्पष्टीकरण का स्तुत्य प्रयास किया है, जिसमें सर जार्ज ग्रियर्सन भारतीय भाषातत्त्वान्वेषण के अनुपम आचार्य माने जाते हैं। कार्यतः और आकारतः उनकी महान् कृति 'लिंग्विस्टिक सर्वे आफ़ इण्डिया' एक संदर्भग्रन्थ के साथ ही तुलनात्मक अध्ययन की दिशा में भी प्रामाणिक रचना है। उक्त ग्रन्थ की भाषावैज्ञानिक उपयोगिता से आकृष्ट होकर हिन्दी समिति ने उसके हिन्दी भाषी क्षेत्र के सर्वेक्षण संबंधी भागों का राष्ट्रभाषा में प्रकाशन आरम्भ किया, जिसके अन्तर्गत प्रस्तुत 'भारत का भाषा-सर्वेक्षण' भाग - ९ का पंजाबी खण्ड आंशिक रूप में पश्चिमी हिन्दी से संबद्ध है।

समिति के अनुरोध पर उक्त खण्ड का अनुवाद-कार्य सुप्रसिद्ध कोशकार एवं भाषा-वैज्ञानिक डा० हरदेव बाहरी ने संपन्न किया है, तदर्थ समिति आपकी आभारी है। पंजाबी होने के नाते आपने इस अनुवाद कार्य में पंजाबी, डोगरी, काँगड़ी, लहँदा, कश्मीरी आदि के सूक्ष्म भेदों के रूपान्तरों एवं गुरमुखी, टाकरी, शारदा, फारसी आदि लिप्यन्तरों का साधिकार निर्वाह किया है, जिससे पुस्तक की प्रामाणिकता बढ़ गयी है। आशा है, पिछले प्रकाशनों की तरह यह खण्ड भी पाठकों के भाषावैज्ञानिक अध्ययन में अच्छा मार्गदर्शक सिद्ध होगा।

लीलाधर शर्मा 'पर्वतीय'
सचिव, हिन्दी समिति
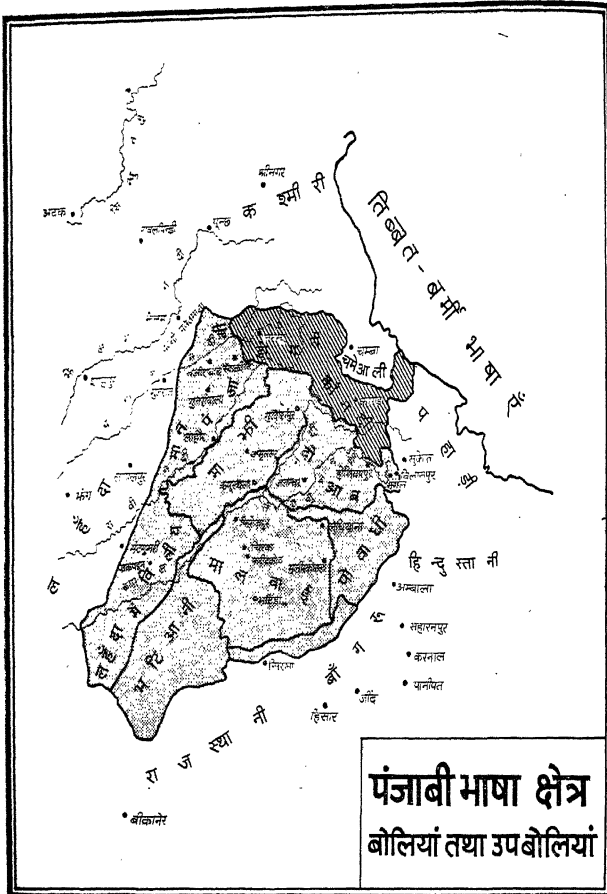
श्रीनगर
अटक
रावलपिंडी
क श्मी री
ति ब्ब त - ब र्मी भा षा एं
चम्बा
चमेआली
सुकेत
बिलासपुर
हि न्दु स्ता नी
अम्बाला
सहारनपुर
करनाल
पानीपत
जींद
हिसार
सिरसा
रा ज स्था नी
बीकानेर
पंजाबी भाषा क्षेत्र
बोलियां तथा उपबोलियां

अनुवादकीय

सर्वेक्षण-कार्य

ग्रियर्सन से पहले

अलबरूनी से लेकर ग्रियर्सन तक ऐसे विदेशी विद्वानों की एक लंबी सूची है जिन्होंने भारतीय भाषाओं को अपने अनुशीलन का विषय बनाया। ऐसे विद्वानों में बहुतों ने एक-एक भाषा की खोज की, लेकिन व्यापक अध्ययन करनेवालों में, और इस नाते भारतीय भाषाओं के परस्पर संबन्धों का अन्वेषण करनेवालों में पहला नाम शायद 'सीरामपुर मिशन' के पादरी विलियम कैरे का है। सन् १७९३ से १८२२ तक, वे बाइबिल के अनुवाद भारतीय भाषाओं में करते-कराते रहे। सन् १८१६ में उन्होंने संस्कृत, बंगला, हिन्दी, कश्मीरी, डोगरी, वुच (लहँदा), सिन्धी, कच्छी, गुजराती, कोंकणी, पंजाबी, बीकानेरी, मारवाड़ी, जयपुरी, उदयपुरी, हाड़ौती, ब्रज, बुन्देलखण्डी, महाराष्ट्री, मागधी, अवधी (कोसली), मैथिली, नेपाली, असमी, उड़िया, तेलुगु, कन्नड़, पश्तो, बलूची, खसी और बरमी, इन प्रमुख भाषाओं के नमूने प्रकाशित किये। इनके सहयोगियों में मार्शमैन और वार्ड भी थे। ये नमूने बाइबिल की 'ईश-प्रार्थना' के भाषान्तर हैं। प्रत्येक नमूने के शब्दों और व्याकरणिक रूपों पर विचार किया गया है। १८१२ ई० में कैरे का एक 'पंजाबी व्याकरण' भी प्रकाशित हुआ था।

मेजर राबर्ट लीच के अध्ययन का विस्तार इतना बड़ा तो नहीं था, लेकिन सन् १८३८ से १८४३ तक प्रकाशित ब्राहुई, बलोची, पंजाबी, पश्तो, बुंदेली तथा कश्मीरी भाषाओं के उनके द्वारा तैयार किये हुए व्याकरण गंभीरता और तुलनात्मकता की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। उन्होंने कई बोलियों के शब्द-संकलन भी प्रकाशित कराये।

कैरे की उपर्युक्त देन के सैंतीस वर्ष बाद, बम्बई में भारतीय आर्यभाषाओं के तुलनात्मक अध्ययन की चर्चा आरम्भ हुई। बम्बई के तत्कालीन मुख्य न्यायाधीश तथा रायल एशियाटिक सोसाइटी के अध्यक्ष सर टामस एरस्किन पेरी ने १८५३ ई० में भारत की भाषाओं के वर्गीकरण पर नया प्रकाश डाला। उन्होंने पंजाबी, लहँदी (जिसे उन्होंने मुलतानी कहा), सिन्धी तथा मारवाड़ी को हिन्दी की बोलियाँ माना।

सन् १८६७ में सिविल सर्विस के एक युवक अधिकारी जान बीम्स ने "भारतीय भाषाओं की रूपरेखा" शीर्षक विवरण प्रस्तुत किया, और इसके पाँच वर्ष बाद उनका प्रसिद्ध ग्रन्थ "आधुनिक आर्य भाषाओं का तुलनात्मक व्याकरण" प्रकाशित हुआ। इसके तीन खण्डों में पंजाबी, बंगाली, उड़िया, हिन्दी, मराठी, गुजराती और सिन्धी के ध्वनिविकास और व्याकरण का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

सन् १८८६ में वियना के प्राच्य सम्मेलन में इस बात पर विचार हुआ कि भारत में भाषाध्ययन की क्या-क्या संभावनाएँ हैं। सम्मेलन ने एक प्रस्ताव द्वारा भारत सरकार से अनुरोध किया कि वह भारत की भाषाओं का विधिवत् सर्वेक्षण कराये। डा० कूलर और डा० वेवर इसके प्रस्तावक थे और कावेल, मैक्समूलर, हार्नले, ग्रियर्सन समर्थक। भारत सरकार ने सिद्धान्ततः इस प्रस्ताव को स्वीकार तो कर लिया, किन्तु आर्थिक कठिनाइयों के कारण इस पर तत्काल कोई कार्रवाई नहीं की जा सकी।

सर जार्ज ग्रियर्सन का कार्य

सन् १८९४ में सर्वेक्षण का कार्य जार्ज ग्रियर्सन को सौंपा गया। वे बिहार सिविल सर्विस में थे। उस समय तक उनके 'बिहारी भाषाओं के सात व्याकरण' प्रकाशित हो चुके थे। वे लगभग एक सौ भाषाओं के जानकार थे। नये काम के लिए सरकार के सारे साधन उन्हें उपलब्ध हुए। सर्वेक्षण के कुछ आधार निश्चित किये गये। किन्हीं कारणों से हैदराबाद और मैसूर राज्य तथा मद्रास और बरमा प्रान्त को सर्वेक्षण का क्षेत्र न बनाया जा सका। शेष प्रान्तों के जिलाधिकारियों को आदेश दिये गये कि वे अपने-अपने ज़िले में व्यवहृत प्रत्येक बोली या भाषा के तीन नमूने भेजें। पहला— अपव्ययी पुत्र (उड़ाऊ पूत) की कथा का अनुवाद, जो अंग्रेजी से न कराकर किसी अन्य भारतीय भाषा से करायें। १८९७ ई० में इस कथा के ६५ भाषान्तर तैयार करके पुस्तक रूप में प्रकाशित किये गये। इसकी सहायता से क्षेत्रीय कार्य करनेवालों को बहुत सुविधा रही। यह भी कहा गया कि अनूदित कथा का पंक्ति-पंक्ति लिप्यन्तर और शाब्दिक अनुवाद कराया जाय। दूसरा नमूना स्थानीय लोगों की इच्छा से लिया जाय—वह कोई विवरण, गीत अथवा वृत्त हो सकता है। तीसरे नमूने में कुछ शब्द और वाक्य थे (देखें, इसी पुस्तक के अन्त में पृ० २२२ इत्यादि)। इन्हें छपे हुए फार्मों में भरकर भेजना था।

नमूने १८९७ में आने शुरू हो गये और १९०० के अन्त तक तो अधिकांश आ भी

गये, यद्यपि कुछ-एक नमूने वाद में आते रहे। इनकी जाँच तथा सम्पादन का कार्य सन् १८९८ में आरम्भ कर दिया गया। यदि एक ही जगह के नमूनों में पाठभेद होता था तो भाषाशास्त्र की दृष्टि से निर्णय किया जाता था, नहीं तो पत्र-व्यवहार द्वारा शंका-समाधान किया जाता था। सब नमूने नहीं लिये जा सके--कुछ अनावश्यक थे, कुछ रद्दी थे। एक ही बोली के कई नमूने होते थे तो अच्छे से अच्छा नमूना स्वीकृत होता था।

ग्रियर्सन ने अपने सहयोगियों, कर्मचारियों और लिपिकों की सहायता से इन सब नमूनों का परीक्षण किया। इनके आधार पर उन्होंने वोलियों का परस्पर संबन्ध, आसपास की भाषाओं से उनका जोड़-मेल निर्धारित किया और प्रत्येक बोली के व्याकरण और अन्य विशेषताओं की संक्षिप्त रूपरेखा तैयार की। अध्ययन और पूछ-ताछ के भरोसे उन्होंने प्रत्येक भाषा का संक्षिप्त इतिहास, बोलनेवालों की संख्या और उनका स्वभाव, उस भाषा का साहित्य उपलब्ध है तो उसका परिचय एवं उस भाषा या बोली पर उस समय तक जो कार्य हुआ उसका विवरण दिया। बोलियों अथवा भाषाओं की सीमाएँ क्या हैं, इस जटिल प्रश्न को भी उन्होंने गम्भीरतापूर्वक हल करने की चेष्टा की। किन्तु उनका कोई आग्रह नहीं है कि उस सीमा को सिद्ध मान लिया जाय। यह सीमा दो-चार मील इधर-उधर भी हो सकती है। कोई तथाकथित भाषा वास्तव में भाषा है या बोली, इसका निर्णय उन्होंने कुछ सिद्धान्तों की स्थापना करके किया। उनसे विद्वानों का मतभेद हो सकता है—हुआ भी; किन्तु ग्रियर्सन ने कहा कि मैं अपना मत परिवर्तित करने को तैयार नहीं हूँ। वे जानते थे कि कोई ऐसा निर्णय देना जो सबको स्वीकार्य हो अत्यन्त कठिन है।

सन् १८९१ की जनगणना के अनुसार सारे भारत की आबादी उस समय २८ करोड़ ७० लाख थी। ये लोग, सर्वेक्षण से प्राप्त तथ्यों के अनुसार, १७९ भाषाएँ और ५४४ बोलियाँ बोलते थे। इनका विवेचन ग्रियर्सन ने "भारत का भाषा-सर्वेक्षण" के ११ बड़े-बड़े खण्डों में प्रकाशित कराया। यह कार्य १९२७ ई० में ३३ वर्षों की निरन्तर साधना के साथ समाप्त हुआ। उक्त ग्यारह खण्डों का ब्यौरा इस प्रकार है—

पहला खंड, भाग १—भूमिका

भाग २--भारतीय भाषाओं का तुलनात्मक शब्द-भण्डार

भाग ३--भारतीय आर्यभाषाओं का तुलनात्मक कोश

दूसरा खंड, मान ख्मेर और ताई परिवार

तीसरा खंड, भाग १—तिब्बत और उत्तरी असम की तिब्बत-बर्मी भाषाएँ

भाग २—बोडो, नागा, काचिन वर्ग की तिब्बत-बर्मी भाषाएँ

भाग ३—कुकी, चिन तथा बरमा वर्ग की तिब्बत-बर्मी भाषाएँ

चौथा खंड, मुण्डा तथा द्रविड़ भाषाएँ

पाँचवाँ खंड, भाग १—बंगाली तथा आसामी

भाग २—बिहारी तथा उड़िया

छठा खण्ड, पूर्वी हिन्दी

सातवाँ खण्ड, मराठी

आठवाँ खण्ड, भाग १—सिन्धी तथा लहँदा

भाग २—दरदी, पिशाच भाषाएँ

नवाँ खण्ड, भाग १—पश्चिमी हिन्दी तथा पंजाबी

भाग २—राजस्थानी तथा गुजराती

भाग ३—भीली भाषाएँ, खानदेशी आदि

भाग ४—पहाड़ी भाषाएँ

दसवाँ खण्ड, ईरानी परिवार

ग्यारहवाँ खण्ड, जिप्सी भाषाएँ

ऐतिहासिक आधार पर आर्यों के बसने के क्रम से, भारतीय आर्य-भाषाओं की पहले दो शाखाएँ मानी गयीं—वहिरंग और अन्तरंग। इन दोनों के बीच में पूर्वी हिन्दी को रखा गया, जिसे ग्रियर्सन ने मध्यवर्ती शाखा कहा। 'भाषा-सर्वेक्षण' में उन्होंने इन सब भाषाओं का वर्गीकरण इस प्रकार से किया—

१. बहिरंग शाखा—(क) पश्चिमोत्तरी वर्ग (लहँदा, सिन्धी)

(ख) दक्षिणी वर्ग (मराठी)

(ग) पूर्वी वर्ग (उड़िया, बंगाली, आसामी, बिहारी)

२. मध्यवर्ती शाखा—पूर्वी हिन्दी

३. अन्तरंग शाखा—(क) केन्द्रीय वर्ग (पश्चिमी हिन्दी, पंजाबी, राजस्थानी, गुजराती, भीली, खानदेशी।

(ख) पहाड़ी वर्ग (पूर्वी, मध्यवर्ती, पश्चिमी)।

बाद में ग्रियर्सन ने अन्तरंग शाखा की भाषा के वर्गीकरण में थोड़ा हेर-फेर किया। भारतीय विद्वानों ने प्रायः इस वर्गीकरण को स्वीकार नहीं किया। किन्तु ग्रियर्सन अपने मत पर दृढ रहे।

जब से भारतीय विद्वानों ने अपनी भाषाओं और बोलियों पर शोधकार्य किया है, तब से सर जार्ज ग्रियर्सन के अनेक निष्कर्षों पर प्रश्नचिह्न लग गये हैं। प्रस्तुत भाग में ही हम लिप्यन्तर, उच्चारण, अनुवाद, व्याकरण आदि की अनेकानेक गलतियाँ दिखा सकते हैं। ध्वनिशास्त्रीय जानकारी अपूर्ण भी है और यत्र-तत्र भ्रामक भी। वैसे भी यह सर्वेक्षण व्यापक भले ही हो, गंभीर नहीं है। किन्तु इन बातों से ग्रियर्सन के इस कार्य का मूल्य कम नहीं होता। यह सच है कि जब ग्रियर्सन ने यह काम किया था तब तक संसार के किसी दूसरे देश में ऐसा नहीं हुआ था। यह भी सच है कि अपने सीमित साधनों के रहते ग्रियर्सन ने बड़े परिश्रम और सावधानी से भाषागत तथ्य निकाले और जो दो-तीन नमूने किसी बोली के उनके पास थे, उनके आधार पर उन्होंने इतनी प्रचुर सामग्री प्रस्तुत कर दी जो कि आज तक नाना बोलियों के विषय में भारतीय भाषाशास्त्र की रीढ बनी हुई है। भाषाशास्त्र के सैकड़ों विद्यार्थियों और अनुसन्धित्सुओं ने इस सन्दर्भ-शास्त्र से लाभ उठाया है और कई पीढ़ियों तक हजारों लोग लाभान्वित होते रहेंगे।

प्रस्तुत पुस्तक

ग्रियर्सन ने अपने सर्वेक्षण के नवम खण्ड में पश्चिमी हिन्दी, पंजाबी, राजस्थानी, गुजराती, भीली और खानदेशी को सम्मिलित किया है। यह बात सर्वसम्मति से मानी गयी है कि इन भाषाओं का परस्पर घनिष्ठ संबंध है। इनमें भी ग्रियर्सन के अनुसार, पश्चिमी हिन्दी से पंजाबी का संबंध सबसे निकट का है। उन्होंने इस खण्ड के एक भाग में पश्चिमी हिन्दी और पंजाबी को एक साथ जोड़ दिया है। हम लोग राजस्थानी को पश्चिमी हिन्दी से अधिक संपृक्त मानते चले आ रहे हैं। ग्रियर्सन के मत पर विद्वानों ने विचार नहीं किया। उन्होंने सर्वेक्षण की भूमिका में लिखा है कि बहुत अंशों में हिन्दी से पंजाबी का वही संबन्ध है जो बर्न्स कवि की स्काच भाषा का दक्षिणी अंग्रेजी से है। यह भी याद रहे कि व्यवहारतः वे बिहार अथवा पूर्वी हिन्दी की अपेक्षा पंजाबी को पश्चिमी हिन्दी के अधिक निकट मानते थे। इनसे पूर्व पेरी ने तो पंजाबी को हिन्दी की एक बोली कहा था। आधुनिक खोजों से भी यह तथ्य प्रकट होता है कि हिन्दी के विकास

में पंजाबी का योगदान बहुत अधिक है। पंजाबी की 'गुरुवाणी' का अध्ययन करने से अथवा फरीद आदि प्राचीन पंजाबी कवियों की भाषा को देखने से यह नहीं लगता कि हिन्दी और पंजाबी में कोई बहुत बड़ा अन्तर है। इस विषय पर गम्भीर तुलनात्मक अध्ययन की आवश्यकता है। हिन्दी समिति, सूचना विभाग, उत्तर प्रदेश सरकार की ओर से इस खण्ड के पंजाबी अंश का जो हिन्दी अनुवाद और नागरी लिप्यन्तर हिन्दी जगत् के सामने आ रहा है, उससे इस दिशा में कई लोगों को सोचने की प्रेरणा मिलेगी।

प्रस्तुत पुस्तक को पढ़ते समय कुछ बातें ध्यान में रखने की हैं—प्रथम यह कि ग्रियर्सन के समय का पंजाब आज का पंजाब नहीं रहा। इस सर्वेक्षण में आये हुए कई ज़िले—मंटगुमरी, सियालकोट, लाहौर, गुजराँवाला, गुजरात—अब पाकिस्तान में हैं। पंजाब अब 'पाँच नदियों का देश' नहीं रहा। रचना (रावी और चनाब के बीच का) दोआब अब भारत में नहीं है। इधर पूर्व में अम्बाला ज़िला हरियाणा में आ गया है। ग्रियर्सन के समय में दिल्ली भी पंजाब प्रान्त में थी। कुल्लू, काँगड़ा और शिमला हिमाचल प्रदेश के अन्तर्गत हैं। जम्मू, जहाँ पंजाबी की डोगरी बोली बोली जाती है, कश्मीर राज्य के साथ है। इन तथ्यों को दृष्टि में रखते हुए पाठकों को ग्रियर्सन का तैयार किया हुआ मानचित्र सावधानी से देखने की आवश्यकता होगी।

ग्रियर्सन की अंग्रेज़ी अंशों में पुरानी पड़ गयी है। उनके समय में भाषा-विज्ञान की पारिभाषिक शब्दावली अपूर्ण तो थी ही, आज की शब्दावली से भिन्न भी थी। हमने चेष्टा की है कि ग्रियर्सन के युग को सुरक्षित रखा जाय। यह उचित ही था; यद्यपि आधुनिक पाठक को उसके समझने में थोड़ी-बहुत कठिनाई हो सकती है। पंजाबी नमूनों का हिन्दी में अनुवाद करते समय हमने पंजाबी की आत्मा, पंजाबी संरचना, शब्द-क्रम आदि को अक्षुण्ण रखने की चेष्टा की है। ग्रियर्सन ने अधिकारियों, सूचकों और कर्मचारियों को निर्देश दे रखा था कि अनुवाद शाब्दिक रहना चाहिए। क्योंकि हैं इससे मूल भाषा की प्रकृति को यथार्थ रूप में आँका जा सकता है।

नमूनों का लिप्यन्तर करते समय हमने ग्रियर्सन की रोमन लिपि का ध्यान तो रखा है, किन्तु जहाँ गुरमुखी, फारसी या नागरी लिपि और रोमन में सामंजस्य नहीं था वहाँ मूल (भारतीय) लिपि का अनुसरण किया है—केवल शुद्धता के उद्देश्य से।

हरदेव बाहरी

विषय-सूची

पंजाबी

भूमिका

भाषा का नाम और प्रदेश

'पंजाबी' नाम का अर्थ स्वतः स्पष्ट है, अर्थात् पंजाब की भाषा। जैसा कि आगे जान पड़ेगा, यह नाम अच्छा नहीं है, क्योंकि पंजाबी कदापि उस प्रान्त में बोली जाने वाली एक मात्र भाषा नहीं है।

पंजाबी लगभग एक करोड़ सत्ताईस लाख पचास हजार लोगों की भाषा है; और यह पंजाब प्रान्त के पूर्वार्ध के अधिकतर भाग में, राजपूताना में बीकानेर राज्य के उत्तरी कोने में, और जम्मू राज्य के दक्षिणार्ध में बोली जाती है। प्रान्त के अत्यन्त उत्तरपूर्व में, अर्थात् शिमला पहाड़ के अधिकतम राज्यों और कुल्लू की भाषा पहाड़ी है। दूर दक्षिण की ओर, यमुना नदी के दक्षिणी तट पर के अथवा निकट के जिलों की, अर्थात् अम्बाला के पूर्वार्ध, रोहतक, दिल्ली और गुड़गाँव की भाषा पंजाबी नहीं है, अपितु पश्चिमी हिन्दी का कोई रूप है। इन अपवादों के साथ, हम कह सकते हैं कि पूरे पूर्वी पंजाब की बोली पंजाबी है। इस क्षेत्र के उत्तर में हिमालय, दक्षिण में बीकानेर के अनुर्वर मैदान और पश्चिम में रचना दोआब की क्रूर 'बाड़' स्थित है।

भाषागत सीमाएँ

उत्तर और उत्तर-पूर्व में पंजाबी हिमालय की निम्नतर श्रेणियों की पहाड़ी भाषा से घिरी हुई है। पर्वतीय प्रदेश के भीतर इसका विस्तार नहीं है। इसके पूर्व में पश्चिमी हिन्दी के नाना भेद हैं—पूर्वी अम्बाला में हिन्दुस्तानी बोली और यमुना के सन्निकट पश्चिमी क्षेत्र में बोली जानेवाली बाँगरू। इसके दक्षिण में पश्चिमी हिसार और बीकानेर में बोली जानेवाली राजस्थानी की बागड़ी और बीकानेरी विभाषाएँ हैं। पंजाबी और इन सब भाषाओं की सीमारेखा बहुत कुछ स्पष्ट है (यद्यपि वास्तव में

एक भाषा का दूसरी भाषा में कुछ-कुछ विलयन अवश्य होता है), क्योंकि भाषा-भेद बहुत हद तक जातीय भेद का द्योतक होता है। पंजाबी और पश्चिमी हिन्दी की सीमा पर विशेष रूप से हम देखते हैं कि पंजाबी वस्तुतः सिखों की भाषा है। मोटे-तौर पर, हम इन दो भाषाओं के बीच की सीमारेखा को घग्घर नदी के साथ-साथ ले जा सकते हैं। घग्घर घाटी के पूर्व के सब लोग, सिखों की छिटपुट बस्तियों को छोड़कर पश्चिमी हिन्दी बोलते हैं।

दूसरी ओर दक्षिण में एक मध्यस्थ या अन्तर्वर्ती विभाषा, भट्टिआली के माध्यम से, राजस्थानी के साथ क्रमशः विलयन होने लगता है। पंजाबी की तरह राजस्थानी ऐसी भाषा है जो मूलतः भारतीय आर्यभाषा की बाहरी उपशाखा से, जिसका उपस्तर आज भी बचा हुआ है, सम्बन्धित है। साथ ही इस मूल पर भीतरी उपशाखा की भाषा छा गयी है और उसने इसे अन्तर्भुक्त-सा कर लिया है।[१] ये दो भाषाएँ, परस्पर बहुत मिलती-जुलती, बिना कठिनाई के एक दूसरी में विलीन हो जाती हैं। वास्तव में यह एक विचित्र सत्य है कि डोगरी में, जो पंजाबी का एक दूर-उत्तरवर्त्ती भेद है, कुछ उच्चारणगत विलक्षणताएँ ऐसी हैं (जैसे कारकीय प्रत्ययों में आदि क- का ग- में परिवर्तन), जो बागड़ी में भी पायी जाती हैं।

उत्तर में पंजाबी की एक सुस्पष्ट विभाषा है डोगरी, जो आदर्श पंजाबी और निम्न हिमालय की पहाड़ी भाषा के बीच की कड़ी है।

पश्चिमी सीमा

आपने देखा होगा कि अभी तक मैंने पंजाबी की पश्चिमी सीमा के संबंध में कुछ नहीं कहा। कारण यह है कि इस प्रकार की सीमा निर्धारित करना असम्भव है। पंजाबी के पश्चिम में लहँदा अथवा पश्चिमी पंजाबी भाषा है जिसे हम जच (जेहलम और चनाब के बीच के) दोआब में दृढ रूप से स्थापित पाते हैं। इसके अतिरिक्त शुद्धतम प्रकार की पंजाबी (व्यास और रावी के बीच के) बारी दोआब के ऊपरी भाग में बोली जाती है। आरम्भ में दिये गये मानचित्र को देखने से मेरा आशय स्पष्ट हो जायगा। यहाँ की भाषा पंजाबी और लहँदा का सम्मिश्रण है—पूर्व में अधिकाधिक पंजाबी, पश्चिम में अधिकाधिक लहँदा। इसका कारण यह जान

१. इसकी पूरी व्याख्या पंजाबी के लक्षणों का वर्णन करते समय की जायगी।

पड़ता है कि किसी जमाने में लहँदा का कोई पुरातन रूप दूर सरस्वती नदी तक फैला रहा होगा, और अब भी पंजाबी उस पर आधारित है। ज्यों-ज्यों हम पश्चिम की ओर बढ़ते हैं, और ज्यों-ज्यों पूर्व से बढ़ती हुई भाषा की उस लहर का प्रभाव क्षीण होता जाता है जिसने आधुनिक पंजाबी का रूप ग्रहण किया है, त्यों-त्यों लहँदा का प्रभाव (पंजाबी-भाषी क्षेत्र में भी) अधिकाधिक बढ़ता जाता है। बात यह है कि यद्यपि भारत में हम दो भाषाओं को आपस में धीरे-धीरे घुलते-मिलते हुए बराबर पाते हैं, पंजाबी और लहँदा में होनेवाली प्रक्रिया अन्यत्र नहीं मिलती। चूंकि इस सर्वेक्षण के अभिप्राय से इन दो भाषाओं के बीच में कोई न कोई सीमा आवश्यक है, मैंने दोनों का विभाजन दिखाने के लिए निम्नलिखित परंपरागत रेखा मान ली है। ज़िला गुजरात में स्थित पब्बी पर्वत के सिरे से आरंभ कीजिए, ज़िले के पार चनाब नदी के किनारे-किनारे गुजरांवाला के रामनगर कस्बे तक जाइए। यहाँ से लगभग सीधे दक्षिग की ओर गुजरांवाला के दक्षिणी कोण तक, जहाँ वह मंटगुमरी ज़िले के उत्तरी कोण से मिलता है, एक रेखा खींच ले जाइए। तब इस रेखा को सतलुज नदी पर मंटगुमरी के दक्षिणी कोण तक बढ़ाइए। कुछ मीलों तक सतलुज का अनुसरण करते हुए बहावलपुर राज्य का उत्तरी कोना पार कीजिए। इस रेखा से पूर्व की ओर की भाषा को मैं पंजाबी कहता हूँ और पश्चिम की ओर की लहँदा। किन्तु यह याद रहे कि यह रेखा विशुद्ध और मनमानी रूढि है, और यह भी ध्यान रहे कि इस रेखा के पश्चिम में कुछ दूर तक, जिस भाषा को मैं लहँदा कहता हूँ, वह रचना दोआब के पूर्व की ओर गुजरात के उत्तरपूर्व की भाषा से, जिसे मैं पंजाबी कह रहा हूँ, बहुत थोड़ी भिन्न है। मैं प्रमुखतः शब्दभण्डार से परिचालित हुआ हूँ। इस रेखा के पश्चिम में, उस भाषा का शब्दभण्डार, जो प्रधानतः उस क्षेत्र की भाषा है जिसे बाड़ (जंगल) कहते हैं, लहँदा के शब्दभण्डार से बहुत-कुछ मिलता-जुलता है। चनाब को पार करने से पहले, मुलतान को छोड़कर, हमें लहँदा के कारकचिह्न भी नहीं मिलते।

पंजाबी और 'पांच नदियों का देश'

उपरिलिखित चर्चा से एक रोचक तथ्य सामने आता है। पंजाब, अर्थात् पंज-आब, वस्तुतः झेलम, चनाब, रावी, ब्यास, सतलुज इन पाँच नदियों का देश है। किन्तु पंजाबी भाषा इन पाँच नदियों में सबसे दूर-पूर्व वाली सतलुज नदी के पार पूर्व में दूर

तक फैली हुई है और घग्घर तक जा पहुँची है। यह ब्यास और सतलुज के बीच के दोआब और रावी तथा ब्यास-सतलुज के दोआब में व्याप्त है। चनाब और रावी के बीच के रचना दोआव के एक भाग में एवं झेलम और चनाब के बीच के जच दोआब के छोटे से कोने में भी पंजाबी बोली जाती है। किन्तु चनाव और झेलम द्वारा सींचे जाने वाले बहुत बड़े क्षेत्र के लगभग समूचे भाग में तथा सतलुज के निचले भाग में पंजावी नहीं बोली जाती। इसलिए पंजाबी पाँच नदियों के पूरे देश की भाषा नहीं है।

बोलियां और उपबोलियां

पंजावी की दो बोलियाँ हैं—इस भाषा का परिनिष्ठित या सामान्य भेद और डोगरा या डोगरी। डोगरी, कई रूपों में, जम्मू के उपपर्वतीय भाग में एवं कांगड़ा जिले के सदर के अधिकांश भाग में तथा अतिव्याप्त होकर पड़ोस के जिला सियालकोट और गुरदासपुर एवं चम्बा राज्य के संलग्न भागों में बोली जाती है।

सामान्य पंजावी पंजाब के मैदानों में शेष पंजाबी-भाषी भाग में बोली जाती है और पड़ोस में शिमला पहाड़ के राज्यों में भी घुस गयी है। यह आदर्श पंजाबी जगह-जगह थोड़ी-बहुत बदल जाती है, किन्तु इसका शुद्धतम रूप वह माना गया है जो अमृतसर के आसपास माझा अथवा बारी दोआब के मध्य भाग में पाया जाता है। यह माझी उपबोली रावी के इस पार के लाहौर जिले की और अमृतसर तथा गुरदासपुर ज़िलों की भाषा कही जा सकती है। दोआब के निचले भाग में मंटगुमरी ज़िले की भाषा विशुद्ध माझी नहीं है बल्कि लहँदा-मिश्रित भाषा है। हम माझी को पंजाबी का आदर्श रूप मान सकते हैं। किन्तु इस कारण से कि परिस्थितिवश पंजाब के पहले गम्भीर यूरोपीय अध्येता लुधियाना में रहते रहे, अमृतसर में नहीं, एक दूसरी आदर्श पंजाबी, जिसे यूरोपीय आदर्श कह लें, अस्तित्व में आ गयी है। जहाँ जे० न्यूटन ने सन् १८५१ में अपना व्याकरण लिखा, जहाँ से 'लुधियाना मिशन कमेटी' ने १८५४ में पंजाबी कोश प्रकाशित किया, और जहाँ पर ई० पी० न्यूटन ने १८९८ ई०में इस भाषा का नवीनतम और सम्पूर्ण व्याकरण प्रकाशित कराया, वह लुधियाना पिछली शती के मध्य से अंग्रेज़ों के लिए पंजाबी भाषा के शिक्षण का केन्द्र बन गया है। यह स्वाभाविक था कि ये धुरंधर विद्वान् पंजाबी के उस रूप को आदर्श मानते जिससे उनका घनिष्ठ परिचय रहा। अतः हम देखते हैं कि उनके द्वारा पढ़ायी हुई भाषा में

कुछ ऐसे लक्षण हैं जो पूर्वी पंजाबी के हैं, माझी के नहीं हैं।[1] इनमें सबसे प्रमुख है मूर्धन्य ळ का विचित्र प्रयोग। यह व्यंजन-ध्वनि माझा में नहीं सुनी जाती, यद्यपि इसका प्रयोग सब व्याकरणों और कोशों में सिखाया जाता है।[2]

इस प्रकार हम देखते हैं कि पंजाबी के दो मानक हैं—एक माझा का जिसे भारत के लोग और (सिद्धान्ततः) यूरोपीय लोग स्वीकार करते हैं, और दूसरा लुधियाना

१. ई. पी. न्यूटन जैसे विद्वान् भी लुधियाना की पंजाबी को इतनी निश्चितता से आदर्श मान लेते हैं कि वे माझी के विशिष्ट रूपों को अपवादों में गिनते हैं। तुलना कीजिए उनके व्याकरण में पृ० ३३, ५७ और ७३। यदि वे माझी बोली को आदर्श मानते तो इन पृष्ठों में दिये गये रूपों को नियमों के अन्तर्गत लेते और इनके अप्रयोग को अन्यत्र, माझी में इनके प्रयोग के बजाय, अपवाद मानते।

एकमात्र डॉ० टिस्टल का छोटा-सा 'संक्षिप्त व्याकरण' मेरे देखने में आया है जो एक अंग्रेज का लिखा हुआ है और जिसकी रचना माझी बोली के आधार पर की गयी है।

यहाँ पर यह भी कह दूँ कि बाइबिल के पंजाबी रूपान्तर को देशी विद्वानों ने लुधियाना की बोली में लिखा हुआ बताया है।

२. इस मूर्धन्य ळ का प्रयोग देश के एक निश्चित क्षेत्र तक सीमित है। भारत के उत्तरी मैदानों में यह पश्चिम में ब्यास, सतलुज और पूर्व में गंगा के मध्य भाग में सुनाई पड़ता है। इस प्रकार पूर्वी पंजाब में, जहाँ पंजाबी बोली जाती है एवं जहाँ हिन्दुस्तानी और बाँगरू बोली जाती हैं, और ऊर्ध्वतर गंगा दोआब में जहाँ हिन्दुस्तानी बोली जाती है, यह सुस्पष्ट है। शिमला पहाड़ के राज्यों और उनके आसपास की पश्चिमी पहाड़ी और गढ़वाल-कुमायूँ की मध्य पहाड़ी में भी यह व्यापक है, किन्तु पूर्वी पहाड़ी या नेपाल की खसकुरा में नहीं पाया जाता। पवित्र नदी सरस्वती के मार्ग को इसकी केन्द्रीय रेखा माना जा सकता है जहाँ से यह विकिरित होता है। मुझे यह ब्रजभाखा में नहीं मिला, परन्तु बांगरू से होकर यह दक्षिण में बागड़ी क्षेत्र में और वहाँ से राजपूताना, मध्य भारत, गुजरात और महाराष्ट्र में फैला हुआ है। भारत के दक्षिण में यह द्रविड भाषाओं में सुना जाता है। सिन्धी में नहीं है और न ही कश्मीरी या खस में, परन्तु लहँदा और उसके पास वाले माझा के पश्चिमी क्षेत्र में सुनाई पड़ता है। पश्चिमी पहाड़ी के पश्चिम की पर्वतीय भारत-आर्य भाषाओं में भी यह मिल जाता है, किन्तु पुन्छी से होकर कश्मीरी तक पहुँचते-पहुँचते क्रमशः लुप्त हो जाता है।

का, जो मात्र ऐसा है जिसे व्यवहारतः यूरोपीयों ने स्वीकार किया, जिसका वर्णन अधिकतर व्याकरणों और कोशों में हुआ और जिसमें इंजील का अनुवाद हुआ।[1]

सामान्य पंजाबी की अन्य बोलियों में जलंधर दोआब की बोली, पोवाधी, राठी, मालवाई, भट्टिआनी एवं रचना दोआब तथा उत्तरपूर्वी गुजरात की पंजाबी सम्मिलित हैं। जलंधर दोआब की बोली लुधियाना की बोली से बहुत कुछ मिलती-जुलती है। किन्तु ज्यों-ज्यों हम पहाड़ियों की ओर बढ़ते हैं त्यों-त्यों पहाड़ी भाषा के प्रभाव के चिह्न दिखाई देने लगते हैं। पोवाधी (पोवाध अर्थात् पूर्वी पंजाब की पंजाबी), जैसा कि इसके नाम से प्रकट है, पंजाबी के दूरतम पूर्व का रूप है। यह जिला लुधियाना में सतलुज के दक्षिणी तट पर बोली जाती है (और यहाँ पर यह लुधियाना की बोली का ही पर्याय है, जिसका उल्लेख थोडे विस्तार के साथ किया जा चुका है); परन्तु इसका मुख्य क्षेत्र पूर्वी देशान्तर रेखा के लगभग ७६° से पूर्व का पंजाबी-भाषी प्रदेश है। इसके पूर्व में दक्षिणी शिमला के पहाड़ी राज्यों की पश्चिमी पहाड़ी, अम्बाला और पूर्वी पटियाला की ग्रामीण हिन्दुस्तानी और करनाल की बाँगरू है। इसके दक्षिण में राठी है जिसका वर्णन अभी किया जानेवाला है, और पश्चिम में मालवाई पंजाबी है। जैसा कि अपेक्षित है, पोवाधी पंजाबी पर, ज्यों-ज्यों हम पूर्व की ओर चलते हैं, पश्चिमी हिन्दी का प्रभाव बढ़ता जाता है। पोवाधी और मालवाई पंजाबी के तुरन्त दक्षिण में, घग्घर नदी के मैदानी भाग में, उस क्षेत्र के पछाडा राठी मुसलमानों की भाषा राठी पंजाबी है। पोवाधी की अपेक्षा पश्चिमी हिन्दी की बाँगरू बोली से यह अधिक प्रभावित है। यह सानुनासिक ध्वनियों के प्रति अपने रुझान के कारण उल्लेखनीय है। इसके दक्षिण में बागड़ी और हिसार की बाँगरू पड़ती हैं। पूर्वी देशान्तर रेखा के ७६° पश्चिम में, सतलुज तक, मालवा या सिख जट्टों का पुराना आबाद किया हुआ शुष्क प्रदेश पड़ता है, जिसके दक्षिण की ओर 'जंगल' या ग़ैर-आबाद क्षेत्र है। इन क्षेत्रों की भाषा को मालवाई पंजाबी या जंगली माना गया है। इसके दक्षिण में घग्घर के मैदान की राठी पंजाबी और दक्षिणी फ़ीरोज़पुर तथा बीकानेर की भट्टिआनी पंजाबी है। मालवाई पंजाबी लुधियाना की आदर्श भाषा से बहुत भिन्न नहीं है, किन्तु

१. अमृतसर के भाई हजारासिंह ज्ञानी के 'दुल्हन दर्पण' में जो 'मिरातुल उरूस' का रूपांतर है और जो माझा की शुद्ध बोली में लिखा गया है, आदि से अन्त तक देख जाइए, मूर्धन्य ळ नहीं मिलता।

ज्यों-ज्यों हम दक्षिण की ओर बढ़ते हैं, दन्त्य 'न' और 'ल' को क्रमशः मूर्धन्य 'ण' और 'ळ' में परिवर्तित करने की प्रवृत्ति दिखाई देने लगती है। मालवा के दक्षिण की ओर दक्षिणी फ़ीरोज़पुर और उत्तरपश्चिमी बीकानेर में भट्टी जाति का देश भट्टिआना स्थित है। यहाँ पजाबी राजस्थानी में विलीन होने लगती है और हमें एक मिश्रित बोली प्राप्त होती है जिसे मैंने भट्टिआनी नाम दिया है। भट्टिआनी सतलुज के बायें किनारे ऊपर की ओर, फ़ीरोज़पुर ज़िले के दूर भीतर तक बोली जाती है; और वहाँ पर इसका स्थानीय नाम राठौरी पड़ा हुआ है। सतलुज पार करके हम बारी दोआब में प्रवेश करते हैं। इसका केन्द्रीय भाग माझा है जिसका उल्लेख पहले किया जा चुका है। लाहौर के दक्षिण पूर्व में, रावी के दोनों किनारों पर मंटगुमरी का ज़िला है। मंटगुमरी का रावी-पार का भाग यद्यपि शासकीय दृष्टि से बारी दोआब के अन्तर्गत पड़ता है, किन्तु भाषा की दृष्टि से अगले दोआब अर्थात् रावी और चनाब के बीच के रचना दोआब से सम्बद्ध है। यह वह रचना दोआब है जिसमें हम पंजाबी को लहँदा में विलीन होते पाते हैं।

जैसा कि ऊपर स्पष्ट किया गया है, इन दो भाषाओं के बीच की कोई स्पष्ट विभाजक रेखा दिखाना सम्भव नहीं है, और इस सर्वेक्षण के अभिप्राय से मैंने एक विशुद्ध रूढिगत रेखा को स्वीकार कर लिया है, जो गुजरात के उत्तर-पश्चिमी कोने के निकट पब्बी पर्वत श्रेणी के उत्तरी सिरे से शुरू होकर सतलुज के ऊपर मंटगुमरी के दक्षिण-पूर्वी कोने पर समाप्त होती है, फिर यह सतलुज से नीचे उतरती हुई बहावलपुर रियासत के उत्तरपूर्वी सिरे के परे चली जाती है, जहाँ यह भट्टिआनी की दक्षिणी सीमा से जा मिलती है। इस रेखा के पूर्व में सारी-की-सारी भाषा, मेरे मत से और इस सर्वेक्षण के अभिप्राय से पंजाबी है, और इसके पश्चिम में लहँदा ही लहँदा है। उत्तरपूर्वी गुजरात, रचना दोआब और पूर्वी मंटगुमरी की यह पंजाबी, जैसे-जैसे हम पश्चिम को बढ़ते हैं, अधिकाधिक लहँदा की विशेषताओं से युक्त होती जाती है।

बोलनेवालों की संख्या

निम्नलिखित तालिका से पंजाबी बोलनेवालों की संख्या का पता चलता है, जैसा कि इस सर्वेक्षण के लिए अनुमानित किया गया है। अधिकतर आँकड़े सन १८९१ की जनगणना पर आधारित हैं। मैं पंजाबी बोलनेवालों की संख्या का आरम्भ उन क्षेत्रों से करता हूँ जहाँ की यह अपनी स्थानीय भाषा है।

तालिका

माझी—	
लाहौर	१०,३३,८२४
अमृतसर	९,७३,०५४
गुरदासपुर	८,००,७५०
	२८,०७,६२८
जलंधर दोआबी—	
जलंधर	९,०५,८१७
कपूरथला	२,९६,९७६
हाशियारपुर	८,४८,६५५
मिश्रित बोलियाँ	२,०७,३२१
	२२,५८,७६९
पोवाधी—	
हिसार	१,४८,३५२
अम्बाला	३,३७,१२३
कलसिया रियासत	१८,९३३
नालागढ़ रियासत	३९,५४५
मल्लोंग रियासत	३,१९३
पटियाला रियासत	८,३७,०००
जींद रियासत	१३,०००
	१३,९७,१४६
राठी—	
हिसार	३६,४९०
जींद रियासत	२,५००
	३८,९९०

मालवाई-

	७,०९,०००
लुधियाना	६,४०,०००
	१,१०,०००
मलेरकोटला	७५,२९५
पटियाला	३३४,५००
नाभा	२०७,७७१
जींद	४४,०२१
कलसिया	९,४६७
	२१,३०,०५४

भट्टिआनी-

वीकानेर की राठी	२२,०००
फीरोजपुर की बागड़ी	५६,०००
फीरोजपुर की राठौरी	३८,०००
	१,१६,०००

लहँदा में विलीन होनेवाली पंजाबी—

उत्तर-पूर्वी गुजरात	४,५७,२००
सियालकोट	१०,१०,०००
पूर्वी गुजरावाला	५,०५,०००
रावी पर लाहौर	१७,३९८
पूर्वी मंटगुमरी	२,९२,४२६
उत्तरी बहावलपुर	१,५०,०००
	२४,३२,०२४

डोगरी—

मानक	५,६८,७२७
कण्डिआली	१०,०००
कांगड़ा बोली	६,३६,५००
भटेआली	१४,०००
	१२,२९,२२७

देशी भाषा के रूप में पंजाबी बोलनेवालों की कुल संख्या १,२४,०९,८३८

पंजाबी पंजाब के दूसरे ज़िलों में भी बोली जाती है, जहाँ इसे देशी भाषा नहीं परिगणित किया जाता। करनाल और मुलतान की संख्याएँ सब से महत्त्वपूर्ण हैं। जहाँ तक करनाल का सम्बन्ध है, यह ज़िला पोवाधी बोलने वाले पटियाला के क्षेत्र से ठीक जुड़ा हुआ है, और ये संख्याएँ उसी रियासत से आ बसनेवाले सिख आबादकारों की ही हैं। मुलतान में सिखों की एक बहुत बड़ी बस्ती है जो सिधमई नहर योजना के कारण बन गयी है। अन्य ज़िलों में उल्लिखित आँकड़ों पर टिप्पणी देने की आवश्यकता नहीं है। वे आँकड़े इस प्रकार हैं—

पंजाब के अपंजाबी-भाषी ज़िलों और राज्यों में पंजाबी बोलनेवालों की तालिका

रोहतक	२३८
गुड़गाँव	१७८
दिल्ली	१,७८४
पटौदी	१३२
लोहारू	७
दुजाना	२
करनाल	२५,५००
शिमला	३,२८०

शिमला की पहाड़ी रियासतें

बशहर	२७६	
क्योंठल	१९४	
बघळ	१२९	
बघात	७०२	
जुब्बल	२७	
	९५	
	३६	
	३८	
	३०	
	१८८	
	९७	
	१०	
	६५	
	१२	
	८,१९७	
		१०,०९६
मंडी		७३२
सुकेत		१४६
चम्बा		२,३८७
मुलतान		८७,१०२
डेरा इस्माईलखान		७,२३८
डेरा गाजीखान		६,६६६
मजफ्फरगढ		८,४८०
	कुल योग	१५४,३०१

इस सर्वेक्षण के लिए प्रतिवेदित सूचनाओं के अनुसार हमें पंजाब में पंजाबी बोलने वालों की कुल संख्या इस प्रकार प्राप्त होती है—

उन क्षेत्रों में जहाँ वह प्रदेशीय भाषा है	१,२४,०९,८३८
उन क्षेत्रों में जहाँ वह प्रदेशीय भाषा नहीं है	१,५४,३०१
कुल योग	१,२५,६४,१३९

१८९१ की जनगणना के अनुसार पंजाब में (डोगरी को लेकर) पंजाबी बोलने वाले १,५७,५४,८९५ आलिखित हुए हैं। इस अन्तर के कई कारण हैं। पहला यह; गुजरांवाला (पश्चिमी आधा भाग), मंटगुमरी (पश्चिमी आधा भाग), बहावलपुर (उत्तर पश्चिमी भाग), झंग, शाहपुर, जेहलम, रावलपिंडी, हजारा, पेशावर, कोहाट और बन्नू और दूसरे क्षेत्र, जिन्हें इस सर्वेक्षण में लहँदा-भाषी दिखाया जायगा, उक्त जनगणना की तालिकाओं में वहाँ के ४५,८३,००० लोगों को पंजावी-भाषी बताया गया है। दूसरा यह कि ऊपर के आँकड़ों में काँगड़ी बोली बोलने वाले ६,३६,५०० लोग सम्मिलित हैं जिन्हें जनगणना की तालिकाओं में पहाड़ी-भाषी बताया गया है और इनमें जम्मू के इलाके में डोगरी बोलने वाले ४,३४,००० तथा बीकानेर में भट्टि-आनी बोलने वाले २२,००० लोग भी सम्मिलित हैं जो पंजाब की जनगणना में आते ही नहीं, क्योंकि जम्मू और बीकानेर शासकीय दृष्टि से पंजाब के अंतर्गत नहीं पड़ते। दोनों ओर इतनी छूट देने पर हमें जनगणना की कुल संख्या १,२२,६२,३९५ प्राप्त होती है। इस संख्या और सर्वेक्षण की संख्या का जो ३०१,७४४ का अंतर है वह अंशतः इस कारण से है कि सर्वेक्षण में अधिकाधिक पूर्णांक दिये गये हैं, अंशतः इस कारण से कि सर्वेक्षण के आंकड़े जनगणना के कोई सात-आठ वर्ष बाद स्थानीय अधिकारियों द्वारा लिये गये स्वतन्त्र अनुमान मात्र हैं, और अंशतः इसलिए भी कि सर्वेक्षण के आंकड़ों के अन्तर्गत वे छोटी-छोटी बोलियाँ भी ली गयी हैं जिन्हें जनगणना की तालिकाओं में अन्य भाषाओं के अन्तर्गत सम्मिलित किया गया है। सीमावर्ती क्षेत्रों में जहाँ एक भाषा दूसरी में विलीन हो जाती है वहाँ वर्गीकरण बहुत कुछ वैयक्तिक फलन पर निर्भर रहता है और इस तरह की छूट इस प्रकार के आँकड़ों के आकलन में अवश्य दी जानी चाहिए।

अब हम पंजाब की सीमा के बाहर पंजाबी बोलने वाले लोगों की संख्या पर विचार करते हैं। यहाँ पर यदि हम १८९१ की जनगणना के आँकड़ों को लें, तो हमारे

सामने दो कठिनाइयाँ उपस्थित हो जाती हैं। उस जनगणना में, कश्मीर या राजपूताना और मध्य भारत में की नाना भाषाओं के बोलने वालों को परिगणित नहीं किया गया था। दूसरी बात यह है कि उस जनगणना में (पंजाब को छोड़कर) लहँदा और पंजाबी में कोई भेद नहीं किया गया और दोनों को एक ही शीर्षक—पंजाबी के अन्तर्गत डाल दिया गया। इसलिए मैं निम्नलिखित तालिका में कश्मीर या राजपूताना और मध्य भारत में पंजाबी बोलनेवालों की संख्या नहीं दे सकता। उनकी जगह मैं इन इलाकों में रहनेवाले (जिनके आँकड़े प्राप्य हैं) उन्हीं लोगों की कुल संख्या दे रहा हूँ जिनका जन्म पंजाब में हुआ। दूसरी कठिनाई कुछ गम्भीर है। हम अनुमान ही कर सकते हैं। सन् १९०१ की जनगणना में लहँदा और पंजाबी के आँकड़े अलग-अलग रखे गये हैं, और उनकी कुल संख्या में परस्पर ३ और १७ का अनुपात है। मैं समझता हूँ कि यह अनुपात १८९१ के लिए भी सही हो सकता था और इसलिए मैंने निम्नलिखित आँकड़ों की कुल संख्या में से ३/२० भाग लहँदा भाषियों के निमित्त काट दिया है। शेष बच जानी चाहिए वही कुल संख्या जो पंजाब के बाहर पंजाबी बोलने वालों की होगी।

१८९१ की जनगणना के अनुसार पंजाब के बाहर पंजाबी या लहँदा बोलने वाले लोगों की कुल संख्या की

तालिका

कश्मीर	६६,१०६ (अनुमानित)
सिंध (और खैरपुर)	२२,१५०
संयुक्त प्रान्त (और रियासतें)	१३,०८०
क्वेटा	१०,५४४
बर्मा	८,१०५
बंगाल (और रियासतें)	२,८५७
	२,४३९
बम्बई (और रियासतें)	३,३३४
राजपूताना और मध्य भारत	९९,७९० (अनुमानित)
अंडमान	१,५१३
अजमेर-मेरवाड़ा	

मध्य प्रान्त	१,१५४
	४९८
बरार	३७३
बड़ौदा	२५५
असम	१६०
मैसूर	१८
कुल जोड़	२,३३,५३०

इसमें से लहँदा के लिए ३ २० अर्थात् ३५,०३० काट दें तो हमें पंजाब से बाहर भारत में पंजाबी बोलने वालों की कुल संख्या अनुमानतः १,९८,५०० प्राप्त होती है।

सारे भारत में पंजाबी-भाषियों का कुल जोड़ इस प्रकार उपलब्ध होता है—

पंजाब और अन्यत्र स्थानीय बोली के रूप में पंजाबी बोलने वाले	१,२५,६४,१३९
भारत में और जगह पंजाबी बोलने वाले	१,९८,५००
पंजाबी के सभी बोलने वालों का कुल जोड़	१,२७,६२,६३९

पंजाब के बाहर पंजाबी बोलनेवालों में अधिकतर या तो सिख सिपाही हैं या पुलिस कर्मचारी और इस तरह के दूसरे लोग।

पंजाबी की विशेषताएँ

पश्चिमी हिन्दी और राजस्थानी तथा गुजराती को लेकर, पंजाबी, भारतीय आर्य भाषाओं में केन्द्रीय वर्ग की अन्यतम भाषा है। इनमें इस वर्ग की एकमात्र शुद्ध भाषा पश्चिमी हिन्दी है। दूसरी भाषाएँ तो मिश्रित हैं। यद्यपि इनकी आवश्यक विशेषताएँ मुख्यतः केन्द्रीय वर्ग की सी हैं, इनमें प्रत्येक में दूसरी भाषा के लक्षण मिलते हैं, जिस पर कोई केन्द्रीय भाषा व्याप्त हो गयी है—आच्छादित हो गयी है कहना अधिक समीचीन होगा। यह बात हम राजस्थानी और गुजराती में अधिक स्पष्टता से पायेंगे। और इन दो भाषाओं के सम्बन्ध में यह भी देखेंगे कि केन्द्र से, जहाँ से भीतरी भाषा अतिक्रमण करती है, हम जितनी दूर जाते हैं उतनी ही यह विलीन परत अधिक उभर

उठती है। प्रत्येक पक्ष में यह विलीन परत स्पष्टतः भारतीय आर्य भाषाओं के बाहरी वृत्त की भाषा रही है। हम मथुरा और कन्नौज के बीच के केन्द्रीय गंगा-दोआव को बिखराव का केन्द्र मान सकते हैं। यह कह देना आवश्यक है कि कन्नौज भारत की मुसलमानी विजय के पूर्व की शताब्दियों में भारतीय आर्य शक्ति का बहुत बड़ा केन्द्र रहा है।

लहँदा और पश्चिमी हिन्दी से सम्बन्ध

पंजाबी पूर्वी पंजाब की भाषा है, और वर्तमान काल में इसके तुरन्त पश्चिम में, पश्चिमी पंजाब में, लहँदा बोली मिलती है। लहँदा बाहरी वृत्त की भाषाओं में से है और सिन्धी, कश्मीरी और सिंधु-कोहिस्तान की भाषाओं से बहुत कुछ मिलती-जुलती है। यदि भाषावैज्ञानिक साक्ष्य का कोई मूल्य है तो इसमें कोई सन्देह नहीं है कि इस लहँदा से बहुत कुछ मिलती-जुलती भाषा किसी समय उस सारे क्षेत्र में भी बोली जाती रही है जहाँ की बोली आज पंजाबी है। पंजाबी के तुरन्त पूर्व में पश्चिमी हिन्दी के हिन्दुस्तानी रूप हैं जो यमुना नदी के दोनों ओर और ऊपरी गंगा-दोआव में व्यवहृत होते हैं। वर्तमान भाषागत परिस्थितियों से स्पष्ट होता है कि इस हिन्दुस्तानी का कोई पुराना रूप सारे पूर्वी पंजाब में क्रमशः फैल गया है जो कम से कम चनाब नदी के ऊपरी आधे भाग तक पुरानी लहँदा भाषा का स्थानापन्न हो गया है या उस पर छा गया है। वस्तुतः इसका प्रभाव बहुत आगे तक प्रसृत हुआ है, और जब तक हम विशाल थल या झेलम-चनाब और सिन्धु के बीच के रेतीले क्षेत्र तक नहीं जा पहुँचते तब तक उसके चिह्न बने रहते हैं। जैसा कि राजपूताना में है, केन्द्रीय भाषा की बढ़ती हुई लहर के लिए रेगिस्तान एक रुकावट बन गया है, और प्रत्येक स्थिति में हमें इसके पश्चिम में बाहरी वृत्त की एक शुद्ध भाषा मिलती है—एक में सिन्धी, दूसरी में लहँदा।

जैसे ही यह लहर अपने प्रस्थान-बिन्दु से पश्चिम की ओर बढ़ी, इसका कलेवर और बल क्रमशः नष्ट होता गया। पंजाबी क्षेत्र से धुर पूर्व में, प्राचीन सरस्वती के किनारे, प्राचीन लहँदा के विरल चिह्न देखने में आते हैं। जब हम बारी दोआब तक आते हैं, जहाँ आदर्श पंजाबी बोली जाती है, वहाँ हमें लहँदा की अनेक विशेषताएँ अब भी शेष मिल जाती हैं जो पोवाध या पूर्वी पंजाब में लुप्त हो गयी हैं। रचना दोआब में ये विशेषताएँ और अधिक उभर आती हैं और यहाँ हमें पंजाबी और लहँदा के बीच की रूढ सीमा-रेखा मिलती है। जच दोआब में ये विशेषताएँ और भी अधिक स्पष्ट

होती हैं और यहाँ पर हम लहँदा को पक्की तरह जमी हुई कह सकते हैं। सिंध-सागर दोआव में केन्द्रीय भाषा के प्रभाव के एक-दो अवशेषों को छोड़ सभी लुप्त हो जाते हैं, और हमारे सामने बाहरी वृत्त की शुद्ध भाषा आ जाती है। इस प्रकार हम देखते हैं कि पंजाबी एक मिश्रित भाषा है।

इसी बात को यों भी कहा जा सकता है कि आधार स्तर तो है आधुनिक लहँदा से सम्बद्ध कोई बाहरी वृत्त की भाषा, और इसकी उपरि संरचना है पश्चिमी हिन्दी की कोई बोली। उपरि संरचना इतनी महत्त्वपूर्ण है और उसने नींव को इतना छिपा रखा है कि पंजाबी को वर्तमान समय में, ठीक ही, केन्द्रीय वर्ग की भाषा मानकर वर्गीकृत किया गया है।

उच्चारण

विस्तार में जाने पर हम देखते हैं कि प्रथमतः आदि **ब** पश्चिमी हिन्दी में सदा **ब** हो जाता है जब कि पंजाबी में किन्हीं शब्दों में सुरक्षित रहता है; जैसे पश्चिमी हिन्दी **बीच,** किन्तु पंजाबी **विच्च,** में। यह सिन्धी, लहँदा और कश्मीरी की भी विशेषता है। पंजाबी उच्चारण में एक और संयोग है जो अत्यन्त विशिष्ट है, और इस भाषा को एक साफ-सुथरा पुट प्रदान करता है एवं जिसकी ओर प्रथम बार इसे सुनने वाले का ध्यान तुरन्त आकृष्ट हो जाता है। इसका वर्णन करने के लिए व्युत्पत्ति के एक प्रश्न पर विचार कर लेना आवश्यक है। भारत की सभी प्राकृत बोलियों में, कारण देने की यहां आवश्यकता नहीं है, बहुत से ऐसे शब्द थे जिनमें एक-न-एक द्वित्वीकृत व्यंजन था, जिसके पहले ह्रस्व स्वर था। उदाहरणार्थ, हम **घोडस्स,** घोड़े का; **जुत्तो,** युक्त; **खग्गो,** खड्ग; **मक्खणम्,** मक्खन; **मारिस्सइ,** वह मारेगा, ले लें। इन भाषाओं के ध्वनिशास्त्र-सम्बन्धी एक अन्यतम नियम के अनुसार, उन द्वित्व व्यंजनों के प्रथम अर्ध वर्ण का लोप करके सरलीकरण एवं क्षतिपूर्ति के लिए पूर्ववर्ती स्वर के दीर्घीकरण की प्रवृत्ति रही है। इस प्रकार इन शब्दों के क्रमशः **घोडास; जूतो; खागो; माखणं; मारीसै** हो जाने की प्रवृत्ति थी।[1] केन्द्रीय वर्ग की आधुनिक बोलियों

१. अन्य प्राकृतों की अपेक्षा प्राचीन प्राकृतों और शौरसेनी में इस प्रवृत्ति के चिह्न कम पाये जाते हैं। शौरसेनी को पश्चिमी हिन्दी की और मध्यवर्ती वर्ग की दूसरी भाषाओं की अधिरचना (अधःस्तर से भिन्न) की जननी कहा जा सकता है।

में हम इस प्रवृत्ति को एकरूपता के साथ चलते नहीं देखते। पश्चिमी हिन्दी में हमें एक ही शब्द के दोनों रूप मिल जाते हैं—प्रायः एक साहित्यिक भाषा में और दूसरा बोलचाल में। इस प्रकार 'मक्खन' के लिए प्राकृत **मक्खणम्** साहित्यिक हिन्दुस्तानी में तो बन जाता है **मक्खन**, किन्तु ग्रामीण लोगों के मुख से हम प्रायः सुनते हैं **माखन**। राजस्थानी में संयुक्त व्यंजन के सरलीकरण की प्रवृत्ति, जैसे ही हम पश्चिम और दक्षिण की ओर चलते हैं, बढ़ती जाती है, यहां तक कि हम गुजराती तक पहुंच जाते हैं तो उस भाषा में पूर्ववर्ती खंड के क्षतिपूरक दीर्घीकरण के साथ (संयुक्त व्यंजन के) सरलीकरण की प्रवृत्ति सामान्य नियम बन जाती है। हमें यहां **माखण** मिलता है **मक्खण** कभी नहीं। दूसरी ओर उपरि-गंगा दोआब की हिन्दुस्तानी पूर्ववर्ती ह्रस्व स्वर सहित द्वित्व व्यंजन के उच्चारण को प्राथमिकता देती है, और इस प्रकार हम सदा **मक्खण** पाते हैं, **माखण** नहीं। पंजाबी ठीक इसका अनुसरण करती है। वह ऐसे संयोगों का सरलीकरण नहीं करती। हमको सदा **मक्खण** मिलता है, **माखण** नहीं। इसी प्रकार के शब्द हैं पंजाबी **कम्म**, किन्तु हिन्दुस्तानी **काम**; पंजाबी **विच्च**, किन्तु हिन्दुस्तानी **बीच**; पंजाबी **उच्चा** किन्तु हिन्दुस्तानी **ऊँचा**।[1] इस सारी प्रक्रिया से पंजाबी वाणी में सुनिश्चित द्वित्व व्यंजनों का आधिक्य हो गया है एवं इस भाषा की एक सुविदित और सुस्पष्ट विशेषता प्राप्त हुई है जो प्रत्येक ऐसे व्यक्ति के सुनने में आने लगती है, जिसका भारतीय भाषाओं से प्रथम परिचय इस प्रदेश में आते ही हो जाता है।

संज्ञा के कारक-चिह्न

संज्ञाओं के रूपान्तर में हम देखते हैं कि अ-प्रातिपदिक वाले सबल पुल्लिग नाम आकारान्त होते हैं, शुद्ध पश्चिमी हिन्दी की तरह औकारान्त अथवा ओकारान्त नहीं होते। जैसे **घोड़ा**, पश्चिमी हिन्दी की तरह **घोड़ौ** या **घोड़ो** नहीं।

१. इस विषय में लँहदा पंजाबी का अनुसरण करती है। सिन्धी इस प्रक्रिया को एक और दिशा में ले चलती है। इसमें अघोष संयुक्त व्यंजन तो सरल हो जाता है किन्तु स्वर दीर्घ नहीं होता। इसमें 'मखण' मिलता है। पंजाबी शब्दों की व्युत्पत्ति पर विचार करते समय यह सब महत्वपूर्ण होगा। उदाहरणस्वरूप, हम निश्चयपूर्वक

बहिरंग वर्ग की प्रायः सभी भाषाओं का यह विशिष्ट लक्षण है। तुलना कीजिए मराठी 'घोडा' तथा बंगाली 'घोड़ा'।[१]

संबंध कारक

पंजाबी का अन्यतम लक्षण जो प्रारम्भिक विद्यार्थी को तुरन्त खटकता है और जो वास्तव में इस भाषा की अपनी प्रमुख विशेषता है, यह है कि सम्बन्ध कारक में पश्चिमी हिन्दी के कौ, को (या का) के स्थान पर, -दा परसर्ग का प्रयोग होता है। यह परसर्ग दक्षिणी लहँदा में भी प्रयुक्त होता है, और निस्सन्देह यह उस भाषा के मूल रूप से सम्बन्धित है जो एक समय में सारे पंजाब में फैली हुई थी। निश्चित रूप से यह पूर्वी पंजाब की अपनी उपज है।[२]

कर्त्ता कारक

कर्त्ता कारक का संकेत करने के लिए साहित्यिक हिन्दुस्तानी ने प्रत्यय का व्यवहार करती है। यह प्रत्यय ठीक पश्चिमी हिन्दी (हिन्दुस्तानी जिसकी एक बोली है) का नहीं है। उस भाषा की अन्य बोलियों में बिना प्रत्यय का आंगिक या विभक्त्यात्मक कर्त्ता कारक प्रयुक्त होता है। अलबत्ता साहित्यिक हिन्दुस्तानी का ने उपरि गंगा दोआब की बोलचाल की हिन्दुस्तानी में भी पाया जाता है, और स्पष्टतः इसका ग्रहण पंजाबी से हुआ है जिसमें कि इसका व्यवहार (नै के रूप में) नियमित रूप से होता है।

कह सकते हैं कि पंजाबी 'सीता', सिया, या सित्ता का संक्षिप्त रूप नहीं है। इस प्रकार का संक्षेपण पंजाबी, लहँदा या सिन्धी की प्रकृति के विरुद्ध है।

१. इस विषय में, पश्चिमी हिन्दी की उन बोलियों पर, जो भौगोलिक दृष्टि से पंजाबी के निकट हैं, पंजाबी का प्रभाव पड़ा है। ऊर्ध्वतर गंगा दोआब की बोली में तथा उस पर आधारित साहित्यिक हिन्दुस्तानी में -आ पाया जाता है, -औ या -ओ नहीं। इस प्रकार ब्रजभाषा की संज्ञाओं में भी, किन्तु विशेषणों में नहीं।

२. -दा और -का दोनों की व्युत्पत्ति संस्कृत 'कृतः' से हुई है। दोनों रूप प्राकृत के 'किदओ' अथवा 'किदउ' के माध्यम से देशी भाषाओं में आये हैं। हिन्दुस्तानी में समय की गति से, 'द' का लोप होने से 'किअओ' और फिर 'का' बन गया जो वास्तव में परसर्ग—

पुरुषवाची सर्वनाम

उत्तम पुरुष और मध्यम पुरुष सर्वनामों के बहुवचन (असीं, हम, तिर्यक् रूप असाँ, एवं तुसीं, तुम, तिर्यक् रूप तुसाँ) इस भाषा के प्राचीन लहँदा आधार के अवशेष हैं, शुद्ध केन्द्रीय भाषा के नहीं हैं, जिसमें क्रमशः हम और तुम पाये जाते हैं। तुलना कीजिए सिंधी असीं (तिर्यक् असाँ), हम; लहँदा अस्सीं (तिर्यक्) अस्साँ, हम; तुस्सीं (तिर्यक् तुस्साँ), तुम; मैयाँ (सिंधु कोहिस्तानी), तुस, तुम; कश्मीरी अस (तिर्यक् असे, हम। साथ ही, इन सर्वनामों का सम्बन्ध-कारकीय रूप असाडा, तुसाडा, बनता है। इन शब्दों का मूर्धन्य ड लहँदा की विशिष्टता है।

कर्मवाच्य

पंजाबी क्रिया का कर्मवाच्य यदा-कदा धातु में 'ई' जोड़ने से बनता है।[1] यह लहँदा

एक स्पष्ट शब्द है, प्रत्यय नहीं। इसके विरुद्ध, बहिरंग वर्ग की भाषाओं ने किदओ को पृथक् शब्द के रूप में नहीं, प्रत्यय के रूप में ग्रहण किया। इस प्रकार, प्राचीन भाषा के 'घोडहिकिदउ' से हिन्दुस्तानी में 'घोड़े का' विकसित हुआ। उस भाषा में किदउ ऐसा ही पूरा शब्द था जैसा अंग्रेजी में of है। किन्तु प्राचीन लहँदा में 'घोडहि-किदउ' बोलते थे, और उसमें 'किदउ' प्रत्यय के समान था, जैसे लैटिन equi में i. एक प्रसिद्ध नियम है कि जब शब्द के भीतर 'क' स्वरमध्यग होता है तो उसका लोप हो जाता है। अतः एक ही शब्द होने के कारण 'घोडहिकिदउ' का 'घोडहिदउ' हो गया, और उससे 'घोड़ेदा' बना 'घोड़े' और 'दा' के बीच में संयोजक चिह्न के बिना। मुख्य शब्द के साथ परसर्ग जोड़कर एक शब्द मान लेने की यह प्रवृत्ति बहिरंग वर्ग की भाषाओं की विशेषता है जो मध्यवर्ती भाषाओं में अप्राप्य-सी है।

प्राकृत वैयाकरणों ने 'किदउ' प्रत्यय के विषय में लिखा है कि यह मध्य और उत्तर गंगा दोआब में बोली जानेवाली शौरसेनी प्राकृत में अवशिष्ट रहा, किन्तु लहँदा में इसके अस्तित्व से प्रकट है कि यह उत्तर-पश्चिमी भारत के एक बहुत बड़े भाग में परवर्ती काल तक बना रहा होगा।

१. पंजाबी अध्ययन की सीमित अवधि में मुझे यह कर्मवाच्य प्रायः नहीं मिला। टिस्डल के व्याकरण के सिवाय सभी व्याकरणों में लहँदा को पंजाबी के अंतर्गत सम्मिलित किया गया है। ई० पी० न्यूटन ने इस कर्मवाच्य का उल्लेख किया है, किन्तु उनके सब उदाहरण 'जनम साखी' से लिये गये हैं जो लहँदा कृति है।

में सामान्य है, जबकि सिंधी में एक श्लिष्ट कर्मवाच्य रूप प्रचलित है। पश्चिमी हिन्दी में यह कर्मवाच्य एक-दो तथाकथित शिष्ट आज्ञार्थ रूपों में अवशिष्ट है (यदि इसे अवशेष कहा जा सके)।

सार्वनामिक प्रत्यय

बाहरी वृत्त की भाषाओं का एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण लक्षण है क्रियाओं में सार्वनामिक प्रत्यय जोड़ने का स्वतन्त्र प्रयोग (यह ऐसी प्रक्रिया है जो केन्द्रीय वर्ग की भाषाओं में अपरिचित है)। जैसे लहँदा में **आखेउस**, उसने (उस) कहा (**आखेआ**)। पंजाबी की माझी बोली में भी ये पाये जाते हैं। जैसे **आखिउस**, उसने कहा। धुर पूर्व में शायद ही ये सुनाई पड़ते हों।

शब्द-भंडार

अन्तिम बात। लहँदा और सिन्धी की तरह पंजाबी ऐसी भाषा है जिसके शब्द-भंडार में मुख्यतः शुद्ध तद्भव शब्द अधिक हैं। तत्सम शब्दों का अभाव स्पष्ट है; और इस विषय में पांच नदियों के इस देश की भाषा संस्कृत और देशी भाषा के जारज मिश्रण से नितान्त भिन्न है जिसे कलकत्ता और बनारस के पण्डित साहित्यिक मान बैठे हैं। यह घरेलू भाषा है जो आज के पंजाब की सुगंधि से सुवासित है। बीम्स ने ठीक ही कहा है[1]—

"पंजाबी और सिंधी में गेहूँ के आटे की महक और झोंपड़ी के धुएँ की गंध है जो भारत के पूर्वी भागों की पण्डित-यब्ध एवं चर्मावृत भाषाओं द्वारा प्रस्तुत किसी वस्तु से अधिक स्वाभाविक और मनोहारी है।"

किन्तु घरेलू होते हुए भी, यह न समझ लेना चाहिए कि यह साहित्य के अयोग्य अनगढ़ भाषा है। यह इतनी अनगढ़ नहीं है जितनी कवि बर्न्स की विस्तृत निम्नभूमि की स्काच भाषा थी। पंजाबी अपने ही शब्द-भंडार के द्वारा किसी विचार को अभिव्यक्त करने में समर्थ है, एवं गद्य और पद्य दोनों के लिए सूपयुक्त है। यह सच है कि इसमें साहित्य कम है, किन्तु इसका कारण यह है कि यह अपनी निकट सम्बन्धिनी हिन्दुस्तानी द्वारा आच्छादित रही है और यह भी कि शताब्दियों तक पंजाब दिल्ली

१. तुलनात्मक व्याकरण, भाग १, पृ० ५१।

से शासित रहा है, किन्तु लोकगाथाओं से, जो सर्वत्र प्रचलित हैं, इसकी क्षमताओं का पता चल जाता है। वर्तमान काल में भी इसको हिन्दुस्तानी की एक बोली मात्र मानकर (यद्यपि यह ऐसी है नहीं), और स्वतन्त्र भाषा के रूप में इसकी सत्ता से इन्कार करके, इसे तिरस्कृत करने की प्रवृत्ति रही है। इसके दावे का प्रमुख आधार इसकी अपनी ध्वनिशास्त्रीय पद्धति और हिन्दी में न पाया जाने वाला इसका अपना शब्द-भंडार है, और ये दोनों विशेषताएँ इसकी प्राचीन लहँदा नींव के कारण से हैं। पंजाबी के कुछ सामान्य शब्द हिन्दुस्तानी में नहीं मिलते। जैसे **पिउ**, पिता; **माउँ**, माँ; **आखना**, कहना; **इक्क**, एक; **साह**, साँस; **तिह**, तृषा; और सैकड़ों अन्य शब्द जो सभी बाहरी वृत्त की भाषाओं में पाये जाते हैं।

पंजाब का प्राचीन इतिवृत्त

केन्द्रीय और पश्चिमी पंजाब की भाषाओं (पंजाबी और लहँदा) का मिश्रित स्वरूप इन क्षेत्रों के निवासियों के महाभारत में वर्णित चरित्र से, तथा पाणिनि व्याकरण के आनुषंगिक संदर्भों से, भली भांति व्यंजित होता है। यद्यपि मध्यदेश या गंगा दोआब से, जिस केन्द्र से संस्कृत सभ्यता का प्रसार हुआ, पंजाब दूर नहीं है, तो भी यहाँ के रीति-रिवाज आदि काल में ही मध्यदेश के रीति-रिवाजों से अत्यधिक भिन्न रहे हैं। बताया गया है कि एक काल में यहाँ के लोग अराजकता की अवस्था में रहते थे और दूसरे काल में उनके यहाँ कोई ब्राह्मण नहीं थे। मध्यदेश के कट्टर हिन्दू के लिए यह भयानक स्थिति थी। वे छोटे-छोटे गाँवों में रहते थे और ऐसे राजाओं द्वारा शासित थे जिनका जीवनक्रम पारस्परिक युद्धों से संचालित था। न केवल ब्राह्मण नहीं थे, जाति-पांति भी नहीं थी। जनता में वेद के प्रति कोई आदर नहीं था और लोग देवताओं को बलि नहीं देते थे। वे असभ्य और असंस्कृत थे, और मदिरा पीने एवं सब तरह का मांस खाने के आदी थे। उनकी स्त्रियाँ विशालकाय, पाण्डुर एवं व्यवहार में नीति-च्युत थीं और बहुविवाह करके रहती थीं एवं पुरुष का उत्तराधिकारी उसका अपना बेटा नहीं बल्कि उसकी बहन का बेटा होता था।[1] यह आग्रह करने की आवश्यकता

१. लिखते समय क्या लेखक के मन में जट्टों के रीति-रिवाजों का ध्यान था? उक्त उद्धरण महाभारत ८. ३०२० आदि से लिया गया है। महाभारत १. २०३३ में जार्तिक जाति का उल्लेख मिलता है, और ये लोग संभवतः वर्तमान जट्टों के पुरखा थे।

नहीं है कि यह वृत्तान्त प्रत्येक बात में सही था। यह सब शत्रु लोगों का कहना है; किन्तु, सच हो चाहे झूठ, इससे मध्यदेश और पंजाब की आदतों, रीतियों और भाषाओं के बीच की खाई का परिचय अवश्य मिल जाता है।

साहित्य

पंजाबी में बहुत कम साहित्य है। सबसे प्राचीन ग्रंथ, जिसको इस भाषा में लिखा बताया जाता है, सिखों का पवित्र, वेद **आदिग्रंथ** है; किन्तु, यद्यपि इस ग्रंथ की पाण्डु-लिपियाँ व्यापक रूप से गुरमुखी लिपि में लिखी जाती हैं, तथापि इसका बहुत थोड़ा भाग वास्तव में पंजाबी भाषा में है। यह नाना कवियों के पदों का संग्रह है जिनमें बहुत से पश्चिमी हिन्दी के किसी रूप में लिखे गये, और दूसरों ने मराठी तक में लिखे। सर्वप्रसिद्ध पंजाबी अंश **जपजी** है जो नानक, जिनका जन्म सन् १४६९ ई० में हुआ था, के प्रारम्भिक पदों का संग्रह है। विख्यात **जनमसाखी** (नानक का जीवन चरित) लहँदा में है, पंजाबी में नहीं। बाद के ग्रंथों में हैं **साखीनामा** (अंग्रेजी में सरदार अत्तरसिंह भदौरिया द्वारा अनूदित), मणिसिंह द्वारा रचित एक अन्य **जनमसाखी**, एवं छठे गुरु हरगोविन्द (१६०६-१६३८) का जीवन-चरित। इनमें कुछ संभवतः लहँदा में हैं, किन्तु मैं यह निश्चयपूर्वक नहीं कह सकता; क्योंकि मैंने किसी को भी देखा नहीं है। **वाराँ भाई गुरदासदा** अर्जुन (१५८१-१६०६ ई०) की गुरुआई के समय के पद्यों का संग्रह है जो (अमृतसर, १८७९) मुद्रित हो चुका है। ये पद्य एक विशिष्ट शैली में लिखे गये हैं जिसे 'वार' कहते हैं। वार का मूल अर्थ था युद्ध में मारे गये वीरों के उपलक्ष्य में शोकगीत, इससे कोई प्रशंसात्मक युद्धगीत। इन कविताओं का अभिप्राय है मानव-अन्तर में होने वाले पुण्य और पाप के युद्ध का वर्णन करना। आदिकालीन लौकिक साहित्य के नमूनों के रूप में डॉ० थार्नटन[1] ने **पारस भाग** (नैतिक उपदेशों का संग्रह), अकबर द्वारा चित्तौड़ के घेरे पर एक महाकाव्य और नादिरशाह के आक्रमण पर एक बहुप्रशंसित महाकाव्य, का उल्लेख किया है। परवर्ती साहित्य मुख्यतः संस्कृत, हिन्दी या फ़ारसी ग्रंथों के अनुवाद या अनुकरण में लिखा गया। इन अनुकर्ताओं में सबसे प्रसिद्ध हाशिम है जो रणजीतसिंह के समय में हुआ। **खैरमनुख** वैद्यक की यूनानी पद्धति की पद्यबद्ध निर्देशिका है।

१. देखिए 'पुस्तक-सूची' के अन्तर्गत उल्लिखित लेख।

उपरिलिखित साहित्य के अतिरिक्त पंजाब के चारण साहित्य अथवा लोक-साहित्य की ओर कुछ अधिक ध्यान दिलाने की आवश्यकता है। इसके अन्तर्गत कुछ वृत्त हैं जिन्हें लगभग महाकाव्य कहा जा सकता है। इनमें सबसे महत्त्वपूर्ण वे हैं जिनका सम्बन्ध प्रसिद्ध राजा रसालू, हीर-राँझा और मिरज़ा-साहिबाँ से है। वारिस शाह द्वारा प्रणीत 'हीर और राँझा' की कथा का रूपान्तर शुद्धतम पंजाबी का नमूना समझा जाता है। पंजाब के लोककाव्य की ओर यूरोपियन विद्वानों का पर्याप्त ध्यान गया है, और यह उचित भी है। इसमें इंग्लैंड और स्काटलैंड की सीमा-गाथाओं का पूरा लय और संगीत है। इस विषय में सर्वप्रसिद्ध कार्य है कर्नल सर रिचर्ड टेम्पल का बृहद् 'पंजाब की कथाएँ' (अंग्रेजी में)।

सीरामपुर के ईसाई प्रचारकों ने इंजील के नव विधान का पंजाबी संस्करण सन् १८१५ में प्रकाशित किया। तब से बाइबिल के अन्य भागों के कई संस्करण इस भाषा में निकल चुके हैं। दूसरा ईसाई साहित्य भी बहुत कुछ है।

पुस्तक-सूचियां

सीरामपुर के प्रसिद्ध ईसाई प्रचारक, कैरे ने सबसे पहले अपने व्याकरण, प्रकाशित १८१२ ई०, में पंजाबी भाषा का वर्णन किया। इससे पहले का उल्लेख जो मुझे प्राप्त हो सका है, एडेलुंग की पत्रिका मिथ्रिडेट्स (१८०८-१८१७) की दो संक्षिप्त सूचनाओं में हुआ है।

निम्नलिखित सूची पंजाबी से सम्बद्ध उन सभी कृतियों की है जो मेरे ध्यान में आयी हैं। एक-दो को छोड़कर, मैंने भारत में प्रकाशित पुस्तकों को संदर्भित नहीं किया। इन्हें श्री ब्लुम्हार्ट की सूचियों में, जिनका उल्लेख नीचे किया जायगा, देखा जा सकता है। अलबत्ता मैं **आदिग्रन्थ** के संस्करणों का यथेष्ट वृत्त दे रहा हूँ। मैंने पश्चिमी पंजाबी या लहँदा, जिसमें **जनमसाखी** और अन्य ग्रन्थ लिखे गये हैं, की रचनाओं का उल्लेख भी नहीं किया है। यह नितान्त भिन्न भाषा है जिसका सम्बन्ध सिन्धी और कश्मीरी से है।

(१) सामान्य (इनमें मूल ग्रन्थ भी सम्मिलित हैं)

आदि-ग्रन्थ—श्री गुरुग्रन्थ साहिब जी, अनेक संस्करण। मेरा ध्यान निम्नलिखित की ओर गया है। यदि अन्यथा संकेत न किया गया हो, तो वे गुरमुखी लिपि में हैं।

लाहौर, १८६४; वही, १८६८; वही, १८८१; गुजराँवाला, १८८२; लाहौर, १८८५; वही, १८८७; वही, १८८९; अमृतसर, १८९२; लखनऊ (देवनागरी लिपि), १८९३।

संकलन आदि—आदिग्रंथ से संगृहीत श्लोक। रचयिता, ९वें गुरु तेग़बहादुर। लाहौर, १८८७। **पोथी अनन्दु साहिब महला** (सिखों के भक्तिपूर्ण भजन), गुरु अमरदास द्वारा प्रणीत (आदिग्रन्थ के राग रामकली से संकलित पदों के साथ)। लाहौर, १८७३।

पञ्ज ग्रन्थ आदि--(आदि ग्रंथ से संकलित, सिखों की आठ भक्ति विषयक पुस्तकों का संग्रह)। लाहौर, १८७४; गुजराँवाला (फ़ारसी लिपि), १८७५; लाहौर, १८७८; वही, १८७९; गुजराँवाला (फ़ारसी लिपि), १८७९; लाहौर १८८१; वही, १८८२; वही, १८८५; वही, १८८६; अमृतसर (फ़ारसी लिपि), १८९५।

पोथी रहिरास—(आदिग्रन्थ और गुरु गोविन्दसिंह के ग्रन्थ से संकलित, सिखों की सायंकालीन प्रार्थनाओं का गुटका)। लाहौर, १८६७, १८६९, (आदि ग्रन्थ से अन्य उद्धरणों सहित) १८६९, १८७३, १८७४, (आदि ग्रन्थ से संकलित पदों के साथ, फ़ारसी लिपि) १८७४, १८७५, १८७८, १८७९; अमृतसर, १८९३।

पोथी जपजी—(नानक द्वारा प्रणीत, सिख भजनों और प्रार्थनाओं का संग्रह, आदिग्रन्थ का प्रथम अध्याय)। लाहौर, १८६५, १८६८, (फ़ारसी लिपि) १८७१, (फ़ारसी लिपि) १८७२, १८७३, (आदि ग्रन्थ से गृहीत नानक के अन्य पद्यों के साथ) १८७३, १८७४, (फ़ारसी लिपि) १८७४; अमृतसर, १८७५; कराची (खोजा-सिन्धी लिपि में), १८७५; लाहौर, १८७६, (नानक के अन्य पद्यों के साथ) १८७६, (बिहारीलाल द्वारा पंजाबी टीका सहित) १८७६; (फ़ारसी लिपि) सियालकोट, १८७६; लाहौर, १८७७, (मणिसिंह की टीका सहित) १८७७, (पण्डित सालग्रामदास की टीका सहित) १८७७; (फ़ारसी लिपि) सियालकोट, १८७७; (फ़ारसी लिपि) लाहौर, १८७८, १८७९, (मणिसिंह की टीका सहित) १८७९; (फ़ारसी लिपि) सियालकोट, १८७९; अमृतसर, १८८२; (हरिप्रकाश की **बोध अर्थावली** नामक टीका सहित) रावलपिंडी, १८८९; लाहौर,

(बिहारीलाल की टीका सहित) १८९१, (मणिसिंह की टीका सहित) १९००।

(जपजी का मूल पाठ ट्रम्प-कृत आदिग्रन्थ के अनुवाद के परिशिष्ट में दिया गया है।)

जपजी के अनुवाद। पाठ फ़ारसी लिपि में, साथ में हिन्दुस्तानी अनुवाद और टिप्पणियाँ। बाद में **जनम-साखी,** या नानक की जीवनी, एवं **गुरुविलास**, नानक के उत्तराधिकारियों का इतिवृत्त। लाहौर, १८७०। वही, लाहौर, १८७८; हिन्दुस्तानी में अन्तारेखीय अनुवादसहित, गुजराँवाला, १८७९। पटियाला के सरदार इत्तरसिंह-कृत भूमिका और हिन्दुस्तानी अनुवादसहित, गुजराँवाला, १८७९। जप-परमार्थ, पंजाबी पाठ का सम्पादन, साथ में लक्ष्मणप्रसाद ब्रह्मचारी द्वारा हिन्दी अनुवाद और टिप्पणियाँ, लखनऊ १८८७। एम० मैकालिफ द्वारा लिखित सिखों के नाम एक परिपत्र, दिनांक अमृतसर, सिदम्बर २४, १८९७। इसके साथ संलग्न है जपजी का अंग्रेजी में प्रयोगात्मक अनुवाद। न्यू ऐंग्लो-गुरमुखी प्रेस, अमृतसर से मुद्रित एक पत्र। जपजी का अनुवाद (अंग्रेजी), एम० मैकालिफ़ द्वारा। जर्नल आफ़ दि रायल एशियाटिक सोसाइटी, १९००, पृ० ४३ इत्यादि।

पोथी आसादी वार—(आदिग्रन्थ के राग आसा से संकलित पद। प्रातःकालीन ईशोपासना में जपजी तथा हजारेदे शब्द के बाद सिखों द्वारा दोहराये जाते हैं)। लाहौर, १८७३, (फारसी लिपि) १८७४, (फ़ारसी लिपि) १८७५, १८७६, १८७७। **दि आसा दी वार। सिखों की प्रातःकालीन प्रार्थना।** कृत एम० मैकालिफ़। **इण्डियन एन्टिक्वेरी,** भाग ३० (१९०१), पृ० ५३७ इत्यादि। (आसादी वार का अंग्रेजी में अनुवाद, संक्षिप्त भूमिका सहित।)

आदिग्रन्थ का अनुवाद—

ट्रम्प, डॉ अरनेस्ट—**दि आदि ग्रन्थ, ऑर दि होली स्क्रिप्चर्स आफ दि सिख्स,** मूल गुरमखी से अनुवाद, साथ में परिचयात्मक निबन्ध। लन्दन, १८७७। पिन्काट के अनुसार (देखिए नीचे) ट्रम्प ने कुल १५,५७५ पदों में से ५,७१९ का अनुवाद किया था।

आदि ग्रन्थ पर पुस्तकें—

पिनकॉट, फ्रेडरिक—**द अरेंजमेन्ट ऑफ़ दि हिम्ज ऑफ़ द आदि ग्रन्थ** (आदि

ग्रंथ के पदों का क्रम)। जर्नल आफ़ दि रायल एशियाटिक सोसाइटी, भाग १८ (१८८६), पृ० ४३७ इत्यादि।

विष्णुदास उदासी—**आदि ग्रन्थदा कोश**। आदि ग्रंथ का शब्दार्थ संग्रह। अमृतसर, १८९२। **सिख ग्रन्थ में आनेवाले शब्दों के अर्थ** (आदि ग्रन्थ के कठिन शब्दों का पंजावी में संग्रह)। कृत बाबा विशनदास। अमृतसर, १८९३।

मैकालिफ़, मैक्स आर्थर—**दि सिख रिलिजन, इट्स गुरूज, सेक्रिड राइटिंग्ज ऐण्ड आँथर्स** (सिख धर्म, उसके गुरु, धार्मिक रचनाएँ और लेखक), ६ भागों में। आक्सफ़ोर्ड, १९०९।

अन्य पुस्तकें, लेखकों के नामों के क्रम से, प्रत्येक लेखक की प्रथम कृति की तिथि के क्रम के साथ—

एडेलुंग, जोहन क्रिस्टोफ़—Mithridats oder allegemeine Sprachenkunde mit dem vatir unger als Sprachprobe in bey nahe fiinfhundert Sprachen und mundarten. बर्लिन, १८०६-१८१७। भाग १; पृ० १९५ पर लाहौर की स्थानीय बोली का, जिसे पंजाबी भाषा कहा गया है और जिसके बारे में नाम और इसके फ़ारसी- मिश्रित होने के अतिरिक्त कुछ भी ज्ञात नहीं था, एक इतिवृत्त। पृष्ठ २०१ पर पादरी शुल्ज़ द्वारा रूपान्तरित Gemeine Manjari zn Kasi में ईश- प्रार्थना है जो पंजाबी और विहारी का मिश्रित रूप है। भाग ४, पृ० ४८७, फ़ाटर के परिशिष्ट में इस भाषा का संक्षिप्त वृत्तान्त भी है।

एबट, मेजर, जे०—**आन दि बैलड्स ऐण्ड लैजण्ड्स आफ़ दि पंजाब** (पंजाब की गाथाएँ और कथाएँ), जर्नल ऑफ़ दि एशियाटिक सोसाइटी ऑफ़ बंगाल, वर्ष २३ (१८५४), पृ० ५९ (विषय का सामान्य बृत्तान्त) तथा पृ० १२३ (ए रिफ़ासि-मेन्टो ऑन दि लैज़ण्ड ऑफ़ रसालू)।

बीम्स, जॉन—**आउटलाइन्स ऑफ़ इंडियन फ़ाइलालोजी** (भारतीय भाषाशास्त्र की रूपरेखा), जिसके साथ भारतीय भाषाओं का वितरण प्रदर्शित करनेवाला एक मानचित्र भी है। कलकत्ता, १८६७।

„ —**ए कम्पैरिटिव ग्रामर ऑफ दि माडर्न एरियन लैंग्वेजिज ऑफ़ इण्डिया** (भारत की आधुनिक आर्य भाषाओं का तुलनात्मक व्याकरण), अर्थात् हिन्दी, पंजाबी, सिन्धी, गुजराती, मराठी, ओड़िया और बंगाली। तीन भाग। लन्दन, १८७२-७९।

श्रद्धाराम—**सिखांदे राजदी विथिआ**। सिख शासकों और पंजाब के वर्तमान प्रशासन का इतिहास। लुधियाना, १८६८। एक और संस्करण, लाहौर, १८९२। मेजर ऐच० कोर्ट द्वारा अनूदित, लाहौर १८८८। देखिए 'व्याकरण' के अन्तर्गत।

टॉलबॉर्ट, टी० डब्ल्यू० एच०—**दि डायलेक्ट ऑफ़ लुधिआना** (लुधियाना की बोली)। जर्नल आफ़ दि एशियाटिक सोसाइटी आफ़ बंगाल, वर्ष ३८ (१८६९), भाग १, पृ० ८३ इत्यादि।

ह्रार्नले, डॉ० ए० एफ़० आर०, सी० आई० ई०—**एसेज़ इन एड ऑफ़ कम्पेरेटिव ग्रामर ऑफ़ दि गौडियन लैंग्वेजिज़** (गौड़ भाषाओं के तुलनात्मक व्याकरण के सहायतार्थ निबन्ध)। जर्नल ऑफ़ दि एशियाटिक सोसाइटी आफ़ बंगाल, वर्ष ४१ (१८७२), भाग १, पृ० १२० इत्यादि।

,, ,—**दि लोकल डिस्ट्रिब्युशन एण्ड म्युचुअल अफ़िनिटीज ऑफ़ दि गौडियन लैंग्वेजिज़** (गौड़ भाषाओं का स्थानीय वितरण तथा पारस्परिक सम्बन्ध), कलकत्ता रिव्यू, वर्ष ६७ (१८७८), पृ० ७५२ इत्यादि।

,, ,—**ए ग्रामर ऑफ़ द ईस्टर्न हिन्दी कम्पेयर्ड विद द अदर गौडियन लैंग्वेजिज़** (अन्य गौड़ भाषाओं से तुलनाकृत पूर्वी हिन्दी का व्याकरण)। एक भाषा-मानचित्र तथा तिथि-तालिका सहित। लन्दन, १८८०।

अनेक लेखक—**दि रोमन उर्दू जर्नल** (पत्रिका)। लाहौर, १८७८-८३ (वर्ष १-६), इसमें पंजाबी भाषा की अनेक सुसम्पादित पाठ-पुस्तकें हैं।

स्टील, मिसेज एफ़० ए०, तथा टेम्पल, लेफ्टीनेन्ट (लेफ्टी० कर्नल सर) रिचर्ड कार्नक—**फ़ोकलोर इन दि पंजाब** (पंजाब में लोकविद्या)। एफ़० ए० एस० द्वारा संकलित, एवं आर० सी० टी० द्वारा टिप्पणियों से युक्त। इण्डियन ऐण्टीक्वेरी, वर्ष ९ (१८८०), पृ० २०५, २०७, २०९, २८०, ३०२; वर्ष १० (१८८१), पृ० ४०, ८०, १४७, २२८, ३३१, ३४७; वर्ष ११ (१८८२), पृ० ३२, ७३, १६३, १६९, २२६, २२९; वर्ष १२ (१८८३), पृ० १०३, १७५, १७६, १७७।

,, ,—**फ़ोकलोर फ्राम कश्मीर** (कश्मीर की लोकविद्या)। एफ़० ए० एस० द्वारा संकलित एवं आर० सी० टी० द्वारा टिप्पणियों से युक्त। इण्डियन एण्टीक्वेरी, वर्ष ११ (१८८२), आर० सी० टी० द्वारा राजा रसालू पर टिप्पणी, पृ० ३४६ इत्यादि पर।

स्टील, मिसेज़ एफ़० ए० तथा टेंपल, रि० का०,—**वाइड अवेक स्टोरीज़** (जीती जागती कहानियाँ)। पंजाब और कश्मीर की कहानियों का संग्रह। बम्बई, १८८४ (अनेक भाषा सम्बन्धी और अन्य टिप्पणियाँ)

स्टील, मिसेज़ एफ़० ए०,—**टेल्ज़ ऑफ़ दि पंजाब टोल्ड बाइ दि पीपल** (पंजाब की कहानियाँ लोगों के मुख से), जान लॉकवुड किप्लिंग सी० आई० ई० द्वारा चित्रित एवं आर० सी० टेम्पल की टिप्पणियों से युक्त। लन्दन, १८९४।

टेम्पल, लेफ्टीनेन्ट (लेफ्टीनेन्ट कर्नल सर) रिचर्ड कार्नक,— **नोट्स ऑन दि कण्ट्री बिट्वीन खोजक पास ऐण्ड लुगारी बारखान** (दर्रा खोजक और लुगारी बारखान के बीच के प्रदेश पर टिप्पणियाँ)। जर्नल आफ़ दि एशियाटिक सोसाइटी ऑफ़ बंगाल, वर्ष ४७, भाग २, पृ० ११३ इत्यादि।

" ,—**दि सस्सी पुन्नूं ऑफ़ हाशिम शाह** (हाशिम शाह का सस्सी पुन्नूं)। दि रोमन-उर्दू जर्नल (दे०), १८८१, वर्ष ४, जुलाई, पृ० १९-३१; अगस्त, पृ० ३४-४३; सितम्बर, पृ० १२-२० (इसमें इस महत्वपूर्ण काव्य का पूरा पंजाबी पाठ, सावधानी से अक्षरान्तर किया गया है)।

" ,—**मुहम्मेडन बिलीफ़ इन हिन्दू सुपरस्टिशन** (हिन्दुओं के अन्ध-विश्वासों में मुसलमानी विश्वास)। इण्डियन ऐण्टीक्वेरी, वर्ष १० (१८८१), पृ० ३७१ (इसमें पंजाबी लोकगाथाओं से उद्धरण दिये गये हैं)।

" ,—**ए सांग अबाउट सखी सरवर** (सखी सरवर से सम्बन्धित एक गीत)। कलकत्ता रिव्यू, वर्ष ७३ (१८८१), पृ० २५३ इत्यादि।

" ,—**नोट्स ऑन सम कॉइन लैजण्ड्स** (सिक्कों पर दी गयी गाथाओं पर टिप्पणी) इण्डियन ऐण्टीक्वेरी, वर्ष १०, १८८१, पृ० ९०।

" ,—**नोट्स ऑन मलिक उल-मौत** (मलिक-उल-मौत पर टिप्पणी)। इण्डियन ऐण्टीक्वेरी, वर्ष ११ (१८८१), पृ० २८९ इत्यादि।

" ,—**सम हिन्दू सांग्स ऐण्ड कैचिज़ फ्राम दि विलेजिज़ इन नार्दर्न इण्डिया** (उत्तरी भारत के गाँवों से संगृहीत कुछ हिन्दू गीत और टप्पे)। कलकत्ता रिव्यू, वर्ष ७४, भाग १ (१८८२), पृ० ३१६ इत्यादि। वर्ष ७५, भाग २ (१८८२), पृ० ४१ इत्यादि।

" ,—**सम हिन्दू फ़ोकसांग्स फ्राम दि पंजाब** (पंजाब के कुछ हिन्दू लोकगीत)। जर्नल ऑफ़ द एशियाटिक सोसाइटी ऑफ़ बंगाल, वर्ष ५१ (१८८२), भाग

१, पृ० १५१ इत्यादि। (भूमिका में इस भाषा पर भरपूर व्याकरणिक टिप्पणियाँ हैं।)

टेम्पल, लेफ्टीनेंट रिचर्ड कार्नक ,—**ऑनरिफ़िक क्लास-नेम्स इन दि पंजाब** (पंजाब में आदरसूचक जातिवाचक नाम)। इण्डियन ऐण्टीक्वेरी, वर्ष ११ (१८८२), पृ० ११७ इत्यादि।

„ ,—**ए पंजाब लैजण्ड** (पंजाब की एक गाथा)। इण्डियन ऐण्टिक्वेरी, वर्ष ११ (१८८२), पृ० २८९ इत्यादि।

„ ,—**सारिका, —मैना** KEPKION। इण्डियन ऐण्टिक्वेरी, वर्ष ११, १८८२, पृ० २९१ इत्यादि।

„ ,—**ट्वाईस टोल्ड टेल्स रिगार्डिंग दि अखुंद ऑफ़ स्वात** (स्वात की अखुंद जाति की पुनःकथित कहानियाँ)। इण्डियन ऐण्टिक्वेरी, वर्ष ११ (१८८२), पृ० ३२५ इत्यादि।

„ ,—**सांग्स ऑफ़ दि पीपल** (लोकगीत)—दि सिविल ऐण्ड मिलिटरी गज़ट, ४ जुलाई, १८, १९ अगस्त, १३ सितम्बर, १८८२; १९ जनवरी, १०, २४ फरवरी, २१ मार्च, ६ अप्रैल, २६ जुलाई, १८८३। (पंजाबी में, अंग्रेज़ी अनुवाद सहित)।

„ ,—**फ़ोकलोर ऑफ़ दि हेडलेस हार्समैन इन नार्दर्न इण्डिया** (उत्तरी भारत में अशीर्ष घुड़सवार की लोककथा)। कलकत्ता रिव्यू, वर्ष ७७ (१८८३), पृ० २६० इत्यादि (इसमें कुछ पंजाबी पद्य हैं)।

„ ,—**सम नोट्स अबाउट राजा रसालू** (राजा रसालू के बारे में कुछ टिप्पणियाँ)। इण्डियन ऐण्टीक्वेरी, वर्ष १२ (१८८३), पृ० ३०९ इत्यादि। देखिए स्टील, मिसेज एफ़० ए० भी।

„ ,—**ए डिसर्टेशन ऑन दि प्रापर नेम्स ऑफ़ पंजाबीज़, विद स्पेशल रेफ़रेंस टु दि प्रापर नेम्स आफ़ विलेजिज़ इन ईस्टर्न पंजाब** (पंजाबियों के व्यक्तिवाची नामों पर एक प्रबन्ध, पूर्वी पंजाब के नामों के विशिष्ट सन्दर्भ सहित)। बम्बई, १८८३।

„ ,—**ऐन एग्ज़ेमिनेशन ऑफ़ दि ट्रेड डायलेक्ट ऑफ़ दि नक्काश ऑर पेन्टर्स ऑन पापिए माशे इन दि पंजाब ऐण्ड कश्मीर** (पंजाब और कश्मीर में कागजी काम के नक्काशों या चित्रकारों की व्यापारी बोली का परीक्षण)। जर्नल ऑफ़ द एशियाटिक सोसाइटी, बंगाल, वर्ष ५३ (१८८४), भाग १, पृ० १ इत्यादि।

टेम्पल, लेफ्टीनेन्ट (लेफ्टीनेन्ट कर्नल सर) रिचर्ड कार्नक,—**ऑन रसालू एण्ड सालिवाहन** (रसालू और शालिवाहन)। इण्डियन ऐण्टिक्वेरी, वर्ष १३ (१८८४), पृ० १७८ इत्यादि।

„ ,—**फ़ोक सांग्स फ्राम नार्दर्न इण्डिया** (उत्तरी भारत के लोकगीत)। कलकत्ता रिव्यू, वर्ष ७७ (१८८४), पृ० २७० इत्यादि।

„ ,—**फ़ोक सांग्स फ्राम नार्दर्न इण्डिया** (उत्तरी भारत के लोकगीत)। द्वितीय माला। कलकत्ता रिव्यू, वर्ष ७८ (१८८४), पृ० २७३ इत्यादि।

„ ,—**राजा रसालू**। कलकत्ता रिव्यू, वर्ष ७९ (१८८४), पृ० ३७९ इत्यादि।

„ ,—**दि लैजण्ड्स ऑफ़ दि पंजाब** (पंजाब की गाथाएँ)। बम्बई तथा लन्दन। भाग १, १८८४; भाग २, १८८५; भाग ३, १९००। दे० नीचे रोज़, एच० ए०।

„ ,—**दि डेहली दलाल्ज़ ऐण्ड देइर स्लैंग** (दिल्ली के दलाल और उनकी बोली)। इण्डियन ऐण्टिक्वेरी, वर्ष १४, १८८५, पृ० १५५ इत्यादि।

„ ,—**दि कॉइन्स ऑफ़ दि माडर्न नेटिव चीफ्स ऑफ़ दि पंजाब** (पंजाब के आधुनिक देशी राजाओं के सिक्के)। इण्डियन ऐण्टिक्वेरी, वर्ष १८, १८८९, पृ० ३२१ इत्यादि।

„ ,—**करप्शन्स ऑफ़ इंग्लिश इन दि पंजाब ऐण्ड बर्मा** (पंजाब और बर्मा में अंग्रेज़ी का विकार)। इण्डियन ऐण्टिक्वेरी, वर्ष २०, १८९१, पृ० ८९।

„ ,—**फ़ोकलोर इन दि लैजण्ड्स ऑफ़ दि पंजाब** (पंजाब की गाथाओं में लोक-विद्या)। इण्डियन ऐण्टिक्वेरी, वर्ष २९, १९००, पृ० ७८ इत्यादि, ८९ इत्यादि, १६८ इत्यादि।

„ ,—ऐण्ड पैरी, जे० डब्लू०,—**दि हिम्न्ज़ ऑफ़ दि नांगीपन्थ** (नांगीपन्थ के भजन)। इण्डियन ऐण्टिक्वेरी, वर्ष १३ (१८८४), पृ० १ इत्यादि।

देखिए फ़ैलन, डब्लू०, रोज़, एच० ए०, तथा स्टील, मिसेज़ एफ़० ए० भी।

श्यामाचरण गंगूली,—**दि लैंग्वेज क्वेस्चन इन दि पंजाब** (पंजाब में भाषा का प्रश्न)। कलकत्ता रिव्यू, वर्ष ७५ (सं० १५०) (१८८२)।

इबेटसन, [सर] डेनियल चार्ल्स जेल्फ़,—**आउटलाइन्स ऑफ़ पंजाब एथ्नॉग्राफ़ी**—धर्म, भाषा और जाति से सम्बन्धित पंजाब की जनगणना रिपोर्ट, १८८१, से उद्धरण। कलकत्ता, १८८३। (पंचम अध्याय—लोक-भाषाएँ, पृ० १५३ इत्यादि)।

थार्नटन, टामस एच०, सी० एस० आई०—**दि वर्नेक्युलर लिट्रेचर ऐण्ड फ़ोकलोर ऑफ़ दि पंजाब** (पंजाब का देशी साहित्य और लोकविद्या)। जर्नल ऑफ़ दि रायल एशियाटिक सोसाइटी, वर्ष १७ (१८८५), पृ० ३७३ इत्यादि।

मैक्लैगन, ई० डी०—**सेन्सस ऑफ़ इण्डिया** (भारत की जनगणना), १८९१। भाग १९, पंजाब और उसकी रियासतें। खण्ड १, प्रतिवेदन, कलकत्ता, १८९२। (अध्याय ९, लोगों की भाषाएँ, पृ० २०० इत्यादि।)

भाई हज़ारासिंह, ज्ञानी,—**दुल्हन दर्पण** (नज़ीर अहमद के हिन्दोस्तानी उपन्यास 'मिरातुल-अरूस' के आधार पर)। अमृतसर, १८९३ (तृतीय संस्करण)।

ब्लुमहार्ट, जे० एफ़०,—ब्रिटिश म्युज़ियम लाइब्रेरी में हिन्दी, पंजाबी, सिन्धी और पश्तो की मुद्रित पुस्तकों की सूचियाँ। लन्दन, १८९३।

" ,—इण्डिया आफिस लाइब्रेरी का सूचीपत्र। भाग २, खण्ड ३—हिन्दी, पंजाबी, पश्तो तथा सिन्धी पुस्तकें। लन्दन, १९०२।

रोज़, एच० ए०,—**सेन्सस ऑफ़ इण्डिया** (भारत की जनगणना), १९०१, भाग १७। पंजाब तथा उत्तर-पश्चिम सीमा प्रान्त। खण्ड १, प्रतिवेदन। शिमला, १९०२, अध्याय ६ (भाषा), पृ० २७८ इत्यादि।

" ,—**लैजण्ड्स फ्राम दि पंजाब** (पंजाब की गाथाएँ) (सर रिचर्ड टेम्पल की 'पंजाबी की गाथाएँ' की शृंखला में)। (मूल और अनुवाद)। इण्डियन ऐण्टिक्वेरी, सं० १, वर्ष ३५ (१९०६), पृ० ३००; सं० २, वर्ष ३७ (१९०८), पृ० १४९; सं० ३, वर्ष ३८ (१९०८), पृ० ८१; सं० ४, वही, पृष्ठ ३११; वर्ष ३९ (१९१०), पृ० १।

" ,—**ए ट्रिप्लेट ऑफ़ पंजाबी सांग्ज़** (पंजाबी गीतों की एक त्रिपदी) (मूल तथा अनुवाद)। इण्डियन ऐण्टिक्वेरी, वर्ष ३८ (१९०९), पृ० ३३।

" ,—**दि लैजण्ड** (कहानी) **खान ख्वास ऐण्ड शेरशाह चौगल्ला** (मुगल) **ऐट देहली**। (मूल तथा अनुवाद)। इण्डियन ऐण्टिक्वेरी, वर्ष ३८ (१९०९), पृ० ११३।

स्विनर्टन, रेवरेण्ड चार्ल्स,—**रोमैण्टिक टेल्स फ्रॉम दि पंजाब** (पंजाब की रोमानी कहानियाँ), अनेक स्रोतों से संगृहीत तथा सम्पादित। लन्दन, १९०३।

यंगसन, रेवरेण्ड जे०,—**दि चूहड़ाज़** (मेहतर)। इण्डियन ऐण्टिक्वेरी, वर्ष ३५, (१९०६), पृष्ठ ८२, ३०२, ३३७; वर्ष ३६ (१९०७), पृ० १९,

७१, १०६, १३५। (इसमें मेहतर लोगों के पंजाबी में अनेक गीत संकलित हैं।)

(२) व्याकरण, कोश, छात्रोपयोगी पुस्तकें, लोकोक्ति-संग्रह सहित

केरी, डॉ० डब्लू०,—**ए ग्रामर आफ़ दि पंजाबी लैंग्वेज** (पंजाबी भाषा का व्याकरण)। सीरामपुर, १८१२।

लीच, लेफ़्टीनेन्ट (मेजर, सी० बी०) राबर्ट,—**एपिटोम ऑफ़ दि ग्रामर्स ऑफ़ दि ब्रहुइकी, द बलोचकी ऐण्ड पंजाबी लैंग्वेजिज़...** (ब्रहुइ, बलोची तथा पंजाबी भाषाओं के व्याकरण का सार)। जर्नल ऑफ़ द एशियाटिक सोसाइटी ऑफ़ बंगाल, वर्ष ७ (१८३८), पृ० ७११ इत्यादि। पुनर्मुद्रित, कलकत्ता, १८३८। एक और प्रति, बॉम्बे ज्याग्राफ़िकल सो० की कार्यवाही में, भाग १ (१८३८)। **ए ग्रामर ऑफ़ दि पंजाबी लैंग्विज** (पंजाबी भाषा का व्याकरण), बम्बई १८३८। सिन्ध, अफगानिस्तान और पास के देशों में, दूत के रूप में सन् १८३५-३६, ३७ में नियुक्त सर ए० बर्न्स, लेफ्टीनेन्ट लीच, डॉ० लार्ड तथा लेफ्टीनेन्ट वुड द्वारा सरकार को प्रस्तुत किये गये राजनीतिक, भौगोलिक तथा व्यापारिक प्रतिवेदनों और पत्रों की सं० १२ के रूप में, **ग्रामर्स ऑफ़ दि ब्रहोरेकी, बीलूची एण्ड पंजाबी लैंग्वेजिज़** (ब्रहुई, बलूची और पंजाबी भाषाओं के व्याकरण) शीर्षक से पुनर्मुद्रित। कलकत्ता, १८३९।

जैन्वीयर, रेवेरेण्ड एल०,—**ईडियॅमैटिक सेन्टेन्सिज़ इन इंग्लिश ऐण्ड पंजाबी** (अंग्रेजी और पंजाबी के मुहाविरेदार वाक्य)। लुधियाना, १८४६। दे० न्यूटन, रेवरेण्ड जे० भी।

स्टार्की, केप्टन सैमुअल क्रॉस, तथा बुस्सावा सिंग,—**ए डिक्शनरी, इंग्लिश ऐण्ड पंजाबी**। साथ में व्याकरण की रूपरेखा, अंग्रेजी-पंजाबी वार्तालाप, व्याकरणिक तथा व्याख्यात्मक टिप्पणियाँ। कृत केप्टन स्टार्की, सहायक बुस्सावा सिंग। कलकत्ता, १८४९।

न्यूटन, रेवरेण्ड जे०,—**ए ग्रामर ऑफ़ दि पंजाबी लैंग्वेज** (पंजाबी भाषा का व्याकरण), साथ में परिशिष्ट। लुधियाना, प्रथम संस्करण, १८५१; द्वितीय, १८६६; तृतीय, १८९३। परिशिष्ट १ में अंक और पंचांग। परिशिष्ट २ में पंजाबी से उद्धरण—(१) पंजाबी रीति-रिवाज, (२) नानक की जीवनी से एक

उद्धरण, (३) पंजाबी लोकोक्तियों का, एक देशवासी की व्याख्या सहित, संकलन।

न्यूटन, रेव० जे० तथा जैन्वीयर, रेवरेण्ड एल०,—**ए डिक्शनरी ऑफ़ दि पंजाबी लैंग्वेज** (पंजाबी भाषा का कोश), लुधियाना मिशन की एक समिति द्वारा प्रणीत। लुधियाना, १८५४। (इस कोश का आधार न्यूटन का शब्द-संग्रह था, और इसे जैन्वीयर तथा अन्य लोगों ने पूरा किया। पंजाबी शब्द गुरमुखी और रोमन लिपियों में, एवं गुरमुखी वर्णमाला के क्रम से, मुद्रित हैं।)

कनिंघम, सर अलेक्ज़ेण्डर,—**लदाक, फ़िज़िकल, स्टैटिस्टिकल ऐण्ड हिस्टारिकल, विद नोटिसिज़ ऑफ़ दि सर्राउंडिंग कण्ट्रीज़** (लद्दाख, भौगोलिक, सांख्यिक तथा ऐतिहासिक एवं आस-पास के देशों की सूचनाएँ)। लन्दन, १८५४। १५वें अध्याय में शब्दावलियाँ हैं....सिंध से घागरा तक की बोलियाँ...पंजाबी आदि।

कैम्बेल, सर जार्ज,—**द एथनालॉजी ऑफ़ इण्डिया**, न्यायाधीश कैम्बेल द्वारा। (परिशिष्ट ग, उत्तरी और आर्य शब्दों की तुलनात्मक तालिका....पंजाबी इत्यादि)। जर्नल ऑफ़ द एशियाटिक सोसाइटी ऑफ़ बंगाल, वर्ष ३५ (१८६६), भाग २, विशेषांक।

„ ,—**स्पेसिमेन्स ऑफ़ दि लैंग्वेजिज़ ऑफ़ इण्डिया** (भारतीय भाषाओं के नमूने) जिसमें बंगाल, मध्यप्रान्त और पूर्वी सीमा के आदिवासियों की भाषाओं के नमूने भी सम्मिलित हैं। कलकत्ता, १८७४। (पृ० २४ इत्यादि पर लाहौर की पंजाबी का शब्द-संग्रह)।

बिहारीलाल,—**पंजाबी ग्रामर** (पंजाबी व्याकरण), लाहौर, १८६७।

„ ,—**पंजाबी व्याकरणसार** (पंजाबी भाषा का प्राथमिक व्याकरण) (पंजाबी में)। लुधियाना, १८६९। अन्य संस्करण, लाहौर, १८९५।

बेडन-पावल, बी० एच०,—**हैण्डबुक ऑफ़ द इकनामिक प्रॉडक्ट्स, एण्ड ऑफ़ दी मैन्युफ़ैक्चर्स एण्ड आर्ट्स ऑफ़ दी पंजाब** (पंजाब के आर्थिक उत्पादनों और शिल्प तथा कला की पुस्तिका), जिसके साथ एक सम्मिलित अनुक्रमणिका और पारिभाषिक देशी शब्दों की सूची भी है। दो भाग, रुड़की, १८६८ एवं लाहौर १८७२।

लयाल, [सर] जेम्स ब्रॉडवुड,—**रिपोर्ट ऑफ़ दि लैण्ड-रेवेन्यु सैटलमेन्ट ऑफ़ दी काँगड़ा डिस्ट्रिक्ट, पंजाब**....(जिला कांगड़ा, पंजाब, की भूमिकर-व्यवस्था

का प्रतिवेदन), १८६५-७२। लाहौर, १८७४। (परिशिष्ट ४, शब्द-संग्रह। ष्ट ५, लोकोक्तियाँ।)

ड्रीड, फ्रेडरिक,—**दि जम्मू ऐंड कश्मीर टेरिटरीज़** (जम्मू और कश्मीर प्रान्त)। भौगोलिक वृत्तान्त। लन्दन, १८७५। डोगरी का इतिवृत्त, पृ० ४६३ इत्यादि; डोगरी लिपि वर्णित, पृ० ४७१। परिशिष्ट १ (पृ० ५०३ इत्यादि) में डोगरी व्याकरण।

मुहम्मद अब्दुल ग़फ़ूर,—**ए कम्प्लीट डिक्शनरी ऑफ़ दि टर्म्स यूज़्ड बाइ दि क्रिमिनल ट्राइब्ज़** (अपराधी जातियों द्वारा प्रयुक्त शब्दों का सम्पूर्ण कोश)। साथ में प्रत्येक जाति का संक्षिप्त इतिहास और उसके सदस्यों के नाम और निवासस्थान। लाहौर, १८७९, दे० लीटनर, जी, डब्लू०।

लीटनर, जी० डब्लू०,—**ए कलेक्शन ऑफ़ स्पेसिमेन्ज़ ऑफ़ कमर्शल ऐण्ड अदर एल्फ़बेट्स ऐण्ड हैण्डराइटिंग्ज़, ऐज़ आलसो ऑफ़ मल्टिप्लिकेशन टेबल करेंट इन वेरियस पार्ट्स ऑफ़ दि पंजाब, सिंद ऐण्ड दि नार्थ-वेस्ट प्राविन्सिज़** (व्यापारी और अन्य वर्णमाला तथा हस्तलेखों के नमूनों और पंजाब, सिंध तथा उत्तर पश्चिमी प्रान्तों के विविध भागों में प्रचलित पहाड़ों का संग्रह)। लाहौर, तिथि अज्ञात।

" ,—**ए डिटेल्ड अनैलिसिज़ ऑफ़ अब्दुलग़फ़ूर्स डिक्शनरी ऑफ़ दि टर्म्स यूज़्ड बाइ क्रिमिनल ट्राइब्ज़ इन दि पंजाब** (पंजाब में अपराधी जातियों द्वारा प्रयुक्त शब्दों के अब्दुलग़फ़ूर के कोश का विस्तृत विश्लेषण)। लाहौर, १८८०। दे० ऊपर मुहम्मद अब्दुल ग़फ़ूर।

श्रद्धाराम पण्डित,—**पंजाबी बातचीत**। लुधियाना, १८८४।

वाकर, टी० जी०,—**फ़ाइनल रिपोर्ट ऑन दि...सैटलमेन्ट...ऑफ़ दि लुधिआना डिस्ट्रिक्ट इन दि पंजाब** (पंजाब में लुधियाना जिले के बन्दोबस्त का अन्तिम प्रतिवेदन)। कलकत्ता, १८८४। (परिशिष्ट १४, शब्दसंग्रह तथा लोकोक्तियाँ)।

विल्सन, जे०,—**फ़ाइनल रिपोर्ट ऑन दि रिवीज़न ऑफ़ सैटलमेंट ऑफ़ सिरसा डिस्ट्रिक्ट इन दि पंजाब** (पंजाब के ज़िला सिरसा के बन्दोबस्त के पुनरीक्षण का अन्तिम प्रतिवेदन)। कलकत्ता, १८८४। (परिशिष्ट २ में ज़िला सिरसा में बोली जानेवाली पंजाबी और बागड़ी बोलियों का वर्णन, साथ में पद्य, लोकोक्तियाँ और वचन)।

फैलन, एस० डब्लू०, पी-एच० डी०; टेम्पल, केप्टन (लेफ़्टीनेन्ट कर्नल सर) रिचर्ड कार्नक एवं लाला फ़कीरचन्द वैश,—**ए डिक्शनरी ऑफ़ हिन्दुस्तानी प्रॉवर्ब्ज** (हिन्दुस्तानी लोकोक्ति कोश), जिसमें अनेक मारवाड़ी, पंजाबी, मगही, भोजपुरी तथा तिरहुती लोकोक्तियाँ, वचन, चिह्न, सूक्तियाँ, सिद्धान्त-वाक्य और उपमाएँ संकलित हैं। कृत स्वर्गीय एस० डब्लू० फैलन। सम्पादित तथा संशोधित आर० सी० टेम्पल, साहाय्यकृत् लाला फकीरचंद। बनारस तथा लन्दन १८८६।

कोर्ट, मेजर एच०,—**हिस्टरी आफ़ दि सिख्स** (सिखों का इतिहास); अथवा सिखाँ दे राज दी विखिआ। इसके साथ संक्षिप्त गुरमुखी व्याकरण। लाहौर, १८८८। दे० श्रद्धाराम, शीर्षक १, सामान्य के अन्तर्गत।

टिस्डल, रेवरेण्ड विलियम सेन्ट क्लेअर,—**ए सिम्प्लिफाइड ग्रामर एण्ड रीडिंग बुक ऑफ़ दि पंजाबी लैंग्वेज** (पंजाबी भाषा का सरलीकृत व्याकरण तथा पाठपुस्तक) लन्दन, १८८९।

मैकोनैकी, आर०,—**सिलेक्टिड एग्रिकल्चरल प्रॉवर्ब्ज** (चुनी हुई कृषि सम्बन्धी लोकोक्तियाँ), पंजाब की। टिप्पणियों के साथ सम्पादित। दिल्ली, १८९०।

भानुदत्त पण्डित,—**पंजाबी अखौताँ** (पंजाबी लोकोक्तियाँ), व्याख्या सहित। लाहौर १८९१।

डेन, एल० डब्लू०,—**फ़ाइनल रिपोर्ट ऑफ़ दि सैटलमेन्ट ऑफ़ गुरदासपुर डिस्ट्रिक्ट इन दि पंजाब** (पंजाब में ज़िला गुरदासपुर के बन्दोबस्त का अन्तिम प्रतिवेदन)। लाहौर, १८९२। (प्रतिवेदन के पहले एक शब्दसंग्रह दिया गया है)।

पर्सर, डब्लू० ई०,—**फ़ाइनल रिपोर्ट ऑफ़ दि . . . सैटलमेन्ट ऑफ़ दि जलंधर डिस्ट्रिक्ट इन दि पंजाब** (पंजाब में जिला जालंधर के बन्दोबस्त . . . का अन्तिम प्रतिवेदन)। लाहौर, १८९२। (परिशिष्ट १३, लोकोक्तियाँ। परिशिष्ट १४, शब्द-संग्रह)।

भाई मायासिंह,—**दि पंजाबी डिक्शनरी** (पंजाबी कोश), पंजाब सरकार के संरक्षण में मुंशी गुलाबसिंह ऐण्ड सन्स द्वारा निष्पन्न। भाई मायासिंह, सदस्य खालसा कालिज कौंसिल द्वारा संगृहीत तथा सम्पादित एवं डॉ० एच० एम० क्लार्क, अमृतसर, द्वारा पारित। पंजाब टैक्स्ट बुक कमेटी की ओर से। लाहौर, १८९५। पंजाबी के शब्द रोमन और गुरमुखी लिपियों में और अंग्रेजी के वर्णक्रम से दिये गये हैं।

डनलॉफ़ स्मिथ, जेम्स रावर्ट,—**फ़ाइनल रिपोर्ट ऑफ़ दि...सैटलमेन्ट आफ़ दि सियालकोट डिस्ट्रिक्ट इन दि पंजाब** (पंजाब में जिला सियालकोट के बन्दोबस्त.. का अन्तिम प्रतिवेदन)।...१८८८-१८९५। लाहौर १८९५। (परिशिष्ट १, शब्द-संग्रह)।

जवाहिरसिंह मुंशी,—**ए वोकेब्युलरी ऑफ़ टू थाउजेण्ड वर्ड्ज़ फ्राम इंग्लिश इन्टू पंजाबी** (अंग्रेजी से पंजाबी में दो हजार शब्दों का संग्रह)। लाहौर, १८९५।

अनाम,—ए गाइड टु पंजाबी (पंजावी निर्देशिका)। लाहौर, १८९६।

मुल (मूल) सिंह, हविलदार,—**ए हैण्डबुक टु लर्न पंजाबी** (पंजाबी शिक्षण पुस्तिका)। अमृतसर, १८९७।

सालिगराम, लाला,—**ऐंग्लो-गुरमुखी डिक्शनरी** (अंग्रेजी-गुरमुखी कोश)। लाहौर, १८९७।

सालिगराम, लाला,—**ऐंग्लो-गुरमुखी बोलचाल** (अंग्रेजी-गुरमुखी बोलचाल) (अंग्रेजी के वाक्य पंजाबी में)। लाहौर, १९००।

न्यूटन, रेवरेण्ड ई० पी०,—**पंजाबी ग्रामर** (पंजाबी व्याकरण), अभ्यास और शब्द-संग्रह सहित। लुधियाना, १८९८।

ओ' ब्राइन, ई०,—काँगड़ा गजेटियर में पिछले संस्करण के परिशिष्ट में काँगड़ा वादी की बोली पर टिप्पणियाँ, साथ में काँगड़ा जिले के विशिष्ट शब्दों का संग्रह।

ग्राहम बेली, रेवरेण्ड टी०,—**पंजाबी ग्रामर** (पंजाबी व्याकरण), वज़ीराबाद ज़िले में बोली जानेवाली पंजाबी का संक्षिप्त व्याकरण। लाहौर, १९०४।

" ,—**सप्लीमेन्ट्स टु दि पंजाबी डिक्शनरी** (पंजाबी कोश का परिशिष्ट), सं० १, जर्नल ऑफ़ द एशियाटिक सोसाइटी ऑफ़ बंगाल, भाग ५, न० स० (१९०९), पृ० ४७९।

" ,—**ए पंजाबी फ़ोनेटिक रीडर** (पंजाबी ध्वनिशास्त्रीय पाठपुस्तक), लंदन, १९१४। नीचे दे० कमिंग्ज़, रेवरेण्ड टी० एफ़० भी।

ग्रियर्सन, जी० ए०,—**ऑन दि माडर्न इण्डो-आर्यन एल्फ़बेट्स ऑफ़ नार्थवेस्टर्न इण्डिया** (उत्तर-पश्चिमी भारत की आधुनिक भारतीय आर्य लिपियों पर)। जर्नल ऑफ़ दि रायल एशियाटिक सोसाइटी, १९०४, पृ० ६७ इत्यादि।

रोज़, एच० ए०,—**सम कन्ट्रिब्युशन्स टु वर्ड्ज़ ए ग्लॉसरी ऑफ़ रिलिजस टर्म्स**

यूज्ड इन दि पंजाब (पंजाब में प्रयुक्त धार्मिक शब्दावली-संग्रह के विषय में कुछ योगदान)। इण्डियन ऐण्टिक्वेरी, वर्ष ३३ (१९०४), पृ० ११८।

रोज़, एच० ए०,—**नोट्स ऑन एन्शण्ट ऐडमिनिस्ट्रेटिव टर्म्स ऐण्ड टाइटल्स यूज्ड इन दि पंजाब** (पंजाब में प्रयुक्त प्राचीन प्रशासकीय शब्दों और उपाधियों पर टिप्पणियाँ)। इण्डियन ऐण्टिक्वेरी, वर्ष ३६ (१९०७), पृ० ३४८; वर्ष ३७ (१९०८), पृ० ७५।

" ,—**कॉण्ट्रिब्यूशन टु पंजाबी लेक्सिकॉग्राफ़ी** (पंजाबी कोशकला में योगदान)। प्रथम माला, इण्डियन ऐण्टिक्वेरी, वर्ष ३७ (१९०८), पृ० ३६०; वर्ष ३८ (१९०९), पृ० १७, ७४, ९८; द्वितीय माला, वही, पृ० २२१, २६५, २८२, ३३२; वर्ष ३९ (१९१०), पृ० २९; तृतीय माला, वही, पृ० २४२, २४७; वर्ष ४० (१९११), पृ० १९९, २३०, २५८, २७४, २८९, ३०५; वर्ष ४१, (१९१२), पृ० ४१, ९२, १५०, १७६, १९७, २१२, २४२, २६७।

कमिंग्ज़, रेवरेण्ड टी० एफ़०, एवं ग्राहम बेली, रेवरेण्ड टी०,—**पंजाबी मैनुअल ऐण्ड ग्रामर** (पंजाबी पोथी तथा व्याकरण; उत्तरी पंजाब की बोलचाल की पंजाबी की निर्देशिका), कलकत्ता, १९१२। (इसका विषय प्रमुखतः लाहौर से उत्तर और उत्तर पश्चिम में बोली जानेवाली पंजाबी है।)

लिपि

पंजाबी भाषा सामान्यतः गुरमुखी लिपि में लिखी बतायी जाती है; वास्तव में, 'गुरमुखी' नाम का प्रायः अत्यन्त मिथ्या प्रयोग भाषा के ही लिए किया जाता है। 'गुरमुखी' भाषा ऐसे ही नहीं है जैसे 'देवनागरी' नाम की कोई भाषा नहीं है। वस्तुतः अनेक भाषाएँ गुरमुखी में लिखी गयी हैं। आदिग्रन्थ, जो पूरा उस लिपि में लिखा गया है, वह पश्चिमी हिन्दी की किसी-न-किसी बोली में है, और उसमें मराठी तक के कुछ पद हैं।

पंजाब की सही लिपि लण्डा या 'पंगु' कहलाती है। यह उत्तरी भारत की महाजनी लिपि से सम्बद्ध है, और स्वर-ध्वनियों के लिए चिह्नों की अपूर्ण पद्धति की दृष्टि से उससे मिलती-जुलती है। स्वर-चिह्न प्रायः छोड़ दिये जाते हैं। कहा जाता है कि दूसरे सिख गुरु अंगद के समय (१५३८-१५५२ ई०) में, यह लण्डा एकमात्र लिपि थी जो देशी बोली को लिखने के लिए पंजाब में प्रयुक्त होती थी। अंगद ने देखा कि

लण्डा में लिखित सिख पद अशुद्ध रूप में पढ़े जा सकते हैं, अतः उन्होंने देवनागरी लिपि से (जिसका प्रयोग तब केवल संस्कृत लिखने में होता था) कुछ चिह्न लेकर और सिख मत के धार्मिक ग्रन्थों को लिपिबद्ध करने के योग्य बनाने के विचार से वर्णों के रूपों का संस्कार करके, इसका सुधार किया। उनके द्वारा परिष्कृत होने के कारण, इस लिपि का नाम **गुरमुखी**, अर्थात् गुरु के मुख से निःसृत लिपि, पड़ा। तब से इस लिपि का प्रयोग सिख ग्रन्थों के लिखने के लिए होता रहा है, और इसका व्यवहार, मुख्यतः उस मत के अनुयायियों में, विस्तार पाता गया है।

दूसरी ओर लण्डा लिपि सारे पंजाब में प्रचलित रही है और दुकानदारों द्वारा विशेष रूप से प्रयुक्त होती है।

लण्डा से बहुत मिलती-जुलती टाकरी या टांकरी लिपि है जो पंजाब के उत्तर में हिमालय में व्यवहृत होती है और जम्मू की राजलिपि डोगरी जिसका एक संशोधित भेद है। टाकरी हमें उत्तर में और आगे कश्मीर तक ले जाती है। जैसे गुरमुखी लण्डा का एक परिष्कृत रूप है, ऐसे ही यहाँ कश्मीर में हिन्दुओं द्वारा सभी कार्यों में प्रयुक्त शारदा लिपि पायी जाती है। यह टाकरी का एक परिष्कृत भेद है, और इतनी ही पूर्ण है जितनी देवनागरी। इन चार लिपियों का पारस्परिक सम्बन्ध बतलाने के विचार से, मैं अगले पृष्ठ में उन्हें साथ-साथ समानान्तर स्तम्भों में, दे रहा हूँ। लण्डा और टाकरी जगह-जगह थोड़ी-बहुत बदल जाती हैं, और जिस क्षेत्र में इनका क्रमशः व्यवहार होता है, मैंने उसके भरसक केन्द्रीय स्थलों से ये नमूने लिये हैं।[1]

१. डोगरी का पूर्ण विवरण आगे पृष्ठ ६१ आदि पर दिया गया है। लंडा और टाकरी के अन्य भेदों के लिए देखिए डॉ० लाइटनर का पुस्तकसूचियों के अन्तर्गत उल्लिखित 'नमूनों का संग्रह'। 'उत्तर पश्चिमी भारत की वर्तमान भारतीय आर्य लिपियों' पर इन पंक्तियों के लेखक के उस लेख से भी तुलना कीजिए जिसका उल्लेख उसी सूची में किया गया है।

गुरमुखी	लण्डा	टाकरी	शारदा	नागरी
ਅ				अ (आइड़ा)
ੲ				इ (ईडी)
ੳ				उ (ऊड़ा)
ਓ				ओ
ਸ				स
ਹ				ह
ਕ				क
ਖ				ख
ਗ				ग
ਘ				घ
ਙ				ङ
ਚ				च
ਛ				छ
ਜ				ज
ਝ				झ
ਞ		...		ञ
ਟ				ट
ਠ				ठ
ਡ				ड
ਢ				ढ
ਣ				ण
ਤ				त
ਥ				थ
ਦ				द
ਧ				ध
ਨ				न
ਪ				प
ਫ				फ
ਬ				ब
ਭ				भ
ਮ				म
ਯ		...		य
ਰ				र
ਲ				ल
ਵ				व
ੜ			...	ड़

जब कि शारदा लिपि अपने वर्णों के क्रम में और स्वरों की प्रतीक-पद्धति में देवनागरी का ठीक अनुसरण करती है; गुरमुखी, लण्डा और टाकरी के साथ, इन दोनों बातों में उससे कुछ अलग जा पड़ती है।

गुरमुखी में केवल एक संघर्षी व्यंजन ਸ है जो देवनागरी में स है। इसमें देवनागरी श और ष की तरह के कोई वर्ण नहीं हैं, क्योंकि दोनों की इसमें आवश्यकता नहीं पड़ती। जब श ध्वनि का चिह्न देना चाहते हैं, जैसी कि यह अरबी-फ़ारसी से आगत शब्दों में जान पड़ती है, तो ਸ के नीचे बिन्दु लगा देते हैं; अर्थात् ਸ਼।

वर्णमाला के क्रम में ਸ (स) और ਹ (ह) देवनागरी की तरह दूसरे व्यंजनों के अन्त में नहीं बल्कि उनके पहले, और स्वरों के तुरन्त बाद, आते हैं।

गुरमुखी में स्वरों की प्रतीक-पद्धति कुछ विचित्र है। इसमें तीन चिह्न हैं— ਅ, ੲ और ੳ, जिन्हें क्रमशः आइड़ा, ईड़ी और ऊड़ा कहते हैं। जब स्वर शब्द के आदि में हों तो इन चिह्नों का प्रयोग स्वरों की मात्राओं की टेक के रूप में होता है। इन टेकों के सहित वे आदि स्वर बनते हैं। ਅ (आइड़ा) का प्रयोग ਅ (अ), ਆ (आ), ਐ (ऐ) और ਔ (औ) के आदि रूपों की टेक बनाने के लिए होता है, जब कि अन्तिम तीन की मात्राएँ क्रमशः ਾ, ੈ और ੌ होती हैं। देवनागरी की तरह ਅ (अ) की कोई मात्रा नहीं होती। ੲ (ईड़ी) का प्रयोग ਇ (इ), ਈ (ई) और ਏ (ए) के आदि रूपों की टेक बनाने के लिए होता है और इनमें क्रमशः ਿ, ੀ और ੇ मात्राएँ होती हैं। ੳ (ऊड़ा) ਉ और ਊ के आदि रूपों की टेक होता है जबकि ੁ और ੂ क्रमशः मात्राएँ होती हैं। अन्त में, ੳ (ऊड़ा) की ऊपर वाली वक्र रेखा में थोड़ा परिवर्तन करके, उसका मुँह खोल देने से, ਓ प्राप्त होता है जो शब्द के आदि में ओ स्वर का काम देता है और इसकी मात्रा का रूप ੋ होता है।

इस प्रकार हमें गुरमुखी वर्णमाला में लिखे जानेवाले निम्नलिखित स्वर प्राप्त होते हैं—

(शब्द के आदि में)

ਅ	ਆ	ਇ	ਈ	ਉ	ਊ	ਏ	ਐ	ਓ	ਔ
अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ए	ऐ	ओ	औ

मात्राएँ

ਕ ਕਾ ਕਿ ਕੀ ਕੁ ਕੂ ਕੇ ਕੈ ਕੋ ਕੌ

क का कि की कु कू के कै को कौ

गुरमुखी व्यंजन नीचे दिये जा रहे हैं—

ਸ	स	ਹ	ह						
ਕ	क	ਖ	ख	ਗ	ग	ਘ	घ	ਙ	ङ
ਚ	च	ਛ	छ	ਜ	ज	ਝ	झ	ਞ	ञ
ਟ	ट	ਠ	ठ	ਡ	ड	ਢ	ढ	ਣ	ण
ਤ	त	ਥ	थ	ਦ	द	ਧ		ਨ	न
ਪ	प	ਫ	फ	ਬ	ब		भ	ਮ	म
ਯ	य	ਰ	र	ਲ	ल		व	ੜ	ड़

पंजाबी में प्रत्येक स्वर और व्यंजन का एक निश्चित नाम है। जैसे, मात्राओं में ा को आ-कन्ना, ि को इ-सिआरी, इत्यादि कहते हैं। इसी प्रकार, ਸ (स) को सस्सा, ਹ (ह) को हहा, इत्यादि कहते हैं। यहाँ पर ये नाम देना अनावश्यक है, क्योंकि इनका एक तो कोई व्यावहारिक उपयोग नहीं है, दूसरे इन्हें किसी भी पंजाबी व्याकरण में देखा जा सकता है।

अनुनासिक चिह्न दो हैं, अर्थात् ੰ जिसे टिप्पी कहते हैं और ਂ जिसे बिन्दी कहते हैं। टिप्पी ऐसे अक्षर के ऊपर लिखी जाती है जिसमें ऊ (की मात्रा),

ह्रस्व अ, इ या (मात्रा) उ हो। ਸ (स) से पहले इसका उच्चारण न् होता है। जैसे ਅੰਨ का उच्चारण अन्न-सा होगा। ਹ (ह) अथवा किसी स्वर से पहले अथवा शब्द के अन्त में, इसी की ध्वनि फ्रेंच शब्द bon में आये हुए न् की जैसी होती है और इसे स्वर के ऊपर ੰ (रोमन में ~) देकर प्रकट किया गया है। जैसे,

ਸਿੰਹ ਜਿੰਉ ਨੂੰ।

सिंह जिउ नूं।

किसी दूसरे व्यंजन से पहले इसकी ध्वनि उस व्यंजन के वर्ग के पंचमाक्षर की होती है। जैसे,

ਚੰਗਾ ਪੰਛੀ ਪਿੰਡ ਹਿੰਦੂ ਖੰਨਾ ਅੰਬ ਸੰਮਤ

चङ्गा पञ्छी पिण्ड हिन्दू खन्ना अम्ब सम्मत्

बिन्दी दीर्घ स्वरों; आ, ई, ए, ऐ, ओ, औ वाले अक्षरों के ऊपर, चाहे वे आदि में हों चाहे मात्रा रूप में, अथवा उ, ऊ के आदि रूप के ऊपर लिखी जाती है (उ, ऊ की मात्राओं के ऊपर टिप्पी होती है)। बिन्दी का उच्चारण भी वही है जो फ्रेंच शब्द bon में आये हुए न् का है और इसे अक्षरान्तर में ँ (रोमन में ~) करके लिखा जाता है। जैसे

ਬਾਂਸ ਅਸੀਂ ਏਲੋਂ।

बाँस, असीं, एलों।

प्रायः, जब यह शब्द के अन्त में या ह और स से पहले न हो, तो इसका उच्चारण टिप्पी की तरह होता है।

पंजाबी भाषा को बहुत कम संयुक्त व्यंजनों की आवश्यकता है। जो व्यापक रूप से पाये जाते हैं वे नीचे दिये जा रहे हैं—

ਸ ਮ ਨ ਹ ਲ ੜ ਗਯ ਸਥ ਤਯ ਸਮ

स्ट, म्ह, न्ह, र्ह, ल्ह, ढ़, ग्य, स्थ, त्य, स्म।

जब र संयुक्त व्यंजन का दूसरा वर्ण हो तो इसका रूप वक्र डैश का होता है, जैसे

ਸ੍ਰ ਕ੍ਰ ਖ੍ਰ ਗ੍ਰ ਤ੍ਰ (कुछ अधिक व्यापक) ਦ੍ਰ ਪ੍ਰ ਬ੍ਰ ਭ੍ਰ

स्र क्र ख्र ग्र, त्र द्र प्र ब्र भ्र

जब वर्ण का द्वित्व होता है तो ੱ चिह्न, जिसे 'अधिक' कहते हैं, उसके पहले शिरोरेखा के ऊपर लगाया जाता है। जैसे

ਸੱਪ ਗੱਦੀ ਅੱਸੂ ਪੱਥਰ

सप्प गद्दी अस्सू बिच्छू पत्थर

अन्य संयुक्त व्यंजन बस साथ-साथ रख दिये जाते हैं। जैसे

ਬਕਬਕੀ ਖੁਰਚਣ ਮਾਟਣਾ ਮਾਰਦਾ

बक्बकी खुर्चण माट्णा मार्दा

इनमें प्रथम अक्षर के क, र, ट, र के अन्तर्गत अ का उच्चारण नहीं होता।

पूर्वी पंजाब में, किन्तु माझ में नहीं, एक मूर्धन्य ळ-ध्वनि होती है जो लहँदा, देशी हिन्दोस्तानी, मध्य और पश्चिमी पहाड़ी, राजस्थानी, गुजराती, मराठी और ओड़िया में भी होती है। इसका संकेत साधारण वर्ण ਲ (ल) के दाहिने हाथ के निचले कोने में छोटा सा वक्र बिन्दु जोड़ देने से होता है। जैसे ਲ਼ (ळ)।

पश्चिमी हिन्दी की तरह इसमें भी शब्द के अन्तिम व्यंजन का अन्तर्निष्ठ अ उच्चरित नहीं होता।

ਵ (व) का उच्चारण अंग्रेजी के w की तरह और कभी-कभी v की तरह होता है। व अंग्रेजी की तरह ऊपर के दाँतों को निचले होठों पर दबाकर उच्चरित नहीं होता। अर्थात् दन्त्योष्ठ्य न होकर, यह शुद्ध ओष्ठ्य ध्वनि है, जो दोनों होठों को भींचने से और उनके बीच से श्वास निकालने से होती है। सम्बद्ध भाषाओं में इस वर्ण की ध्वनि इ और ए (ह्रस्व अथवा दीर्घ) से पहले प्रायः v की तरह और अन्य स्वरों से पहले w की तरह होती है। पंजाबी में यह नियम तभी लागू होता है जब यह वर्ण शब्द के मध्य में हो, किन्तु शब्द के आदि में यह नहीं चलता। यहाँ एकमात्र नियम रिवाज का जान पड़ता है, अतः मैंने संक्षिप्त व्याकरण के परिशिष्ट में भाई मायासिंह के कोश से संगृहीत इस वर्ण से आरम्भ होनेवाले ऐसे शब्दों की एक सूची दे दी है जिनमें व का उच्चारण v होता है। इस वर्ण से आरम्भ होने वाले अन्य पंजाबी शब्दों में इसका w उच्चारण होता है।[1]

१. दे० पृ० ५८ इत्यादि।

अभी तक हमने सिखों और हिन्दुओं द्वारा व्यवहृत वर्णमाला का उल्लेख किया है। याद रहे कि पंजाबी-भाषी क्षेत्र में मुसलमानों की बहुत बड़ी जनसंख्या है जो पंजाबी का उतना ही खुला व्यवहार करते हैं जितना उनके हिन्दू पड़ौसी। किन्तु ये लोग भाषा को लिखते समय प्रायः फारसी-अरबी लिपि का, जैसी कि वह हिन्दोस्तानी के लिए ढाली गयी है, प्रयोग करते हैं। इसकी कोई स्थानीय विशेषताएँ नहीं हैं।

पूर्वोल्लिखित सभी लिपियों में (लण्डा को छोड़कर) लिखे हुए नमूने अगले पृष्ठों में मिलेंगे। लण्डा के कोई नमूने नहीं मिले, और वह लिपि कुछ-एक वाक्यों से अधिक लिखाई के योग्य भी नहीं है। इसका पढ़ पाना उन लोगों के लिए भी, जो इसे लिखते हैं इतना कठिन है कि अशिक्षित दुकानदारों में हिसाब-किताब और इस तरह के काम के अतिरिक्त इसका व्यवहार नहीं के बराबर होता है।

व्याकरण

पंजाबी व्याकरण, प्रमुखतः हिन्दुस्तानी व्याकरण का अनुसरण करता है, इसलिए अधिक टिप्पणी की आवश्यकता नहीं है। उच्चारण की दृष्टि से, ह और कुछ एक महाप्राण व्यंजन मात्र ऐसे वर्ण हैं जिनकी विशेष सूचना देना आवश्यक है। लहँदा में इनका उच्चारण विचित्र रीति से होता है, और यही बात पंजाबी क्षेत्र के पश्चिमी जिलों में स्पष्ट है। इस उच्चारण का उत्तम वर्णन वह है जो ग्राहम बेली ने अपने वज़ीराबाद की बोली के व्याकरण में दिया है और जिसका सार-संक्षेप नीचे उद्धृत किया जा रहा है।

इन ज़िलों में, जब ह किसी शब्द के आदि में अथवा बलाघात-युक्त अक्षर से पहले आता है, तो इसकी एक तीव्र कण्ठ्य ध्वनि होती है, जो कुछ-कुछ अरबी के ع ऐन के सबल उच्चारण से मिलती-जुलती है। हम इसकी तुलना अंग्रेजी **हैम** के ग्रामीण उच्चारण **अ़ैम** से कर सकते हैं। इस प्रकार हिय्याँ, चारपाई की पाटियाँ, का उच्चारण अ़िय्याँ, और पिहाई, पिसाई का पिअ़ाई होता है।

अन्य स्थितियों में, अर्थात् जब यह शब्द के आदि में अथवा बलाघातयुक्त अक्षर से पूर्व नहीं होता, तब यह कठिनाई से सुना जाता है, या नहीं ही सुना जाता, किन्तु इसके कारण पूर्ववर्ती स्वर की तान ज़ोर से उठ जाती है और प्रायः शब्द का सुर तक बदल जाता है। जैसे, लाह, उतार, ला, लगा, से बहुत भिन्न ध्वनि है यद्यपि

उसमें ह् प्रायः अश्रवणीय है। इसी प्रकार **काह्ला**, उतावला, में पहला -आ- उच्च सुर से बोला जाता है, जबकि **काला**, श्याम, में इसका सुर साधारण है, यद्यपि **काह्ला** का ह् ध्वनित नहीं होता।

यही बातें सघोष महाप्राण व्यंजनों घ, झ, ढ, ध, भ, ण्ह, न्ह, म्ह, ढ़, ऱ्ह, व्ह आदि का अक्षरान्तर दिखाते हुए ह पर लागू होतीं हैं, किन्तु अघोष महाप्राण व्यंजनों ख, छ, ठ, थ, फ या श में नहीं। जैसे— **भ्रा**, भाई, का उच्चारण ब्॒रा; **घुमाँ**, घुमाँव का गुमाँ और **चन्हाँ**, चनाब नदी, का च॒नाँ करके होता है। दूसरी ओर, **कूढ़** में, जहाँ ढ़ बलाघातयुक्त स्वर के बाद में आता है, ह सुनाई नहीं देता, किन्तु ऊ का सुर **कूड़**, हल का जोड़, के ऊ की अपेक्षा अधिक ऊँचा है, और **बग्घी** (उच्चारण बेग्गी) में **बग्गी**, गोरी, की अपेक्षा अ का सुर अधिक ऊँचा है।

संज्ञाओं में, सबसे अधिक ध्यान देने योग्य विशेषताएँ ये हैं कि तिर्यक् बहुवचन के अन्त में -आँ होता है, सम्बन्ध-कारकीय प्रत्यय **दा** है, जो कि आकारान्त विशेषणों की भाँति, न केवल लिंग और वचन में, बल्कि कारक में भी उस संज्ञा के अनुरूप होता है जिससे उसका सम्बन्ध होता है।

क्रियाओं में, सहायक क्रियाओं के दो रूप उल्लेखनीय हैं। एक तो है **जे**, वह है। यह पंजाबी क्षेत्र के केवल पश्चिमी जिलों में सुना जाता है, और इसका सही-सही अर्थ पहले-पहल ग्राहम बेली ने उपरि-संदर्भित अपने वज़ीराबादी व्याकरण में बताया था। उत्पत्ति की दृष्टि से जे सहायक क्रिया (ए) से युक्त मध्यम पुरुष बहुवचन सर्वनाम है, और इसका ठीक अर्थ है 'तुम्हें या तुमसे है'। यह इस प्रकार के प्रयोगों में स्पष्ट है—

की मिळिआ जे, शब्दार्थ—क्या मिला तुम्हें है, अर्थात् तुम्हें क्या मिला? आदर्श पंजाबी में—**तुधनूँ की मिलिआ**।

की आखिआ जे, क्या कहा तुमने? आदर्श पंजाबी—**तुसीं की आखेआ**, तुमने क्या कहा? **की जे**, तुम्हें क्या हुआ?

साधारणतया, मध्यम पुरुष का संकेत अधिक प्रत्यक्ष नहीं है, और अनुवाद में, यदि कहना ही पड़े तो, इस प्रकार के शब्दों में कहना होगा कि 'मैं तुम्हें पूछता हूँ' या 'मैं तुम्हें कहता हूँ।' जैसे ऊपर वाले **की जे** का यह अर्थ भी है कि 'मैं तुमसे पूछता हूं कि क्या हो गया' (किसी को, आवश्यक नहीं कि तुम्हें)। इसी प्रकार—

ओत्थे दो जे—मैं तुम्हें कहता हूँ कि वहाँ दो हैं।
मैं आया जे—मैं तुम्हें कहता हूँ कि मैं आया हूँ।
साहब जे—मैं तुम्हें कहता हूँ कि साहिब हैं।

स्पष्ट है कि इन अन्तिम तीन उदाहरणों में 'मैं तुम्हें कहता हूँ कि' छोड़ा जा सकता है, और **जे** का रूप, जैसा कि उस व्याकरण में है, 'वह है' या 'वे हैं' हो सकता है। तथापि इसका प्रयोग केवल ऐसे वाक्यों में हो सकता है जैसे ऊपर दिये गये हैं।

सहायक क्रिया के भूतकाल का सामान्य रूप पुंल्लिग और स्त्रीलिंग दोनों के एकवचन के लिए और पुंल्लिग बहुवचन के लिए प्रायः **सी** होता है। साधारणतः बताया जाता है कि यह **सा** का स्त्रीलिंग रूप है, किन्तु अधिक सम्भावना यह है कि यह प्राकृत **आसी**, संस्कृत **आसीत्**, वह था, से सम्बद्ध किसी प्राचीन रूप का विकार है। संज्ञार्थक क्रिया के अन्त में सामान्यतः **णा** होता है (ना नहीं), यद्यपि-ना कुछ क्रियाओं के साथ अवश्य लगता है। भविष्यत् में कुछ अनियम हैं। कर्मवाच्य का एक रूप है जो कर्तृवाच्य धातु के साथ -ई- जोड़कर बनता है (दे० पृ० १९), किन्तु कुल मिलाकर क्रिया के रूप ग्रामीण हिन्दुस्तानी से मिलते-जुलते हैं। अतः विश्वास किया जाता है कि संलग्न संक्षिप्त व्याकरण के द्वारा आगे आनेवाले नमूनों की भाषा को समझने में विद्यार्थी को सहायता मिलेगी।

पंजाबी का संक्षिप्त व्याकरण

१. **संज्ञाएँ।** लिंग—यह हिन्दुस्तानी की तरह होता है। सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण अपवाद है 'राह' जो पंजाबी में पुंल्लिग है।

वचन और कारक—कर्ता कारक बहुवचन हिन्दुस्तानी के अनुरूप होता है। बहुवचन तिर्यक् -आँ- अन्त्य होता है।

एकवचन		बहुवचन	
मूल रूप	तिर्यक् रूप	मूल	तिर्यक्
मुण्डा, लड़का	मुण्डे	मुण्डे	मुण्डिआँ
बाणीआ, बनिया	बाणीएँ	वाणीएँ	बाणीआँ
मनुक्ख, मनुष्य	मनुक्ख	मनुक्ख	मनुक्खाँ
भाई, भाई	भाई	भाई	भाईआँ
काउँ, कौवा	काउँ	काउँ	कावाँ
पिउ, पिता	पिउ	पिउ	पेवाँ
धी, लड़की	धी	धीआँ, धीं	धीआँ, धीं
कन्ध, दीवार	कन्ध	कन्धाँ	कन्धाँ
माउँ, माँ	माउँ	मावाँ	मावाँ
विध्वा, विधवा	विध्वा	विध्वाँ	विध्वाँ

सम्बोधन के प्राय: रूप इस प्रकार हैं—ओ मुण्डिआ (एक व०), ओ मुण्डिओ; ओ बाणीआँ (या बाणीएँ) ओ बाणीओं; ओ भाईआ, ओ भाईओ; ओ कावाँ, ओ कावों (या काओं); ओ पेवा, ओ पेवों; ओ धीए, ओ धीओ; ओ कन्धे, ओ कन्धो; ओ मावें (अथवा माउँ), ओ मावों (अथवा माओं); ओ विध्वा, ओ विध्वाओ।

कभी-कभी सम्बोधन के स्थान पर कर्ता का प्रयोग होता है।

कुछ और कारक भी यदा-कदा मिल जाते हैं; अर्थात् ईकारान्त कर्तृकारक बहुवचन, जैसे **तुसीं लोकीं पाइआ**, तुम लोगों ने पाया, में; एकारान्त अधिकरण कारक एकवचन, जैसे **घरे**, घर में, में; **छावें** (छाउँ से), छाया में, में; ईकारान्त अधिकरण बहु-

वचन, जैसे **गुरमुखी अक्खरीं**, गुरुमुखी अक्षरों में; अपादान एकवचन-ओं, जैसे **घरों**, घर में; एवं अपादान बहुवचन -ईं, जैसे **हत्थीं**, हाथों से।

कारकीय परसर्ग निम्नलिखित हैं—

कर्ता—**नै** (बहुधा लुप्त)

सम्प्रदान-कर्म—**नूँ**

करण-अपादान—**ते, तों, थों, थीं, दों** (से)

सम्बन्ध—**दा**

अधिकरण—**विच्च** (में), **पुर** (पर); **पास, पाह** (पास); **नाल** (साथ)—इनमें बहुत-से सम्बन्ध-कारक तिर्यक् रूप पुंल्लिग के साथ प्रयुक्त हो सकते हैं, जैसे **घर-विच्च** अथवा **घरदे विच्च**, घर में।

टिप्पणी—सम्बन्ध-कारकीय 'दे' विभक्ति प्रत्यय है, परसर्ग नहीं। इसे बिना योजक चिह्न के लिखना चाहिए। यथा, **घरदा**, न कि **घर-दा**, घर का। इसी प्रकार कर्ता-कारकीय **नै**, और सम्प्रदान-कर्म-कारकीय **नूँ**; किन्तु **घर-पुर**, घर पर, योजक चिह्न के साथ लिखना चाहिए। सम्बन्ध कारक की रूपावली के बारे में देखिए नीचे 'विशेषण'।

विशेषण—आ और सम्बन्ध कारकीय परसर्गों में अन्त होने वाले विशेषणों की संगति लिंग, वचन और रूप में उनकी विशेष संज्ञाओं के साथ रहती है। जैसे, **निक्का मुण्डा**,[1] अच्छा लड़का; **निक्के मुण्डेनूँ**, अच्छे लड़के को; **ए नेक्किआ मुण्डिआ**, ओ अच्छे लड़के; **निक्के मुण्डे**, अच्छे लड़के; **निक्किआँ मुण्डिआँनूँ**, अच्छे लड़कों को; **ए निक्किओ मुण्डिओ**, ओ अच्छे लड़को; **निक्की कुड़ी**, अच्छी लड़की; **निक्की कुड़ीनूं**, अच्छी लड़की को; **ए निक्किए** कुड़ीए, ओ अच्छी लड़की; **निक्कीआँ कुड़ीआँ**, अच्छी लड़कियाँ; **निक्कीआँ कुड़ीआँनूं**, अच्छी लड़कियों को; **घोड़ेदा मूँह**, घोड़े का मुंह; घोडेदे **मूँहविच**, घोड़े के मुंह में; **घोड़ेदा** अक्ख, घोड़े की आँख; **घोड़ेदीआँ अक्खाँ-विच्च**, घोड़े की आँखों में। हिन्दुस्तानी पद्धति वाला सब तिर्यक् रूप पुल्लिग कारकों में -ए और सब स्त्रीलिंग कारकों के लिए -ई प्रत्यय भी प्रयुक्त होता है।

विशेषण की तुलनात्मक स्थितियाँ वैसी ही हैं जैसी अन्य भारतीय भाषाओं में। एवं, **इह उस-थों वडा है**, यह उससे बड़ा है; **इह सभनाँ-थों वडा है**, यह सबसे बड़ा है।

१. पंजाबी में 'निक्का' का अर्थ 'छोटा' होता है, 'अच्छा' नहीं।—अनुवादक

२. सर्वनाम

आपका सम्बन्धकारकीय रूप **आपणा** है। आदरसूचक 'आप' के अर्थ में इसका प्रयोग हिन्दुस्तानी से ग्रहण किया गया है। सामान्यत: मध्यम पुरुष का आदरसूचक सर्वनाम बहुवचन तुसीं है।

४

	मैं	तू	वह	यह (१)	यह (२)	जो (१)	जो (२)
एकवचन कर्ता	हौं (अप्र०) मैं	तूं	उह, ओह, ओहु, अहि	इह, एह	अह, आह, आहि	जो	जिहड़ा, जेहड़े
करण	मैं	तैं	उन, ओन, उहनै, आदि	इन, एन, इहनै आदि	....	जिण, जिहनै आदि	विशेषण की तरह नियमितत: रूपान्तरित
अपादान	मैं, किन्तु मैंने, मुझसे	तै (ते-ते)	उह, उस, ओस	इह, इस, एस, ऐस	मूल अपरिवर्तित	जिह, जिस	
सम्बन्ध	मेरा	तेरा	उहदा, उसदा, आदि	इहदा, इसदा, आदि	....	जिहदा, आदि	
बहुवचन कर्ता	असीं	तुसीं	ओह	एह	अह, आह, आहि	जो	
करण	असीं	तुसीं	उन्हीं, उन्होंनै, आदि	इन्हीं, इन्होंनै आहि	अहाँनै, आदि	जिन्हीं, जिन्हांनै	
अपादान	असां, सां	तुसाँ, तुहाँ*	उन्हाँ, ओन्हाँ	इन्हाँ, एन्हाँ	अहाँ, आहाँ	जिन्हां	
सम्बन्ध	असाडा, साडा	तुसाडा, तुहाडा*	उन्हांदा, आदि	इन्हांदा, आदि	अहाँदा आदि	जिन्हांदा	

* पंजाबी बोलचाल में तुहा, तुहाडा के स्थान पर त्वा, त्वाड्डा मिलता है।

	वह (१)	वह (२)	कौन (१)	कौन (२)	क्या ?	कोई	कुछ
एकवचन							
कर्ता	सो	तिहड़ा, तेहड़ा	कौण	किहड़ा, केहड़ा	की, किआ	कोई, काई	कुछ, किछ, कुझ, कुज्ज, कुह
करण	तिन, आदि	विशेषण की तरह नियमिततः रूपान्तरित	किन, आदि	विशेषण की तरह नियमिततः रूपान्तरित	काहनै	किने, किसेनै	कासेनै
अपादान	तिह, तिस		किह, किस		काह, कास	किसे	कासे
सम्बन्ध	तिहदा, आदि		किहदा, आदि		काहदा, आदि	किसेदा	कासेदा
बहुवचन							
कर्ता	सो	विशेषण की तरह नियमिततः रूपान्तरित	कौण	विशेषण की तरह नियमिततः रूपान्तरित	अव्यवहृत	कौण के बहुवचन की तरह	....
करण	तिन्हीं		किन्हीं, आदि				....
अपादान	तिन्हाँ		किन्हाँ				....
सम्बन्ध	तिन्हाँदा		किन्हाँदा				....

३. क्रियाएँ—क. सहायक क्रिया तथा अस्तित्वसूचक क्रिया

वर्तमान काल—मैं हूँ, आदि

	एकवचन		बहुवचन	
	पु०	स्त्री०	पु०	स्त्री०
उ०	हाँ, हाँगा, हैं	हाँ, हांगी, हैं	हाँ, हांगे, हैंगे	हाँ, हाँगीआँ
म०	हैं, हैंगा, एँ	हैं, हैंगी, एँ	हो, हों, होगे, हैगेओ	हो, ले, होगीआँ
अ०	है, हैगा, हैसु, हई, ई, ईं, ए, ने, जे।	है, हैगी, हैसु, हई, ई, ईं, ए, ने, जे।	हन, हन-ने, हैंगे, हैन, हैनी, हैनसु, ने, जे।	हन, हनगीआँ, हैंगीआँ, हैन, हैनी, हैनसु, ने, जे

भूतकाल—मैं था, इत्यादि।

	एकवचन		बहुवचन	
	पु०	स्त्री०	पु०	स्त्री
१ २ ३	सा, सागा, सी, सीगा, था	सी, सीगी, थी	से, सेगे, सी, सीगे, थे	सीआँ, सीगीआँ, थीआँ
एवं १	साँ, साँगा, है-साँ	साँ, साँगी, है-साँ	साँ, साँगे, है-से	साँ, साँगीआँ, हैसीआँ
२	है-सी	है-सी	है-से, सौ	है-सीआँ, सीओ
३	है-सी, साई	है-सी, साई	सन, सन-गे, सैन, सान, हैसन	सन, सन-गीआँ, सैन, सान, हैसन

है-साँ आदि के नकारात्मक रूप है—नही-साँ आदि बनते हैं। सी का नकारात्मक नसो अथवा था नसो भी होता है। नसो दोनों लिंगों और दोनों वचनों में प्रयुक्त होता है।

उक्त रूपों में से अधिकतर मात्र स्थानीय हैं। सामान्य रूप निम्नलिखित हैं—

	वर्तमान		भूतकाल			
	(उभयलिंग)		एकवचन		बहुवचन	
	एकवचन	बहुवचन	पुल्लिग	स्त्रीलिंग	पुल्लिग	स्त्रीलिंग
उ०	हाँ	हाँ	सा,सी	सी	साँ, सी, से	सीआँ
म०	हैं	हों, हो	सा, सी	सी	सौ, सी, से	सीआँ
अ०	है	हन	सा, सी	सी	सन, सी, से	सन, सीआँ

ख.—कर्तृवाच्य क्रिया

धातु,—**घल्ल**, भेज

संज्ञार्थक क्रिया (infinitive),— **घल्लणा, घल्लण**, भेजना

वर्तमान कृदन्त,—**घल्लदा**, भेजता

भूतकृदन्त,—**घल्लिआ**, भेजा

कर्तृवाची संज्ञा,—**घल्लणवाला**, भेजनेवाला

क्रियार्थक संज्ञा (gerund),—**घल्लियाँ**, भेजना

पूर्वकालिक (अपूर्णकालिक) कृदन्त,—**घल्ल, घल्लि, घल्लके** (कर, -करके), **घल्लि-के** (कर, करके)

टिप्पणी—यदि धातु के अन्त में ण, ड़, ळ अथवा र हो तो क्रियार्थक संज्ञा के अन्त में ना लगता है, णा नहीं। यथा **जाणना**, जागना; **मारना**, मारना।

स्वर अथवा ह में अन्त होनेवाली धातु का वर्तमान कृदन्त -न्दा लगाकर बनता है। यथा **आउन्दा**, आता; **रहिन्दा**, रहता; **खान्दा**, खाता; **गाहन्दा**, निराता; कभी-कभी वर्तमान कृदन्त -ना लगाने से बनता है, जैसे **देखदा** के स्थान पर **देखना**, देखता। –इ से अन्त होनेवाली और कुछ दूसरी धातुओं में -इआ की जगह -आ जोड़ने से भूतकृदन्त बनता है; जैसे **रहिआ**, रहा; **लब्भा**, पाया। आउ और आहु में अन्त होने वाली धातुओं में -उ का लोप हो जाता है; जैसे, **आउणा**, आना; **आइआ**, आया; **चाहुणा**, चाहना; **चाहिआ**, चाहा। उ वाली अन्य धातुओं में उ का व हो जाता है; जैसे **जीउणा**, जीना; **जीविआ**, जिया। इकारान्त अथवा उकारान्त धातुओं का इ, उ संभाव्य कृदन्त में लुप्त हो जाता; जैसे **रहिणा**, रह या रहि; **आउणा**, आ।

वर्तमान संभाव्य—मैं भेजूँ

	एकवचन	बहुवचन
उ.	घल्लां	घल्लिये
म.	घल्लें, घल्लीं (अप्र.)	घल्लो, घल्लों, घल्लिओ (अप्र.)
अ.	घल्ले	घल्लण

उ में अन्त होने वाली धातुओं में उ का व हो जाता है, जैसे **आवाँ**; अथवा लुप्त हो जाता है, जैसे **आआँ** में। अन्यपुरुष एकवचन में उ तथा अन्यपुरुष बहुवचन में -उण या -आण होता है। जैसे, **आवे**, आये, या **आऊ**, वह आये; **आवण, आण** या

आउण, वे आयें। इ में अन्त होनेवाली धातुओं में इ इस काल में लुप्त हो जाती है, जैसे **रहाँ**, मैं रहूँ। अन्य पुरुष बहुव० -इन में अन्त हो सकता है, जैसे **रहण** या **रहिण**। अन्य स्वरों में अन्त होनेवाली धातुओं में विकल्पतः -व लाया जाता है; **धोणा**, धोना; **धोआँ** या **धोवाँ**, मैं धोऊँ। ण अन्त में हो तो तृतीय बहुव० में -न- किया जाता है; जैसे **जाणना**, जानना; **जानण**, जानें।

आज्ञार्थक भेज, **घल्ल**, **घल्लीं**, **घल्लें** (अप्र०); भेजो, **घल्लो**, **घल्लिओ**। **घल्लीए**, **घालिए** (मारिए), की तरह के रूप हिन्दुस्तानी से ग्रहण किये गये हैं, शुद्ध पंजाबी के नहीं हैं।

भविष्यत् के रूप वर्तमान संभावनार्थ में गा (एकवचन पु०), गी (एकव० स्त्री०), गे (बहुव० पु०), गीआँ (बहुव० स्त्री०) जोड़ने से बनते हैं। उत्तमपुरुष बहुव० **घल्लांगे** है। अन्यपुरुष एकव० के वैकल्पिक रूप हैं **घल्लूगा**, **घल्लूगू**, **घल्लू**। क्रिया के लिंग, वचन और पुरुष उसके कर्ता से मेल खाते हैं, जैसे हिन्दुस्तानी में।

कालरचना वर्तमान कृदन्त और भूत कृदन्त के रूपों से होती है, जैसे हिन्दुस्तानी में। यथा **जो मैं घल्लदा**, यदि मैं भेजता; **मैं घल्लदा-हाँ**, मैं भेजता हूँ; **मैं घल्लदा-सी**, मैं भेजता था; **मैं आइआ**, मैं आया; **मैं घल्लिआ**, मैंने भेजा; **मैं आइआ-हाँ**, मैं आया हूँ; **मैं घल्लिआ-है**, मैंने भेजा है; **मैं आइआ-सी**, मैं आया था; **मैं घल्लिआ-सी**, मैंने भेजा था; इत्यादि।

सकर्मक क्रियाओं के भूतकृदन्त से बनने वाले कालों का ऐसा ही व्यवहार होता है, जैसा हिन्दुस्तानी में। संरचना कर्मवाच्य व्यक्तिसूचक भी हो सकती है, अव्यक्तिसूचक भी। जैसे, (व्यक्तिसूचक कर्मवाच्य) **उहनै इक्क चिट्ठी लिखी**, उसने एक चिट्ठी लिखी; (अव्यक्तिसूचक) **उन्हांनै कुड़ीनूँ मारिआ**, उसने लड़की को मारा।

ग. अनियमित क्रियाएँ--

अनियमित भूत कृदन्त

धातु	भूतकृदन्त
सिआण, पहचान	सिआता*
सीउ, सी	सीता
सौ, सो	सुत्ता*
कहि, कह	किहा*

निम्नोक्त तारांकित शब्द नियमित भी हो सकते हैं, जैसे **सिआणिआ**। प्राय: सर्वत्र क्रियार्थक संज्ञा (gerund) का रूप नियमित ही होता है। एवं, **खलो** का क्रियार्थक संज्ञा-रूप **खलोइआ** होता है। तथापि, निम्नलिखित क्रियार्थक संज्ञाएँ अनियमित हैं——

धातु—	भूतकृदन्त—
कर, कर	कीता*
खलो, खड़ा हो	खलोता
खड़, खड़ा हो	खड़ा
खड़ो, खड़ा हो	खड़ाता
खा, खा	काह्दा, खाधा
जण, जन	जाइआ, जैणा*
जा, जा	गिआ, गैआ
जाण, जान	जात्ता*
ठाण, ठान	ठाया*
ढहि, ढै, गिर	ढट्ठा, ढिट्ठा*
देख, देख	डिट्ठा, दिट्ठा*
दे, दे	दित्ता
धो, धो	धोता*
नहाउ, नहा	नहाता*
पहिन, पहन	पैधा*
पहुत, **पहुँच**, पहुँच	पहुता, पहुन्ता, पुइजा, पहुँचिआ
पछाण, पहचान	पछाता,* पछैणा*
परो, परो	परोता*
पाड़, फाड़	पाटा*
पी, पी	पीता
पीह, पीस	पीठा
पुचाउ, पहुँचा	पुचाता*
पै, **पौ**, पड़	पिआ, पईआ

फस, फँस	फाथा*
बंन्ह, बाँध	बद्धा*
बरस, बरस	बट्ठा*
मर, मर	मोइआ*
रहि, रह	रिहा*
रिंन्ह, पका	रिद्धा*
रो, रो	रुन्ना*
लाह, उतर	लत्था*
लिभाउ, ला	लिआन्दा,* आन्दा*
लै, ले	लिभा, लईआ, लीता, लित्ता
सीउ	सीआ
जा	जाया, जाइआ
दे	दिआ
नहाउ	नहाइआ, या नहातिआ
पहुत	पहुता, या पहुन्ता
पीह्	पीठा
पै	पिआ, या पईआ
लै	लिआ या लइआ

दे, दे का वर्तमान कृदन्त दिन्दा बनता है; इसका संभावनार्थ रूप है **दिया** या **देवा**; आज्ञार्थक एकवचन है **दिह**, बहुव० **दिओ** या **देवो**।

पै, पड़, का संभावनार्थ रूप इस प्रकार होता है—

	एकवचन	बहुबचन
उ.	पवाँ	पए
म.	पएँ ,पवें	पओ, पाओं, पवो, पवों
अ.	पए, पवे	पैण

लियाउ, ला, से बने भूतकृदन्त **लिआन्दा** और **आन्दा** का व्यवहार ऐसा होता है जैसा सकर्मक क्रियाओं का और कर्ता के साथ 'ने' लगता है, किन्तु नियमित कृदन्त **लिआइआ** का व्यवहार ऐसा होता है जैसा अकर्मक क्रिया का और इसके कर्ता के साथ 'ने' नहीं लगता।

लै, ले, से संभावनार्थ बनता है **लवाँ**, जिसका रूपान्तर उपरिलिखित **पवाँ** की तरह होता है।

भूतकृदन्त के निम्नलिखित स्त्रीलिंग रूप अनियमित हैं—

पु०	स्त्री०
किहा, कहा	कही
गिआ, गया	गई
रिहा, रहा	रही
लिआ, लिया	

होणा, होना, का वर्तमान कृदन्त **हुन्दा** बनता है। **आउणा**, आना, क्रिया का अपूर्णकालिक रूप प्रायः **आण-के** बनता है।

घ. कर्मवाच्य—कर्मवाच्य, हिन्दुस्तानी की तरह भूत कृदन्त के साथ **जाणा**, जाना, जोड़कर रूपान्तर करने से बन सकता है। जैसे, **मुण्डा मारा-गिआ**, लड़का मारा गया। **कुड़ी मारी-गई**, लड़की मारी गई। अथवा धातु के साथ -ई जोड़ी जाती है। जैसे ऊ **मारीदा -है**। यह रूप वस्तुतः भूतकृदन्त से बनने वाले कालों तक सीमित रहता है, और मुख्यतः पश्चिमी जिलों में सुना जाता है।

ङ.–प्रेरणार्थक क्रियाएँ—ये बहुत कुछ वैसी ही बनती हैं जैसी हिन्दुस्तानी में। प्रेरणार्थक के अतिरिक्त दोहरी प्रेरणार्थक क्रियाएँ होती हैं। जैसे, **सिखणा**, सीखना; **सिखाउणा**, **सिखलाउणा** या **सिखाळना**, सिखाना; **सिखवाउणा**, सिखवाना। **उठणा**, उठना; **उठाउणा**, उठाना; **उठवाउणा**, उठवाना; **जागणा**, जागना; **जगाउणा**, जगाना, **जगवाउणा**, जगवाना; **बैठणा**, बैठना; **बिठाउणा**, **बैठाउणा**, **बैठाळना**, **बिठाळना**, **बठाळना**, **बिठलाउणा**, बिठाना; **बिठवाउणा**, बिठवाना; **तुरना**, चलना, **तोरना**, चलाना, **तुरवाउणा**, चलवाना, **जळना**, जलना; **जाळना**, **जळाउणा**, जलाना; **टुट्टणा** या **तुट्टणा**, टूटना; **तोड़ना**, तोड़ना; **तुड़वाउणा**, तुड़वाना।

च. संयुक्त क्रियाएँ—ये वैसी ही बनती हैं जैसी हिन्दुस्तानी में। जैसे **भज्ज जाणा**, भाग जाना; **जा सकणा**, जा सकना; **मैं कम्म कर चुक्किआ हाँ**, मैं काम कर चुका हूँ; **असीं रोटी खा हटे**, हम रोटी खा हटे; **जाइआ करना**, जाया करना; **जाइआ चाहुणा**, जाया चाहना; **जाणे चाहुणा**, जाने चाहना; **जो तूँ रोटी खाणी चाहें**, यदि तू रोटी खाना चाहे; **बालक रोणे लग्गा**, बालक रोने लगा; **जाणे देणा**, जाने देना; **जाणे**

(या जाग:)पाएगा, जाने पायेगा; हस्सदा रहिणा, हँसता रहना; जान्दा रहिणा, जाता रहना (मरना); उह नच्चदे टप्पदे चलिआ आउन्दा-सा, वह नाचता-कूदता चला आता था; उह चलिआ जान्दा-सा, वह चला जाता था; उह चल्लिआ गिआ, वह चला गया।

छ. नकारात्मक——सामान्य नकारात्मक निपात हैं न, नाँ, नहीं, नाहीं, नाहि। आज्ञार्थ में प्रायः ना होता है; किन्तु नाहीं आदि भी प्रयुक्त होते हैं। मत का ग्रहण हिन्दुस्तानी से हुआ है और यह शुद्ध पंजाबी नहीं है। सहायक क्रिया के भूतकाल का नकारात्मक रूप न सी, न था, होता है जो लिंग, वचन या पुरुष के लिए परिवर्तित नहीं होता। कभी-कभी इसी अर्थ में था नसो मिलता है।

पंजाबी के शब्दों की सूची, जिनके आदि में व आता है——

वा, वायु
वाच, गाँव के कारीगरों पर लगनेवाला कर
वाचक, पाठक
वचाऊ, बचाव
वचाउणा, बचाना
वचावा, बचानेवाला
वछाई, बिछाई
वाछड़, बौछाड़
वडाणक, गेहूँ का एक प्रकार
वडबोल (वड़बोला), बड़बोला
वड्डा, बड़ा
वड्ढ, खेत जहाँ से कटाई हो गयी
वद्ध, बढ़
वाद्धा, लाभ
वड्ढी, घूस
वाड्ढी, कटाई और बढ़ई
वड्ढणा, काटना
वाद्धू, फालतू
वडेरा, बड़ा
वांढा, डेरा डालनेवाला
वढाई, कटाई
वधान, वृद्धि
वधाउणा, बढ़ाना
वधेरा, और अधिक
वाढी, कटाई या घूस
वधीक, अधिक
वाधू, अतिरिक्त
वढवाई, कटवाई
वढवाउणा, कटवाना
वडिआई, बड़ाई
वडिआउणा, बढ़ाना-चढ़ाना
वडफूलगी (वडफूली)
वाह, वाह!
वहड़ (वहिड़), पाड़ा
वाही, हल चलाना
वही, बही (खाता)

वहिण, वहाव या विचार
वहिणा, बहना
वहितर, सवारी या बारबरदारी का पशु
वहण, कृष्ट भूमि की ऊपरी परत
वाहणा (वाहुणा), हल चलाना
वैद, वैद्य
वैदण (वैदणी)
वैहण (वैहिण), बहाव
वैहणा, बैठना या बहना
वैर, शत्रुता
वैरन (वैरी), शत्रु
वैरान (वैरानी), उजाड़
वैस, वैश्य
वाज, आवाज़
वजाणा (वजौणा), बजाना
वज्ज-वजाके, धूम-धाम से
वजणा, बजना
वकालत
वकम, सैपन (रंगाई के लिए)
वाकम्बा (वखूम्बा), इस नाम का पेड़
वकमी, सैपन का
वकील
वक्ख, अलग
वक्कोंदी, ब्यानेवाली (गाय या घोड़ी)
वक्खो-वक्खी (वक्खरा), अलग-अलग
वल, बल
वाल, बाल, (समीर)
वला, बल्ली
वलाँ, की ओर, (से)
वलाइत (वलैत), दे० विलाइत
वलगन, चारदीवारी
वली, सन्त
वलणा, घेरना
वल्टोह (वल्टोहा, -हू,-ही), बटलोही
वण, एक पेड़ का नाम
वण्ज, वाणिज्य
वञ्झ, बाँस
वाँड़ (वाण), वाण (अथवा बाँध)
वडैच, एक जाट जाति
वर्गा, जैसा अथवा बल्ली
वरगलाणा (वरगलौणा), बहकाना
वारी, खिड़की अथवा बारी
वड़ी, बड़ी (संज्ञा)
वरिआम, वीर
वरिआमगी, वीरता
वर्का, पन्ना
वर्म, दुःख या पीड़ा
वर्मा, (बढ़ई का) बरमा
वर्मी, बामी अथवा छोटा बरमा
वर्त, व्रत या भाग
वर्तारा, बर्ताव या भाग
वर्ताउणा, बाँटना
वर्तावा, बर्ताव या विभाजक
वसाऊ, बसाऊ (गाँव)
वसाख, दे० विसाख
वसोआ, वैशाख में पड़नेवाला एक हिन्दू त्यौहार
वस्त, वस्तु

वाट, बाट (राह)
वट्ट, बाट (तौल), वैर तथा मेंड़
वत्त, फिर, नमी
वटवाणी ,पोंछने का ढेला
वयाह, विवाह
वयाह्णा (वयाहुणा), ब्याहना
वयाह्ता, विवाहिता
वयाकर्न, व्याकरण
वयाकरनी, वैयाकरण
वयापक, व्यापक
वयापी, व्यापी
वेचणा, बेचना
वेदांत
वेखणा, देखना
वेल, बेल (लता)
वेला, समय, क्षण
वेलना (वेलणा), वेलना
वेलणी, बेलना (सं०)
वेढ़ा, आँगन
वेसाख, दे० विसाख
वेसाखी, दे० विसाखी
विआहणा, दे० व्याह्णा
विआह्ता, दे० वयाह्ता
वीच, व्यवधान
विचार
विच्च, में
विचोला, बिचोलिया
विदा
विद्दिआ (विद्द्या), विद्या
विगड़ना, बिगड़ना
विगाड़ना, बिगाड़ना
विगाड़ू, बिगाड़नेवाला
विगड़ाऊ, बिगाड़; बिगाड़नेवाली
विगड़ाउणा, बिगड़ाना
विकाऊ, बिकाऊ
विकाउणा, बिकाना
विख, विष
विलाइत (विलैत, वलैत, वलाइत), देश (या इंग्लैंड)
विलाइती, विदेशी या अंग्रेज़ी
विकणा, बिकना
विङ्गा, टेढ़ा
वीर, भाई
विराणा, वीराना
विर्द, आदत, अभ्यास
विर्क, एक जाट गोत्र
विरला, विरल
विरोध
विरोधी
वितं, वृत्त (गुमाश्तों का)
विसाह, विश्वास
विसाख (वसाख, वेसाख), वैशाख
विसाखी (वसोआ, वेसाखी), वैशाखी
विष्टा
विस्सरणा, भूलना
विट्ठ, बीट
विट्ठणा, बीट करना
वुहार, व्यवहार

डोगरा या डोगरी

प्रदेश

पंजाबी की डोगरा या डोगरी बोली का नाम, जम्मू रियासत के तलहटी वाले भाग के डोगर या डुगर नाम से लिया गया है। जम्मू रियासत के इस भाग के उत्तर की ओर जम्मू का पहाड़ी प्रदेश है जो इसे कश्मीर से अलग करता है, जहाँ पर विविध बोलियाँ, जैसे डोगरी और कश्मीरी की मध्यवर्ती रामबनी और पोगुली बोली जाती हैं। ये बोलियाँ अनेक बातों में डोगरी से बहुत कुछ मिलती हैं, किन्तु मैंने इन्हें कश्मीरी के साथ वर्गीकृत किया है, क्योंकि इनमें नियमित रूप से क्रिया से संयुक्त सार्वनामिक प्रत्ययों का प्रयोग पाया जाता है जो कि उस भाषा की विशेषता है। जम्मू रियासत के उत्तर-पूर्व की पहाड़ियों में भद्रवाह पड़ता है, जिसकी भाषा भद्रवाही पहाड़ी का एक रूप है। जम्मू के पूर्व में चम्बा की रियासत है। चम्बा की मुख्य भाषा चमेआली भी पहाड़ी का ही एक रूप है; किन्तु एक मिश्रित प्रकार की भाषा, जिसे भटेआली कहते हैं और जो डोगरी पर आधारित है, रियासत के पश्चिम में, जम्मू की सीमा के निकट, बोली जाती है। जम्मू के दक्षिण में पंजाब के सियालकोट और गुरदासपुर जिले पड़ते हैं जिनकी मुख्य भाषा पंजाबी है। तो भी डोगरी इन जिलों की उत्तरी सीमा के साथ-साथ बोली जाती है। जम्मू के दक्षिण-पूर्व में काँगड़ा का जिला है; यहाँ पंजाबी की एक बोली बोली जाती है जो कि डोगरी से अधिक सम्बद्ध है। जम्मू नगर से पश्चिम की ओर अनतिदूर चनाब नदी बहती है जिसके पार नौशहरा प्रदेश पड़ता है। डोगरी चनाब के पार कुछ मील तक फैली हुई है। और आगे हम पर्वतीय बोलियों तक जा पहुँचते हैं जिनका सम्बन्ध लहँदा के उत्तरी रूप से है।

नाम की व्युत्पत्ति

'डोगर' शब्द सामान्य रूप से संस्कृत द्विगर्त का विकृत रूप बताया जाता है। किन्तु आधुनिक काल में यह व्युत्पत्ति यूरोप के विद्वानों द्वारा स्वीकृत नहीं की गयी। इसके विपरीत, इस प्रदेश का प्राचीन नाम **दुर्गर** जान पड़ता है, जिससे, प्राकृत **दोग्गर** के माध्यम से, 'डोगर' विकसित हुआ है।

भाषागत सीमाएं

जैसा कि पूर्वोक्त टिप्पणियों से आकलित किया गया होगा, डोगरी दक्षिण की और पंजाबी, पूर्व और उत्तर-पूर्व की ओर पहाड़ी, उत्तर में अर्ध-कश्मीरी पर्वतीय बोलियों और पश्चिम में लहँदा द्वारा घिरी हुई है।

उपबोलियाँ

प्रतिवेदनों में वर्णित डोगरी की तीन उपबोलियाँ हैं। ये हैं कण्डिआली, काँगड़ी बोली और भटेआली। कण्डिआली आदर्श पंजाबी और गुरदासपुर के उत्तरपूर्व में पहाड़ियों पर बोली जाने वाली डोगरी का मिश्रण है। काँगड़ी बोली काँगड़ा जिले के प्रधान तहसीली केन्द्रों की मुख्य भाषा है, और भटेआली पश्चिमी चम्बा में बोली जाती है। कण्डिआली की तरह, काँगड़ी बोली डोगरी और आदर्श पंजाबी का मिश्रित रूप है, जिसमें कुछ अपनी विशेषताएँ भी हैं; एवं भटेआली डोगरी, काँगड़ी और चमेआली का सम्मिश्रण है।

बोलनेवालों की संख्या

जिन इलाकों में डोगरी देशी बोली है, वहाँ पर इसके बोलने वालों की अनुमानित संख्या इस प्रकार है—

डोगरी विशिष्ट—	
जम्मू और पड़ोस .	४,३४,०००
गुरदासपुर . .	६०,०००
सियालकोट .	७४,७२७
	५,६८,७२७
कण्डिआली (? . .	१०,०००,
काँगड़ी बोली . .	६,३६,५००
भटेआली . .	१४,०००
कुल जोड़	१२,२९,२२७

१. दे० 'राजतरंगिणी', डॉ० स्टाइन का अनुवाद, भाग २, पृ० ४३२। ध्यान देने की बात यह है कि 'डोगर' के आदि का 'द' मूर्धन्य हो गया है। यह लहँदा प्रभाव का एक उदाहरण है जिसकी कुछ बोलियों में आदि 'द' का प्रायः मूर्धन्य रूप हो जाता है, इस प्रकार शाहपुर की थली में दे (देना) डे हो जाता है।

ऊपर की तालिका में जम्मू के आँकड़े केवल अनुमानित हैं और सन् १९०१ की जनगणना के तथ्यों पर आधारित हैं, क्योंकि सन् १८९१ में उस रियासत की भाषागत जनगणना नहीं हुई थी। गुरदासपुर और सियालकोट के आँकड़े अधिक शुद्ध हैं क्योंकि इनको स्थानीय अधिकारियों ने सन् १८९१ की जनगणना के आधार पर तैयार किया है। भटेआली के आँकड़े वे हैं जो चम्बा के अधिकारियों द्वारा भेजे गये हैं। गुरदासपुर में डोगरी लगभग सारी तलहटी में बोली जाती है, और सियालकोट में यह जफ़रवाल के उत्तर और पश्चिम में जफ़रवाल तहसील के ११६ गाँवों में और सियालकोट तहसील के सारे इलाका बजवत में बोली जाती है।

अपने क्षेत्र से बाहर डोगरी बोलने वालों की संख्या के बारे में कोई जानकारी उपलब्ध नहीं है।

बोली की विशेषताएँ

डोगरी आदर्श पंजाबी से बहुत कुछ मिलती-जुलती है। मुख्य अन्तर इस बात में है कि संज्ञा के तिर्यक् रूप में परिवर्तन होता है और कर्म-सम्प्रदान कारक में एक भिन्न परसर्ग का प्रयोग किया जाता है। शब्दभंडार भी थोड़ा बहुत भिन्न है जिस पर लहँदा और (विशेषतः) कश्मीरी का प्रभाव है। तिर्यक् रूप के विषय में, सब पुल्लिंग संज्ञाओं के साथ कर्ता एकवचन में ह्रस्व **ए** या **ऐ** जुड़ता है और स्त्रीलिंग के साथ **आँ**; इस प्रकार उत्तरी लहँदा का अनुसरण किया जाता है। कर्म-सम्प्रदान कारक के लिए पंजाबी **नूँ** की जगह, सामान्य प्रत्यय **की** या **गी** होता है, काँगड़ी में एक वैकल्पिक प्रत्यय **जो** होता है। आदर्श पंजाबी के सामान्य **सा** या **सी**, **था**, के स्थान पर डोगरी '**था**' शब्द को प्राथमिकता देती है।

साहित्य

जितना कि मुझे ज्ञात है, डोगरी की एकमात्र पुस्तक, जो मुद्रित हो गयी है, वह 'जम्बू या डोगरी' में इंजील के नवविधान का उत्था है, जिसे सीरामपुर के ईसाई प्रचारकों ने सन् १८२६ में प्रकाशित किया था। डोगरी में संस्कृत पुस्तकों के कुछ अनुवाद भी बताये जाते हैं, जिनमें एक, लीलावती (गणित ग्रन्थ) का उल्लेख डॉ० बुह्लर ने किया है।[1]

१. **'डिटेल्ड रिपोर्ट आफ़ ए टअर इन सर्च आफ़ संस्कृत मैन्युस्क्रिप्ट्स मेड इन काश्मीर, राजपूताना एँण्ड सेन्ट्रल इण्डिया', बम्बई, १८७७, पृ० ४।**

डोगरी बोली का इससे पहले का एकमात्र इतिवृत्त जो मेरे देखने में आया है निम्नलिखित में है—

एंड्रीऊ, फ़्रेडरिक,—**दि जम्मू ऐण्ड कश्मीर टेरिटरीज**(जम्मू और कश्मीर के प्रदेश)। भौगोलिक इतिवृत्त। लन्दन, १८७५। डोगरी का वर्णन, पृ० ४६३ इत्यादि। डोगरी वर्णमाला का वर्णन, पृ० ४७१। प्रथम परिशिष्ट (पृ० ५०३ इत्यादि) डोगरी व्याकरण।

लिपि

डोगरी की अपनी एक वर्णमाला है जो पंजाब के हिमालय में प्रचलित टाकरी वर्णमाला से सम्बद्ध है। कोई तीस-चालीस वर्ष पूर्व, जम्मू और कश्मीर के तत्कालीन महाराज ने प्रचलित टाकरी का एक संशोधित रूप परिष्कृत कराया था, ताकि इसे देवनागरी और गुरमुखी के अधिक समकक्ष लाया जा सके। यह परिमार्जित डोगरी सरकारी कागजात में प्रयुक्त होती है, किन्तु यह सामान्यतः टाकरी लिपि को हटा नहीं पायी, जिसे कि निम्नलिखित नमूनों में प्रयुक्त किया गया है। यह लिपि अत्यन्त अपूर्ण है। चाहे सिद्धान्ततः इसमें देवनागरी के कुछ-एक वर्णों को छोड़कर, जो देशी बोली में नहीं पाये जाते, सब वर्ण हैं, किन्तु स्वर इतनी शिथिलता से लिखे जाते हैं कि लगभग यह कहा जा सकता है कि कोई स्वर-चिह्न किसी स्वर-ध्वनि के लिए बिना विवेक के लगाया जा सकता है। विशेषतया, ए और इ, एवं ओ और उ प्रायः समाकुलित रहते हैं। कभी-कभी हम देखते हैं कि स्वरों का नितान्त लोप कर दिया जाता है जिससे डोगरी प्रलेखों को पढ़ पाना सरल कार्य नहीं होता।

डोगरी लेखन की एक और विशेषता भी है जिसे समझने की आवश्यकता है। वह है शब्द के मध्य या अन्त में दीर्घ स्वरों के लिए मात्राओं के स्थान पर आदि स्वरों का प्रचुर प्रयोग। यह ऐसा है जैसा हम देवनागरी में **दआ** लिखें यद्यपि उससे हमारा अभिप्राय हो दा। नमूनों का परीक्षण करने पर प्रत्येक पंक्ति में इस तरह के उदाहरण मिलेंगे। इसका संकेत करने के लिए, अक्षरान्तर करते समय, मैंने प्रत्येक ऐसी स्वर-मात्रा के पहले, जिसको उक्त रूप में लिखा गया है, एक उद्धरण चिह्न लगा दिया है। **अर्थात् दआ को दा' और दा को दा ही अक्षरान्तरित किया है।**

पाठ की सुविधा के लिए मैंने, जहाँ कहीं शब्द की वर्तनी अशुद्ध थी, कड़ाई से तद्वत् अक्षरान्तर किया है और फिर उसके तुरन्त आगे कोष्ठक के भीतर शुद्ध वर्तनी दे दी है। तो भी, मैंने दीर्घ स्वर के लिए ह्रस्व और ह्रस्व के लिए दीर्घ स्वर के प्रायिक प्रयोग की पूर्णतया उपेक्षा की है। अक्षरान्तर में मैं ऐसे स्थलों को चुपके से लांघ गया हूँ। डोगरी अपनी लिपि के टाइप में कभी मुद्रित नहीं हुई। अतः मैं इन नमूनों को, जैसे मुझे प्राप्त हुए वैसे ही देशी वर्णमाला की अनुलिपि में प्रस्तुत कर रहा हूँ। अलबत्ता पास की चम्बा रियासत में व्यवहृत टाकरी के टाइप मिल जाते हैं। इसका डोगरी लिपि से घनिष्ठ सम्बन्ध भी है, और इसलिए हस्तलेख की अनुलिपि की अपेक्षा टाइप से मुद्रित शब्दों को पढ़ना अधिक सरल है। मैंने प्रत्येक नमूने को चम्बा के टाकरी टाइप में (शुद्ध वर्तनी में) भी मुद्रित करा दिया है।

चम्बा की मुद्रित टाकरी वर्णमाला नीचे दी जा रही है—

स्वर

𑚀	𑚁	𑚂	𑚃	𑚄	𑚅
अ	आ	इ	इ	उ	ऊ

𑚆	𑚇	𑚈	𑚉
ए	ऐ	ओ	औ

व्यंजन

𑚊	क	𑚋	ख	𑚌	ग	𑚍	घ	𑚎	ङ
𑚏	च	𑚐	छ	𑚑	ज	𑚒	झ		
𑚔	ट	𑚕	ठ	𑚖	ड	𑚗	ढ	𑚘	ण
𑚙	त	𑚚	थ	𑚛	द	𑚜	ध	𑚝	न
𑚞	प	𑚟	फ	𑚠	ब	𑚡	भ	𑚢	म
𑚣	य	𑚤	र	𑚥	ल	𑚦	व		
𑚨	स	𑚩	ह	𑚪	ड़	[illegible]	ळ	𑚧	श

संयुक्त अक्षर

या थि ही सु पू (अथवा) हू ते है यो यौ

रं छ्य प्र त्र म्ह

अंक

१ २ ५ ६ ७ ८ ९

द्वित्व वर्ण नहीं लिखे जाते, उन्हें पाठक की समझ पर छोड़ दिया जाता है। जैसे दित्ता, दिया, लिखा तो जाता है दिता, दिता, किन्तु पढ़ा जाता है दित्ता।

डोगरा वर्ण, जैसे कि नमूनों में प्रयुक्त हुए हैं, निम्नलिखित हैं—

स्वर

(आदि में आनेवाले रूप)

अ आ इयाई उऊ या एएऐ ओऔ

मात्राएँ

क का कि की कु कू के कै को कौ कं

टिप्पणी—स्वरों और अनुस्वार के लिखने में काफी लापरवाही बरतने दी जाती है। प्रायः इन्हें छोड़ ही दिया जाता है। दीर्घ और ह्रस्व स्वर प्रायः आपस में बदल जाते हैं। दीर्घ मात्राओं की जगह बहुधा आदि में आने वाले स्वर प्रयुक्त किये जाते हैं, जैसे—

[Dogra letters] की जगह [Dogra letters], दा; [Dogra letter] की जगह [Dogra letters] तूं।

इ की जगह प्रायः ए, और उ की जगह ओ वर्ण लिखा जाता है।

व्यंजन

[Dogra] क, [Dogra] ख, [Dogra] ग, [Dogra] घ, [Dogra] ङ;

[Dogra] च, [Dogra] छ, [Dogra] ज, [Dogra] झ, [Dogra] ञ;

[Dogra] ट, ठ, [Dogra] ड, [Dogra] ढ, [Dogra] ण

[Dogra] त, [Dogra] थ, [Dogra] द, [Dogra] ध, [Dogra] न;

[Dogra] प, [Dogra] फ, [Dogra] ब, [Dogra] भ, [Dogra] म;

[Dogra] य, [Dogra] र, [Dogra] ल, [Dogra] व;

[Dogra] श, [Dogra] स, [Dogra] ह, [Dogra] ड़।

टिप्पणी—ज के लिए वही चिह्न है जो य के लिए, और ब के लिए वही जो व के लिए। वास्तव में ऊष्म (संघर्षी) व्यंजन एक ही है—स वर्ण। जब फारसी ध्वनि श को अंकित करना आवश्यक होता है, तो छ का चिह्न प्रयुक्त होता है।

तुलना की सुविधा के लिए, मैं आगे गुरमुखी, काँगड़ी और डोगरी लिपिमालाओं के वर्णों के प्रचलित लिखित रूप दे रहा हूँ—

डोगरी व्याकरण

व्याकरण की दृष्टि से डोगरी आदर्श पंजाबी से बहुत कुछ मिलती-जुलती है। निम्नलिखित प्रमुख अन्तर द्रष्टव्य हैं—

उच्चारण में, ए और ऐ में कोई भेद नहीं लगता। ये दो स्वर परस्पर बदल कर लगते जान पड़ते हैं। कभी एक लिखा जाता है कभी दूसरा। शब्द के अन्त में (विशेषतः संज्ञाओं के रूपान्तर में) दोनों ह्रस्व उच्चरित होते हैं और दोनों की एक ही ध्वनि होती है जो किसी और स्वर की अपेक्षा ह्रस्व अ के अधिक निकट लगती है। व्याकरण के ढांचे में, जो आगे दिया गया है, मैंने इस अन्त्य ध्वनि को ए से चिह्नित किया है, किन्तु ऐ अथवा आ भी समान रूप से ठीक होंगे। इसी प्रकार एँ को प्रायः ऐं या आँ लिखा गया है। जो व्यंजनान्त हैं उन सब संज्ञाओं का भी एक एकवचन तिर्यक् रूप होता है जो कर्ता कारक से भिन्न है। पुंल्लिग संज्ञाओं के बारे में, इसके तिर्यक् रूप का सामान्यतः ऐसे अनिश्चित ह्रस्व स्वर में अन्त होता है जो कभी तो ए लिखा जाता है, कभी ऐ, और कभी आ। इनका वर्णन अभी-अभी ऊपर किया गया है। स्त्रीलिंग तिर्यक् एकवचन रूप का प्रत्यय आ है। ये सब प्रत्यय लहँदा की उत्तरी बोलियों में और पश्चिमी पहाड़ी में भी होते हैं। तिर्यक् बहुवचन का प्रत्यय एँ, ऐं, या आँ है। कर्म सम्प्रदान का परसर्ग साधारणतया की या गी एवं कभी-कभार पंजाबी नूँ होता है। कभी-कभी दे (सम्बन्ध कारकीय प्रत्यय दा का अधिकरण) सम्प्रदान के लिए प्रयुक्त होता है, जैसे **जाएदाती वालेदे जाई**, सम्पत्ति वाले के पास जाकर, में। अन्य परसर्ग पंजाबी में प्रयुक्त परसर्गों से मेल खाते हैं।

सर्वनामों के बारे में कोई विशेष टिप्पणी देने की आवश्यकता नहीं है। अलबत्ता उत्तम, मध्यम और अन्य पुरुष के सर्वनामों के कर्म-सम्प्रदान रूप की ओर ध्यान दिलाना आवश्यक है। 'मुझे' के लिए **मिकी, मिगी** या **मी** है; 'तुझे' के लिए **तुकी** या **तुगी** है; और 'उसे' के लिए **उसी**। इसी प्रकार 'इस' का कर्म-सम्प्रदान **इसी** है। क्रियाओं के रूपान्तर में कुछ-एक अनियम हैं। भूत कृदन्त के एक वैकल्पिक रूप का -दा में अन्त होता है। जैसे **मोईदा**, मरा; **गोआचादा**, खोया; **चाहीदी-है**, चाहिए (स्त्री०); **गिआदा-था**, गया था। भूतकृदन्त में इस तरह का सम्बन्ध-कारकीय परसर्ग का योग अन्य पहाड़ी भाषाओं में भी मिलता है; उदाहरणार्थ पूर्वी और पश्चिमी पहाड़ी में। भविष्यत् में कुछ ऐसे रूप हैं जो आदर्श पंजाबी के लिए अपरिचित हैं। **चे** या **चै** अक्षर

आज्ञार्थ में जोड़ा जाता है। जैसे **खाचै**, खायें; **मनाचै**, मनायें। **खांदेन**, वे खाते थे शब्द में अन्त्य न सार्वनामिक प्रत्यय है जिसका अर्थ है 'वे' और जो कश्मीरी के अनुकरण में क्रिया के साथ जोड़ा जाता है। यदा-कदा नपुंसक कृदन्त के उदाहरण मिल जाते हैं, जैसे **चूमिआँ**, चूमा गया।

आशा है कि उपर्युक्त टिप्पणियाँ विद्यार्थी के लिए, आगे दिये गये व्याकरण के ढाँचे की सहायता से, डोगरी नमूने पढ़ पाने में पर्याप्त होंगी।

डोगरी व्याकरण का ढाँचा

१. संज्ञा

लिंग—यह पंजाबी के अनुसार होता है।

वचन और कारक—

एकवचन		बहुवचन	
मूल	तिर्यक्	मूल	तिर्यक्
पुल्लिंग			
लौहड़ा, लड़का	लौहड़े	लौहड़े	लौहड़ें
बब्बा, पिता	बब्बे	बब्बाँ, बब्बें	बब्बाँ, बब्बैं
डङ्गर, बैल	डङ्गरे	डङ्गर	डङ्गरें
स्त्रीलिंग			
बकरी, बकरी	बकरीआ	बकरीआँ	बकरीएँ

तिर्यक् एकवचन का -ए प्रत्यय और तिर्यक् बहुवचन का -एँ प्रत्यय ह्रस्व हैं। इन्हें प्रायः क्रम से ऐ या आ और ऐं या आँ लिखा जाता है। जैसे **सहबेदा, सहबैदा**, या **सहबादा**, साहब का। जैसे भी लिखा जाये, उच्चारण क्रमशः ह्रस्व अ या आ के समान होता है।

दो कारक बिना परसर्ग के बनते हैं—सम्बोधन और (विकल्पतः) कर्म-सम्प्रदान। निम्नलिखित रूप सम्बोधन के हैं—एकवचन, **लौहड़ेआ** या **आ लौहड़ा**; **डङ्गरा** या **आ डङ्गर**; **बकरिआ** या **आ बकरी**; बहुवचन, **आ लौहड़ें**, **आ बब्बें**; **आ डङ्गरें**; **आ बकरोआँ**।

कर्म-सम्प्रदान के वैकल्पिक रूप हैं—एकवचन, **लौहड़ेई**; **बब्बैई**; **डङ्गरेई**, **बकरीआई**; बहुवचन, **लौहड़ेंई**; ; **बब्बैंई डङ्गरेंई**,; **बकरीएँई**।

परसर्ग ये हैं—कर्म-सम्प्र० की या गी, कछ, को; करण कने, द्वारा; अपा० थ्वाँ, थें, कछा, से; सम्बन्ध दा, जैसे आदर्श पंजाबी में, तिर्यक् पुं० दे भी; अधि० विच, में; पास, पास; पर, पर; कर्तृ० ने या नै, ने।

विशेषण इस प्रकार रूपान्तरित होते हैं। पुं० एकवचन मूल काला; तिर्यक् काले; बहुवचन मूल काले; तिर्यक् काले; स्त्री० एकवचन मूल काली; तिर्यक् कालीआ; बहुवचन मूल कालीआँ; तिर्यक् कालीएँ। शेष स्थितियों में विशेषण का व्यवहार वैसा ही होता है जैसा आदर्श पंजाबी में।

२. सर्वनाम

	मैं	तूँ
एकवचन		
कर्ता	आऊँ, मैं, में	तूँ
करण	मैं, में	तैं, तें, तुध
कर्म-सम्प्रदान	मि-की, मि-गी, मी	तु-की, तुगी
सम्बन्ध	मेरा	तेरा
अपादान	मेरे-थ्वाँ	तेरे-थ्वाँ
अधिकरण	मेरे-विच	तेरे-विच
बहुवचन		
कर्ता	अस	तुस
करण	असें	तुसें
कर्म-सम्प्रदान	असें-की, -गी, -ई, असें	तुसें-की, -गी, -ई, तुसें
सम्बन्ध	साड़ा	तुसाड़ा, थ्वाड़ा
अपादान	साड़े-थ्वाँ	तुसें-थ्वाँ
अधिकरण	साड़े-विच	तुसें-विच

	वह	यह	वही	यही	जो	सो	कौन ?	क्या ?	कोई	कुछ
एकवचन										
कर्ता	ओ, ओह	इए, एह, एहे	ऊअइ	ईअइ	जो	सेह	कुन, कौन	केह	कोई	किछ, किझ
कर्म-सम्प्र०	उसी	इसी	उस्से-की	इस्से-की	जिसी	तिसी	कुसी	कुस-की	कुसे-की	कुसे-की
तिर्यक्	उस, उह	इस, इह	उस्से	इस्से	जिस	तिस	कुस, कुह	कुस	कुसे	कुसे
बहुवचन कर्ता	ओ, ओह	ए, एह	ऊअइ	ईअइ	जो	सेह	कुन, कौन	केह	कोई	किछ, किझ
तिर्यक्	उन, उने, उँ	इन, इने, इं	उन्नेईं	इन्नेईं	जिने	जिने	कुने	कुने	कुने	किनिआँ, किने

कोका, कौन-सा नियमिततः विशेषण की तरह रूपान्तरित होता है सर्वनाम है **अपूँ**; सम्बन्ध **अपना**; कर्म-सम्प्र० **अपूँ-की, -गी**; अपा० **अपने-थ्वाँ**; अधि० **अपने-विच**; करण **अपूँ**। एकवचन बहुवचन में कोई भेद नहीं है।

३. क्रियाएँ—क. सहायक क्रियाएँ

वर्तमान काल 'मैं हूँ' इत्यादि—

	एकवचन	
उत्तम	हाँ, आँ	हैं, हे, एं, एँ
मध्यम	हैं, हें, एँ, एँ	हो, ओ
अन्य	है, हे, ऐ, ए	हैं, हे, एं, एँ, हैन

भूतकाल **था** या **सा** होता है, जो सामान्य रूप से विशेषण की तरह व्यवहृत होता है। जैसे पुं० बहुव० **थे**; स्त्री० एकव० **थी**; स्त्री० बहुव० **थिआँ**। 'मैं था' का **साँ** होता है।

ख. कर्तृवाच्य क्रिया

धातु—**मार**।

संज्ञार्थक क्रिया—**मारना**।

वर्तमान कृदन्त—**मारदा** या **मारना**, मारता।

भूत कृदन्त—(१) **मारिआ**, मारा; स्त्री० **मारी**; बहुव० पुं० **मारे**; स्त्री० **मारिआँ**।

(२) **मारिअदा** या **मारीदा** आदि

पूर्वकालिक कृदन्त—**मारी-के, मारीए**, या **मारीऐ**, मारकर।

कर्तृवाचक संज्ञा—**मारनेवाला**।

	वर्तमान संभावनार्थ या निश्चयार्थ मैं मारूँ, आदि		भविष्यत् मैं मारूँगा, आदि	
	एकव०	बहुव०	एकव०	बहुव०
उत्तम	माराँ	मारें, मारचे	मारङ	मारन, मारगे (स्त्री० -गिआँ)
मध्यम	मारें	मारो	मारगा (स्त्री.-गी)	मारगिओ, मारगे (,, ,,)
अन्य	मारे	मारें, मारेन	मारग	मारगा, मारगन, मारङ्गे, मारङ्गन

मारगा (-गी) के स्थान पर मारघा (-घी) और मारगे (-गिआँ) के स्थान पर मारघे (-घिआँ) भी हो सकता है।

आज्ञार्थक मार; मारो; मारचे, मारचै; मैं हम, तू, तुम, वह, वे मारें।

कृदन्तीय काल	**अनियमित भूत कृदन्त**
आऊँ मारदा, या मारना, मैं मारता	होना, भूत कृ० होआ या हुआ; वर्तकृ० हुन्दा
आऊँ मारदा-आँ, मारना-आँ, मैं मारता हूँ	जाना, भूतकृ० गिआ
आऊँ मारदा-साँ, मारना-साँ, मैं मारता था	करना, भूतकृ० कीता या करिआ
में मारिआ, मैं ने मारा	देना, भूतकृ० दित्ता
में मारिआ-ए, मैं ने मारा है	लेना, भूत कृ० लित्ता।
में मारिआ-सा, मैं ने मारा था।	

कर्मवाच्य जाना लगाने से बनता है, जैसे पंजाबी में।

प्रथम तथा द्वितीय प्रेरणार्थक रूप पंजाबी की तरह बनते हैं।

पंजाबी

जिस आदर्श पंजाबी का विवरण पहले व्याकरणिक ढाँचे के अंतर्गत दिया गया है, उसके स्पष्टीकरण के लिए नीचे ब्रिटिश ऐंड फ़ारेन बाइबिल सोसाइटी द्वारा प्रकाशित सन्त लूक के सुसमाचार से उद्धृत अपव्ययी पुत्र की कथा दे रहा हूँ। अनुवाद बहुत बढ़िया है; लेकिन इसे सर्वथा इस रूप में माझा की पंजाबी का प्रतिनिधि नहीं मानना होगा। व्याकरणिक ढाँचे वाला आदर्श लुधियाना ज़िले के पोवाध में बोली जानेवाली पंजाबी का थोड़ा-बहुत परिमार्जित रूप है, जो अमृतसर की पंजाबी से कुछ भिन्न है।[1]

[सं० १]

भारतीय आर्य परिवार केन्द्रीय वर्ग

पंजाबी

(ब्रिटिश ऐंड फ़ारेन बाइबिल सोसाइटी, १८९०)

ਇੱਕ ਮਨੁੱਖਦੇ ਦੋ ਪੁੱਤ ਸਨ। ਅਤੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਵਿੱਚੋਂ ਛੋਟੇਨੈ ਪਿਉ ਨੂੰ ਆਖਿਆ ਪਿਤਾ ਜੀ ਮਾਲਦਾ ਜਿਹੜਾ ਹਿੱਸਾ ਮੈਨੂੰ ਪਹੁੰਚਦਾ ਹੈ ਸੋ ਮੈਨੂੰ ਦੇ ਦਿਓ। ਅਤੇ ਉਸਨੈ ਉਨਾਂਨੂੰ ਪੂੰਜੀ ਵੰਡ ਦਿੱਤੀ। ਅਰ ਥੋੜੇ ਦਿਨਾਂ ਪਿੱਛੋਂ ਛੋਟਾ ਪੁੱਤ ਸਭੋ ਕੁਛ ਕੱਠਾ ਕਰਕੇ ਦੂਰ ਦੇਸਨੂੰ ਚੱਲਿਆ ਗਿਆ ਅਰ ਓੱਥੇ ਆਪਣਾ ਮਾਲ ਬਦ ਚਲਣੀ ਨਾਲ਼ ਉਡਾ ਦਿੱਤਾ। ਅਤੇ ਜਾਂ ਉਹ ਸਭ ਖਰਚ ਕਰ ਚੁੱਕਿਆ ਤਾਂ ਉਸ ਦੇਸ ਵਿੱਚ ਵਡਾ ਕਾਲ਼ ਪੈ ਗਿਆ ਅਤੇ ਉਹ ਮੁਤਾਜ ਹੋਣ ਲੱਗਾ। ਅਰ ਉਹ ਉਸ ਦੇਸਦੇ ਕਿਸੇ ਰਹਿਣਵਾਲ਼ੇਦੇ ਕੋਲ਼ ਜਾ ਰਿਹਾ ਅਤੇ ਉਸਨੈ ਉਹਨੂੰ ਆਪਣਿਆਂ ਖੇਤਾਂ ਵਿੱਚ ਸੂਰਾਂਦੇ ਚਾਰਣ ਲਈ ਘੱਲਿਆ। ਅਰ ਉਹ ਉਨ੍ਹਾਂ ਛਿੱਲੜਾਂ ਨਾਲ਼ ਜੇਹੜੇ ਸੂਰ ਖਾਂਦੇ ਸਨ ਆਪਣਾ ਢਿੱਡ ਭਰਣਾ ਚਾਹੁੰਦਾ ਸੀ ਪਰ ਕਿਨੇ ਉਸਨੂੰ ਕੁਛ ਨਾ ਦਿੱਤਾ। ਪਟ ਉਹਨੈ ਸੁਰਤ ਵਿੱਚ ਆਣਕੇ ਕਿਹਾ ਭਈ ਮੇਰੇ ਪਿਉਦੇ ਕਿੰਨੇਹੀ ਕਾਮਿਆਂਨੂੰ ਵਾਫ਼ਰ ਰੋਟੀਆਂ ਹਨ ਅਤੇ ਮੈਂ ਐੱਥੇ ਭੁੱਖਾ ਮਰਦਾ ਹਾਂ। ਮੈਂ ਉੱਠਕੇ ਆਪਣੇ ਪਿਉ ਕੋਲ਼ ਜਾਵਾਂਗਾ ਅਤੇ ਉਸਨੂੰ ਆਖਾਂਗਾ ਪਿਤਾ ਜੀ ਮੈਂ ਅਸਮਾਨਦਾ ਅਰ ਤੇਰੇ ਅੱਗੇ ਗੁਨਾਹ ਕੀਤਾ ਹੈ। ਹੁਣ ਮੈਂ ਇਸ ਜੋਗ ਨਹੀਂ ਜੋ ਫੇਰ ਤੇਰਾ ਪੁੱਤ ਸਦਾਵਾਂ। ਮੈਨੂੰ ਆਪਣਿਆਂ ਕਾਮਿਆਂ ਵਿੱਚੋਂ ਇਕ ਜਿਹਾ ਰੱਖ। ਸੋ ਉਹ ਉੱਠਕੇ ਆਪਣੇ ਪਿਉ ਕੋਲ਼ ਗਿਆ। ਪਰ ਉਹ ਅਜੇ ਦੂਰ ਸੀ ਕਿ ਉਹਦੇ ਪਿਉਨੈ ਉਸਨੂੰ ਡਿੱਠਾ ਅਤੇ ਉਹਨੂੰ ਤਰਸ ਆਇਆ ਅਰ ਦੌੜ ਕੇ ਗਲ਼ੇ ਲਾ ਲਿਆ ਅਤੇ ਉਹਨੂੰ ਚੁੰਮਿਆ। ਅਰ ਪੁੱਤ ਨੈ ਉਸਨੂੰ ਆਖਿਆ ਪਿਤਾ ਜੀ ਮੈਂ ਅਸਮਾਨਦਾ ਅਰ ਤੇਰੇ ਅੱਗੇ ਗੁਨਾਹ ਕੀਤਾ ਹੈ ਹੁਣ ਮੈਂ ਇਸ ਜੋਗ ਨਹੀਂ ਜੋ ਫੇਰ ਤੇਰਾ

१. दे० 'पोवाधी' पृ० ८६-८७

ਪੁੱਤ ਸਦਾਵਾਂ॥ ਪਰ ਪਿਤਾਨੈ ਆਪਣੇ ਚਾਕਰਾਂਨੂੰ ਕਿਹਾ ਕਿ ਸਭਥੋਂ ਚੰਗੇ ਬਸਤ੍ਰ ਛੇਤੀ ਕੱਢਕੇ ਇਹਨੂੰ ਪਹਿਨਾਓ ਅਰ ਇਹਦੇ ਹੱਥ ਵਿੱਚ ਅੰਗੂਠੀ ਅਰ ਪੈਰੀਂ ਜੁੱਤੀ ਪਾਓ। ਅਤੇ ਖਾਂਦੇ ਪੀਂਦੇ ਅਸੀਂ ਖੁਸੀ ਕਰਿਯੇ ਕਿਉ ਜੋ ਮੇਰਾ ਇਹ ਪੁੱਤ ਮੋਇਆ ਸੀ ਅਤੇ ਫੇਰ ਜੀ ਪਿਆ ਹੈ। ਗੁਆਚ ਗਿਆ ਸੀ ਅਤੇ ਫੇਰ ਲੱਭਿਆ ਹੈ। ਸੋ ਓਹ ਲੱਗੇ ਖੁਸੀ ਕਰਨ॥

ਪਰ ਉਹਦਾ ਵਡਾ ਪੁੱਤ ਖੇਤ ਵਿੱਚ ਸੀ ਅਰ ਜਾਂ ਉਹ ਆਣਕੇ ਘਰਦੇ ਨੇੜੇ ਅੱਪੜਿਆ ਤਾਂ ਰਾਗ ਨਾਚਦੀ ਅਵਾਜ ਸੁਣੀ। ਤਦ ਨੌਕਰਾਂ ਵਿੱਚੋਂ ਇਕਨੂੰ ਆਪਣੇ ਕੋਲ੍ਹ ਸੱਦਕੇ ਪੁੱਛਿਆ ਭਈ ਇਹ ਕੀ ਹੈ। ਅਤੇ ਉਸਨੇ ਉਹਨੂੰ ਆਖਿਆ ਤੇਰਾ ਭਰਾਉ ਆਇਆ ਹੈ ਅਰ ਤੇਰੇ ਪਿਉਨੈ ਵਡਾ ਪਰੋਸਾ ਪਰੋਸਿਆ ਹੈ ਇਸ ਲਈ ਜੋ ਉਹਨੂੰ ਭਲਾ ਚੰਗਾ ਪਾਇਆ। ਪਰ ਉਹ ਗੁੱਸੇ ਹੋਇਆ ਅਤੇ ਅੰਦਰ ਜਾਣਨੂੰ ਉਹਦਾ ਜੀ ਨਾ ਕੀਤਾ। ਸੋ ਉਹਦਾ ਪਿਉ ਬਾਹਰ ਆਣਕੇ ਉਸਨੂੰ ਮਨਾਉਣ ਲੱਗਾ। ਪਰ ਓਨ ਆਪਣੇ ਪਿਉਨੂੰ ਉੱਤਰ ਦਿੱਤਾ ਵੇਖ ਮੈਂ ਐਨੇ ਵਰਿਹਾਂ ਥੋਂ ਤੇਰੀ ਟਹਿਲ ਕਰਦਾ ਹਾਂ ਅਤੇ ਤੇਰਾ ਹੁਕਮ ਕਦੇ ਨਹੀਂ ਮੋੜਿਆ ਅਰ ਤੈਂ ਮੈਨੂੰ ਕਦੇ ਇੱਕ ਪਠੋਰਾ ਬੀ ਨਾ ਦਿੱਤਾ ਜੋ ਮੈਂ ਆਪਣਿਆਂ ਬੇਲੀਆਂ ਨਾਲ੍ਹ ਖੁਸੀ ਕਰਾਂ। ਪਰ ਜਦ ਤੇਰਾ ਇਹ ਪੁੱਤ ਆਇਆ ਜਿਹਨੈ ਕੰਜਰੀਆਂਦੇ ਮੂੰਹ ਤੇਰੀ ਪੂੰਜੀ ਉਡਾ ਦਿੱਤੀ ਤੈਂ ਉਹਦੇ ਲਈ ਵਡਾ ਪਰੋਸਾ ਪਰੋਸਿਆ ਹੈ। ਪਰ ਓਨ ਉਸਨੂੰ ਆਖਿਆ ਬੱਚਾ ਤੂੰ ਸਦਾ ਮੇਰੇ ਨਾਲ੍ਹ ਹੈਂ ਅਤੇ ਮੇਰਾ ਸਭੋ ਕੁਛ ਤੇਰਾ ਹੈ। ਪਰ ਖੁਸੀ ਕਰਨੀ ਅਤੇ ਅਨੰਦ ਹੋਣਾ ਜੋਗ ਸੀ ਕਿਉਂਕਿ ਤੇਰਾ ਇਹ ਭਰਾਓ ਮੋਇਆ ਸੀ ਅਤੇ ਫੇਰ ਜੀ ਪਿਆ ਹੈ ਅਰ ਗੁਆਚ ਗਿਆ ਸੀ ਅਤੇ ਹੁਣ ਲੱਭਿਆ ਹੈ॥

(नागरी रूपान्तर)

इक्क मनुक्खदे दो पुत्त सन। अते उन्हाँ-विच्चों छोटेनैं पिउनूँ आखिया, 'पिता-जी, मालदा जिहड़ा हिस्सा मैनूँ पहुँचदा-है सो मैनूँ दे-दिओ। अते उसनैं उन्हांनूँ पूँजी बण्ड दित्ती। अर थोड़े दिनां पिच्छों, छोटा पुत्त, सभो कुछ कट्ठा कर-के, दूर देसनूँ चलिआ गिआ, अर ओथे आपणा माल बद-चलनी-नाल उड़ा-दित्ता। अते जां उह सभ खरच कर-चुकिआ, तां उस देस-विच्च वडा काल पै-गिआ, अते उह मुताज होण लग्गा। अर उह उस देसदे किसे रहिण-वालेदे कोल् जा रिहा, अते उसनैं उहनूँ आपणिआँ खेतां-विच्च सूरांदे चारण-लई घल्लिया। अर उह उन्हाँ छिलड़ाँ-नाल् जेहड़े सूर खान्दे सन आपणा ढिड्ड भरना चाहुन्दा-सी, पर किनें उसनूँ कुछ ना दित्ता। पर उहनैं सुरत-विच्च

आण-के किहा, भई! मेरे पिउदे किन्ने-ही काम्मिआंनूँ बाफर रोटीआँ हन, अते मैं ऐत्थे भुक्खा मरदा-हाँ। मैं उट्ठ-के आपणे पिउ कोल जावाँगा, अते उस-नूँ आखांगा, "पिता-जी, मैं अस्मानदा अर तेरे अग्गे गुनाह कीता -है; हुण मैं इस जोग नहीं जो फेर तेरा पुत्त सदावाँ, मैनूँ आपणिआँ काम्मिआँ विच्चों इक्क जिहा रक्ख।" सो उह उट्ठके आपणे पिउ कोल गिआ। पर उह अजे दूर सी, कि उहदे पिउनै उसनूँ डिट्ठा, अते उहनूँ तरस आइआ, अर दौड़-के गले ला-लिआ, अते उहनूँ चुम्मिआ। अर पुत्तनै उहनूँ आखिआ, 'पिता-जी, अस्मानदा अर तेरे अग्गे गुनाह कीता है, हुण मैं इस जोग नहीं जो फेर तेरा पुत्त सदावाँ। पर पिता-नै आपणे चाकरांनूँ किहा कि, 'सभ-थों चंगे बस्त्र छेती कड्ढ-कें, इहनूँ पहिनाओ, अर इहदे हत्थ-विच्च अँगूठी अर पैरीं जुत्ती पाओ; अते खान्दे-होए असीं खुसी करिये। किउ जो मेरा इह पुत्त मोइआ सी, अते फेर जी-पिआ है; गुआच गिआ-सी, अते फेर लब्भिआ-है।' सो उह लग्गे खुसी करन।

पर उहदा वडा पुत्त खेत-विच्च सी, अर जाँ उह आण-के घरदे नेड़े अप्पड़िआ, ताँ राग-नाच दी अवाज सुणी। तद नौकरां-विच्चों इक्कनूँ आपणे कोल सद्द-के, पुच्छिआ 'भई, इह की है?' अते उसनै उहनूँ आखिआ 'तेरा भराउ आइया-है, अर तेरे पिउनै वडा परोसा परोसिआ-है, इस-लई जो उहनूँ भला चंगा पाइआ।' पर उह गुस्से होइआ, अते अन्दर जाणनूँ उहदा जी ना कीता। सो उहदा पिउ बाहर आण-के उसनूँ मनाउण लग्गा, पर उन आपणे पिउनूँ उत्तर दित्ता, 'वेख, मैं ऐंने वरिहाँ-थों तेरी टहिल करदा-हाँ, अते तेरा हुकम कदे नहीं मोड़िआ, अर तैं मैनूँ कदे इक्क पठोरा बी ना दित्ता, जो मैं आपणिआँ बेलीआँ-नाल खुसी कराँ। पर जद तेरा इह पुत्त आइआ, जिहनै कञ्जरीआँदे मूँह तेरी पूँजी उडा-दित्ती, तैं उहदे लई वडा परोसा परोसिआ-है।' पर ओन उसनूँ आखिआ, "बच्चा, तूँ सदा मेरे नाल है, अते मेरा सभो कुछ तेरा है। पर खुसी करनी, अते अनन्द होणा जोग सी, किउ कि तेरा इह भराउ मोइआ सी, अते फेर जी-पिआ है; अर गुआच गिआ-सी, अते हुण लब्भिआ-है।"

(हिन्दी अनुवाद)

एक मनुष्य के दो पुत्र थे। और उनमें से छोटे ने बाप से कहा 'पिता जी, सम्पत्ति का जो अंश मुझे पहुँचता है सो मुझे दे दो।' और उसने उनको पूँजी बाँट दी। थोड़े दिनों के पश्चात्, छोटा पुत्र, सब कुछ इकट्ठा करके, दूर देश को चला गया, और

वहाँ अपनी सम्पत्ति बदचलनी से उड़ा दी। और जब वह सब खर्च कर चुका, तो उस देश में बड़ा अकाल पड़ गया, और वह मोहताज होने लगा। और वह उस देश के किसी रहने वाले के पास जा रहा। और उसने उसको अपने खेतों में सूअरों के चराने के लिए भेजा। और वह उन छिलकों से जो सूअर खाते थे अपना पेट भरना चाहता था, पर किसी ने उसको कुछ न दिया। पर उसने होश में आकर कहा, 'भाई! मेरे बाप के कितने ही कर्मियों को फालतू रोटियाँ (मिलती) हैं, और मैं यहाँ भूखा मरता हूँ। मैं उठकर अपने बाप के पास जाऊँगा और उसे कहूँगा, "पिताजी, मैं आकाश (भगवान्) का और तेरे आगे पाप किया है, अब मैं इस योग्य नहीं कि फिर तेरा पुत्र कहलाऊँ, मुझको अपने कर्मियों में से एक के समान रख।" सो वह उठकर अपने बाप के पास गया। पर वह अभी दूर था, कि उसके बाप ने उसे देखा, और उसे दया आयी, और दौड़ कर गले लगा लिया, और उसे चूमा। और पुत्र ने उसे कहा, "पिताजी, आकाश (भगवान्) का और तेरे आगे पाप किया है, अब मैं इस योग्य नहीं कि फिर तेरा पुत्र कहलाऊँ।' पर पिता ने अपने सेवकों से कहा कि, 'सब से अच्छे वस्त्र शीघ्र निकाल कर इसे पहिनाओ, और इसके हाथ में अँगूठी और पाँव में जूता पहनाओ; और खाते हुए हम आनन्द मनायें। क्योंकि मेरा यह पुत्र मर गया था, और फिर जी पड़ा है; खो गया था, और फिर मिला है।' सो वे लगे आनन्द मनाने।

पर उसका ज्येष्ठ पुत्र खेत में था, और जब वह आकर घर के निकट पहुँचा, राग-नाच की आवाज सुनी। तब नौकरों में से एक को अपने पास बुलाकर पूछा, "भाई, यह क्या है?" और उसने उसे कहा, "तेरा भाई आया है, और तेरे बाप ने बड़ा भोज दिया है, इसलिए कि उसे भला-चंगा पाया है।" पर वह क्रुद्ध हुआ, और भीतर जाने को उसका जी न किया। सो उसका बाप बाहर आकर उसे मनाने लगा, पर उसने अपने बाप को उत्तर दिया, 'देख, मैं इतने वर्षों से तेरी सेवा करता हूँ, और तेरी आज्ञा का उल्लंघन कभी नहीं किया, और तूने मुझे कभी एक मेमना भी नहीं दिया कि, मैं अपने साथियों के साथ आनन्द मनाता। पर जब तेरा यह पुत्र आया, जिसने वेश्याओं में तेरी पूँजी उड़ा दी, तूने उसके लिए बड़ा भोज किया है।' पर उसने उसे कहा, "बच्चा, तू सदा मेरे साथ है, और मेरा सब कुछ तेरा है, पर खुशी करनी और आनन्द मनाना चाहिए था, क्योंकि तेरा भाई मरा हुआ था, और फिर जी पड़ा है, और खो गया था, और अब मिला है।"

माझी

माझी पंजाब के माझा क्षेत्र की बोली है। इसको गलती से प्राय: मांझी कहते हैं, जैसे माझा को प्राय: गलती से मांझा कह देते हैं। माझा, या मध्यदेश, रावी और ब्यास-सहित सतलुज नदियों के बीच के दोआब में पड़ता है। अत: इसमें अमृतसर और गुरदासपुर[1] के ज़िले तथा लाहौर ज़िले का अधिकतर भाग सम्मिलित है। इस सर्वेक्षण के निमित्त अनुमानित माझी बोलने वालों की संख्या नीचे दी जा रही है—

लाहौर		१०,३३,८२४
अमृतसर		९,९३,०५४
गुरदासपुर		८,००,७५०
	योग	२८,०७,६२८

माझी पंजाबी निस्संदेह इस भाषा का शुद्धतम रूप है, किन्तु यह वह आदर्श नहीं है जिसे बहुत से व्याकरणों में अपनाया गया है। जैसा कि ऊपर(पृष्ठ ४-५ पर) स्पष्ट किया गया है, इनका मुख्य आधार लुधियाना की बोली है जो कि दक्षिणपूर्व की ओर पायी जाती है। माझी की कुछ अपनी विशेषताएँ हैं जिनका अभी वर्णन किया जायगा। सबसे प्रमुख मूर्धन्य ळ का नितान्त अभाव है।

माझी के नमूनों के रूप में अमृतसर से प्राप्त अपव्ययी पुत्र की कथा का भाषान्तर, उसी जगह से एक लोकगीत का खण्ड, और लाहौर से एक और लोक-गीत दिया जा रहा है।

कथा के भाषान्तर को गुरमुखी हस्तलेखन के नमूने के तौर पर, प्राप्त प्रति की अनुलिपि में, और साथ ही गुरमुखी टाइप में और उसके बाद साधारण अक्षरान्तर और अनुवाद सहित दे रहा हूँ। दूसरा नमूना गुरमुखी टाइप में अक्षरान्तर और अनु-

१. गुरदासपुर का एक कोना रावी के पश्चिम में पड़ता है, किन्तु उसे वर्तमान संदर्भ में, माझा का एक भाग समझा जा सकता है।

वाद सहित दिया जा रहा है। तीसरा गुरमुखी और फ़ारसी लिपि में भी अक्षरान्तर और अनुवाद सहित दिया जा रहा है।

लुधियाना के आदर्श की तुलना में प्रमुख भेदकारी बातें, जो नमूनों में परिलक्षित हुई हैं, निम्नलिखित हैं—

मूर्धन्य ळ का उच्चारण अमृतसर में कभी नहीं होता। इसकी जगह सदा साधारण दन्त्य ल लगाया जाता है; जैसे **नाल**, साथ, **नाळ** नहीं। -ड- वर्ण का प्रायः द्वित्व होता है; जैसे **तुहाडा**, तुम्हारा, के लिए **तुहाड्डा**; **वडा**, वड़ा, के लिए **वड्डा**; **दुराडा** या **दुराड्डा**, दूर। दूसरी ओर, लुधियाना की आदर्श बोली में जिन वर्णों का द्वित्व होता है, उनका अमृतसर में प्रायः द्वित्व नहीं होता। जैसे **उट्ठ-के**, उठकर, के लिए **उठ-के**; **विच**, में, **विच्च** नहीं; किन्तु **विच्चों**, में से; **लगिआ**, जुड़ा, किन्तु **लग्गा**, आरंभ किया; **लभ-पिआ**, प्राप्त हुआ, **लब्भ-पिआ** नहीं; **अपरिआ**, पहुँचा, **अप्परिआ** नहीं।

अनुनासिकीकरण बहुधा होता है। जैसे **अपणाँ धन**, अपना धन; **आँउन्दी-है**, आती है; **भरनां चाँहुन्दा-सी**, भरना चाहता था; **जाँवाँगा**, जाऊँगा; **चुम्मिआँ**, चूमा गया; **मनांइए**, मनायें। इन आनुनासिक रूपों में से कुछ प्राचीन नपुंसक लिंग के अवशेष हैं।

संज्ञा के रूपान्तर में, **विच**, में, परसर्ग का आदि व- प्रायः लुप्त होता है और परसर्ग का शेष प्रत्यय के रूप में मुख्य शब्द के साथ जोड़ा जाता है, जैसे **घर-विच**, घर में, के स्थान पर **घरिच**। करण कारक का परसर्ग नै या नें है। प्राचीन नपुंसकलिंग के अवशेष उपरि-उद्धृत **अपणाँ धन**, **चुम्मिआँ** आदि में देखिए।

इहदो हत्थीं, इसके हाथों, जैसे वाक्यांशों में संसर्ग के क़ारण मिथ्या लिंग का प्रयोग द्रष्टव्य है। यह भी ध्यान रहे कि **हत्थीं** एक वचन में प्रयुक्त हुआ है।

सर्वनामों में **असीं**, हम, और **तुसीं**, तुम, की अनुनासिकता हटाकर **असी**, **तुसी** व्यवहृत होते हैं। दूसरे रूप जो व्याकरणों में नहीं मिलते, **मैंनें**, मैंने; **साड्डा**, हमारा, **तैंनें**, तुझने; **तुहाड्डा**, तुम्हारा, हैं। **तूँ**, तू, का तिर्यक् एकवचन प्रायः **तुध** होता है। अन्यपुरुष सर्वनाम का तिर्यक् बहुवचन **उनाँ** है, **उन्हाँ** नहीं।

सहायक क्रिया में **हैं**, **हन** मिलते हैं और दोनों का अर्थ है 'हम हैं', 'वे हैं।' भूत काल के निम्नलिखित रूप होते हैं—

	एकव०	बहुव०
उत्तम पु०	साँ	साँ
मध्यम पु०	सैं	सौ
अन्य पु०	सी	से

समापिका क्रियाओं के वर्तमान कृदन्त का -दा के स्थान पर -ना में अन्त होता है। जैसे **मारना-हाँ**, मैं मारता हूँ।

अनियमित रूपों में उल्लेखनीय हैं **देउ**, दो; **देह**, दे; **जाह**, जा; **जाँवाँगा**, जाऊँगा; **आँउन्दा** या **आन्दा**, आता।

एक महत्त्वपूर्ण प्रसंग में ये नमूने माझा की बोली का आकलन नहीं करते; और वह है क्रिया के भूतकाल के साथ पुरुषवाची प्रत्ययों का यदाकदा प्रयोग। वस्तुतः यह लक्षण भाषाओं के बाहरी वृत्त का है, और जैसा कि व्याकरणों में विवेचित किया गया है, पंजाबी से सम्बद्ध नहीं है। साथ ही, यह नियमित रूप से लहँदा में पाया जाता है, और जैसा कि इस प्रकरण की भूमिका में कहा गया है, पंजाबी की तह में लहँदा आधार है, जिस पर भीतरी वर्ग की भाषा, जो कि केन्द्रीय और पूर्वीय पंजाब में स्थापित हो गयी है, छायी हुई है। जैसे ही हम प्राचीन सरस्वती से पश्चिम की ओर चलते हैं, लहँदा आधार अधिकाधिक उभरने लगता है, और इसी लिए कभी-कभी माझी में ये प्रत्यय मिल जाते हैं। माझी में ये केवल सकर्मक क्रियाओं के अन्य पुरुष में पाये जाते हैं, और एकवचन **उस**, **ओस**, या **ओसु** के लिए अथवा बहुवचन **ओने** के लिए होते हैं। इस प्रकार नियमित **उस आखिया**, उसने कहा, के स्थान पर हमें प्रायः **आखिओस**, एवं **उन्हाँ** (अथवा **उन्नाँ**) **आखिआ**, उन्होंने कहा, के स्थान पर **आखिओने** सुनने में आता है। इसी तरह, **दित्तोस**, उसने दिया; **कहिओस**, उसने कहा; **कीतोसु**, उसने किया; **मन्निउस**, उसने माना; **दित्तोने**, उन्होंने दिया; **कीतोने**, उन्होंने किया।

[सं० २]

भारतीय आर्य परिवार | केन्द्रीय वर्ग

पंजाबी

माझी बोली | (जिला अमृतसर)

पहला

(गुरुमुखी हस्तलेख)

੧੬ ਇਕ ਮਨੁੱਖ ਦੇ ਦੋ ਪੁਤ ਸੇ॥ ਅਤੇ ਛੋਟੇ ਨੇ, ਉਨਾਂ ਵਿੱਚੋਂ ਆਪਣੇ ਪਿਉ ਨੂੰ ਆਖਿਆ,
ਬਾਪੂ ਜੀ, ਮਾਲ ਦੀ ਵੰਡ ਜਿਹੜੀ ਮੈਨੂੰ ਆਉਂਦੀ ਹੈ ਦੇਉ॥ ਅਤੇ ਉਸਨੇ ਉਨਾਂ ਨੂੰ ਆਪਣੀ
ਜਾਇਦਾਤ ਵੰਡ ਦਿੱਤੀ॥ ਅਰ ਥੋੜੇ ਦਿਨਾਂ ਪਿੱਛੋਂ ਛੋਟਾ ਪੁਤ ਸੱਭ ਕੁਝ ਕੱਠਾ ਕਰਕੇ
ਦੁਰਾਡੇ ਦੇਸ ਨੂੰ ਚਲਿਆ ਗਿਆ, ਅਰ ਓਥੇ ਆਪਣਾਂ ਧਨ ਫੈਲਦਾਰੀ ਵਿਚ
ਗੁਆ ਦਿੱਤਾ॥ ਅਤੇ ਜੱਦੋਂ ਸੱਭੋ ਕੁਜ ਖਰਚ ਕਰ ਚੁਕਿਆ, ਤਾਂ ਉਸ ਦੇਸ ਵਿਚ ਵੱਡਾ
ਕਾਲ ਆਪਿਆ॥ ਅਰ ਓਹ ਮੁਤਾਜ ਹੋਣ ਲੱਗਾ॥ ਅਤੇ ਉਹ ਉਸ ਦੇਸ ਦੇ ਕਿਸੇ ਰਹਣ
ਵਾਲੇ ਦੇ ਕੋਲ ਜਾਕੇ ਕੰਮਾਂ ਰਹਿ ਪਿਆ॥ ਅਰ ਓਸ ਨੇ ਉਹ ਨੂੰ ਆਪਣੀਆਂ
ਪੈਲੀਆਂ ਵਿਚ ਸੂਰ ਚਾਰਣ ਲਈ ਘਲਿੱਆ॥ ਅਰ ਜਿਹੜੇ ਛਿੱਲੜ ਸੂਰ ਖਾਂਦੇ ਸੀ
ਉਹ ਉਨਾਂ ਨਾਲ ਆਪਣਾਂ ਢਿੱਡ ਭਰਨਾਂ ਚਾਂਹੁੰਦਾ ਸੀ॥ ਪਰ ਕਿਸੇ ਓਸ ਨੂੰ ਨਾਂ
ਦਿੱਤੇ॥ ਅਰ ਜਦ ਸੁਰਤ ਵਿਚ ਆਇਆ, ਤੇ ਆਖਿਆ, ਮੇਰੇ ਪਿਉ ਦੇ ਕਿੰਨੇ
ਹੀ ਕੰਮੀਆਂ ਨੂੰ ਵਾਫਰ ਰੋਟੀਆਂ ਹਨ, ਅਰ ਮੈਂ ਭੁੱਖਾ ਮਰਦਾ ਹਾਂ॥ ਮੈਂ
ਉਠਕੇ ਆਪਣੇ ਪਿਉ ਕੋਲ ਜਾਂਵਾਂ ਗਾ, ਅਰ ਓਸ ਨੂੰ ਆਖਾਂ ਗਾ, ਬਾਪੂ ਜੀ ਮੈਂ
ਰੱਬ ਦਾ ਅਤੇ ਤੇਰੇ ਅੱਗੇ ਗੁਨਾਹ ਕੀਤਾ ਹੈ॥ ਅਰ ਹੁਣ ਮੈਂ ਇਸ ਜੋਗਾ ਨਹੀਂ
ਜੋ ਫੇਰ ਤੇਰਾ ਪੁੱਤ ਸਦਾਵਾਂ॥ ਮੈਨੂੰ ਆਪਣਿਆਂ ਕੰਮੀਆਂ ਵਿਚੋਂ ਇੱਕ ਜਿਹਾ
ਰੱਖ॥ ਸੋ ਓਹ ਉਠਕੇ ਆਪਣੇ ਪਿਉ ਕੋਲ ਆਇਆ॥ ਪਰ ਓਹ ਅਜੇ ਦੂਰ ਸੀ ਜੋ ਉਹਦੇ
ਪਿਉ ਨੇ ਓਹ ਨੂੰ ਵੇਖਿਆ ਤੇ ਓਸ ਨੂੰ ਤਰਸ ਆਇਆ ਦੌੜਕੇ ਗਲ ਲਗਿਆ ਅਰ ਓਹ ਨੂੰ
ਚੁੰਮਿਆਂ॥ ਅਤੇ ਪੁੱਤ ਨੇ ਓਹ ਨੂੰ ਆਖਿਆ, ਬਾਪੂ ਜੀ ਮੈਂ ਰੱਬ ਦਾ ਅਰ ਤੇਰੇ ਅੱਗੇ ਗੁਨਾਹ
ਕੀਤਾ ਹੈ, ਹੁਣ ਮੈਂ ਇਸ ਜੋਗਾ ਨਹੀਂ ਜੋ ਫੇਰ ਤੇਰਾ ਪੁੱਤ ਸਦਾਵਾਂ॥ ਪਰ ਪਿਉ ਨੇ ਆਪਣੇ

ਨੌਕਰਾਂ ਨੂੰ ਕਿਹਾ, ਸਭਤੋਂ ਚੰਗੇ ਲੀੜੇ ਕਢ ਕੇ ਇਹ ਨੂੰ ਪੁਆਓ, ਅਰ
ਇਹਦੀ ਹੱਥੀਂ ਛਾਪ ਤੇ ਪੈਰੀਂ ਜੁੱਤੀ ਪਾਓ॥ ਅਤੇ ਖਾਈਏ ਤੇ ਖੁਸੀਆਂ ਮਨਾਂਈ
ਦੇ॥ ਕਿਉਂ ਜੋ ਇਹ ਮੇਰਾ ਪੁੱਤ ਮੋਇਆ ਸੀ ਤੇ ਫੇਰ ਜੀਊ ਪਿਆ ਹੈ; ਗੁਆਚ
ਗਿਆ ਸੀ, ਤੇ ਲਭ ਪਿਆ ਹੈ॥ ਸੋ ਓਹ ਲੱਗੇ ਖੁਸੀਆਂ ਕਰਨ॥

ਪਰ ਓਹਦਾ ਵੱਡਾ ਪੁੱਤ ਪੈਲੀ ਵਿਚ ਸੀ। ਜਦ ਓਹ ਆਕੇ ਘਰਦੇ ਨੇੜੇ
ਅਪੜਿਆ, ਤਾਂ ਰਾਗ ਨਾਚ ਦੀ ਅਵਾਜ ਸੁਣੀ॥ ਤਦ ਨੌਕਰਾਂ ਵਿੱਚੋਂ ਇੱਕ
ਨੂੰ ਸੱਦ ਕੇ ਪੁੱਛਿਆ, ਇਹ ਕੀ ਹੈ॥ ਅਤੇ ਓਸ ਨੇ ਓਹਨੂੰ ਆਖਿਆ, ਤੇਰਾ
ਭਰਾ ਆਇਆ ਹੈ; ਅਰ ਤੇਰੇ ਪਿਉ ਨੇ ਮਮਾਨੀ ਕੀਤੀ ਹੈ॥ ਕਿਉਂ ਜੋ ਓਸਨੂੰ
ਰਾਜੀ ਬਾਜੀ ਪਾਇਆ॥ ਅਰ ਓਹ ਗੁੱਸੇ ਹੋਇਆ, ਅਤੇ ਅੰਦਰ ਜਾਣ
ਨੂੰ ਓਸਦਾ ਜੀ ਨਾ ਕੀਤਾ॥ ਤਾਂ ਉਹਦਾ ਪਿਉ ਬਾਹਰ ਆਣਕੇ ਉਹਨੂੰ ਮਨਾ
ਉਣ ਲੱਗਾ॥ ਅਰ ਉਹਨੇ ਆਪਣੇ ਪਿਉ ਨੂੰ ਉੱਤਰ ਵਿਚ ਆਖਿਆ, ਵੇਖ
ਮੈਂ ਐਨੇ ਵਰਿਆਂ ਥੋਂ ਤੇਰੀ ਟਹਲ ਕਰਦਾ ਹਾਂ, ਤੇ ਤੇਰਾ ਹੁਕਮ ਕਦੇ ਨਹੀ
ਮੋੜਿਆ॥ ਪਰ ਤੈਂ ਮੈਨੂੰ ਕਦੇ ਇੱਕ ਪਠੋਰਾ ਬੀ ਨਾਂ ਦਿੱਤਾ, ਜੋ ਮੈਂ ਆਪ
ਣਿਆਂ ਬੇਲੀਆਂ ਨਾਲ ਖੁਸੀ ਕਰਦਾ॥ ਪਰ ਜਦ ਤੇਰਾ ਏਹ ਪੁਤ ਆ-
ਇਆ, ਜਿਸਨੇ ਤੇਰਾ ਸਾਰਾ ਧਨ ਕੰਜਰੀਆਂ ਨਾਲ ਉੜਾ ਦਿੱਤਾ, ਤੈਂ
ਉਹਦੇ ਲਈ ਮਮਾਨੀ ਕੀਤੀ॥ ਪਰ ਉਹਨੇ ਓਸਨੂੰ ਆਖਿਆ, ਪੁੱਤ
ਤੂੰ ਸਦਾ ਮੇਰੇ ਨਾਲ ਹੈਂ, ਅਤੇ ਮੇਰਾ ਸੱਭੋ ਕੁੱਜ ਤੇਰਾ ਹੈ॥ ਪਰ ਖੁਸੀ
ਕਰਨੀ ਅਰ ਅਨੰਦ ਹੋਣਾ ਜੋਗ ਸੀ॥ ਕਿਉਂਜੋ ਇਹ ਤੇਰਾ ਭਰਾ
ਮੋਇਆ ਸੀ ਤੇ ਫੇਰ ਜੀਊ ਪਿਆ ਹੈ; ਅਰ ਗੁਆਚ ਗਿਆ ਸੀ ਤੇ
ਲਭ ਪਿਆ ਹੈ॥

(गुरमुखी मुद्रित रूप)

ਇੱਕ ਮਨੁੱਖਦੇ ਦੋ ਪੁੱਤ ਸੇ। ਅਤੇ ਛੋਟੇਨੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਵਿੱਚੋਂ ਆਪਣੇ ਪਿਉਨੂੰ ਆਖਿਆ, ਬਾਪੂਜੀ, ਮਾਲਦੀ ਵੰਡ ਜਿਹੜੀ ਮੈਨੂੰ ਆਉਂਦੀ ਹੈ ਦੇਉ। ਅਤੇ ਉਸਨੇ ਉਨ੍ਹਾਂਨੂੰ ਆਪਣੀ ਜਦਾਦ ਵੰਡ ਦਿੱਤੀ। ਅਰ ਥੋੜੇ ਦਿਨਾਂ ਪਿੱਛੋਂ ਛੋਟਾ ਪੁੱਤ ਸੱਭੋ ਕੁਝ ਕੱਠਾ ਕਰਕੇ ਦੁਰਾਡੇ ਦੇਸਨੂੰ ਚਲਿਆ ਗਿਆ, ਅਰ ਓੱਥੇ ਆਪਣਾ ਧਨ ਵੈਲਦਾਰੀ ਵਿਚ ਗੁਆ ਦਿੱਤਾ। ਅਤੇ ਜੱਦੋਂ ਸੱਭੋ ਕੁਝ ਖਰਚ ਕਰ ਚੁਕਿਆ, ਤਾਂ ਉਸ ਦੇਸ ਵਿੱਚ ਵੱਡਾ ਕਾਲ ਆ ਪਿਆ। ਅਰ ਓਹ ਮੁਥਾਜ ਹੋਣ ਲੱਗਾ। ਅਤੇ ਉਹ ਉਸ ਦੇਸਦੇ ਕਿਸੇ ਰਹਣਵਾਲੇਦੇ ਕੋਲ ਜਾਕੇ ਕਾਮਾਂ ਰਹਿ ਪਿਆ। ਅਰ ਉਸਨੇ ਉਹਨੂੰ ਆਪਣੀਆਂ ਪੈਲੀਆਂ ਵਿਚ ਸੂਰ ਚਾਰਣ ਲਈ ਘੱਲਿਆ। ਅਰ ਜਿਹੜੇ ਛਿੱਲੜ ਸੂਰ ਖਾਂਦੇ ਸੀ ਉਹ ਉਨਾਂ ਨਾਲ ਆਪਣਾਂ ਢਿੱਡ ਭਰਨਾਂ ਚਾਹੁੰਦਾ ਸੀ ਪਰ ਕਿਨੇ ਓਸਨੂੰ ਨਾਂ ਦਿੱਤੇ। ਅਰ ਜਦ ਸੁਰਤ ਵਿਚ ਆਇਆ, ਤੇ ਆਖਿਆ, ਮੇਰੇ ਪਿਉਦੇ ਕਿੰਨੇ ਹੀ ਕਾਮਿਆਂਨੂੰ ਵਾਫ਼ਰ ਰੋਟੀਆਂ ਹਨ, ਅਰ ਮੈਂ ਭੁੱਖਾ ਮਰਦਾ ਹਾਂ। ਮੈਂ ਉਠਕੇ ਆਪਣੇ ਪਿਉ ਕੋਲ ਜਾਵਾਂਗਾ, ਅਰ ਓਸਨੂੰ ਆਖਾਂਗਾ। ਬਾਪੂਜੀ ਮੈਂ ਰੱਬਦਾ ਅਤੇ ਤੇਰੇ ਅੱਗੇ ਗੁੱਨਾਹ ਕੀਤਾ ਹੈ। ਅਰ ਹੁਣ ਮੈਂ ਇਸ ਜੋਗਾ ਨਹੀਂ ਜੋ ਫੇਰ ਤੇਰਾ ਪੁੱਤ ਸਦਾਵਾਂ। ਮੈਨੂੰ ਆਪਣਿਆਂ ਕਾਮਿਆਂ ਵਿੱਚੋਂ ਇੱਕ ਜਿਹਾ ਰੱਖ। ਸੋ ਓਹ ਉਠਕੇ ਆਪਣੇ ਪਿਉ ਕੋਲ ਆਇਆ। ਪਰ ਓਹ ਅਜੇ ਦੂਰ ਸੀ ਜੋ ਉਹਦੇ ਪਿਉਨੇ ਓਹਨੂੰ ਵੇਖਿਆ ਤੇ ਓਸਨੂੰ ਤਰਸ ਆਇਆ ਦੌੜ ਕੇ ਗਲ ਲਗਿਆ ਅਰ ਉਹਨੂੰ ਚੁੰਮਿਆਂ। ਅਤੇ ਪੁੱਤਨੇ ਉਹਨੂੰ ਆਖਿਆ, ਬਾਪੂਜੀ ਮੈਂ ਰੱਬਦਾ ਅਰ ਤੇਰੇ ਅੱਗੇ ਗੁੱਨਾਹ ਕੀਤਾ ਹੈ, ਹੁਣ ਮੈਂ ਇਸ ਜੋਗਾ ਨਹੀਂ ਜੋ ਫੇਰ ਤੇਰਾ ਪੁੱਤ ਸਦਾਵਾਂ। ਪੌਰ ਪਿਉਨੇ ਆਪਣੇ ਚਾਕਰਾਂਨੂੰ ਕਿਹਾ, ਸਭਤੋਂ ਚੰਗੇ ਲੀੜੇ ਕਢ ਕੇ ਇਹਨੂੰ ਪੁਆਉ, ਅਰ ਇਹਦੀ ਹੱਥੀਂ ਛਾਪ ਤੇ ਪੈਰੀਂ ਜੁੱਤੀ ਪਾਓ। ਅਤੇ ਖਾਈਏ ਤੇ ਖੁਸੀਆਂ ਮਨਾਈਏ। ਕਿਉਂ ਜੋ ਇਹ ਮੇਰਾ ਪੁੱਤ ਮੋਇਆ ਸੀ ਤੇ ਫੇਰ ਜਿਊ ਪਿਆ ਹੈ, ਗੁਆਚ ਗਿਆ ਸੀ, ਤੇ ਲਭ ਪਿਆ ਹੈ। ਸੋ ਓਹ ਲੱਗੇ ਖੁਸੀਆਂ ਕਰਨ॥

ਪਰ ਓਹਦਾ ਵੱਡਾ ਪੁੱਤ ਪੈਲੀ ਵਿਚ ਸੀ। ਜਦ ਓਹ ਆਕੇ ਘਰਦੇ ਨੇੜੇ ਅਪੜਿਆ, ਤਾਂ ਰਾਗ ਨਾਚਦੀ ਅਵਾਜ ਸੁਣੀ। ਤਦ ਨੌਕਰਾਂ ਵਿੱਚੋਂ ਇੱਕਨੂੰ ਸੱਦ ਕੇ ਪੁੱਛਿਆ, ਇਹ ਕੀ ਗਲ ਹੈ। ਅਤੇ ਓਸਨੇ ਓਹਨੂੰ ਆਖਿਆ, ਤੇਰਾ ਭਰਾ ਆਇਆ ਹੈ, ਅਰ ਤੇਰੇ ਪਿਉਨੇ

ਮਮਾਨੀ ਕੀਤੀ ਹੈ। ਕਿਉਂ ਜੋ ਓਸਨੂੰ ਰਾਜੀ ਬਾਜੀ ਪਾਇਆ। ਅਰ ਓਹ ਗੁਸੇ ਹੋਇਆ, ਅਤੇ ਅੰਦਰ ਜਾਣਨੂੰ ਓਸਦਾ ਜੀ ਨਾ ਕੀਤਾ। ਤਾਂ ਉਹਦਾ ਪਿਉ ਬਾਹਰ ਆਣਕੇ ਉਹਨੂੰ ਮਨਾਉਣ ਲੱਗਾ। ਅਰ ਉਹਨੇ ਆਪਣੇ ਪਿਉਨੂੰ ਉੱਤਰ ਵਿਚ ਆਖਿਆ, ਵੇਖ ਮੈਂ ਐਨੇ ਵਰ੍ਹਿਆਂ ਥੋਂ ਤੇਰੀ ਟਹਲ ਕਰਦਾ ਹਾਂ, ਤੇ ਤੇਰਾ ਹੁਕਮ ਕਦੇ ਨਹੀਂ ਮੋੜਿਆ। ਪਰ ਤੈਂ ਮੈਨੂੰ ਕਦੇ ਇੱਕ ਪਠੌਰਾ ਬੀ ਨਾਂ ਦਿੱਤਾ, ਜੋ ਮੈਂ ਆਪਣਿਆਂ ਬੇਲੀਆਂ ਨਾਲ ਖੁਸੀ ਕਰਦਾ। ਪਰ ਜਦ ਤੇਰਾ ਏਹ ਪੁਤ ਆਇਆ, ਜਿਸਨੇ ਤੇਰਾ ਸਾਰਾ ਧਨ ਕੰਜਰੀਆਂ ਨਾਲ ਉਡਾ ਦਿੱਤਾ, ਤੈਂ ਉਹਦੇ ਲਈ ਮਮਾਨੀ ਕੀਤੀ। ਪਰ ਉਹਨੇ ਓਸਨੂੰ ਆਖਿਆ ਪੁੱਤ ਤੂੰ ਸਦਾ ਮੇਰੇ ਨਾਲ ਹੈਂ ਅਤੇ ਮੇਰਾ ਸੱਭੋ ਕੁੱਜ ਤੇਰਾ ਹੈ। ਪਰ ਖੁਸੀ ਕਰਨੀ ਅਰ ਅਨੰਦ ਹੋਣਾ ਜੋਗ ਸੀ। ਕਿਉਂ ਜੋ ਇਹ ਤੇਰਾ ਭਰਾ ਮੋਇਆ ਸੀ ਤੇ ਫੇਰ ਜੀਉ ਪਿਆ ਹੈ, ਅਰ ਗੁਆਚ ਗਿਆ ਸੀ ਤੇ ਲਭ ਪਿਆ ਹੈ॥

(नागरी रूपान्तर)

इक्क मनुक्खदे दो पुत्त से। अते छोटेनै उनाँ विच्चों आपणे पिउनूँ आखिआ, 'बापू-जी, मालदी वण्ड जिह्ड़ी मैनूँ आउन्दी-है देउ।' अते उसनै उनांनूँ आपणी जदात वण्ड दित्ती। अर थोड़े दिनाँ पिच्छों छोटा पुत्त सब्बो कुज कट्ठा कर-के दुराडे देसनूँ चलिआ-गिआ, अर ओत्थे आपणाँ धन बैलदारी विच गुआ-दित्ता। अते जद्दों सब्बो कुज खरच कर चुकिआ, ताँ उस देस विच वड्डा काल आ-पिआ, अर ओह् मुताज होण लग्गा। अते ओह् उस देसदे किसे रहण-वालेदे कोल जा-के काम्भाँ रहि-पिआ। अर ओसनै उह्नूँ आपणीआँ पैलीआँ विच सूर चारण-लई घल्लिआ। अर जिह्ड़े छिल्लड़ सूर खान्दे-सी उह उनाँ नाल आपणाँ ढिड्ड भरनां चाँहुन्दा-सी, पर किने ओसनूँ नाँ दित्ते। अर जद सुरत विच आइआ, ते आखिआ, 'मेरे पिउदे किन्ने-ही काम्मिआंनूँ वाफर रोटीआँ हन, अर मैं भुक्खा मरदा हाँ। मैं उठ-के आपणे पिउ कोल जांवांगा, अर ओसनूँ आखांगा, 'बापू-जी, मैं रब्ब-दा अते तेरे अग्गे गुन्नाह् कीता-है, हुण मैं इस जोगा नहीं जो फेर तेरा पुत्त सदावाँ।' मैनूँ आपणिआँ कांमिआं विच्चों इक्क जिहा रक्ख। सो उह उठके आपणे पिउ कोल आइआ। पर ओह् अजे दूर सी जो उह्दे पिउनै उह्नूँ वेखिआ ते उसनूँ तरस आइआ, दौड़ के गल लगिआ अर उह्नूँ चुम्मिआ। अते पुत्तनै उह्नूँ आखिआ, "बापू जी, मैं रब्बदा अते तेरे अग्गे गुन्नाह कीता है, हुण मैं इस जोगा नहीं जो फेर तेरा पुत्त सदावाँ।" पर पिउनै आपणे चाकरांनूँ

किहा, 'सब-तों चंगे लीड़े कढ-के इह् नूँ पुआउ अर इहदी हत्थीं छाप, ते पैरीं जुत्ती पाओ, अते खाईये ते खुसीआँ मनांईये; किउँ जो इह मेरा पुत्त मोइआ सी, ते फेर जिऊ-पिआ है, गुआच गिआ सी, ते लभ-पिआ-है।' सो ओह् लग्गे खुसीआँ करन।

पर ओह्दा वड्ढा पुत्त पैली विच सी। जद ओह् आ-के घरदे नेड़े अपड़िआ, ताँ राग नाचदी अवाज सुणी। तद नौकरां विच्चों इक्कनूँ सद्द-के पुच्छिआ, 'इह की गल्ल है?' अते ओसनै ओहनूँ आखिआ, 'तेरा भरा आइआ-है, अर तेरे पिउनै ममानी कीती है, किउँ-जो ओसनूँ राजी-बाजी पाइआ।' अर ओह् गुस्से होइआ, अते अन्दर जाणनूँ ओसदा जी ना कीता। ताँ उहदा पिउ बाहर आण-के उहनूँ मनाउण लग्गा। अर उहनै आपणे पिउनूँ उत्तर विच आखिआ, 'वेख, मैं ऐने वरिहाँ-थों तेरी टहल
उहनै आपणे पिउनूँ उत्तर विच आखिआ, 'वेख, मैं ऐने वरिहाँ-थों तेरी टहल्
करदा-हाँ, ते तेरा हुकम कदे नहीं मोड़िआ। पर तैं मैंनूँ कदे इक्क पठोरा बी नां दित्ता, जो मैं आपणिआँ बेलीआँ नाल खुसी करदा। पर जद तेरा एह् पुत आइआ, जिसनै तेरा सारा धन कंजरीआं नाल उडा-दित्ता, तैं उहदे लइ ममानी कीती।' पर उहनै ओसनूँ आखिआ, 'पुत्त, तूँ सदा मेरे नाल है, अते मेरा सब्बो कुज्ज तेरा है। पर खुसी करनी, अर अनन्द होणा जोग सी, किऊँ-जो इह तेरा भरा मोइआ सी, ते फेर जीऊ-पिआ है, अर गुआच पिआ-सी, ते लभ-पिआ-है।'

(हिन्दी अनुवाद)

एक मनुष्य के दो पुत्र थे। और छोटे ने, उनमें से, अपने बाप को कहा, 'बापू जी, सम्पत्ति की बाँट जो मुझे आती है, दो।' और उसने उनको अपनी सम्पत्ति बाँट दी। और थोड़े दिनों बाद छोटा पुत्र सब कुछ इकट्ठा करके दूर के देश को चला गया, और वहाँ अपना धन बदचलनी में खो दिया। और जब सब कुछ खर्च कर चुका, तो उस देश में बड़ा अकाल आ पड़ा, और वह मोहताज (दरिद्र) होने लगा। और वह उस देश के किसी रहने वाले के पास जाकर कर्मी (बन) रहने लगा। और उसने उसको अपने खेतों में सूअर चराने के लिए भेजा। और जो छिलके सूअर खाते थे वह उनसे अपना पेट भरना चाहता था; पर किसी ने उसको न दिये। और जब होश में आया, तो कहा, 'मेरे बाप के (यहाँ) कितने ही कर्मियों को फालतू रोटियाँ (मिलती) हैं, और मैं भूखा मरता हूँ। मैं उठकर अपने बाप के पास जाऊँगा, और उसको कहूँगा, 'बापू जी, मैंने परमेश्वर का और तेरे आगे पाप किया है, अब मैं इस योग्य नहीं कि

फिर तेरा पुत्र कहलाऊँ। मुझे अपने कर्मियों में एक के समान रख।' सो वह उठकर अपने बाप के पास आया। पर वह अभी दूर था कि उनके बाप ने उसे देखा और उसको दया आयी। दौड़कर गले लगाया और उसे चूमा। और पुत्र ने उसे कहा, 'बापूजी, मैं परमेश्वर का और तेरे आगे पाप किया है, अब मैं इस योग्य नहीं कि फिर तेरा पुत्र कहलाऊँ।' पर बाप ने अपने नौकरों को कहा, 'सब से अच्छे कपड़े निकाल कर इसे पहनाओ; और इसके हाथ में अँगूठी, और पैरों में जूता पहनाओ; और खायें और खुशियाँ मनायें; क्योंकि यह मेरा पुत्र मर गया था, और फिर जी पड़ा है; खो गया था, और मिल गया है।' सो वे लगे आनन्द करने।

पर उसका बड़ा पुत्र खेत में था। जब वह आकर घर के निकट पहुँचा, तो राग-नाच की आवाज सुनी। तब नौकरों में से एक को बुलाकर पूछा, "यह क्या बात है?" और उसने उसको कहा, 'तेरा भाई आया है, और तेरे बाप ने महिमानी (भोज) की है, क्योंकि उसे कुशलपूर्वक पाया।' और वह क्रुद्ध हुआ और भीतर जाने को उसका जी न किया। तब उसका बाप बाहर आकर उसे मनाने लगा। और उसने बाप को उत्तर में कहा, 'देख, मैं इतने बरसों से तेरी सेवा करता हूँ, और तेरी आज्ञा का कभी उल्लंघन नहीं किया। पर तूने मुझे कभी एक मेमना भी नहीं दिया, कि मैं अपने साथियों के साथ खुशी मनाता। पर जब तेरा यह पुत्र आया, जिसने तेरा सारा धन वेश्याओं के संग उड़ा दिया, तूने उसके लिए महिमानी की।' पर उसने उसे कहा, 'बेटा, तू सदा मेरे साथ है, और मेरा सब कुछ तेरा है। पर खुशी मनाना, और आनन्द करना चाहिए था, क्योंकि यह तेरा भाई मर गया था, और फिर जी पडा है; और खो गया था, और मिल गया है।'

[सं० ३]

भारतीय आर्य परिवार केन्द्रीय वर्ग

पंजाबी

माझी बोली (जिला अमृतसर)

दूसरा उदाहरण

ਗੱਲਾਂ ਸੁਣਕੇ ਸਾਹਬਾਂਦੀਯਾਂ ਕਾਂ ਜਾਂਦੇ ਸਰਮਾ ।

ਭੁਖਿਆਂ ਕੂੰਜਾਂ ਮਾਰੀਆਂ ਪਰੀਂ ਨ ਉੱਡਾ ਜਾ ॥ ੧ ॥

ਮੋਇਆਂਦਾ ਮਾਸ ਨ ਛੱਡ ਦੇ ਪੌਂਹਚ ਕੇ ਲੈਂਦੇ ਖਾ ।

ਨਾਲ ਜਰਾਨਾ ਜੱਟਦੇ ਨਾ ਲਈ ਪੱਗ ਵਟਾ ॥ ੨ ॥

ਚੰਗੀ ਕਰ ਬਹਾਲੀਏ ਪੇੜੇ ਲਏ ਚੁਰਾ ।

ਸੋਹਣੀ ਸੂਰਤ ਬਾਵਰੀ ਜਲ ਕੇ ਹੋਣੀ ਸਵਾਹ ॥ ੩ ॥

ਉਹਦਾ ਬੁਰਾ ਨ ਤੱਕੀਏ ਜਿਹਦਾ ਲਈਏ ਲੂਣ ਖਾ ।

ਜੇ ਧੀ ਹੁੰਦੀ ਅਸੀਲਦੀ ਜੰਡ ਨਾਲ ਲੈਂਦੀ ਫਾਹ ॥ ੪ ॥

ਮੋਇਆ ਮਿਰਜਾ ਸੁਣ ਕੇ ਬੈਠੀ ਕੰਡ ਭੁਵਾ ।

ਗੌਰ ਪੁਛੇਂਦੀ ਭੁਧਨੂੰ ਮੈਥੇ ਜਾਣਾ ਆ ॥ ੫ ॥

ਝੂਠੇ ਘਰਨੂੰ ਛੱਡ ਦੇ ਸੱਚੇ ਵਲ ਜਾ ।

ਛੇਕੜਦਾ ਘੋਲ ਹੈ ਪਿੰਡੇ ਪਾਨੀ ਪਾ ॥ ੬ ॥

ਜਟ ਮਰ ਗਿਆ ਤੂੰ ਜੀਉਂਦੀ ਲੱਖ ਲਾਨਤ ਤੇਰੇ ਜਾ ।

ਕਾਂਵਾਂ ਬੈਲੀ ਮਾਰੀਆਂ ਸਾਹਬਾਂ ਮਰੀ ਕਟਾਰੀ ਖਾ ॥ ੭ ॥

ਲੋਥਾਂ ਪਈਆਂ ਰਹੀਆਂ ਹੇਠਾਂ ਜੰਡਦੇ ਬੁਤ ਵੜੇ ਭਿਸਤੀਂ ਜਾ।

ਕੋਈ ਮੁਸਾਫ਼ਰ ਮਰ ਗਿਆ ਕਿਨੇ ਨ ਮਾਰੀ ਧਾ ॥ ੮ ॥

ਭਾਈ ਹੁੰਦੇ ਬੌਹੜਦੇ ਦੁਖ ਲੈਂਦੇ ਵੰਡਾ ।

ਬਾਝ ਭਰਾਵਾਂ ਜਟ ਮਾਰਿਆ ਕਿਨੈਂ ਨ ਕੀਤੀ ਹਮਰਾ ॥ ੯ ॥

ਬੌਹੜੀਓ ਮਿਰਜਿਆ ॥

माझी

(नागरी रूपान्तर)

गल्लां सुण-के साह्‌बाँदीयाँ काँ जान्दे सरमा।
'भुक्खिआँ चुंज्जां मारीआँ, परीं न उड्‌डा जा॥१॥
मोइआँदा मास न छड्‌ड-दे, पौंह्‌च-के लैन्दे-खा।
नाल जराना जटदे, ना लई पग्ग वटा॥२॥
चंगी कर बहाली-ए, पेड़े लए चुरा।
मोहनी सूरत, बावरी, जल-के होणी सवाह्॥३॥
उह्दा बुरा न तक्कीए, जिह्दा लईए लूण खा।
जे धी हुंदी असीलदी जंड नाल लैंदी फाह्॥४॥
मोइआ मिर्जा सुण-के, बैठी कण्ड भुवा।
गोर पुछैंदी "तुधनूँ मैं-थे जाणा - आ"॥५॥
झूठे घरनूँ छड्‌ड-दे, सच्चे बल जा।
छेकड़लदा घोल है, पिण्डे पानी पा॥६॥
जट मर-गिआ, तूँ जीउन्दी, लक्ख लानत तेरे भा।
कांवां बोली मारीआँ, साह्‌बाँ मरी कटारी खा॥७॥
लोथाँ पईआँ रहीआँ हेठाँ जण्डदे, बुत बड़े भिरतीं जा।
'कोई मुसाफर मर-गिआ', किने न मारी धा॥८॥
भाई हुन्दे बौह्‌ड़दे दुख लैन्दे वण्डा।
बाझ भारावाँ जट मारिआ किने न कीती हम-रा॥९॥'

बौह्‌ड़ीओ मिर्ज़िआ!

(दूसरे उदाहरण का अनुवाद)

(मिर्ज़ा जाट की प्रेमिका साहिबाँ देखती है कि उसकी लाश जण्ड पेड़ के नीचे पड़ी है और उसे कौवे नोच रहे हैं; वह उन्हें झिड़कती है, तो—)

बातें सुनकर साहिबाँ की कौवे जाते लजा (कहने लगे)।
'भूखे चोंचें मारते थे, (हमसे) परों से उड़ा नहीं जाता था॥१॥

(हम) मरों का मांस नहीं छोड़ते. पहुँचकर लेते हैं खा।
साथ जाट के न मैत्री थी, न पगड़ी बदली थी॥२॥
अच्छी समझकर बिठाई गई, (पर तूने तो) पेड़े लिये चुरा।[१]
सुन्दर रूप, अरी बावरी, जलकर होगा राख॥३॥
उसका बुरा न देखिए, जिसका लीजिए नमक खा।
जो बेटी होती (तू) अभिजात की, जंड (पेड़) के साथ लेती फाँसी॥४॥
मर गया मिर्ज़ा, (यह) सुनकर, (तू) बैठी पीठ घुमा!
कब्र पुकारती है (तुझे) कि आखिर 'तुझे मुझ में आ जाना है'॥५॥
झूठे (इस संसार के) घर को छोड़ दे, सच्चे घर की ओर चल।
अन्तिम संघर्ष है (शेष), शरीर पर पानी डाल ले[२]॥६॥
जाट मर गया, (और) तू जीती है। लाख लानत तेरे ऊपर।'
(इस प्रकार) कौवों ने उपालम्भ दिये तो साहिबाँ ने कटार खाकर जान दे दी॥७॥
(दोनों की) लोथें पड़ी रहीं नीचे जण्ड के, आत्माएँ पहुँचीं स्वर्ग में जा।
'कोई यात्री मर गया', (यह समझ) किसी ने दुहाई तक नहीं दी॥८॥
(यदि उसके) भाई होते तो पहुँचते, दुःख लेते बाँट।
बिन भाइयों जाट मारा गया, किसी ने नहीं की सहानुभूति॥९॥

लौट आओ, मिर्ज़ा!

निम्नलिखित गाथा कुँवर नौनिहालसिंह के सन् १८३७ वाले विवाह से संबंधित है। इसमें उल्लिखित खड़कसिंह महाराज रणजीतसिंह के उत्तराधिकारी थे जिन्होंने

१. कौवे यह कहना चाहते हैं कि मिर्ज़ा का उनसे कोई प्यार नहीं था, पर साहिबाँ से तो था। वह उसके लिए जान क्यों नहीं दे देती? मिर्ज़ा समझता था कि साहिबाँ वफ़ादार है किन्तु वह तो बेवफ़ाई कर रही है, क्योंकि अभी तक जीवित है। प्रेमी ने उसे तंदूर की मालिकिन बनाया था, लेकिन वह कच्चे आटे के पेड़े (लोई) ही खाने लग पड़ी। उसे अपनी जान न्यौछावर कर देनी चाहिए थी। आख़िर एक दिन मरना तो है ही।

२. यहाँ मुसलमानों की उस प्रथा की ओर संकेत है जिसके अनुसार शव को दफ़नाने से पहले नहलाया जाता है।

तीन महीने राज्य किया। उन्हें १८४० ई० में उनके पुत्र नौनिहालसिंह ने गद्दी से हटा दिया। खड़कसिंह रणक्षेत्र में नहीं, शय्या पर मरे। यह शंका की जाती रही कि उन्हें विष देकर मार डाला गया।

नौनिहालसिंह का विवाह शामसिंह अटारीवाला की पुत्री जसकौर से हुआ था। शामसिंह ने सन् १८४६ में अँग्रेजों के विरुद्ध लड़ते हुए सोबराउँ के मैदान में वीरगति प्राप्त की। इस घटना को चौथे पद्य में 'काला भाग्य' कहा गया है।

जिस दिन खड़कसिंह का दाहकर्म हुआ उसी दिन नौनिहालसिंह की एक तोरण के नीचे दब जाने से मृत्यु हो गयी।

[सं० ४]

भारतीय आर्य परिवार केन्द्रीय वर्ग

पंजाबी

माझी बोली (जिला लाहौर)

तीसरा उदाहरण

(गुरमुखी लिपि)

ਚੜ੍ਹਿਆ ਚੇਤ੍ਰ ਪਈ ਪੁਹਾਰ। ਯਾਰੋ ਵੱਡੀ ਹੋਈ ਸਰਕਾਰ। ਧਮਕੇ ਕਾਬੁਲ ਤੇ ਕੰਧਾਰ ਡੇਰੇ ਘੱਤੇ ਅਟਕੋਂ ਪਾਰ ॥

ਵੱਜਾ ਖੜਕ ਸਿੰਘ ਸਰਦਾਰ। ਤੂੰ ਕਿਉਂ ਬੈਠਾ ਮੌਤ ਵਿਸਾਰ। ਉ ਵੀ ਚੜ੍ਹਿਆ ਨਾਲ ਕਰਾਰ। ਓੜਕ ਚੱਲਣਾ ॥

ਚੇਤੋਂ ਫੇਰ ਆਈ ਵਸਾਖੀ। ਤੇ ਸਰਕਾਰ ਵੱਡੀ ਮਸਤਾਕੀ। ਸੁੰਦਰ ਬਨ ਬਨ ਆਵਨ ਹਾਥੀ। ਨਜਰਾਂ ਲੈ ਲੈ ਮਿਲਨ ਸੁਗਾਤੀਂ। ਸੂਬੇ ਰਲ ਮਿਲ ਚੜ੍ਹਨ ਜਮਾਤੀਂ। ਮੁੱਢੋਂ ਸਰਕਾਰਦੇ ॥

ਬੈਠੇ ਫੇਰ ਅਟਾਰੀ ਵਾਲੇ। ਚੰਗੇ ਚੰਗੇ ਸੱਦ ਬਹਾਲੇ। ਉਨਾਂਦੇ ਲੇਖ ਜੋ ਹੋ· ਗਏ ਕਾਲੇ। ਟਕੇ ਤੋਰਨ ਤੋਲਾਂ ਵਾਲੇ। ਢਿੱਲ ਨ ਲਾਂਵੰਦੇ ॥

ਰਾਣੀ ਜਸਕੌਰ ਘਰ ਜੰਮੀ। ਨੀਵੇਂ ਹੀਏ ਬੌਹਤ ਸਰਮੀਂ। ਉੱਚੇ ਲੇਖ ਤੇ ਚਿੱਤ ਕਰਮੀਂ। ਭਰ ਭਰ ਥਾਲ ਵਗਾਵਣ ਦੰਮੀਂ। ਕਰਨ ਖੈਰਾਇਤਾਂ ॥

ਵਸਾਖੋਂ ਫੇਰ ਹੋਈ ਚਤਰਾਈ। ਬੇਟੀ ਸ਼ਾਮ ਸਿੰਘ ਘਰ ਜਾਈ। ਲਾਗੀ ਢੂੰਡ ਕਰਨ ਕੁੜਮਾਈ। ਮੁਲਕ ਇਨਾਮ ਜੋ ਖਾਂਦੀ ਦਾਈ। ਮੁੱਢੋਂ ਸਰਕਾਰਦੇ ॥

ਹੁਣ ਜੇਠ ਮਹੀਨਾ ਚੜ੍ਹਿਆ। ਕੌਰ ਸਜਾਣਾ ਖਾਰੇ ਚੜ੍ਹਿਆ। ਰਲ ਮਿਲ ਭਾਬੀਆਂ ਸਾਲੂ ਫੜਿਆ। ਓਨੂੰ ਰੂਪ ਸਵਾਯਾ ਚਾੜ੍ਹਿਆ। ਰਾਣੀ ਜਸਕੌਰ ਦਿਲ ਹਰਿਆ। ਸਗਣ ਮਨਾਉਂਦੇ ॥

ਅੱਗੇ ਹੋਈ ਜੰਜ ਤਿਆਰ। ਚੜ੍ਹਿਆ ਮਾਝੇਦਾ ਸਰਦਾਰ। ਜਾਂਞੀ ਸੋਹਨੇ ਜਿਉਂ ਗੁਲਜਾਰ। ਘੋੜੇ ਕੁੱਦਣ ਕੁਲ ਬਾਜ਼ਾਰ। ਲਾੜੇ ਪਹਨੀ ਫੇਰ ਤਲਵਾਰ। ਘੋੜੇ ਚੜ੍ਹਿਆ ਸਨ ਹਥਿਆਰ। ਜੰਜ ਸੁਹਾਉਂਦੀ।

ਪਹਨ ਪੁਸਾਕਾਂ ਬੈਠਾ ਨ੍ਹਾਕੇ। ਦਿੱਤਾ ਤਿਲਕ ਪਰੋਹਤ ਆਕੇ। ਸੇਹਰਾ ਬਾਪ ਪਹਨਾਵੇ ਆਕੇ। ਗਾਵਣ ਸੱਯਾਂ ਮੰਗਲ ਜਾਕੇ। ਸਗਨ ਮਨਾਂਉਂਦੀਆਂ॥

ਹੋਈ ਜੰਜ ਤਿਆਰ। ਸੂਬੇ ਚੜ੍ਹੇ ਬੇਸੁਮਾਰ। ਪਹਨ ਪੁਸਾਕਾਂ ਸਨ ਤਲਵਾਰ। ਵੰਡਣ ਮੁਹਰਾਂ ਬੇਸੁਮਾਰ। ਲਾਗੀ ਲੈਕਰ ਹੋਏ ਨਿਹਾਲ। ਸੱਯਦ ਸਾਧੂ ਸਨ ਪਰਵਾਰ। ਲੇਨ ਖੈਰਾਇਤਾਂ ਨਾਮ ਗੁਫਾਰ। ਦੇਨ ਅਸੀਸ ਭਰੇ ਭੰਡਾਰ। ਸਾਹਬ ਧਿਆਉਂਦੇ॥

(फारसी लिपि)

چڑھیا چیتر پئي بہار - یارو وڈي هوئي سرکار - دھمکے کابل تے قندھار - ڈیرے گھتے اٹکوں پار *

وڈا کھڑک سنگھ سردار - نوں کیوں بیٹھا موت وسار - آو وِي چڑھیا نال قرار - اوڑک چلنا *

چیتوں پھر آئي وساکھي - تے سرکار وڈي مستاکی - سُندر بن بن آون هانبھي - بدراں لے لے ملن سُوغاتیں - صوبے رل مل چڑھن جماعتیں - مڈھو سرکار *

بیٹھے پھر آتاري والے - چنگے چنگے سن بہالے - اُناں لیکھ جو ہوگئے کالے - ٹکے نورن نولاں والے - ڈھل نہ لاوندے *

راني جس کور گھر جمي - نیویں دیدے بہت شرمیں - اُچے ایکھہ تے چت کرمیں - بھر بھر تھال وگاوں دمیں - کرن خیراناں -

وساکھوں پھر هوئي چترائي - بیٹھي شام سنگھہ گھر جائي - لاگي ڈھونڈھہ کرن کڑمائي - ملك انعام جو کھاندي دائي - مڈھو سرکار دے *

۶۹

PANJABI.

هن جیٹھہ مہینہ چڑھیا ؛ کوز سجادہ کہارے چڑھیا - رل مل
. بہاییاں سالو پھڑیا - اون نون روپ سوایا چڑھیا - رانی جسکور دلی هریا -
شگن مناوندے *

اگے هوئی جنج تیار - چڑھیا ماجھہ سردار - جانجی سوهنے جیون گلزار -
گھوڑے کدن کل بازار - لاڑي پہنی بھر تلوار - گھوڑے چڑھیا سن هتهیار -
جنج سہاوندی *

بہن پوشاکاں بیٹھا نہاے - دتا تلک پروهت آے - سہرہ باپ
پہناوے آے - گاون سیاں منگل جاے - شگن مناوندیاں *

هوئی جنج تیار - صوبے چڑھے بے شمار - بہن پوشاکاں سن تلوار - ونڈن
مہراں بے شمار - لاگی لیکر هوئی نہال - سید ساهدو سن پروار - لین
خیراتاں نام غفار - دین اسیس بھرے بھنڈار - صاحب دهیاوندے *

(नागरी रूपान्तर)

चढ़िआ चेत्र पई पुहार। यारो वड्डी होई सरकार।
धमके काबुल ते कन्धार। डेरे घते अटकों पार॥
वड्डा खड़क सिंघ सरदार। तूँ किउँ बैठा मौत बिसार।
उ वी चढ़िआ नाल करार। ओड़क चल्लना॥
चेतों फेर आई वसाखी। ते सरकार वड्डी मस्ताकी।
सुन्दर बन बन आवन हाथी। नजराँ लै लै मिलन सुगातीं।
सूबे रल-मिल चढ़न जमातीं। मुंड्ढों सरकार दे॥
बैठे फेर अटारी वाले। चँगे चँगे सद्द बहाले।

उनांदे लेख जो हो-गए काले टके तोरन तोलाँवाले।
ढिल्ल ना लाँवन्दे ॥
राणी जस-कौर घर जम्मी। नीवें दीदे बौहत सरमीं।
उच्चे लेख ते चित्त-करमीं। भर भर थाल वगावण दम्मीं।
करन खैराइताँ ॥
वसाखों फेर होई चतराई। बेटी शामसिंघ घर जाई।
लागी ढूण्ढ करन कुड़माई। मुल्क इनाम जो खान्दी दाई।
मुड्ढों सरकारदे ॥
हुण जेठ महीना चढ़िआ। कौर सजादा खारे चढ़िआ।
रलमिल भाबीआँ सालू फड़िआ। ओनूँ रूप सवाया चढ़िआ।
राणी जसकौर दिल हरिआ। सगन मनांउन्दे ॥
अग्गे होई जन्ज तिआर। चढ़िआ माझेदा सरदार।
जाँजी सोहने जिउँ गुलजार। घोड़े कुद्दण कुल बाजार।
लाड़े पहनी फेर तलवार। घोड़े चढ़िआ सन हथिआर। जन्ज सुहाँउन्दी ॥
पहन पुसाकाँ बैठा न्हाके। दित्ता तिलक परोहत आके।
सेहरा बाप पहनावे आके। गावण सय्याँ मगल जाके।
सगन मनाँउन्दीआँ ॥
होई जन्ज तिआर। सूबे चढ़े बे-सुमार।
पहन पुसाकाँ सन तलवार। वण्डण मुहराँ बे-सुमार।
लागी ले-कर होए निहाल। सय्यद साधू सन परवार।
लेन खैराइताँ नाम गफ़ार। देन असीस 'भरे भण्डार'। साहब धियाउन्दे ॥

(तीसरे उदाहरण का अनुवाद)

चैत आया और फुहारें पड़ीं। मित्रो, बड़ी (शक्तिशाली) है (सिख) सरकार। दहलता है काबुल और कन्धार। (और इसके) डेरे जा लगे हैं अटक[1] के पार।

१. अटक का अर्थ यहाँ सिन्ध नदी है जिसके किनारे पर अटक शहर बसा हुआ है। इसके विपरीत 'राजा रसालू' के एक गीत में नदी का नाम शहर के लिए आया है; "सिन्ध तो मेरी नगरी, अटक है मेरा ठाँव।"

खड़कसिंह एक बहुत बड़ा सरदार है। तू क्यों (घर में) बैठ गया है मौत को भूलकर। वह भी चढ़ा था दू ना के साथ। अन्त में (तो सब को) चलना ही है।

चैत के बाद फिर आया वैशाख। और सरकार बहुत प्रसन्न है। बन-ठनकर सुन्दर हाथी आते हैं। लोग नजराने और उपहार ले-लेकर मिलते हैं। सरदार लोग मिल-जुलकर चढ़ाई करते हैं अपनी सेना के साथ, सरकार के आरम्भ करने पर।

फिर बैठे हैं अटारी[1] के लोग। अच्छे-अच्छे बुलाकर बैठाये गये हैं। उनका भाग्य काला हो गया है। टके दे रहे हैं एक-एक तोला के। देर नहीं लगाते।

रानी जसकौर (अटारी वाले शामसिंह के) घर पैदा हुई। आँखें नीची किये, बहुत लजीली थी। ऊँचा भाग्य और करम था उसका। भर-भर थाल फेंके गये (उसके जन्म पर) दाम। दान देते थे।

(वर खोजने वाले[2] जा कहने लगे) 'वैशाख में जन्म होने से वह चतुर है श्याम-सिंह की बेटी।' ऐसे लोगों ने (वर) ढूंढ़कर सगाई कर दी। दाई को एक प्रदेश इनाम में मिला जिसका वह भोग करने लगी। सरकार से (मिला)।

अब जेठ महीना आया। कुँवर शाहजादा (नौनिहाल) डाले पर चढ़ा।[3] भाभियों ने मिलकर उसका लाल दुपट्टा पकड़ा, (जिससे) उसका सौन्दर्य बढ़ गया। रानी जसकौर मोहित हो गयी। सब सगुन मनाने लगे।

इसके बाद बरात तैयार हुई। माझा का सरदार बरात लेकर चला। बराती ऐसे सुन्दर थे जैसे बाग होता है। घोड़े सारे बाजारों में उछलने-कूदने लगे। दूल्हा

१. अमृतसर के पास एक गाँव का नाम। 'अटारीवाला' वंश-नाम है। शाम-सिंह और उसके संबंधियों को 'अटारीवाला' कहते हैं।

२. विवाह-शादी पर नेग लेनेवालों को लागी या लाग्गी कहते हैं। प्रायः वे छोटी जातियों के लोग होते हैं। यहाँ विशेषतः बिचौलियों की ओर संकेत है जो शादियाँ तय करते हैं।

३. यह विवाह का वर्णन है। एक दिन दूल्हा और दुलहिन डाले (टोकरे) पर बैठकर स्नान करते हैं। एक दूसरी रस्म में दूल्हा की संबंधी स्त्रियाँ उसका दुपट्टा पकड़ लेती हैं और तब तक नहीं छोड़तीं जब तक नेग नहीं पा लेतीं।

ने फिर तलवार पहनी। हथियारों समेत घोड़े पर चढ़ा। बरात सुशोभित हुई।[1]

नहाकर (दूल्हा) पोशाकें पहन बैठ गया। पुरोहित ने आकर तिलक लगाया। पिता ने आकर सेहरा पहनाया। सखियाँ जाकर मंगल गाने लगीं। (और) सगुन मनाने लगीं।

(वापसी के लिए) बरात तैयार हो गयी। असंख्य सरदार चढ़ें, तलवारों के साथ पोशाकें पहनकर। असंख्य अशरफियाँ बाँटने लगे। लाग पाने वाले सम्पन्न हो गये, सय्यद और साधु अपने-अपने परिवारों समेत। दयालु परमात्मा के नाम पर दान लेते थे। 'तुम्हारे भंडार भरे रहें' कहकर आशीर्वाद देते थे और भगवान् का ध्यान करते थे।

१. घटना-क्रम ठीक नहीं है। बरात दुलहिन के घर जाती है तो दूल्हा हथियारबंद होकर और घोड़े पर सवार होकर जाता है, जबकि एक लड़का, शाहबाला के रूप में, उसके पीछे बैठा होता है। यह रस्म उस पद्धति की यादगार है जब दुलहिन को भगा लाते थे और बलात्कार से विवाह कर लेते थे।

जलंधर दोआब की पंजाबी

जलंधर दोआब, या व्यास और सतलुज नदियों के बीच के प्रदेश में जलंधर और होशियारपुर के दो जिले तथा कपूरथला की रियासत सम्मिलित है। इस क्षेत्र की पंजाबी का स्थानीय नाम दोआबी है, किन्तु इसमें और लुधियाना की आदर्श पंजाबी में शायद कोई अन्तर नहीं है।

होशियारपुर के उत्तर और पूर्व की ओर पहाड़ों में एक बोली है जिसका स्थानीय नाम पहाड़ी है, जो परीक्षण करने पर लगभग साधारण दोआबी के समान निकलती है; उसमें शिमला की पहाड़ी रियासतों और काँगड़ा में बोले जाने वाले मुहावरों का थोड़ा सा सम्मिश्रण अवश्य है। यह बोली पास की कहलूर (या बिलासपुर) और मंगल की शिमला पहाड़ वाली रियासतों में बोली जाती है, और वहीं इसे कहलूरी या बिलासपुरी कहते हैं। इस तरह नाना रूपों सहित दोआबी के बोलने वालों के निम्नलिखित अनुमानित आँकड़े प्राप्त होते हैं—

साधारण दोआबी		
जलंधर	९,०५,८१७	
कपूरथला	२,९६,९७६	
होशियारपुर	८,४८,६५५	
		२०,५१,४४८
होशियारपुरी पहाड़ी	१,१४,५४०	
कहलूर की कहलूरी	९१,७००	
मंगल की कहलूरी	१,०८१	
		२,०७,३२१
	कुल जोड़	२,२५८,७६९

सामान्य दोआबी के नमूने के रूप में होशियारपुर से प्राप्त दो ग्रामीणों के बीच में हुआ वार्तालाप दिया जा रहा है। बोली की कुछ विशेषताओं पर निम्नलिखित टिप्पणियाँ प्रमुखतः इस नमूने पर और साथ ही दोआब के अन्य भागों से प्राप्त नमूनों पर आधारित हैं।

वर्तनी मनमानी है। जैसे—हमें दो-दो रूप मिलते हैं; **विच** भी, **बिच**, में, भी; **हुन्दा** भी और **होन्दा**, होता, भी। य वर्ण दूसरे स्वर के बाद की -इ- के बाद प्रायः जोड़ा जाता है अथवा इस -इ- की जगह लगाया जाता है। जैसे **होइया** या **होया**, हुआ; **होन्दियाँ**, होतीं (स्त्री० बहुव०)। अनेक जगह ई की जगह इ लगता है, जैसे **होईआँ** की जगह **होइआँ** (स्त्री० बहुव०), हुईं। मूर्धन्य व्यंजन मनमाने ढंग से प्रयुक्त होते हैं, जैसे **बळ्द**, बैल, किन्तु **नाल**, साथ, नाळ नहीं। इसी प्रकार **होना**, होणा नहीं; **आना**, **बीजना**, बोना। शब्द के अन्त में आने वाले द्वित्वीकृत व्यंजन सरल हो जाते हैं, जैसे **विच**, में, **विच्च** नहीं, किन्तु **विच्चों**, में से; गल, बात, गल्ल नहीं, किन्तु बहुव० **गल्लाँ**; हथ, हाथ, हत्थ नहीं; **घट**, घट्ट नहीं।

कमीन-कान में कान सम्प्रदान के चिह्न के रूप में प्रयुक्त हुआ है। तुलना कीजिए लहँदा **कन** से। 'कुछ' के लिए **कुज** है, कुझ नहीं। जैसा कि अमृतसर में है, 'इन्हें' के लिए **इनाँ** है, इन्हाँ नहीं।

सहायक क्रिया के वर्तमान काल में उत्तम पुरुष एकवचन का **है** रूप पंजाब के इस भाग की विशिष्टता है।

संकुचित रूप **गैय्याँ**, गईं, (बहुव० स्त्री०) उल्लेखनीय है।

विच, में, के आदि व्यंजन का लोप कर दिया जाता है, जैसे अमृतसर और लुधियाना में।

[सं० ५]

भारतीय आर्य परिवार केन्द्रीय वर्ग

पंजाबी

जलंधर दोआब की बोली (जिला होशियारपुर)

ਛਾਨੇ ਤੇ ਵਰਯਾਮੇ ਵਿਚ ਏਹ ਗੱਲਾਂ ਹੁੰਦਿਯਾਂ ਸੀ॥

ਛਾਨਾ—ਭਾਈ ਦੱਸੋ ਕਿੱਥੋਂ ਆਨਾ ਹੋਯਾ॥

ਵਰਯਾਮਾ—ਮੁੰਡੇਦੇ ਸੌਹਰਿਆਂ ਵਲ ਗਏ ਸੀ। ਔਥੇ ਇੱਕ ਬਲ੍ਦਦੀ ਦਸ ਪੌਂਦੀ ਸੀ। ਬਲ੍ਦ ਤਾਂ ਚੰਗਾ ਹੈ ਪਰ ਮਾਰ ਖੁੰਡ ਹੈਗਾ। ਓਹਦੇ ਸ਼ੋਲਾਯਾਂ ਵਾਂਗ ਸਿੰਗ ਹਨ। ਰੰਗ ਗੋਰਾ। ਦੌੜਦਾ ਹੈ। ਪਰ ਮੁੱਲ ਬੱਡਾ ਮੰਗਦੇ ਹਨ ਚਾਲੀ ਰੁਪੈਏ। ਏਹ ਮੁੱਲ ਖਰਚਨਦੀ ਫੁਰਸਤ ਨਹੀਂ ਹੈ। ਭਾਈ ਕੀ ਕਰਿਯੇ। ਪੈਲੀ ਕੁਜ ਨਾ ਨਿਕਲੀ। ਤਿਨ ਕਨਾਲ ਜਮੀਨ ਬਿੱਚੋਂ ਚਾਰ ਪੂਲਿਆਂ ਹੋਇਆਂ। ਏਹਦੇ ਵਿੱਚੋਂ ਕੀ ਖਾਈਏ ਤੇ ਕੀ ਵਰਤਾਈਏ। ਜੇਹਦੇ ਨਾਲ਼ ਕਮੀਨ ਕਾਨ ਬੀ ਬਰੋ ਨਹੀਂ ਸਾਨੇ। ਓਹ ਗਲ ਹੋਈ।

ਗਾਂਉਂਦੋਦਾ ਸੰਘ ਪਾਟਾ।
ਪੱਲੇ ਨ ਪਿਯਾ ਸੇਰ ਆਟਾ।
ਕਰਮ ਹੀਨ ਖੇਤੀ ਕਰੇ।
ਬਲ੍ਦ ਮਰੇ ਟੋਟਾ ਪੜੇ।

ਛੇ ਮਹੀਨੇ ਮਰ ਭਰਕੇ ਇਨਾਂ ਚਾਰ ਪੂਲਿਆਂਦਾ ਮੂੰਹ ਵੇਖਿਆ। ਪਾਣੀ ਸਿੰਜਦਿਯਾਂਦੇ ਹਥ ਅੰਬ ਗਏ ਤਾਂ ਸੰਘਾ ਬੈਹ ਗਿਯਾ। ਅੱਗੇ ਰਬਦੀ ਕੀ ਮਰਜੀ ਹੋਈ ਹੈ। ਇਕ ਗਰੀਬੀ ਦੂਜੀ ਬਰਖੁਰਦਾਰੀ। ਜੇ ਪੂਲਿਯਾਂ ਥੋੜਿਯਾਂ ਸੀ, ਤਾਂ ਝਾੜ ਬੀ ਘਟ ਝੜਿਆ ਦਾਨਾ ਪਤਲਾ ਹੈ। ਖਬਰਾ ਦਾਨਿਯਾਂਨੂੰ ਕੀ ਹੋਇਆ। ਰਬਦਿਆਂ ਗੱਲਾਂ ਲਖਿਯਾਂ ਨਹੀਂ ਜਾਂਦਿਆਂ। ਛਾਨਾ ਭਾਈ ਫੱਗਣ ਮਹੀਨੇ ਜੇਹੜਾ ਝੋਲਾ ਵੱਗਿਆ ਸੀ। ਓਹਦੇ ਨਾਲ਼ ਕਣਕਾਂ ਪਤਲਿਆਂ ਪੈ ਗੈੱਯਾਂ। ਕਣਕਾਂ ਕੀ ਕਰਨ ਜਦ ਉੱਪਰਲਾ ਚੁਪਕਰ ਬੈਠਾ। ਜਹਦੀ ਹਾੜੀ ਬੀਜੀ ਤਦਦੀ ਓਹਨੇ ਕੁਜ ਖਬਰ ਜ਼ਿਮੀਦਾਰਾਂਦੀ ਨਾ ਲਿੱਤੀ ਕਿ ਜਿੰਦੇ ਹਨ ਕਿ ਮਰ ਗਏ। ਮੀਂਹ ਬਿਨਾ ਕੁਜ ਨਹੀਂ ਹੋ ਸਕਦਾ। ਇੱਕ ਕਮਾਊਦੀ ਕਮਾਈ ਬਿਨਾ ਬਰਕਤ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦੀ। ਦੂਜੇ ਕਣਕਦੇ ਪਤਲਾ ਹੋਣੇਦੀ ਏਹ ਬੀ ਗਲ ਹੈ ਕਿ ਬਾਬੇ ਬੁਡਢੇਦੇ ਪੈਨ ਤੋਂ ਹਲਦੀ ਬਾਹੀ ਘਟ ਹੋਈ। ਭਾਈ ਕਣਕ ਤਾਂ ਚੰਗੀ ਹੁੰਦੀ ਜੇ ਕਰ ਬਾਹੀ ਖਰੀ ਹੁੰਦੀ। ਬਾਰਾਂ ਸੀਵਾਂ ਬਾਹ ਕੇ ਦੇਖ ਕਣਕਦਾ ਝਾੜ। ਜ਼ਿਯੋਂ ਜਿਯੋਂ ਬਾਹੈ ਕਣਕਨੂੰ ਤਿਯੋਂ ਤਿਯੋਂ ਦੇਵੇ ਸਵਾਦ॥

ਕਣਕ ਕਮਾਦੀ ਸੇਘਣੀ ਡੱਗੋ ਡੱਗ ਕਪਾਹ
ਫੈਬਲਦਾ ਝੁੰਬ ਮਾਰਕੇ ਵੱਲਿਆਂ ਵਿੱਚੀ ਜਾਹ॥

ਸੋ ਛਾਈ ਕਣਕਦਾ ਬਾਹਣਾ ਬੀਜਣਾ ਔਖਾ ਹੈ। ਜੇਕਰ ਬਾਹੀ ਬੀਜੀ ਚੰਗੀ ਜਾਵੇ ਤਾਂ ਝਾੜ ਬੀ ਅੱਛਾ ਹੌਂਦਾ ਹੇ ਤੇ ਕਣਕ ਬੀ ਮੋਟੀ ਹੌਂਦੀ ਹੈ॥

(नागरी रूपान्तर)

भाने ते वर्यामे-विच एह गल्लां हुन्दिआँ-सी।

भाना—भाई, दस्सो कित्थों आना होया।

वर्यामा—मुण्डेदे सौहरिआँ-वल गए-सी। औथे इक्क बळ्ददी दस पोंदी-सी। बळ्द तां चङ्गा है, पर मार-खुण्ड हैगा। ओहदे सोलायाँ वांग सिंग हन, रङ्ग गोरा, दोंदा है। पर मुल्ल बड्डा मङ्गदे हन। चाली रुपैए। एह मुल्लखर्च नदी फुर्सत नहीं है। भाई, की करिये? पैली कुज ना निकली। तिन कनाल जमीन बिच्चों चार पूलिआँ होइआँ। एहदे विच्चों की खाईए ते की बर्ताईए, जेहदे नाल कमीन-कान बी बरो नहीं साने? ओह गल होई,

गाँउन्दीदा संघ पाटा। पल्ले न पिया सेर आटा॥
करम हीन खेती करे। बळ्द मरे, टोटा पड़े॥

छे महीने भर-भर-के इनां चार पूलिआँदा मूँह देखिआ। पाणी सिञ्जदियाँदे हथ अंब-गए, ताँ संघा बैह्-गिया। अगो रबदी की मरजी होई! इक गरीबी, दूजी बर-खुरदारी। जे पूलियाँ थोड़ियाँ सी, ताँ झाड़ बी घट झड़िआ। दाना पतला है। खबरा दानियाँनूँ की होइआ? रबदिआँ गल्लाँ लखियाँ नहीं जान्दिआँ। भाना, भाई, फग्गण महीने जेह्ड़ा झोला वग्गिआ-सी, ओहदे नाल कणकाँ पतलियाँ पै-गय्याँ। कणकाँ की करन, जद उप्पर-ला चुप-कर बैठा। जब-दी हाड़ी बीजी, तद-दी ओह्ने कुज खबर जिमीदारांदी ना लित्ती, कि जिन्दे हन कि मर गए। मींह बिन कुज नहीं हो सकदा। इक, कमाऊदी कमाई बिनां बरकत नहीं हुन्दी। दूजे, कणकदे पतला होने दी एह बी गल है, कि बाबे बुड्ढेदे पैन-तों हलदी बाही घट होई। भाई, कणक ताँ चङ्गी हुन्दी, जेकर बाही खरी हुन्दी। "बाराँ सौवाँ बाह-के, देख कणकदा झाड़। जियों-जियों बाहै कणकनूँ, तियों-तियों देवे सवाद।"

कणक कमादी संघनी, डाँगो-डाँग कपाह।
कम्बलदा झुम्ब मार-के, छल्लिआँ बिच्ची जाह॥

सो भाई, कणकदा बाहना बीजना औखा है। जेकर वाही बीजी चङ्गी जावे, ताँ झाड़ बी अच्छा होन्दा-है, ते कणक बी मोटी होंदी है॥

(अनुवाद)

भाना और वर्यामा के बीच में यह वार्तालाप हो रहा था—

भाना—भाई, बताओ, कहाँ से आना हुआ?

वर्यामा—लड़के की ससुराल की ओर गया था। वहाँ एक बैल की बाबत सुना गया था। बैल तो अच्छा है, पर है मारू। उसके सूजों की तरह सींग हैं, रंग गोरा, दो दाँत वाला है। पर मूल्य भारी मांगते हैं। चालीस रुपये, इतना पैसा खर्च करने की फुर्सत नहीं है। भाई, क्या करें? खेती कुछ नहीं निकली। तीन कनाल[1] जमीन में से चार पूले प्राप्त हुए। इसमें से क्या खायें और क्या बाँटें? इससे तो कमियों का खाना तक पूरा न पड़ेगा। वही बात हुई कि—

'गानेवाली का गला फटा, पल्ले में सेर भर आटा भी न पड़ा।'

भाग्यहीन खेती करे (तो उसके) बैल मर जाते हैं, घाटा उठाना पड़ता है।

छः महीने मैं मरा-भरा (और अन्त में) इन चार पूलों का मुँह देखा। पानी सींचते-सींचते हाथ सुन्न हो गये, और गला बैठ गया। आगे भगवान् की इच्छा (यह) हुई! एक गरीबी, दूसरी (यह) विपत्ति। जो थोड़े-से पूले (मिले) थे, उनमें भी दाने कम झड़े। दाना विरला है। न जाने दानों को क्या हो गया? परमेश्वर की बातें जानी नहीं जातीं। भाना, भाई, फागुन महीने में जो बर्फीली हवा बही थी, उससे गेहूँ विरल पड़ गये। गेहूँ क्या करें, जब ऊपर वाला (भगवान्) चुप बैठा है। जबसे असाढ़ी (फसल) बोई है, तबसे उसने कुछ खबर काश्तकारों की नहीं ली, कि जीवित हैं या मर गये। वर्षा के बिना कुछ नहीं हो सकता। एक तो, कमानेवाले की कमाई के बिना शुभ नहीं होता। दूसरे, गेहूँ के विरल होने का यह भी कारण है कि बूढ़े बाबा के (बीमार) पड़ जाने के कारण हल भी कम चला। भाई, गेहूँ की फसल तो अच्छी होती, यदि हल बढ़िया चलाया जाता। बारह बार हल चलाने का (परिणाम) देख (अपना) गेहूं का झाड़। ज्यों-ज्यों गेहूँ के लिए हल चलाये, त्यों-त्यों मजा दे।

१. एक कनाल भूमि ४३५·५ वर्ग गज के बराबर होती है।

'गेहूँ और गन्ना घना बोना चाहिए, कपास एक-एक लाठी की दूरी पर।
कम्बल लपेटकर (आदमी बीच में से जा सके) इतनी दूरी पर मक्की हो॥'

सो, भाई, गेहूँ का हल चलाना और बोना कठिन कार्य है। यदि हल अच्छा चला हो, बोया अच्छी तरह गया हो, तो झाड़ भी अच्छा होता है, और गेहूँ भी मोटा होता है।

कहलूरी अथवा बिलासपुरी

शिमला की पहाड़ी रियासतों की अधिकतर भाषाएँ पश्चिमी पहाड़ी के नाना रूप हैं। दूर पश्चिम की रियासतें हैं कहलूर, मंगल, नालागढ़ और मैलोग। अन्तिम दो रियासतों के पश्चिम में भाषा पोवाधी पंजाबी है, और इसका वर्णन अलग शीर्षक देकर किया जायगा। इनके पूर्वी भागों की बोली हण्डूरी पहाड़ी है। कहलूर और मंगल की रियासतों की बोली को कहलूरी या (कहलूर का प्रमुख नगर बिलासपुर होने के कारण) बिलासपुरी कहते हैं। कहलूर होशियारपुर ज़िले के तुरन्त पूर्व में पड़ता है। उस ज़िले के संलग्न पहाड़ी भाग में एक बोली बोली जाती है जिसका स्थानीय नाम मात्र 'पहाड़ी' है। यह कहलूरी ही है।[1]

कहलूरी को अभी तक पश्चिमी पहाड़ी का एक रूप कहा जाता रहा है। किन्तु नमूने का परीक्षण करने से लगता है कि ऐसा नहीं है। यह केवल अनगढ़ पंजाबी ही है, होशियारपुर में बोली जाने वाली भाषा के समान। बोलनेवालों की अनुमानित संख्या नीचे दी जाती है—

कहलूर रियासत	९१,७००
मंगल रियासत	१,०८१
होशियारपुर ज़िला	१,१४,५४०
योग	२,०७,३२१

इस बोली के पूरे नमूने देना अनावश्यक है। अपव्ययी पुत्र की कथा के भाषान्तर से कुछ लिप्यन्तरित वाक्य इसकी प्रकृति को स्पष्ट करने के लिए पर्याप्त हैं।

१. होशियारपुर के उत्तरपूर्व की ओर, यह बोली काँगड़ा के कुछ-कुछ निकट पड़ती है। इस प्रकार इसमें काँगड़ी सम्प्रदान का परसर्ग जो पाया जाता है।

[सं० ६]

भारतीय आर्य परिवार केन्द्रीय वर्ग

पंजाबी

कहलूरी बोली (मंगल राज्य, जिला शिमला)

एकी मानूँदे दो पुत्त थे। लौहके पुत्ते अपणे बुड्ढेनों गलाया, 'जो जादाद मेरे वणदे आओंदी, सो मन्नों दई-दे।' तिने सो जादाद अपणे दुइ पुत्ताँनूँ वण्डी दित्ती। जदे लौहके पुत्ते अपणा बण्डा लै-लीआ, तां दूर पर देसाँनूँ चली-गया। ऊथी जाई-के, तिने अपणी जादाद वे-अरथ गँवाई-दित्ती। जद ओ सारी जादादाँ गँवाई बैठा, ताँ ऊस मुलखदे-विच वड़ा काल पया। ओ वड़ा कङ्गाल होई-गया। ताँ ओ ऊस मुलखदे रैहनेवाले दे कने रैह्णे लगा, तिने अपणी जिमीनाँ-विच उसनूँ सूराँनूँ चारने भेजा। सो सूराँदी खुराकदे वचे-हूए सटक्काँ-कने अपणा पेट भरदा-था, तिस-नूँ होर कोई किछ ना देंदा-था।

(अनुवाद)

एक मनुष्य के दो पुत्र थे। छोटे पुत्र ने अपने बूढ़े (बाप) से कहा, 'जो सम्पत्ति मेरे हिस्से में आती है, वह मुझे दे दे।' उसने वह सम्पत्ति अपने दोनो पुत्रों को बाँट दी। जब छोटे पुत्र ने अपना बँटवारा ले लिया, तो दूर परदेश को चला गया। वहाँ जाकर उसने अपनी सम्पत्ति व्यर्थ खो दी। जब वह सारी सम्पत्ति खो बैठा, तो उस देश में बड़ा अकाल पड़ा। वह बहुत कंगाल हो गया। तब वह उस देश के रहने वाले (किसी आदमी) के पास रहने लगा, उसने अपने खेतों में उसे सूअरों को चराने भेजा। वह सूअरों के खाने से बचे हुए छिलकों से अपना पेट भरता था, उसको और कोई कुछ न देता था।

पोवाधी

'पोवाध' का अर्थ है 'पूरब', और पोवाधी पंजाबी वह पंजाबी है जो पूर्वी पंजाब के उस भाग में बोली जाती है जिसे पोवाध कहते हैं।

अम्बाला ज़िले में रोपड़ से लेकर व्यास के संगम तक, सतलुज नदी कुछ-कुछ पूर्व से पश्चिम की ओर बहती चलती है। इसके उत्तर में जलंधर दोआब पड़ता है। इसके दक्षिण में लुधियाना और फ़ीरोज़पुर के जिले हैं। फ़ीरोज़पुर का पूरा जिला और लुधियाना का अधिकतर भाग मालवा नाम के क्षेत्र में आते हैं। किन्तु लुधियाना का वह भाग जो नदी के निकट स्थित है, पोवाध कहलाता है। पोवाध बहुत आगे पूर्व तक फैला हुआ है। अम्बाला में मोटे तौर पर यह घग्घर नदी तक पहुँचा हुआ है और उसके पार की भाषा हिन्दुस्तानी है। दक्षिण में इसके अन्तर्गत पटियाला, नाभा और जींद रियासतों के वे भाग हैं, जो मोटे तौर पर ७६° पूर्वी देशांतर रेखा के पूर्व में उस प्रदेश तक, जहाँ हिन्दुस्तानी और बाँगरू बोली जाती हैं, पड़ते हैं। इस क्षेत्र में हिसार ज़िले के कुछ सीमान्तवर्ती भाग भी सम्मिलित हैं। पछाड़ा मुसलमान, जो इस इलाके में से बहती हुई घग्घर नदी के किनारे-किनारे बसे हुए हैं, पंजाबी की एक अन्य बोली बोलते हैं जिसे राठी कहते हैं। उसका वर्णन अलग से किया जायगा।

इस क्षेत्र के दक्षिण में हिसार का ज़िला है जिसकी प्रमुख भाषाएँ हैं बाँगरू और बागड़ी। केवल घग्घर के साथ-साथ और सिरसा तहसील के एक भाग में पंजाबी पायी जाती है। उपर्युक्त अपवादों को छोड़कर ७६° पूर्वी देशांतर रेखा के पश्चिम का प्रदेश, सतलुज और ब्यास के संगम तक, मालवा या जंगल नाम से प्रसिद्ध है। इसकी अपनी बोली मालवाई नाम से विदित है जिसका वर्णन उपयुक्त स्थान पर किया जायगा।

पोवाधी पंजाबी बोलनेवालों की अनुमानित संख्या नीचे दी जा रही है—

हिसार	१,४८,३५२
अम्बाला	३,३७,१२३
कलसिया रियासत	**१८,९३३**

नालागढ़ रियासत (पश्चिमार्घ)	३९,५४५
मैलोग रियासत (पश्चिमार्घ)	३,१९३
पटियाला रियासत	८,३७,०००
जींद रियासत	१३,०००
कुल जोड़	१३,९७,१४६

कलसिया के आँकड़े अम्बाला ज़िले की सीमा के अन्तर्गत डेरा बस्सी के निकट के बोलने वालों के हैं। नालागढ़ और मैलोग शिमला की दो पहाड़ी रियासतें हैं जो अम्बाला ज़िले के निकट पड़ती हैं। पंजाबी उनके पश्चिमी भागों में बोली जाती है। उनके पूर्वी क्षेत्रों में जो भाषा है वह पश्चिमी पहाड़ी का हण्डूरी रूप है।

जैसा कि अपेक्षित है, पोवाधी का अमृतसर की आदर्श भाषा से प्रमुख अन्तर यह है कि यह पूर्वी अम्बाला और करनाल में बोली जाने वाली पश्चिमी हिन्दी की बोलियों के पास पड़ती है। ज्यों-ज्यों हम पूर्व की ओर आगे बढ़ते हैं त्यों-त्यों यह हिन्दुस्तानी या बाँगरू से अधिकाधिक संक्रान्त होती जाती है। सामान्य रूप से इनके बीच में कोई स्पष्ट रेखा नहीं है, और भाषाएँ अज्ञात रूप से एक दूसरी में विलीन होती जाती हैं। दूर पश्चिम की पोवाधी—वह जो पोवाध क्षेत्र में बोली जाती है—लगभग वही है जो आदर्श भाषा; और यही वह भाषा है, जो अमृतसर की पंजाबी की अपेक्षा, वस्तुतः पंजाबी भाषा के व्याकरणों का आधार रही है। पोवाधी के इस रूप के उदाहरण देने की आवश्यकता नहीं है।

पोवाधी के लिए मैं जींद रियासत के थाना कुलरन से दो नमूने दे रहा हूँ, पहला है अपव्ययी पुत्र की कथा का भाषान्तर और दूसरा एक लोककथा। मैं देवनागरी लिपि में लिखित, पश्चिमी अम्बाला से एक लोककथा, और फ़ारसी लिपि में लिखित, पटियाला रियासत के थाना करमगढ़ से दूसरी लोककथा भी दे रहा हूँ। आगे के पृष्ठों पर अम्बाला के शब्दों और वाक्यों की एक सूची मिलेगी। ये नमूने पोवाध क्षेत्र में होनेवाले पंजाबी के परिवर्तनों को अच्छी तरह प्रदर्शित करते हैं।

इनमें बहुत-से तत्त्व पड़ोस की पश्चिमी हिन्दी के प्रभाव के कारण हैं; जैसे अग्गे की जगह आगे, और आखणा की जगह कहना आदि शब्दों का छिटपुट प्रयोग। इसी प्रकार स्वर-मध्यग व के लिए म का व्यवहार भी पाया जाता है, जैसे आवाँगा, आऊँगा, के लिए आमांगा में।

पश्चिमी हिन्दी बोलियों और राजस्थानी की तरह सम्प्रदान बनाने के लिए इसमें अधिकरणार्थक संबंध कारक का प्रयोग पाया जाता है, जैसे **ईहदे पाओ**, इसको (ईहदे) पहनाओ (पाओ)।

सर्वनामों में, पंजाबी के शुद्ध रूपों के साथ-साथ **हमाँनूँ**, हमको, **तुमाँनूँ**, तुम को, रूप मिलते हैं; और निजवाचक सर्वनाम सम्बन्ध कारक **अपणा** है, आपणा नहीं। **जद** का प्रयोग 'तब' और 'जब' दोनों के लिए होता है, ठीक ऐसे जैसे पश्चिमी हिन्दी बोलियों में और राजस्थानी में।

क्रियाओं में **सी** की अपेक्षा **था**, वह था, अधिक व्यापक है, यद्यपि प्रयुक्त दोनों होते हैं। उत्तम पुरुष बहुवचन के अन्त में कभी-कभी -आँ के स्थान पर पश्चिमी हिन्दी का -एँ आता है; जैसे **होवैं**, हम हों, **छकैं**, हम खायें।

अन्य विशेषताएँ जिनकी खोज पश्चिमी हिन्दी के प्रभाव से सीधे नहीं हो सकती निम्नलिखित हैं—**भलद** (पटियाला), बैल, में महाप्राणत्व। **चुम्मिआँ**, चूमा गया, जैसे शब्दों में (कभी-कभी आदर्श पंजाबी में भी पाया जानेवाला) भावे प्रयोग। **विच्च**, में, का उच्चारण **बिच्च** करके। इस शब्द के आदि अक्षर का बहुधा लोप, जैसे **खूह-बिच्चों**, कुएँ में से, की जगह **खूहचों**, अथवा **उन्हाँचों**, उनमें से। सर्वनामों में कभी-कभी **तोहाडा**, तुम्हारा, का और अन्यपुरुष सर्वनाम के तिर्यक् रूप के लिए **ओह** का प्रयोग। एवं महाप्राण का बहुधा विपर्यय, जैसे **उहनूँ** के लिए **उन्हूँ**, उनको; **ओहदा** के लिए **ओधा**, उसका; **इहदा** के लिए **ईधा**, इसका; **जेहड़ा** के लिए **जेढ़ा**, जो। अस्तित्ववाची क्रिया में वर्तमानकाल का मध्यम पुरुष बहुवचन **हो**, तुम हो, की जगह प्रायः **ओ** होता है।

2274

[सं० ७]

भारतीय आर्य परिवार केन्द्रीय वर्ग

पंजाबी

पोवाधी बोली (थाना कुलरन, जींद राज्य)

पहला उदाहरण

ਇੱਕ ਮਨੁੱਖਦੇ ਦੋ ਪੁੱਤ ਥੇ। ਉਨ੍ਹਾਂਚੋਂ ਲੌਢੇਨੇ ਪੇਓਨੂੰ ਆਖਿਆ ਕਿ ਓ ਪੇਓ ਮਾਲਦਾ ਹਿੱਸਾ ਜੋ ਮੈਂਨੂੰ ਪਹੁੰਚਦਾ ਹੈ ਮੈਂਨੂੰ ਦੇ। ਜਦ ਓਹਨੇ ਮਾਲ ਉਨ੍ਹਾਂਨੂੰ ਬੰਡ ਦਿੱਤਾ। ਥੋੜੇ ਦਿਨਾਂ ਬਿੱਚੋਂ ਲੌਢੇ ਪੁੱਤਨੇ ਸਾਰਾ ਕੱਠਾ ਕਰਕੇ ਇੱਕ ਦੂਰਦੇ ਦੇਸਦਾ ਪੈਂਡਾ ਕਰਿਆ ਔਰ ਉੱਥੇ ਅਪਣਾ ਮਾਲ ਬਿਕਰਮੀ ਬਿੱਚ ਖੋਇਆ। ਔਰ ਜਦ ਸਾਰਾ ਗੁਮਾ ਚੁੱਕਾ ਉਸ ਦੇਸ ਬਿੱਚ ਬੜਾ ਮੰਦਵਾੜਾ ਪਿਆ, ਓਹ ਕੰਗਾਲ ਹੋਣੇ ਲੱਗਿਆ। ਜਦ ਉਸ ਦੇਸਦੇ ਇੱਕ ਰਾਜੇਦੇ ਜਾ ਲੱਗਿਆ। ਓਹਨੇ ਓਹਨੂੰ ਖੇਤਾਂ ਬਿੱਚ ਸੂਰ ਚਾਰਣ ਭੇਜਾ ਔਰ ਓਹਨੂੰ ਆਸ ਥੀ ਕਿ ਇਨ ਛਿਲਕ ਤੇ ਜੋ ਸੂਰ ਖਾਂਦੇ ਹਨ ਅਪਣਾ ਢਿੱਡ ਭਰੇ, ਕੋਈ ਉਸਨੂੰ ਨ ਦਿੰਦਾ ਥਾ। ਜੋ ਸੋਝੀ ਬਿੱਚ ਆ ਕੇ ਕਹਾ–ਮੇਰੇ ਪੇਓਦੇ ਬਹੁਤੇ ਮਿਹਨਤੀਆਂਨੂੰ ਬਾਲ੍ਹੀ ਰੋਟੀ ਹੈ, ਔਰ ਮੈਂ ਭੁੱਖਾ ਮਰਦਾ ਹਾਂ। ਮੈਂ ਉੱਠਕੇ ਅਪਣੇ ਪੇਓ ਕੋਲੇ ਜਾਊਂਗਾ ਔਰ ਉਨ੍ਹੂੰ ਕਹੂੰਗਾ ਓ ਪੇਓ ਮੈਨੇ ਰੱਬਦਾ ਤੇਰੇ ਕੋਲ ਬੁਰਾ ਕਰਿਆ ਹੈ। ਹੋਰ ਹਣ ਇਸ ਲੈਕ ਨਹੀਂ ਜੋ ਫਿਰ ਤੇਰਾ ਪੁੱਤ ਕਹਾਊਂ ਮੈਂਨੂੰ ਅਪਣੇ ਮਿਹਣਤੀਆਂ ਬਿੱਚੋਂ ਇੱਕਦੇ ਬਰਾਬੰਰ ਕਰ। ਫਿਰ ਉੱਠਕੇ ਅਪਣੇ ਪੇਓ ਕੋਲ ਚੱਲਿਆ। ਓਹ ਅੱਜੇ ਦੂਰ ਥਾ ਓਹਨੂੰ ਦੇਖਕੇ ਓਹਦੇ ਪੇਓਨੂੰ ਤਰਸ ਆਇਆ ਹੋਰ ਭੱਜਕੇ ਓਹਨੂੰ ਗਲ ਲਾ ਲਿਆ ਹੋਰ ਬਾਲ੍ਹਾ ਚੁੰਮਿਆਂ। ਪੁੱਤਨੇ ਓਹਨੂੰ ਕਹਾ ਓ ਪੇਓ ਮੈਂਨੇ ਰੱਬਦਾ ਤੇਰੇ ਕੋਲ ਬੁਰਾ ਕਰਿਆ, ਹੋਰ ਹੁਣ ਇਸ ਲੈਕ ਨਹੀਂ ਜੋ ਫਿਰ ਤੇਰਾ ਪੁੱਤ ਕਹਾਊਂ। ਪੇਓਨੇ ਅਪਣੇ ਨੌਕਰਾਂਨੂੰ ਕਹਾ, ਚੰਗੇ ਤੇ ਚੰਗੇ ਕਪੜੇ ਕੱਢ ਲਿਆਓ, ਇਹਦੇ ਪਾਓ। ਹੋਰ ਈਧੇ ਹੱਥ ਬਿੱਚ ਛਾਪ, ਹੋਰ ਪੈਰਾਂ ਬਿੱਚ ਜੁੱਤੇ ਪਾਓ, ਹੋਰ ਅਸੀਂ ਛਕੇ ਹੋਰ ਖੁਸੀ ਹੋਵੈਂ ਕਿਉਂਕਰ ਮੇਰਾ ਏਹ ਪੁੱਤ ਮਰ ਗਿਆ ਥਾ ਹੁਣ ਜੀਵਿਆ ਹੈ, ਖੋਇਆ ਗਿਆ ਥਾ ਹਣ ਮਿਲਿਆ ਹੈ। ਫਿਰ ਓਹ ਖੁਸੀ ਕਰਨ ਲੱਗੇ॥

ਓਹਦਾ ਬੜਾ ਪੁੱਤ ਖੇਤ ਬਿੱਚ ਥਾ। ਜਦ ਘਰਦੇ ਨੇੜੇ ਆਇਆ, ਗਾਂਓਦੇ ਹੋਰ ਨੱਚਦਿਆਂਦੀ ਅਵਾਜ ਸੁਣੀ। ਫਿਰ ਇੱਕ ਨੌਕਰਨੂੰ ਬੁਲਾ ਕੇ ਪੁਛਿਆ, ਇਹ ਕੀ ਹੈ, ਓਹਨੇ ਓਹਨੂੰ ਕਹਾ, ਤੇਰਾ ਭਾਈ ਆਇਆ ਹੈ, ਹੋਰ ਤੇਰੇ ਪੇਓਨੇ ਬੜੀ ਰੋਟੀ ਕਰੀ ਹੈ, ਕਿਸ ਬਾਸਤੇ ਜੋ ਓਹਨੂੰ ਭਲਾ ਚੰਗਾ ਥਿਆਇਆ। ਓਹਨੇ ਗੁੱਸੇ ਹੋਕੇ ਨ ਚਾਹਾ ਜੋ ਅੰਦਰ ਜਾਵੇ। ਫਿਰ ਓਹਦੇ ਪੇਓਨੇ ਬਾਹਰ ਆਕੇ ਓਹਨੂੰ ਮਨਾਇਆ। ਓਹਨੇ ਪੇਓ ਤੇ ਜਬਾਬ ਦਿੱਤਾ

ਵੇਖਾਂ ਇਤਨੇ ਵਰ੍ਹੇ ਤੇ ਮੈਂ ਤੇਰੀ ਟਹਿਲ ਕਰਦਾ ਆਂ, ਅਤੇ ਕਦੇ ਤੇਰੇ ਕਹਿਣੇ ਬਾਹਰ ਨਹੀਂ ਚੱਲਾ, ਪਰ ਤੈਂ ਕਦੇ ਬੱਕਰੀਦਾ ਮੇਮਣਾ ਮੈਨੂੰ ਨਹੀਂ ਦਿੱਤਾ, ਜੋ ਆਪਣੇ ਮਿਤ੍ਰਾਂਦੇ ਨਾਲ ਖੁਸੀ ਮਨਾਵਾਂ, ਹੋਰ ਜਦ ਤੇਰਾ ਏਹ ਪੁੱਤ ਆਇਆ, ਜਿਸਨੇ ਤੇਰਾ ਮਾਲ ਕੰਜਰੀਆਂ ਵਿੱਚ ਖੋਇਆ, ਤੈਂ ਓਧੇ ਵਾਸਤੇ ਬੜੀ ਰੋਟੀ ਕਰੀ, ਓਹਨੇ ਓਹਨੂੰ ਕਹਾ, ਹੇ ਪੁੱਤ੍ਰ ਤੂ ਨਿਤ ਮੇਰੇ ਕੋਲ ਹੈ, ਹੋਰ ਜੇੜ੍ਹਾ ਮੇਰਾ ਹੈ ਓਹ ਤੇਰਾ ਹੈ। ਫਿਰ ਖੁਸੀ ਹੋਣਾ ਔਰ ਖੁਸ਼ ਹੋਣਾ ਚਾਹੀਏ ਥਾ, ਕਿਉਂਕਰ ਤੇਰਾ ਭਾਈ ਮਰ ਗਿਆ ਥਾ ਹੁਣ ਜੀਵਿਆ ਹੈ, ਹੋਰ ਖੋਇਆ ਗਿਆ ਥਾ ਹੁਣ ਥਿਆਇਆ ਹੈ ॥

(नागरी रूपान्तर)

इक्क मनुक्खदे दो पुत्त थे। उन्हाँचों लौढेने पेओनूँ आखिआ कि 'ओ पेओ, मालदा हिस्सा जो मैं-नूँ पहुंचदा है, मैंनूं दे।' जद ओहने माल उन्हांनूँ बण्ड दित्ता। थोड़े दिनां-बिच्चों लौढे पुत्तने सारा कट्ठा कर-के इक्क दूरदे देसदा पैंडा करिआ, और उत्थे अपणा माल बिकरमी-बिच्च खोइआ। और जद सारा गुमा-चुक्का, उस देस-बिच बड़ा मंदवाड़ा पिआ, ओह कङ्गाल होणे लग्गिआ। जद उस देसदे इक्क राजेदे जा लग्गि-आ। ओहने ओहनूँ खेतां-बिच्च सूर चारण भेजा। और ओहनूँ आस थी कि, इन छिलकां-ते जो सूर खान्दे-हन अपणा ढिड्ड भरे; कोई उसनूँ न दिन्दा था। जो सोझी-बिच्च आ-के कहा, 'मेरे पेओदे बहुते मिहनतीआँनूँ बाल्ही रोटी है, और मैं भुक्खा मरदा-हाँ; मैं उट्ठ -के अपणे पेओ-कोले जाऊँगा, और उन्हूं कहूंगा, "ओ पेओ, मैंने रबदा तेरे कोल बुरा करिआ है होर हुण इस लैक नहीं जो फिर तेरा पुत्त कहाउँ, मैंनूँ अपणे मिहनतीआँ-बिच्चों इक्कदे बराबर कर।' फिर उट्ठ-के अपणे पेओ कोल चल्लिआ। ओह अज्जे दूर था, ओहनूँ देख-के ओहदे पेओनूँ तरस आइआ, होर भज्ज-के ओहनूँ गल ला लिआ, होर बाल्हा चुम्मिआं। पुत्तने ओहनूँ कहा, 'ओ पेओ, मैंने रबदा तेरे कोल बुरा करिआ होर हुण इस लैक नहीं जो फिर तेरा पुत्त कहाऊँ।' पेओने अपणे नौकरानूँ कहा, 'चङ्गे ते चङ्गे कपड़े कड्ढ लिआओ, इहदे पाओ, होर ईंधे हत्थ-बिच्च छाप, होर पैरां-बिच्च जुत्ते पाओ, होर असीं छकैं, होर खुसी होवैं। किउँकर मेरा एह पुत्त मर-गिआ था, हुण जीविआ-है; खोइआ-गिआ था, हुण मिलिआ-है।' फिर ओह खुसी करन लग्गे।

ओहदा बड़ा पुत्त खेत-बिच्च था। जद घरदे नेड़े आइआ, गाँओदे होर नच्चदि-आँदी अबाज सुणी। फिर इक्क नौकरनूँ बुला-के पुछिआ, 'इह की है?' ओहने ओहनूँ

कहा, 'तेरा भाई आइआ है; होर तेरे पेओने बड़ी रोटी करी है, किस वास्ते जो ओहनूँ भला-चङ्गा थिआइआ।' ओहने गुस्से हो-के न चाहा जो अन्दर जावे। फिर ओहदे पेओने बाहर आ-के ओहनूँ मनाइआ। ओहने पेओते जवाब दित्ता, 'देगाँ, इतने वहें-ते मैं तेरी टैहल करदा-हाँ, और कदे तेरे कहणेदे बाहर नहीं चल्ला; पर तैं कदे बकरीदा मेमना मैंनूं नहीं दित्ता, जो अपणे मित्रांदे नाल खुसी मनावाँ। होर जद तेरा एह पुत्त आइआ जिहने तेरा माल कन्जरीआँ-विच्च खोइया, तैं ओधे वास्ते बड़ी रोटी करी।' ओहने ओहनूँ कहा, 'ओ पुत्त, तू नित मेरे कोल है, होर जेढ़ा मेरा है ओह तेरा है; फिर खुसी होणा और खुस होणा चाहिए था, किउँकर तेरा भाई मर गिआ-था, हुण जीविआ-है होर खोइआ-गिआ-था, हुण थि-आइआ -है।

(अनुवाद)

एक आदमी के दो बेटे थे। उनमें से छोटे ने बाप से कहा कि 'हे बाप, सम्पत्ति का अंश जो मुझे आता है, मुझे दे।' जब उसने सम्पत्ति उन्हें बाँट दी, थोड़े दिनों में छोटे बेटे ने सब कुछ इकट्ठा करके एक दूर के देश की यात्रा की और वहाँ अपनी सम्पत्ति बदचलनी में खो दी। और जब सब कुछ खो चुका, उस देश में बड़ा अकाल पड़ा; वह कंगाल होने लगा। तब उस देश के एक राजा के यहाँ जा लगा। उसने उसे खेतों में सूअर चराने भेजा। और उसे इच्छा थी कि इन छिलकों से जो सूअर खाते हैं अपना पेट भरे; कोई उसे नहीं देता था। तब होश में आकर कहा, मेरे बाप के बहुत-से श्रमियों को भरपूर रोटी (मिलती) है, और मैं भूखा मरता हूँ; मैं उठकर अपने बाप के पास जाऊँगा और उसे कहूँगा, "हे बाप, मैंने भगवान् का तेरे पास बुरा किया है; और अब इस लायक नहीं कि फिर तेरा बेटा कहलाऊँ, मुझे अपने श्रमियों में से एक के समान कर।" फिर उठकर अपने बाप के पास चला। वह अभी दूर था, उसे देखकर उसके बाप को दया आयी, और दौड़कर उसे गले लगा लिया, और बहुत चूमा। बेटे ने उसे कहा; "हे बाप, मैंने भगवान् का तेरे पास बुरा किया, और अब इस लायक नहीं कि फिर तेरा बेटा कहलाऊँ।" बाप ने अपने नौकरों से कहा, 'अच्छे से अच्छे कपड़े निकाल लाओ, इसको पहनाओ, और इसके हाथ में अँगूठी और पैरों में जूता पहनाओ और हम लोग खायें और खुशी मनायें; क्योंकि मेरा यह बेटा मर गया था, अब जिया है; खो गया था, अब मिला है।' फिर वे खुशी मनाने लगे।

उसका बड़ा बेटा खेत में था। जब घर के निकट आया, गाने और नाचने वालों की आवाज सुनी। फिर एक नौकर को बुलाकर पूछा, 'यह क्या है?' उसने उसे कहा, 'तेरा भाई आया है और तेरे बाप ने बड़ा भोज किया है, इसलिए कि उसको भला-चंगा पाया है।' उसने क्रुद्ध होकर नहीं चाहा कि भीतर जाये। फिर उसके बाप ने बाहर आकर उसे मनाया। उसने बाप को जवाब दिया, 'देख तो, इतने बरसों से मैं तेरी सेवा करता हूँ, और कभी तेरे कहे से बाहर नहीं चला; पर तूने कभी बकरी का मेमना मुझे नहीं दिया कि अपने मित्रों के साथ खुशी मनाऊँ। और जब तेरा यह बेटा आया जिसने तेरी सम्पत्ति वेश्याओं में खो दी, तूने उसके लिए बड़ा भोज किया।' उसने उसे कहा, 'हे पुत्र, तू सदा मेरे पास है, और जो कुछ मेरा है वह तेरा है; फिर तो खुशी मनाना और खुश होना चाहिए था; क्योंकि तेरा भाई मर गया था, अब जिया है, और खो गया था, अब मिला है।'

[सं० ८]

भारतीय आर्य परिवार केन्द्रीय वर्ग

पंजाबी

पोवाधी बोली (थाना कुलरन, जींद राज्य)

दूसरा उदाहरण

ਇਕ ਆਦਮੀ ਧਾੜਵੀ ਥਾ। ਓਹ ਸਾਡੇ ਦੇਸ ਆਗਿਆ। ਓਧੇ ਮੁੜਦੇ ਹੁਏਦੇ ਮਨ ਬਿਚ ਆਈ ਚਾਰ ਪੰਜ ਰੁਪਏਦੀ ਰੂੰ ਲੇ ਚੱਲਾਂ। ਮੁੜ ਕੇ ਪਿੰਡ ਬਿਚ ਰੂੰ ਲੈਣ ਬੜ ਗਿਆ। ਇਕ ਬੁੱਢੀ ਬੈਠੀ ਕਤਣੀ ਥੀ। ਓਹਨੂੰ ਰੂੰ ਪੂਛੀ। ਓਹਨੇ ਆਖਿਆ ਹੈ ਭਾਈ ਏਹ ਬਾਣੀਏਨੂੰ ਬੋਲ ਮਾਰ ਲਿਆ। ਓਹ ਬਾਣੀਏਨੂੰ ਬੁਲਾ ਲਾਇਆ। ਓਹ ਬੁੱਢੀ ਬੋਲੀ ਏਨੂੰ ਰੂੰ ਜੋਖ ਦੇ॥ ਧਾੜਵੀ ਬੋਲਿਆ ਬੁੱਢੀ ਏਹਨੂੰ ਚਾਰ ਪੰਜ ਆਨੇ ਦੇ ਕੇ ਜੋ ਮੈਂ ਬੰਧ ਤੁਲਾ ਲੂੰ। ਤੂਹੀ ਕਿਉਂ ਨਹੀਂ ਜੋਖ ਦਿੰਦੀ। ਫਿਰ ਝੀਖੇਂਗੀ। ਬੁੱਢੀ ਕਹਿੰਦੀ ਲੇ ਜਾ ਭਾਈ ਮੈਂ ਅਗੀਤ ਬਿਚ ਲੂੰਗੀ। ਓਹ ਕਹਿੰਦਾ ਅਗੀਤ ਕਿਹਨੇ ਦੇਖਾ ਹੈ। ਬੁੱਢੀ ਕਹਿੰਦੀ ਮੈਂ ਦੇਖ ਆਈ ਹਾਂ। ਓਹ ਕਹਿੰਦਾ ਤੂੰ ਕਿੱਕਰ ਦੇਖ ਆਈ। ਬੁੱਢੀ ਕਹਿੰਦੀ ਧੀ ਜਮਾਈ ਮੇਰੇ ਕੋਲ੍ ਬਸਦੇ ਥੇ। ਮੇਰੀ ਮੈਂਹ ਸੂਣੀ ਥੀ। ਓਨ੍ਹਾਂਦੀ ਸੂਈ ਹੁਈ ਥੀ। ਮੈਨੇ ਧੀਨੂੰ ਆਖਿਆ ਸੇਰ ਘੇਓ ਉਧਾਰਾ ਦੇ ਦੇ। ਜਿੱਦਣ ਮੇਰੇ ਦੁਧ ਹੋਗਿਆ ਤੈਨੂੰ ਦੇ ਦੂੰਗੀ। ਧੀਨੇ ਘੇਓ ਦੇ ਦਿੱਤਾ। ਫਿਰ ਓਹ ਮਰ ਗਈ। ਮੈਂ ਕੁਮਾਰੀਆਂ ਗਈ। ਓੱਥੇ ਗਈ ਹੁਈ ਧੀਨੇ ਫੜ ਲਈ। ਕਹਾ ਕਿ ਮੇਰਾ ਸੇਰ ਘੇਓ ਉਧਾਰਾ ਦਿੱਤਾ ਹੋਇਆ ਦੇ ਦੇ। ਮੈਨੇ ਕਹਾ ਮੇਰੇ ਕੋਲ੍ ਕੀ ਹੈ। ਜਮਾਈਨੂੰ ਦੇ ਦੂੰਗੀ। ਮੇਰੇ ਕੋਲ੍ ਬਸਦਾ ਹੈ। ਧੀ ਬੋਲੀ ਓਧਾਂ ਕੁਛ ਵਾਸਤਾ ਨਹੀਂ। ਜੇੜ੍ਹਾ ਮੈਂ ਦਿੱਤਾ ਹੈ ਓਹ ਮੇਰਾ ਦੇ ਦੇ। ਫਿਰ ਸੇਰ ਭਰ ਮਾਸ ਪੱਟ ਬਿਚੋਂ ਮੇਰਾ ਲੈ ਕੇ ਖੈੜਾ ਛੱਡਿਆ। ਏਹ ਦੇਖਲੈ ਟੋਹਣਾਂ ਪੱਟ ਬਿਚ ਸਕੀ ਧੀਦਾ ਪਾਇਆ ਹੂਆ ਹੈ। ਤੂ ਰੂੰ ਬੰਧ ਘੱਟ ਲੈ ਜਾ ਅਗੀਤ ਲੈ ਲੂੰਗੀ। ਧਾੜਵੀਨੂੰ ਏਹ ਗਲ ਸੁਣ ਕੇ ਗਿਆਨ ਆ ਗਿਆ। ਰੂੰ ਲਿੱਤੀ ਨਹੀਂ। ਅਪਣੇ ਘਰਨੂੰ ਚੱਲਾ ਗਿਆ। ਘਰ ਜਾ ਕੇ ਜੇੜ੍ਹਾ ਮਾਲ ਲੂਟਿਆ ਕਸੂਟਿਆ ਥਾ ਬਾਮਣਾਂ ਫਕੀਰਾਂਨੂੰ ਪੁੰਨ ਕਰ ਦਿੱਤਾ ਧਾੜਵੀਦਾ ਕੰਮ ਛੱਡ ਦਿੱਤਾ॥

(नागरी रूपान्तर)

इक आदमी धाड़वी था। ओह् साडे देस आ-गिया। ओथे मुड़दे-हुएदे मन-बिच आई 'चार पञ्ज रुपएदी रूँ ले चल्लाँ।' मुड़-के पिण्ड-बिच रूँ लैण बड़-गिआ। इक बुड्ढी बैठी कतदी-थी, ओह्नूँ रूँ पूछी। ओह्ने आखिआ, 'हे भाई, एह् बाणीएनूँ बोल भार लिआ।' ओह् बाणीएनूँ बुला लाइआ। ओह् बुड्ढी बोली, 'एनूँ रूँ जोख दे।' धाड़वी बोलिआ, 'बुड्ढी, एह्नूँ चार पञ्ज आने देके जो मैं बद्ध तुला लूँ। तू-ही किउँ नहीं जोख दिन्दी, फिर झीखेंगी।' बुड्ढी कहिन्दी, 'ले-जा, भाई, मैं अगंत-बिच लूँगी।' ओह् कहिन्दा, 'अगन्त किहने देखा है?' बुड्ढी कहिन्दो, 'मैं देख आई-हाँ।' ओह् कहिन्दा, 'तूँ किक्कर देख आई?' बुड्ढी कहिन्दी, 'धी जमाई मेरे कोल् बसदे-थे; मेरी मैंह् सूणी थी; उन्हांदी सूई-हुई थी; मैंने धीनूँ आखिआ, "सेर घेओ उधारा दे-दे; जिद्दण मेरे दुध हो-गिआ, तैनूँ दे-दूँगी।" धीने घेओ दे-दित्ता। फिर ओह् मर-गई। मैं कुमरीआँ गई; ओत्थे गई-हुई धीने फड़-लई; कहा कि, "मेरा सेर घेओ उधारा दित्ता-होइआ, दे-दे।" मैंने कहा, "मेरे कोल् की है? जमाईनूँ दे-दूँगी; मेरे कोल् बसदा है।" धी बोली, "ओधा कुछ वास्ता नहीं। जेढ़ा मैं दित्ता है, ओह् मेरा दे-दे।" फिर सेर भर मास पट्ट बिचों मेरा लै-के खैढ़ा छड्डिआ। एह् देख-लै, टोहणाँ पट्ट-बिच सकी धीदा पाइआ-हुआ है। तू रूँ बद्ध-घट्ट लै-जा, अगन्त लै-लूँगी।' धाड़वीनूँ एह् गल सुण-के गिआन आ-गिआ; रूं लित्ती नहीं; अपणे घरनूँ चल्ला-गिआ। घर जा-के जेढ़ा माल लूटिआ कसूटिआ था, बामणां फकीराँनूँ पुन्न कर दित्ता, धाड़वीदा कम्म छड्ड दित्ता।

(अनुवाद)

एक आदमी बटमार था। वह हमारे देश आ गया। वापसी पर उसके मन में आया, 'चार-पाँच रुपये की रूई ले चलूँ।' लौटकर गाँव में रूई लेने घुस गया। एक बुढ़िया बैठी कात रही थी, उससे रूई (के बारे में) पूछा। उसने कहा, 'हे भाई, इस बनिये को बुला ला।' वह बनिये को बुला लाया। वह बुढ़िया बोली, 'इसे रूई तोल दे।' बटमार बोला, 'बुढ़िया, इसे चार-पाँच आने देकर यदि मैं अधिक तुलवा लूँ (तो क्या)? तू ही क्यों नहीं तोल देती, फिर झींखेगी।' बुढ़िया कहती है, 'ले जा, भाई, मैं अगले लोक में लूँगी।' वह कहता है, 'अगला लोक किसने देखा है?' बुढ़िया कहती है, 'मैं देख आई हूँ।' वह कहता है, 'तू कैसे देख आई?' बुढ़िया कहती है, 'लड़की और दामाद मेरे पास रहते थे, मेरी भैंस ब्याने वाली थी, उनकी ब्यायी हुई

थी; मैंने लड़की से कहा, "सेर भर घी उधार में दे दे, जब मेरे दूध हो गया (तो) तुझे दे दूँगी।" बेटी ने घी दे दिया। तब वह मर गई। मैं प्रेतलोक गई; वहाँ गई हुई बेटी ने पकड़ लिया; कहा कि "मेरा एक सेर घी उधार में दिया हुआ दे दे।" मैंने कहा, "मेरे पास क्या है? दामाद को दे दूंगी; मेरे पास (ही तो) रहता है।" लड़की बोली, "उसका कोई मतलब नहीं। जो मैंने दिया है, वह मेरा दे दे।" तब सेर भर मेरा मांस मेरी जाँघ में से लेकर जान छोड़ी। यह देख ले, गड्ढा जाँघ में (जो) सगी बेटी का किया हुआ है। तू रूई कम-बेश ले जा, अगले लोक में ले लूँगी।' बटमार को यह सुनकर ज्ञान आ गया; रूई ली नहीं, अपने घर को चला गया। घर जाकर जो माल-धन लूटा-खसोटा था, ब्राह्मणों-फ़कीरों को दान दे दिया, बटमार का काम छोड़ दिया।

पोवाधी का निम्नलिखित उदाहरण अम्बाला से प्राप्त हुआ है। इसे मूलतः देवनागरी अक्षरों में लिखा गया और वैसे ही यहाँ दिया जा रहा है।

[सं० ९]

भारतीय आर्य परिवार **केन्द्रीय वर्ग**

पंजाबी

पोवाधी बोली **(जिला अम्बाला)**

इक जुलाहेदी अद्धी रातनूँ अक्ख खुल गई। अपणी जुलाही नूँ केहा के मैनूँ डोडे मल़ के दे। तीमीने केहा के मै-ते हुण नहीं उठ हुन्दी। जुलाहे ने फेर केहा के हुण तूँ मैनूँ डोडे मल़ के देवें ताँ मैं तैनूँ हजार हजार रुपयें-दिआं चार बाताँ सुणावाँ। जुलाही ने डोडे मल़ के दित्ते ओर हुक्का भर के दित्ता। जुलाहा वातें सुणावन लग्गिआ। उस वेले शहरदे बादशाहदा पुत्त गली विच्च जांदा था। जुलाहेदी गल्ल सुण कर सोचिआ के इसदिआँ गल्लाँ सुण के जाणा है के एह केहिआँ गल्लाँ सुणोदा है। जलाहेने चार गल्लाँ सुणाइआँ। १. जेहड़ा आदमी अपणी मुटियार तीमीनूँ

पेओके छड्डे ओह् अहमक है। २. जो अपणे तें वड्डे दे नाल यारी लावे ओह् अहमक है। ३: जो बिण पुछे पंच वणे ओह् अहमक है। ४. जो घर में हुंदे सुंदे लड़ वन्ह के न तुरे ओह् अहमक है। जुलाहा वातॉं सुणा के सो गिआ।

(अनुवाद)

एक जुलाहे की आधी रात को आँख खुल गयी। अपनी जुलाहिन से कहा कि मुझे (पोस्त की) छीमी मलकर दे। स्त्री ने कहा कि मुझसे अब उठा नहीं जाता। जुलाहे ने फिर कहा कि अब तू मुझे छीमी मलकर दे[1] तो मैं तुझे हजार-हजार रुपये की चार बातें सुनाऊँ। जुलाहिन ने छीमी मलकर दी और हुक्का भरकर दिया। जुलाहा बातें सुनाने लगा। उस समय शहर के बादशाह का बेटा[2] गली में जा रहा था। जुलाहे की बात सुनकर सोचने लगा कि इसकी बातें सुनकर जाना होगा कि यह कैसी बातें सुनाता है। जुलाहे ने चार बातें सुनायी। १. जो आदमी अपनी जवान स्त्री को मायके छोड़े वह मूर्ख है। २. जो अपने से बड़े के साथ मैत्री करे, वह मूर्ख है। ३. जो बिना पूछे पंच बने वह मूर्ख है। ४. जो घर में (धन) रहते बिना पल्ले बाँधे (यात्रा पर) चल पड़े, वह मूर्ख है। जुलाहा बातें सुनाकर सो गया।

१. पोस्त की छीमी पानी में मलकर एक पेय बनाया जाता है।

२. जुलाहे को भारतीय लोककथाओं में मूर्ख माना जाता है, लेकिन शाहज़ादा उसकी बातें सुनकर बाद में लाभान्वित होता है।

[सं० १०]

भारतीय आर्य परिवार केन्द्रीय वर्ग

पंजाबी

पोवाधी बोली (थाना करमगढ़, पटियाला राज्य)

(फारसी लिपि)

دیکھو کھبّے ہتھہ نال مُنّا دب رکھیا ہے سجے ہتھہ وچہ پرانی ہے۔ سامنے درخت دے ہیٹھ حقہ ار پانی دا گھڑا پیا ہے۔ اونہے ھی اک ھنڈا بیٹھا ہے۔ کرساں بچارہ تھوڑی جی رات تے اوٹھیا ہے۔ ھل اور بہلداں نوں لیکے تڑکے تڑکے کھیت پر آن پہونچیا ہے۔ جد سورج سر پر آوندا ہے۔ تاں گھروالی روٹی لیوندی ہے۔ ایہہ ھل کھول دندا ہے۔ بہلداں نوں چارہ پوندا ہے۔ اپ ہتھہ منہہ دھوے ٹھنڈا ہوندا ہے۔ روٹی کھاندا ہے۔ حقہ پیندا ہے۔ بہلداں نوں پانی پلوندا ہے۔ پیکے تھوڑا جیہا چر ارام لندا ہے۔ گھروالی ساگ سوگ لیکے چلی جاندی ہے۔ کم بتہا ہوندا ہے۔ تاں بچارہ اِسی دھندے وچہ دن پورا کردندا ہے۔ نہیں تاں ھور کم کار کردا ہے۔ جد سورج چھپن لگدا ہے تاں ھل اور بہلداں نوں لیکے گھر آوندا ہے۔ سر پر چارہ دی گٹھڑی لیوندا ہے۔ بہلداں دے آگے چارہ پوندا ہے۔ گھروالی دھار کڈھدی ہے۔ روٹی پکوندی ہے۔ ایہہ کھوسی کھوسی بال بچاں وچہ بیٹھہ کے کھاندا ہے۔ پھیر ایہے جیہے سواد نال پیر پسار کے سوندا ہے اک بادشاہاں نوں پھلاں دی چھیجاں پر بھی نصیب نہیں *

(नागरी रूपान्तर)

देखो, खब्बे हत्थ नाल मुन्ना दब रक्खिआ-है, सज्जे हत्थ विच पुरानी है। सामने दरख्तदे हेठ हुक्का अर पनीदा घड़ा पिआ -है। उत्थे-ही इक्क मुण्डा बैठा है। किरसान बिचारा थोड़ा-जी रात-ते उठिआ-है। हल और भल्दाँनूं ले-के, तड़के-तड़के खेत-पर आन पहुँचिआ है। जद सूरज सिर-पर आउन्दा है, ताँ घर-वाली रोट्टी लिऔंदी है। एह हल खोल-दिन्दा-है। भल्दाँ-नूँ चारा पौन्दा-है। आप हाथ मुँह धो-के ठण्डा होन्दा-है। रोट्टी खान्दा-है। हुक्का पींदा-है। भल्दाँ-नूँ पानी पलोन्दा-है। पै-के थोड़ा-जेहा चिर अराम लिन्दा-है। घर-वाली साग-सूग ले-के चली जान्दी है। कम्म बुहता होन्दा -है। ताँ बिचारा इसी धन्धे-विच्च दिन पूरा कर-दिन्दा-है। नहीं-ताँ होर कम्म-कार करदा-है। जब सूरज छिपन लगदा-है, ताँ हल और भल्दाँ-नूं ले-के घर आउन्दा-है। सिर-पर चारा दी गठरी लिऔन्दा-है। भल्दाँ-दे आगे चारा पौंदा-है। घर-वाली धार कड्ढदी-है। रोट्टी पकौन्दी-है। एह खुसी-खुसी बाल-बच्चाँ-विच्च बैठ-के खान्दा है। फिर एहे जेहे सुवाद नाल पैर पसार-के-सोन्दा है, इक बादशाहाँ-नूं फुल्लाँ-दी छीजाँ-पर भी नसीब नहीं।

(अनुवाद)

देखो, बायें हाथ से (हल के) हत्थे को दबा रखा है, दाहिने हाथ में चाबुक है। सामने पेड़ के नीचे हुक्का और पानी का घड़ा पड़ा है। वहीं एक लड़का बैठा है। किसान बेचारा थोड़ी-सी (बची) रात से उठा हुआ है। हल और बैलों को लेकर तड़के-तड़के खेत पर आ पहुँचा है। जब सूरज सिर पर आता है, तो घर वाली रोटी लाती है। यह हल खोल देता है। बैलों को चारा डालता है। आप हाथ-मुँह धोकर ठण्डा होता है। रोटी खाता है। हुक्का पीता है। बैलों को पानी पिलाता है। लेटकर थोड़ी सी देर आराम लेता है। घर वाली साग-वाग लेकर चली जाती है। काम बहुत होता है तो बेचारा इसी धन्धे में दिन पूरा कर देता है, नहीं तो और कामकाज करता है। जब सूरज छिपने लगता है, तब हल और बैलों को लेकर घर आता है। सिर पर चारे की गठरी लाता है। बैलों के आगे चारा डालता है। घर वाली दूध दुहती है। रोटी पकाती है। यह खुशी-खुशी बाल-बच्चों में बैठकर खाता है। फिर ऐसे मज़े के साथ पैर पसार कर सोता है, कि बादशाहों को फूलों की सेज पर भी नसीब (भाग्य में) नहीं।

राठी

वे मुसलमान जातियाँ, जो पश्चिम से आयी हुई बतायी जाती हैं, और जो अब ज़िला हिसार में घग्घर वादी में बस गयी हैं, पछाडा या पछाहीं एवं राठ या निष्ठुर कही जाती हैं। जैसा कि उनके इस दूसरे नाम से द्योतित होता है, वे लोग बड़े क्रूर होते हैं। उनकी भाषा पछाडी या राठी नाम से विदित है। ऐसी ही भाषा जींद रियासत के थाना कुलरन में घग्घर की वादी में बोली जाती है। यहाँ पर उसे जाण्ड या नैली कहते हैं। नैली सम्भवत: नाली ही है जो कि घग्घर वादी का स्थानीय नाम है। मैं जाण्ड नाम की व्युत्पत्ति नहीं जानता; हो न हो इसका सम्बन्ध जण्ड (झाड़ी) से है जो कि इस जंगली इलाके में खूब उगती है।

किसी भी नाम से पुकारें; पछाडी, राठी, जाण्ड या नैली, है यह वही भाषा, अर्थात् पोवाधी पंजाबी, जिसमें इसके तुरन्त पूर्व में बोली जाने वाली पश्चिमी हिन्दी की बाँगरू बोली के भारी सम्मिश्रण हैं। उच्चारण में अनुनासिक ध्वनियों का रुझान है। यत्र-तत्र इसके तुरन्त पश्चिम में बोली जाने वाली मालवाई पंजाबी से गृहीत कोई रूप मिल जाता है।

बोलने वालों की संख्या इस प्रकार बतायी गयी है—

हिसार (राठी)	३६,४९०
जींद (जाण्ड)	२,५००
योग	३८,९९०

मैं इस बोली के तीन नमूने दे रहा हूँ,—हिसार से प्राप्त अपव्ययी पुत्र की कथा का एक भाग और एक लोककथा, और जींद से एक दूसरी लोककथा। इनसे इस बोली की सम्मिश्रित विशेषता का परिचय मिल जाता है। जैसा कि अपेक्षित है, जींद के नमूने में दूसरों की अपेक्षा पश्चिमी हिन्दी का प्रभाव अधिक है।

इस मिश्रित भाषा की अधिक विस्तार से चर्चा करना अनावश्यक है। इस बात का ध्यान रखना पर्याप्त होगा कि सम्बन्ध कारक कभी तो-का जोड़ने से बनता है

और कभी -दा जोड़ने से। सम्बन्ध कारक **मेरे** का तिर्यक् रूप (या अधिकरण) 'मुझको' के अर्थ में प्रयुक्त होता है; अतः **जाट-के**, जाट को। सम्प्रदान का चिह्न है **नूँ** या **ने**। कभी कभी बाँगरू **साँ**, मैं हूँ; **सै**, वह है, मिलता है। -गी वर्तमान काल में भी प्रयुक्त होता है भविष्यत् में भी। जैसे **आएगी**, वह आती है; मालवाई भविष्यत् **जाँसाँ**, जाऊँगा, भी चलता है। **घल्लणा**, भेजना, का भूतकृदन्त **घत्ता** है, घल्लिआ नहीं।

चाँहाँदा, चाहता; **आऊँदाँ**, आता; **जाँसाँ**, जाऊँगा, में अनुनासिक उच्चारण और (दूसरे नमूने के) **बढ़े** के स्थान पर **बधे** में **ढ** या ढ़ के लिए दन्त्य **ध** का प्रयोग उल्लेखनीय है।

[सं० ११]

भारतीय आर्य परिवार **केन्द्रीय वर्ग**

पंजाबी

राठी बोली **(जिला हिसार)**

पहला उदाहरण

इक आदमी ते दोय पुत्र सन। उन्हाँ-चूँ लोड़ा पुत्रने आपदे पेवनूँ आख्या केड़ा माल मेंनूँ आउंदाँ हैं मैंनूँ दे। पेवने माल लोड़े पुत्रनूँ बंड दित्ता। थोड़े दियाँ मगरूँ सारा माल इकट्ठा करके परदेस जाँदा रहा। उथें बद-खोई व भेड़े कामाँ विच सारा माल गँवाँ दित्ता। सारा माल गवाँ बेठा के कुछ न रहा। उस देस विच बुरा काल पया। वुह बुख मरण लगा। फेर उस देसदे सिरदार कोलों गोला जा लग्या। उस सिरदार ने आपदे खेतड़ाँदे विच सूराँदा छेड़ू कर दित्ता। केड़े बुह छिल सूर खाँदे वुह छिल भी उसनूँ नाँ थियाये। वुह चाँहाँदा सी के यह छिल मेंनूँ थियाँ जाँय तो उसदे नाल ढिड भर लेवाँ। वुह छिल भी उसनूँ कोई नँहीं देदाँ सी।

(अनुवाद)

एक आदमी के दो पुत्र थे। उनमें से छोटे पुत्र ने अपने बाप से कहा जो माल मुझे आता है मुझे दे। बाप ने माल छोटे पुत्र को बाँट दिया। थोड़े दिनों बाद सारा माल इकट्ठा करके परदेस जाता रहा। वहाँ बद-चलनी और बुरे कामों में सारा माल गँवा दिया। सारा माल गँवा बैठा तो कुछ न रहा। उस देस में बुरा अकाल पड़ा। वह भूखों मरने लगा। तब उस देश के सरदार के पास नौकर जा लगा। उस सरदार ने अपने खेतों में सूअरों का चरवाहा रख लिया। जो छिलके सूअर खाते वे छिलके भी उसको न मिलते थे। वह चाहता था कि ये छिलके मुझे मिल जायँ तो उनसे पेट भर लूँ। वे छिलके भी उसे कोई नहीं देता था।

[सं० १२]

भारतीय आर्य परिवार **केन्द्रीय वर्ग**

पंजाबी

राठी बोली **(ज़िला हिसार)**

दूसरा उदाहरण

एक जाट के एक जाटनी थी। जाट जद खेत में बग जाँदा तो पाछे ते मोहन-भोग चूर्मा कर के खाँदी। और साँझनै जाट जद आँदा जाटनी जाटनै कहँदी मैं तो मरूँगी मेरे तो रोग हो गया। सिर दूखे। पेट दूखे। पैर फूटें। किसे वैदनै या स्यानेनै दिखा ओपरी पूछा करा। जद जाट मन में सोची इसका मास और गुल्ला तो रोज वधे और यिह कहे मेरे रोग लाग गया। यह केह बान सै। एक दिन जाट पर्स में सो गया। खेत न गया। थोड़ी वार पाछे घराँ गया। तो जाटनी मोहन-भोग करदी पाई। जद जाटनै सोची इसका इलाज बंधे तो ठीक लागे। जद जाट एक फकीर पा गया और कहा मेरी जाटनी मस्ती होई आएगी, मोहन-भोग

या चूर्मा तो खावे और जद सांझनै खेत ते मैं आऊँ मेरे जीनै कलह् बनावे। जद फकीरनै कही तौं चार सूत की कूकड़ी लीआ, मैं तन्नै मंत्र के दे दूँगा। तो जाट चार कूकड़ी फकीरनै दे आया। तो फकीर वें कूकड़ी पढ़ के जाटनै दे दी। जाटने सुफे के चारों कोनिओंमें चारों कूकड़ी धर दी। जाट कूकड़ी धर के बाहिर चला गया और कह् गया मैं किसे वैंदने बुलान जाँसूँ। रात पड़े आऊँगा। जाट तो चला गया तो जाटनी पाछै ते सुफे में वड़ी। जद एक कूकडी बोली कि आई है। जद दूसरी बोली कि आन दे। जद तीसरी बोली कि डरी नहीं। जद चौथी बोली डरे तो खाये क्यों। इसे तरियां जाटनी चार या पांच बार वड़ी तो कूकड़ियाँ इसे तराँ बोलीं। जद जाटनी भैभंक हो के खाट में ढै पड़ी। इतने में जाट आ गया और कहा कि वैद तो तड़के आवेगा। आज कोई नहीं आँदा। जद जाटनी बोली तैं नपूता यह बला काढ। मैं तो आछी सूँ। जद जाट चारों कूकड़ियाँ काढ कर फकीरनै दे आया।

(अनुवाद)

एक जाट की एक जाटिनी थी। जाट जब खेत में चला जाता तो पीछे से मोहन-भोग और चूरमा बनाकर खाती। और साँझ को जाट जब आता जाटिनी जाट से कहती, 'मैं तो मर रही हूँ। मुझे रोग हो गया (है)। सिर में दर्द है। पेट में दर्द है। पाँव फट गये हैं। किसी वैद्य या हकीम को दिखा के जादू-टोना कराओ।' तब जाट ने मन में सोचा (कि) इसका मांस और हाड़ तो नित्य बढ़ता जाता है और यह कहती है मेरे रोग लग गया है। यह क्या ढंग है। एक दिन जाट चौपाल में सो गया—खेत में नहीं गया। थोड़ी देर बाद घर जा पहुँचा तो जाटिनी मोहनभोग बना रही थी। तब जाट ने सोचा (कि) इससे इसका इलाज हो जाय तो अच्छा हो। तब जाट एक फकीर के पास गया और कहा कि मेरी जाटिनी मस्तानी हो रही है, मोहनभोग या चूरमा तो खाती है और जब साँझ को मैं खेत से आता हूँ तो मेरे जी के लिए कलह पैदा करती है। तब फकीर ने कहा, 'तू चार सूत की अंटी ले आ, मैं तुझे मन्त्रित करके

वह दूंगा।' तो जाट चार अंटियाँ फकीर को दे आया। तो फकीर ने वे अंटियाँ (मन्त्र) पढ़कर जाट को दे दीं। जाट ने कमरे के चारों कोनों में चारों अंटियाँ रख दीं। जाट अंटियाँ रखकर बाहर चला गया और कह गया, 'मैं किसी वैद्य को बुलाने जाता हूँ। रात पड़ने पर आऊँगा।' जाट तो चला गया, तब जाटिनी बाद में कमरे में घुसी। तब एक अंटी बोली कि 'आई है ।' इसके बाद दूसरी बोली कि 'आने दो।' इसके बाद तीसरी बोली कि '(यह) डरी नहीं।' तो चौथी बोली, 'डरे तो खाये क्यों।' इसी तरह जाटिनी चार या पाँच बार भीतर गयी तो अंटियाँ इसी तरह से बोलीं। तब जाटिनी भयभीत होकर खाट में गिर पड़ी। इतने में जाट आ गया और बोला कि वैद्य तो सुबह आयेगा। आज कोई नहीं आता। तब जाटिनी बोली, 'नपूते, इस बला को निकाल। मैं तो अच्छी-भली हूँ। तब जाट चारों अंटियाँ निकालकर फकीर को दे आया।

[सं० १३]

भारतीय आर्य परिवार | केन्द्रीय वर्ग

पंजाबी

जाण्ड बोली | (जींद राज्य)

तीसरा उदाहरण

ਇਕ ਰਾਜੇ ਕਾ ਛੋਰਾ ਬਿਯਾਹ ਨ ਕਰਾਵੇ। ਰਾਜਾ ਐਹਲਕਾਰਾਂਨੂੰ ਕਹਣ ਲਗਿਆ, ਇਨੂੰ ਸਮਝਾਓ ਬਿਯਾਹ ਕਰਾਵੇ, ਐਹਲਕਾਰਾਂਨੇਂ ਤੀਵੀਆਂਦੀਆਂ ਤਸਵੀਰਾਂ ਜਿਸ ਜਾਗਾ ਵਾਹਿ ਲੰਘਿਆ ਕਰਦਾ ਲਾ ਦੀਆਂ। ਇਕ ਬਚਿੱਤਰ ਕੌਰ ਧੀ ਜੱਟ ਕੀ ਤਸਵੀਰ ਪਸੰਦ ਕਰਕੇ ਵਾਹਿਨੇਂ ਹਾਂ ਕਰ ਲੀ ਉੱਨੂੰ ਬਿਯਾਹਣ ਚੜ੍ਹ ਗਏ। ਇੱਕ ਭਠਿਯਾਰੀ ਛੋਰੇਦੀ ਯਾਰ ਬੀ ਵਾਹਿ ਬੀ ਗੈਲ ਚਲੀ ਗਈ ਉੱਨੇਂ ਕਹਿਆ ਪਹਿਲਾਂ ਬਚਿੱਤਰ ਕੌਰਨੂੰ ਮੈਂ ਦੇਖ ਆਵਾਂ। ਦੇਖਕੇ ਕਹ ਦੀਆ ਵਾਹਿ ਬਦਸਕਲ ਹੈ ਤੂੰ ਅੱਖਾਂ ਬੰਨ੍ਹ ਕੇ ਫੇਰੇ ਲਈਂ। ਉੱਨੇਂ ਅੱਖਾਂ ਦੁਖਦੀਆਂ-ਦਾ ਬਹਾਨਾ ਕਰਕੇ ਪੱਟੀ ਬੰਨ੍ਹ ਕੇ ਫੇਰੇ ਲੇ ਲੀਏ। ਬਿਯਾਹ ਕੇ ਜਦ ਅਪਣੇ ਘਰ ਆਏ ਰਾਤ-ਨੂੰ ਵਾਹਿ ਉਸਕੇ ਪਾਸ ਗਈ। ਛੋਰੇਨੇ ਅੱਖਾਂ ਬੰਨ੍ਹ ਕੇ ਕਹ ਦੀਆ ਪਾਂਦੀਆਂ ਪੈ ਰੌਹ। ਤਿਨ ਦਿਨ ਵਾਹਿ ਇਸੀ ਤਰਾਂ ਪਾਂਦੀਆਂ ਪੈਂਦੀ ਰਹੀ। ਉੱਨੇ ਦਲੀਲ ਕਰੀ ਅੱਖਾਂ ਖੁਲਾਵਾਂ। ਵਾਹਿ ਰੋਜ ਸਰਾਏ ਮੈਂ ਭਠਿਯਾਰੀ ਕੇ ਪਾਸ ਰਹਾ ਕਰਦਾ। ਬਚਿੱਤਰ ਕੌਰ ਦਹੀਂ ਬੇਚਣ ਵਾਲੀ ਗੁੱਜਰੀ ਬਣਕੇ ਉਸ ਸਰਾਏਂ ਮਾਂਹਿ ਗਈ। ਵਾਹਿ ਸਕਲ ਦੇਖਕੇ ਬਹੁਤ ਤੜਫਿਆ ਪੁਛਣ ਲਗਿਆ ਜੋ ਕੋਈ ਰੱਖੇ ਤੂੰ ਰਹਿ ਜਾਏਂ। ਉਨੇਂ ਕਹਾ ਹਾਂ। ਛੋਰੇਨੇ ਕਹਾ ਤੇਰਾ ਡੇਰਾ ਕਿੱਥਾਂ। ਉੱਨੇ ਕਹਾ ਪਾਂਦੀਂ ਕੀ ਸਰਾਂਇ ਮਾਂਹਿ ਵਾਹਿ ਪੁਛਦਾ ਫਿਰਾ ਪਤਾ ਨਹੀਂ ਲਗਿਆ। ਰੋ ਪਿੱਟ ਕੇ ਘਰ ਮਾਂ ਆਣ ਬੜਾ। ਰਾਤਨੂੰ ਬਚਿੱਤਰ ਕੌਰ ਜਦ ਗਈ ਫਿਰ ਅੱਖਾਂ ਬੰਨ੍ਹ ਲਈਆਂ। ਵਾਹਿ ਪਾਂਦੀਆਂ ਪੈ ਰਹੀ। ਤੜਕੇ ਉੱਠਕੇ ਕਹਣ ਲਗੀ ਐਹਮਕ ਥਾ ਸਮਝਾ ਨਹੀਂ। ਘੋੜੇ ਪਰ ਚੜ੍ਹਕੇ ਆਦਮੀ ਕੀ ਸਕਲ ਮਾਂਹਿ ਵਾਹਿ ਸਰਾਂਇ ਮਾਂਹਿ ਜਾ ਰੋਈ। ਉੱਨੇਂ ਪੁੱਛਿਆ। ਉਰੇ ਰਾਜੇ ਕਾ ਛੋਰਾ ਹੈ। ਅਰਦਲੀਆਂਨੇ ਕਹ ਦੀਆ ਹੈਗਾ। ਉੱਨੇਂ ਕਹਾ ਕਹ ਦੇਓ ਬਚਿੱਤਰ ਸਾਹਿ ਬੁਲਾਵੇ ਹੈ। ਵਾਹਿ ਉਸਕੇ ਪਾਸ ਆ ਗਿਆ। ਦੋਏ ਘੋੜਿਆਂ ਪਰ ਚੜ੍ਹਕੇ ਸਕਾਰਨੂੰ ਚਲੇ ਗਏ। ਦਾਬਨ ਮਾਂਹਿ ਜਾਕੇ ਸਕਾਰ ਮਾਰਿਆ। ਬਚਿੱਤਰ ਸਾਹਿਨੇ ਸਕਾਰ ਪਕੜਿਆ ਵਾਹਿ ਹਲਾਲ ਕਰਨ ਲਗਿਆ। ਬਚਿੱਤਰ ਸਾਹਿਕੀ ਉਂਗਲੀ ਵੱਢ ਗਈ ਛੋਰੇਨੇ ਅਪਣੇ ਸਾਫੇ ਬਿੱਚੋਂ ਕਪੜਾ ਫਾੜਕੇ ਉਂਗਲੀ ਬੰਨ੍ਹ ਦੱਈ ਔਰ ਕਹਣ ਲਗਿਆ ਮੇਰਾ ਕਲੇਜਾ ਕਟ ਗਿਆ। ਦੋਏ ਸਹਰਨੂੰ ਚਲੇ ਆਏ। ਪਹਿਲਾ ਛੋਰੇਦਾ ਘੋੜਾ ਡਜਾ ਕਰ ਦਬ ਕੇ ਉੱਨੂੰ ਖੜਾ ਕਰਕੇ ਬਚਿੱਤਰ ਸਾਂਹਨੇ ਘੋੜਾ ਦਬੋਲਿਆ ਔਰ ਘਰ ਮਾਂਹਿ ਆਨ ਬੜਿਆ। ਵਾਹਿ ਉਡੀਕ ਕੇ ਸਰਾਂਇ ਮਾਂਹਿ ਚਲਾ ਗਿਆ। ਸੰਝਨੋਂ ਜਦ ਘਰ ਆਏ ਬਚਿੱਤਰ ਕੌਰ ਕਹਣ ਲਗੀ ਕਿੱਥੇ ਪਵਾਂ।

(नागरी रूपान्तर)

इक राजे-का छोरा बियाह न करावे। राजा ऐहलकाराँनूँ कहण लगिआ, 'इनूँ समझाओ, बियाह करावे।' ऐहलकाराँने तीवीआँदीआँ तस्वीराँ जिस जागा वाहि लंघिआ-करदा ला-दीआँ इक बचित्तर कौर, धी जट्ट-की तस्वीर पसिन्द कर-के वाहिनें 'हाँ' कर-ली। उन्नूँ बियाहण चढ़-गए। इक्क भठियारी छोरेदी यार थी, वाहि भी गैल चलि-गई। उन्ने कहिआ, 'पहिलाँ बचित्तर कौरनूँ मैं देख आवाँ।' देख-के कह-दीआ, 'वाहि बद सकल है, तूँ अक्खाँ बन्ह -के फेरे लईं। उन्ने अक्खाँ दुखदीआँदा बहाना कर-के पट्टी बन्ह-के फेरे ले-लीए। बियाह-के जद अपणे घर आए, रातनूँ वाहि उसके पास गई। छोरेने अक्खाँ बन्ह-के कह-दीआ, 'पाँदीआँ पै रौह।' तिन दिन वाहि इसी तराँ पाँदीआँ पैंदी रही। उन्ने दलील करी, 'अक्खाँ खुलावाँ।' वाहि रोज सराएँ-मैं भठियारी-के पास रहा-करदा। बचित्तर कौर दहीं बेचण-वाली गुज्जरी बण-के उस सराएँ-माँहि गई। वाहि सकल देख-के बहुत तड़फिआ। पुछ्ण लगिआ, 'जो कोई रक्खे, तूँ रहि-जाएँ?' उनने कहा, 'हाँ।' छोरेने कहा, 'तेरा डेरा कित्थाँ?' उनने कहा, 'पाँदी-की सराँइ-माँहि।' वाहि पुछदा फिरा, पता नहीं लगिआ। रो-पिट्ट-के घर-माँ आण-बड़ा। रात-नूँ बचित्तर कौर जब गई, फिर अक्खाँ बन्ह-लईआँ। वाहि पाँदिआँ पै रही। तड़के उट्ठ-के कहण लगी, 'ऐहमक था। समझा नहीं।' घोड़े-पर चढ़-के आदमी-की सकल-माँहि वाहि सराँइ-माँहि फिर गई। ओन्हें पुच्छिआ, 'उरे राजे-का छोरा है?' अर्दलीआँ ने कह-दीआ, 'हैगा।' उन्ने कहा, 'कह-देओ बचित्तर-साहि बुलावे है।' वाहि उस-के पास आ-गिआ। दोए घोड़िआँ-पर चढ़के सकारनूँ चले गए। दाबन-माँहि जा-के सकार मारिआ। बचित्तर-साहिने सकार पकड़िआ। वाहि हलाल करन लगिआ। बचित्तर-साहि-की उँगली बड्ढ-गई। छोरेने अपणे साफे बिच्चों कपड़ा फाड़-के उँगली बन्ह दई; और कहण लगिआ, 'मेरा कलेजा कट गिआ।' दोए सहरनूँ चले-आए। पहिला छोरेदा घोड़ा भजा-कर देख-के उन्नूँ खड़ा करके बचित्तर-साहिने घोड़ा दबल्लिआ, और घर-माँहि आण-बड़िआ। वाहि उडीक-के सराँइ-माँहि चला-गिआ। सञ्झनो जद घर आए, बचित्तर कौर कहण लगी, 'कित्थे पवाँ?' उन्ने कहा, 'पाँदिआँ।' बचित्तर कौर ने कहिआ, 'ऐ दुस्मन, जद मेरी उँगली बड्ढी-थी तेरा कालजा बड्ढा-था, अब तूँ कहता हैं मैंनूँ पाँदिआँ पै रहो।' उसी वकत उन्ने पट्टी अक्खाँ-की खोल-लई। सकल-को देखताई रोइआ और कहा कि 'इतने-दिन मैंनूँ भठियारी ने धोखे-माँहि रक्खिआ।'

(अनुवाद)

एक राजा का बेटा विवाह नहीं करता था। राजा कर्मचारियों से कहने लगा, 'इसे समझाओ, विवाह कराये।' कर्मचारियों ने स्त्रियों के चित्र जिस जगह से वह होकर जाया करता था लगा दिये। एक विचित्रकौर, जाट की लड़की का चित्र पसंद करके उसने 'हाँ' कर ली। उसे ब्याह लाने चल पड़े। एक भटियारिन लड़के की यार थी, वह भी संग में चली गयी। उसने कहा, 'पहले विचित्रकौर को मैं देख आऊँ।' देखकर कह दिया, 'वह कुरूप है, तू आँखों (पर पट्टी) बाँधकर भाँवरे लेना।' उसने आँखें दुखने का बहाना करके पट्टी बाँधकर भाँवरे ले लिये। विवाह करके जब अपने घर आये, रात को वह उसके पास गयी। लड़के ने आँखें बाँधकर कह दिया, 'पाँयते लेट जाओ।' तीन दिन वह इसी तरह पाँयते लेटती रही। उसने विचार किया, 'आँखें खुलवाऊँ।' वह नित्य सराय में भटियारिन के पास रहा करता था। विचित्र-कौर दही बेचने वाली गूजरी बनकर उस सराय में गई। उसकी शक्ल देखकर वह तड़पने लगा। पूछने लगा, 'जो (तुझे) कोई रखे, तो (क्या) तू रह जायेगी?' उसने कहा, 'हाँ'। लड़के ने कहा, 'तेरा डेरा कहाँ है?' वह बोली, 'पाँयते की सराय में।' वह पूछता फिरा (किन्तु) पता नहीं चला। रो-पीट कर घर में आ घुसा। रात को विचित्रकौर जब गयी, तो उसने फिर आँखें बाँध लीं। वह पाँयते लेट गयी। सुबह उठकर कहने लगी, 'मूर्ख था, समझा नहीं।' घोड़े पर चढ़कर पुरुष के वेष में वह सराय में घूम-फिर गयी। उसने पूछा, 'यहाँ क्या राजा का लड़का है?' अरदलियों ने कह दिया, 'है।' उसने कहा, 'कह दो (कि) विचित्र शाह बुलाता है।' वह उसके पास आ गया। दोनों घोड़ों पर चढ़कर शिकार को चले गये। वन में जाकर शिकार मारा। विचित्र शाह ने शिकार पकड़ा। वह उसे हलाल करने लगा। विचित्र शाह की उंगली कट गयी। लड़के ने अपनी पगड़ी से चिथड़ा फाड़ कर उंगली बांध दी और कहने लगा, 'मेरा कलेजा (हृदय) कट गया।' दोनों शहर को चले आये। जब पहले लड़के का घोड़ा दौड़ा जाता देखा तो उसे खड़ा करके विचित्र शाह ने अपना घोड़ा दौड़ाया, और घर में आ पहुँचा। उसकी प्रतीक्षा करके सराय में चला गया। साँझ को जब घर आये, विचित्र कौर कहने लगी, 'कहाँ लेटूँ?' उसने कहा, 'पाँयते।' विचित्र कौर ने कहा, 'हे शत्रु, जब मेरी उंगली कटी थी, तब तो तेरा हृदय कट गया था, अब तू मुझे कहता है (कि) पाँयते लेट रहो।' उसी समय उसने पट्टी आँखों की खोल ली। रूप को देखते ही रोया और बोला कि 'इतने दिन मुझे भटियारिन ने धोखे में रखा।'

मालवाई

मालवा सतलुज नदी के पूर्व की ओर सिख जट्टों के पुराने बसे हुए शुष्क प्रदेश का नाम है। इसमें फीरोजपुर के ब्रिटिश ज़िले का सम्पूर्ण भाग और लुधियाना का अधिकांश सम्मिलित हैं। फ़रीदकोट और मलेर-कोटला की रियासतें और पटियाला, नाभा और जींद रियासतों के भाग भी इसके अन्तर्गत हैं। इनके अतिरिक्त कलसिया रियासत की चिरक तहसील को भी, जो फ़ीरोज़पुर ज़िले में पड़ती है, सम्मिलित कर लेना चाहिए। लुधियाना में, मालवा के उत्तर की ओर, सतलुज की दक्षिण दिशा में स्थित उर्वरा भूमि, जहाँ गन्ने की उपज होती है, पोवाध नाम से ज्ञात है। पोवाध, जैसा कि हमने पहले ही देखा, दूर दक्षिण-पूर्व की ओर फैला हुआ है और अम्बाला के एक भाग तथा फुलकियाँ रियासतों के पूर्व को घेरे हुए है। हम कह सकते हैं कि मालवा की पश्चिमी सीमा सतलुज है। इसकी उत्तरी सीमा लुधियाना में पोवाध प्रदेश और (फ़ीरोज़पुर में) पुनः सतलुज है। इसकी पूर्वी सीमा मोटे तौर पर ७६° पूर्वी देशान्तर रेखा मानी जा सकती है, जिसके पूर्व में पोवाधी पंजाबी बोली जाती है।

मालवा के दक्षिण में, फीरोज़पुर ज़िले के दक्षिणी भाग में और हिसार की सिरसा तहसील में रोही या जंगल पड़ता है। सतलुज और घग्घर की घाटियों के बीच का यह वह विशाल शुष्क क्षेत्र है जो हाल तक सिखों के लिए उस तरह से था जिस तरह से अमरीका और आस्ट्रेलिया के आदि उपनिवेशियों के लिए वहाँ के जंगल और झाड़-झंखाड़ थे।[1] मालवा की ओर से जंगल के भीतर कृषि बढ़ती जा रही है और जैसे जैसे ये क्षेत्र आबाद हो रहे हैं वैसे-वैसे ये मालवा का भाग समझे जा रहे हैं। इस प्रकार जंगल का क्षेत्र लगातार घटता जा रहा है। जंगल के दक्षिण की ओर बीकानेर का बागड़ी-भाषी देश पड़ता है। बागड़ी और पंजाबी की एक मिश्रित बोली जिसे मैं भट्टिआनी कहता हूँ, फ़ीरोज़पुर के धुर दक्षिण में बोली जाती है, और इसके अतिरिक्त

१. देखिए सिरसा बन्दोबस्त रिपोर्ट, १८७९-८३, पृ० ३०।

उस ज़िले में सतलुज के बायें किनारे के साथ-साथ उत्तर की ओर राठौरी नाम से फैली हुई है।

मालवा और जंगल क्षेत्रों की भाषा लगभग एक ही है। इसे मालवाई, या मालवा की भाषा, जंगली या जंगल की भाषा और जटकी कहा जाता है, क्योंकि इसके बोलने वालों में अधिकतर जट्ट हैं। अन्तिम नाम का प्रयोग बचाना चाहिए, ताकि एक नितान्त भिन्न जटकी से, जो लहँदा का एक रूप है, कोई भ्रान्ति न हो।

विविध नामों के अन्तर्गत मालवाई के बोलनेवालों की अनुमानित संख्या आगे दी जा रही है—

स्थान	बोलने वालों की संख्या
फ़ीरोज़पुर	७,०९,०००
लुधियाना	६,४०,०००
फरीदकोट	१,१०,०००
मलेरकोटला	७५,२९५
पटियाला	३,३४,५००
नाभा	२,०७,७७१
जींद	४४,०२१
कलसिया	९,४६७
योग	२१,३०,०५४

ये आँकड़े कुछ अधिक हैं, क्योंकि लुधियाना के आँकड़ों में पोवाध क्षेत्र के रहने वाले भी सम्मिलित हैं जिनका अनुमान अलग से नहीं किया गया। किन्तु अधिकता महत्त्वपूर्ण नहीं है।

व्याकरणों वाली आदर्श पंजाबी से मालवाई बहुत भिन्न नहीं है। वस्तुत: यदि हमें नमूनों से निर्णय करना हो तो भाषा का आदर्श रूप सर्वत्र प्रयुक्त होता है; सिवाय इसके कि जैसे-जैसे हम दक्षिण की ओर बढ़ते हैं मूर्धन्य ण और ळ लुप्त होते जाते हैं, और अनियमित रूप सदा नहीं लगते बल्कि विकल्प से व्यवहृत होते हैं।

मालवाई की प्रमुख विशेषता यह है कि जैसे-जैसे हम दक्षिण की ओर चलते हैं,

मूर्धन्य ण और ळ की जगह क्रमशः दन्त्य न और ल व्यवहृत होते हैं। इस प्रकार फीरोज़-पुर में **जाना** है, ज़ाणा नहीं; **हुन**, अब, है, हुण नहीं; **नाल**, साथ, है, नाळ नहीं; **कोल**, पास है, कोळ नहीं। ब और व वर्ण परस्पर परिवर्तनीय हैं। जैसे **बेख**, देख, के लिए **वेख**; **विच** या **बिच**। यह अंतिम शब्द मालवाई के एक और लक्षण का परिचय देता है, कि शब्द के अन्तिम व्यंजन का द्वित्व नहीं होता। जैसे **बिच**, में, विच्च नहीं, (किन्तु **विच्चों**, में से, जिसमें च अन्त्य नहीं है); **इक**, एक, इक्क नहीं। कभी-कभी मध्यग व्यंजनों का भी द्वित्व नहीं होता, जैसे **घलिआ** (घल्लिआ नहीं), भेजा; **जुती** (जुत्ती नहीं), जूता; **नचन्दी** (नच्चन्दी नहीं), नाचती, जो सब फीरोज़पुर के हैं। यह बात उल्लेखनीय है कि पूर्ववर्ती ह्रस्व स्वर के रहते इस प्रकार की द्वित्वहीनता पिशाच भाषाओं की विशिष्टता है। जब दो स्वरों के बीच में -इ- आये तो उसे, और जगहों की तरह, य करके लिखा जाता है। जैसे **आइआ** की जगह **आया**। किन्तु यह बहुत कुछ वर्तनी का विषय है। दो स्वरों के बीच का व बहुधा म में परिवर्तित हो जाता है। जैसे **होवांगा** की जगह **होमांगा**, हूँगा। ऐसा पोवाधी में भी होता है।

सर्वनामों में, **आपां** 'हम' के अर्थ में प्रयुक्त होता है। यह राजस्थानी से ग्रहण किया गया है, पर अब बदल गया है। राजस्थानी और गुजराती में **आपां** का अर्थ है 'हम और तुम'। इस प्रकार एक प्रचलित उदाहरण दें; यदि आप अपने रसोइया से कहें कि 'हम आठ बजे खाना खायेंगे', तो आप को **आपां** का प्रयोग नहीं करना चाहिए, वरना इसका अर्थ यह होगा कि आप रसोइया को भी खाने पर बुला रहे हैं। मालवाई में अर्थ का ऐसा कोई प्रतिबन्ध नहीं जान पड़ता। न्यूटन इसके प्रयोग का एक उदाहरण देते हैं—**मालवे देस-ते आपाँ आए-हाँ**, मालवा देश से हम आये हैं।

नाभा के नमूने में मध्यम पुरुष बहुवचन का **थोनूं**, तुमको, रूप उल्लेखनीय है। फ़ीरोज़पुर में मानक **आपणाँ** के स्थान पर **आवदा** का नियमित व्यवहार 'अपना' के अर्थ में होता है। ह्रस्व आदि अ और दन्त्य न वाला **अपना** भी सारे क्षेत्र में सामान्य रूप से प्रयुक्त होता है।

दूसरे सर्वनामों में स की जगह प्रायः त लगता है, जैसे (न्यूटन के उदाहरण) **उत** (उस के लिए) **वेले**, उस समय; **इत करके**, इस कारण से; **किते बल**, किसी ओर; **कित कम्म**, किस काम।

'कुछ' के लिए **कुछ** या **कुश** है। वास्तव में छ का उच्चारण अनेक शब्दों में बहुधा श होता जान पड़ता है।

क्रियाओं में मध्यम पुरुष एकवचन की अनुनासिकता प्रायः लुप्त हो जाती है और वह पश्चिमी हिन्दी का रूप ग्रहण करता है। जैसे हैं की जगह है, तू है।

खड़ा होना या संक्षिप्त रूप **खड़ोना** होता है। लहँदा में भी ऐसा ही है।

पश्चिमी हिन्दी से गृहीत अन्य प्रयोग निम्नलिखित हैं—

(१) यदा-कदा अकर्मक क्रिया के भूत काल के कर्ता के स्थान पर करण कारक का प्रयोग; जैसे (फ़ीरोज़पुर), **छोटे पुत्र ने गिआ**, छोटा लड़का गया।

(२) यदा-कदा सम्बन्ध कारक के लिए 'का' का प्रयोग; जैसे **सतां (दिनांदी** की जगह) **दिना-की मुहिलत**, सात दिन का विलम्ब; **गल-का अन्तरा**, बात की व्याख्या।

मालवाई के नमूने निम्नलिखित दिये जा रहे हैं—

(१) लुधियाना से प्राप्त अपव्ययी पुत्र की कथा के एक भाग का रूपान्तर।

(२) लुधियाना से प्राप्त दो ग्रामीणों का वार्तालाप।

(३) फ़ीरोज़पुर की तहसील मुक्तसर से उक्त कथा का दूसरा रूपान्तर।

(४) फ़ाज़िल्का तहसील, फ़ीरोज़पुर से एक लोककथा।

(५) नाभा रियासत के ज़िला फूल से एक लोककथा।

(६) थाना गोबिन्दगढ़, पटियाला से एक छोटा-सा परिच्छेद।

पहले पाँच नमूने गुरमुखी लिपि में हैं, और छठा फ़ारसी लिपि में।

इसलिए कि लुधियाना के नमूनों में कुछ स्थानीय विशेषताएँ हैं, उन्हें मैं पहले दे रहा हूँ और साथ ही उन बातों का विवरण भी जो इस क्षेत्र में विशेषतः लागू होती हैं।

लुधियाना में ग्रामीण लोग व्यंजन में अन्त होने वाले शब्दों में -उ जोड़ने के शौकीन होते हैं। उदाहरण, **चिरु**, चिर; **मालु**, सम्पत्ति; **घनु**, धन; **कहीकु**, कितना; **परु**, परन्तु; **कुछ** या **कुछु**; **बिआज** या **बिआजु**, ब्याज; **दुधु**, दूध। ऐसा पश्चिमी हिन्दी की ब्रजभाखा बोली में भी होता है।

वर्तनी में स्वरों के बीच में -इ- की जगह -य- लगता है; जैसे **होइआ**, हुआ, की जगह **होया**।

संज्ञाओं के रूपान्तर में **विच्च**, में, **चि** हो जाता है और सीधे संज्ञा के साथ परसर्ग के रूप में जुड़ जाता है। जैसे **मुलकचि**, देश में; **लुच्चपनेचि**, बदमाशी में; **खेतांचि**, खेतों में। इसी प्रकार **विचवों**, में से, **चों हो** जाता है। जैसे **उन्हांचों**, उनमें से।

प्रथम दो पुरुषवाची सर्वनाम तिर्यक् बहुवचन में प्रायः **हमा** और **तुमा** रूप ग्रहण करते हैं। जैसे, **हमानूं**, हमको, **तुमानूं**, तुमको। पड़ोस की पोवाधी में जहाँ पंजाबी

हिन्दुस्तानी में विलीन होती है, ये और अधिक व्यापक हैं। तुहाडा के लिए **थुआडा**, तुम्हारा, और ओहदा के लिए **ओधा**, उसका, में महाप्राण का विचित्र विपर्यय है। नाभा के नमूने में, **थोनूँ**, तुम को, से तुलना कीजिए। निजवाची सर्वनाम का सम्बन्ध कारक **अपणा** होता है, आपणा नहीं। यह भी पूर्वी रूप है।

देणा, देना, क्रिया का उत्तम पुरुष बहुवचन भविष्यत्काल **देमांगे**, हम देंगे, बनता है। यह एक और पूर्वी विशेषता है।

लुधियाना की ग्रामीण बोली के नमूनों में मैं अपव्ययी पुत्र की कथा के रूपान्तर का एक अंश और दो ग्रामीणों के बीच वार्तालाप दे रहा हूँ।

[सं० १४]

भारतीय आर्य परिवार **केन्द्रीय वर्ग**

पंजाबी

मालवाई बोली (जिला लुधियाना)

पहला उदाहरण

ਕਿਸੇ ਆਦਮੀਦੇ ਦੋ ਪੁੱਤ ਸੀ। ਉਨ੍ਹਾਂਚੋਂ ਛੋਟੇ ਪੁੱਤਨੇ ਬਾਪਨੂੰ ਆਖਿਆ ਪੇਓ ਮਾਲਦਾ ਜੇਹੜਾ ਹਿੱਸਾ ਮੈਨੂੰ ਆਉਂਦਾ ਹੈ ਵੰਡ ਦੇ। ਉਹਨੇ ਅਪਣੇ ਜੀਉਦਿਯਾਂ ਓਧਾ ਹਿੱਸਾ ਵੰਡ ਦਿੱਤਾ। ਥੋੜ੍ਹਾਈ ਚਿਰੁ ਹੋਯਾ ਸੀ ਛੋਟਾ ਸਭ ਕੁਛ ਕੱਠਾ ਕਰਕੇ ਇੱਕ ਦੂਜੇ ਦੇਸਨੂੰ ਚਲਿਯਾ ਗਿਆ। ਓਥੇ ਜਾਕੇ ਸਾਰਾ ਮਾਲੁ ਧਨੁ ਲੁਚਪਣੇਚਿ ਉਡਾ ਦਿੱਤਾ। ਜਦ ਸਾਰਾ ਮੁੱਕ ਚੁੱਕਿਆ ਉਸ ਮੁਲਕਵਿਚ ਕਾਲੁ ਪੈ ਗਿਆ। ਤਾਂ ਉਸ ਦੇਸਦੇ ਇੱਕ ਸਹਿਰੀ ਨਾਲ੍ਹ ਜਾ ਰਲਿਆ। ਓਹਨੇ ਉਸਨੂੰ ਅਪਣਿਆਂ ਖੇਤਾਂਵਿ ਸੂਰ ਚਾਰਣ ਘੱਲ ਦਿੱਤਾ। ਓਧਾ ਜੀ ਕੀਤਾ ਜੇੜ੍ਹੇ ਛਿਲਕੇ ਸੂਰ ਖਾਉਂਦੇ ਹਨ ਮੈਂ ਭੀ ਓਹ ਖਾਕੇ ਢਿੱਡ ਭਰ ਲਾਂ ਪਰ ਓਹਨੂੰ ਖਾਂਣਨੂੰ ਕਿਸੇਨੇ ਛਿਲਕੇ ਭੀ ਨਾਂ ਦਿੱਤੇ॥

(नागरी रूपान्तर)

किसे आदमीदे दो पुत्त सी। उन्हाँचों छोटे पुत्तने बापनूँ आखिआ, 'पेओ, मालदा जेहड़ा हिस्सा मैनूँ आउन्दा-है, वण्ड दे।' उहने अपणे जीउदियाँ ओधा हिस्सा वण्ड दित्ता। थोड़ा-ई चिर होया-सी छोटा सभ कुछ कट्ठा कर-के इक्क दूजे देसनूँ चलिया-गिआ। ओथे जा-के सारा मालु-धनु लुच्चपणेचि उडा-दित्ता। जद सारा मुक्क-चुकिक-

आ, उस मुल्कचि काल पै-गिआ। ताँ उस देसदे इक्क सहिरी नाल जा रलिआ। ओह्ने उसनूँ अपणिआँ खेताँचि सूर चारण घल्ल-दित्ता। ओह्दा जी कीता, जेड़े-छिलके सूर खाउन्दे-हन, मैं भी ओह खा-के ढिड्ड भर-लाँ; पर ओह्नूँ खाननूँ किसेने छिलके भी नाँ-दित्ते।

(अनुवाद)

किसी आदमी के दो पुत्र थे। उनमें से छोटे पुत्र ने बाप से कहा, 'पिता, सम्पत्ति का जो अंश मुझे आता है, बाँट दे।' उसने अपने जीते जी उसका भाग बाँट दिया। थोड़ी ही देर हुई थी, छोटा सब कुछ इकट्ठा करके एक दूसरे देश को चला गया। वहाँ जाकर सारा माल-धन बदमाशी में उड़ा दिया। जब सारा समाप्त हो चुका, उस देश में अकाल पड़ गया। तब उस देश के एक शहरी के साथ जा मिला। उसने उसको अपने खेतों में सूअर चराने भेज दिया। उसके जी में आया, 'जो छिलके सूअर खाते हैं, मैं भी वे खाकर पेट भर लूँ'; पर उसे खाने को किसी ने छिलके भी न दिये।

[सं० १५]

भारतीय आर्य परिवार

केन्द्रीय वर्ग

पंजाबी

मालवाई बोली

(जिला लुधियाना)

दूसरा उदाहरण

ਬੂਟਾ ਸਿੰਘ-ਕਿਉਂ ਭਾਈ ਫਸਲ ਕਹੀਕੁ ਹੋਈ ਹੈ॥

ਨਥਾ ਸਿੰਘ-ਭਾਈ ਕਾਹਦੀ ਫਸਲ ਹੈ ਮੰਦਵਾੜੇਨੇ ਮਾਰ ਲਏ। ਹਾੜੀਦੀ ਬਿਜਾਈ ਤਾਂ ਚੰਗੀ ਹੋ ਗਈ ਸੀ। ਪਰੁ ਪਿੱਛੋਂ ਬਰਖਾ ਨਾ ਹੋਈ। ਕਣਕ ਰੁਲਿ ਗਈ। ਛੋਲਿਆਂਨੂੰ ਬੁੱਲਾ ਮਾਰ ਗਿਆ। ਸਰੋਂਨੂੰ ਸੁੰਡੀ ਖਾ ਗਈ॥

ਬੂਟਾ ਸਿੰਘ-ਥੁਆਡੇ ਕੱਸੀ ਨਹਾਂ ਲਗਦੀ॥

ਨਥਾ ਸਿੰਘ-ਮੇਰੇ ਘੁਮਾਕਨੂੰ ਕੱਸੀ ਲਗਦੀ ਸੀ। ਬੇਲ੍ਹੇ ਸਿਰ ਜ਼ਿਲੇਦਾਰਨੇ ਪਾਣੀ ਨਾਂ ਦਿੱਤਾ। ਓਹ ਬੀ ਪਾਣੀ ਬਿਨਾਂ ਹੌਲ਼ੀ ਹੋਈ॥

ਬੂਟਾ ਸਿੰਘ-ਹੁਣ ਕੀ ਹਾਲ ਹੋਊ॥

ਨਥਾ ਸਿੰਘ-ਕੁਛ ਸਰਕਾਰਦਾ ਕਰਾਇਆ ਦੇਮਾਂਗੇ ਕੁਛ ਟੱਬਰ ਪਾਲ੍ਹਾਂਗੇ॥

ਬੂਟਾ ਸਿੰਘ-ਕੁਛ ਕਿਸੀ ਮਹਾਜਨਦਾ ਦੇਣਾ ਤਾਂ ਨਹੀਂ॥

ਨਥਾ ਸਿੰਘ-ਧੀ ਦੇ ਬਿਆਹਨੂੰ ਦਸ ਕੌਡਾਂ ਲਈਆਂ ਸੀ। ਉੱਤੋਂ ਬਿਆਜੁ ਪੈ ਗਿਆ ਕੁਛ ਫਸਲ ਨਾ ਲੱਗੀ। ਸਾਹਦੀ ਪੰਡ ਭਾਰੀ ਹੋ ਗਈ। ਹੁਣ ਕੁਛ ਦੇਣਨੂੰ ਨਹੀਂ। ਬਿਆਜ ਨਾਲ੍ਹ ਲੂਆ ਦੇਮਾਂਗੇ॥

ਬੂਟਾ ਸਿੰਘ-ਖੁੱਲਾ ਦੇਣਾ ਹੈ ਕਿ ਭੂਏਂ ਗੈਹਣੇ ਹੈ॥

ਨਥਾ ਸਿੰਘ-ਚਾਰਕ ਘੁਮਾਂ ਗੈਹਣੇ ਹੈ। ਖੁੱਲਾ ਬਿਆਜੁ ਬੀ ਹੈ, ਪਰੁ ਹੁਣ ਮੰਦਵਾੜੇ ਕਰਕੇ ਕੋਈ ਖੁੱਲਾ ਨਹੀਂ ਦਿੰਦਾ॥

ਬੂਟਾ ਸਿੰਘ-ਮੈਂ ਮੈਹ ਖਰੀਦਣੀ ਹੈ। ਥੁਆਡੇ ਪਿੰਡ ਕਿਸੇ ਕੋਲ੍ਹੇ ਹੈ॥

ਨਥਾ ਸਿੰਘ-ਸੂਣ ਵਾਲੀ ਮੈਹ ਇੱਕ ਜੱਟ ਕੋਲ੍ਹ ਹੈ, ਪਰੁ ਰੁਪੈਈਆ ਬੌਹਤਾ ਮੰਗਦਾ ਹੈ॥

ਬੂਟਾ ਸਿੰਘ-ਦੁਧੁ ਘਿਉ ਕਿੰਨਾਕੁ ਹੈ। ਸੂਏ ਕੌਥੇ ਹੈ॥

ਨਥਾ ਸਿੰਘ–ਤੀਜੇ ਸੂਏ ਸੂਣਾ ਹੈ। ਦੋ ਸੇਰ ਮਖਣੀ ਹੈ ਬੀਹ ਵਾਈ ਸੇਰ ਦੁਧੁ ਹੈ। ਸੱਤਰ ਰੁਪੈਈਏ ਓਹਨੂੰ ਦੇ ਰਹੇ, ਪਰੁ ਓਹੁ ਅੱਸੀ ਮੰਗਦਾ ਹੈ॥

ਬੂਟਾ ਸਿੰਘ–ਐਨਾ ਮੁੱਲੁ ਨਹੀਂ ਲਾਉਂਦੇ। ਕੋਈ ਚਾਲੀ ਪੰਜਾਹ ਵਾਲੀਦੀ ਲੋੜ ਹੈ॥

ਨਥਾ ਸਿੰਘ–ਕਿਤੇ ਹੋਰ ਦੇਖ ਲਓ॥

(नागरी रूपान्तर)

बूटा सिंघ—किओं, भाई, फ़सल कट्टीकु होई है?

नथा सिंघ—भाई, काहदी फसल है? मन्दवाड़े ने मार लए। हाड़ीदी बिजाई ताँ चङ्गी हो-गई-सी, परु पिच्छों बरखा ना होई; कणक हुलि-गई, छोलिआँनूँ बुल्ला मार-गिआ। सरोंनूँ सुण्डी खा-गई।

बूटा सिंघ—थुआडे कस्सी नहीं लगदी।

नथा सिंघ—मेरे घुमाँ-क-नूँ कस्सी लगदी सी; वेले-सिर गुदावरने पाणी ना दित्ता; ओह बी पाणी बिनां हौल़ी होई।

बूटा सिंघ—हुण की हाल होऊ।

नथा सिंघ—कुछु सरकारदा कराइआ देमांगे, कुछु टब्बर पाल़ांगे।

बूटा सिंघ—कुछु किसी महाजनदा देणा तां नहीं?

नथा सिंघ—मुण्डेदे बिआहनूँ दस कौडाँ लईआँ-सी, उत्तों बिआजु पैगिआ; कुछु फसल ना लग्गी। साहदी पण्ड भारी हो-गई। हुण कुछ देणनूँ नहीं। बिआज नाल़ लुआ-देमांगे।

बूटा सिंघ—खुल्ला देणा है, कि भुएँ गैहणे है?

नथा सिंघ—चार-क घुमाँ गैहणे है, खुल्ला बिआजु बी है, परु हुण मन्दवाड़े कर-के कोई खुल्ला नहीं दिन्दा।

बूटा सिंघ—मैं मैह खरीदणी है, थुआडे पिण्ड किसे कोल़े है?

नथा सिंघ—सूण वाली मैह इक्क जट्ट कोल़ है, परु रुपैइआ बौहता मंगदा है।

बूटा सिंघ—दुधु घिउ किन्ना-कु है? सूए कौथे है?

नथा सिंघ—तीजे सूए सूणा-है। दो सेर मखणी है, बीह वाई सेर दुधु है। सत्तर रुपैइए ओहनूँ दे-रहे, परु ओहु अस्सी मंगदा है।

बूटा सिंघ—ऐंना मुल्लु नहीं लाउंदे। कोई चाली पंजाह-वालीदी लोड़ है।

नथा सिंघ—किते होर देख लओ।

(अनुवाद)

बूटासिंह—क्यों, भाई, फसल कैसी हुई है?

नथासिंह—भाई, किस की फसल है? मन्देपन ने मार दिया है। असाढ़ी बुवाई तो अच्छी हो गयी थी पर पीछे वर्षा न हुई; गेहूँ दग्ध हो गयी, चनों को बर्फीली हवा ने मार दिया। सरसों को घुन खा गया।

बूटासिंह—आपके यहाँ नहर नहीं पड़ती?

नथासिंह—मेरे यहाँ घुमाँव[1]-भर (जमीन) को नहर पड़ती है; समय पर गरदावर (कानूनगो) ने पानी नहीं दिया, वह भी पानी बिना हलकी पड़ गयी।

बूटासिंह—अब क्या होगा?

नथासिंह—कुछ सरकार का कर देंगे, कुछ (में) कुटुम्ब पालेंगे।

बूटासिंह—कुछ किसी महाजन का देना तो नहीं?

नथासिंह—लड़के के विवाह के लिए दस कौड़ियाँ ली थीं। ऊपर से ब्याज पड़ गया; कुछ फसल न हुई। सेठ का बोझ भारी हो गया। अब कुछ देने को नहीं है। (बाद में) ब्याज के साथ दे देंगे।

बूटासिंह—खुला देना है, या भूमि गिरवी है?

नथासिंह—चार-एक घुमाँव गिरवी है, खुला ब्याज भी है, पर अब मन्देपन के कारण कोई खुला (ऋण) नहीं देता।

बूटासिंह—मुझे भैंस खरीदनी है, (क्या) तुम्हारे गाँव में किसी के पास है?

नथासिंह—ब्याने वाली भैंस एक जाट के पास है, पर रुपया बहुत माँगता है।

बूटासिंह—दूध घी कितना-कुछ है? कितनी बार की ब्याई है?

नथासिंह—तीसरी बार ब्याने वाली है। दो सेर मक्खन है; बीस बाईस सेर दूध है। सत्तर रुपये उसे देता रहा, पर वह अस्सी माँगता है।

बूटासिंह—इतना मूल्य (हम) नहीं लगा सकते। कोई चालीस-पचास वाली की आवश्यकता है।

नथासिंह—कहीं और देख लो।

लुधियाना के बाहर बोली जाने वाली मालवाई की विशेषताएँ बहुत कम रह जाती हैं, जैसा कि निम्नलिखित नमूने से स्पष्ट हो जायगा।

१. ३० वर्ग गज का एक मरला और १६ मरले का एक घुमाँव (खेत)

[सं० १६]

भारतीय आर्य परिवार केन्द्रीय वर्ग

पंजाबी

मालवाई बोली (ज़िला फ़ीरोज़पुर, तहसील मुक्तसर)

ਇਕ ਆਦਮੀਦੇ ਦੋ ਪੁਤ੍ਰ ਸੀਗੇ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਵਿਚੋਂ ਛੋਟੇ ਪੁਤ੍ਰਨੇ ਪਿਓਨੂੰ ਆਖਿਆ ਜੋ ਬਾਪੂ ਜੇਹੜਾ ਹਿੱਸਾ ਮਾਲਦਾ ਮੈਂਨੂੰ ਆਂਵਦਾ ਹੈ, ਓਹ ਮੈਂਨੂੰ ਦੇ ਦੇ। ਤਾਂ ਓਹਨੇ ਮਾਲ ਉਨ੍ਹਾਂਨੂੰ ਵੰਡ ਦਿੱਤਾ। ਥੋੜ੍ਹੇ ਦਿਨਾਂ ਪਿਛੋਂ ਛੋਟੇ ਪੁਤ੍ਰਨੇ ਸਬ ਕੁਛ ਕੱਠਾ ਕਰਕੇ ਇਕ ਦੂਰ ਵਲਾਯਤਨੂੰ ਉੱਠ ਗਿਆ। ਤੇ ਓਥੇ ਆਵਦਾ ਮਾਲ ਭੈੜੇ ਲਛਨਾਂ ਵਿਚ ਗਵਾਯਾ। ਜਦਾਂ ਸਬ ਕੁਛ ਲਗ ਗਿਆ ਤਾਂ ਓਥੋਂਦੇ ਇਕ ਸਰਦਾਰ ਕੋਲ ਗਿਆ। ਓਸਨੇ ਓਹਨੂੰ ਆਵਦੀ ਪੈਲੀ ਵਿਚ ਸੂਰ ਚ਼ਰਾਵਨ ਘਲਿਆ। ਤੇ ਓਹ ਤਰਸਦਾ ਸੀ ਜੋ ਉਨ੍ਹਾਂ ਛਿੱਲਾਂ-ਨਾਲ ਜੋ ਸੂਰ ਖਾਂਦੇ ਸਨ ਆਵਦਾ ਢਿਡ ਭਰੇ। ਓਹਨੂੰ ਕੋਈ ਖਾਨਨੂੰ ਨਹੀਂ ਦੇਂਦਾ ਸੀ। ਤਦ ਓਹਨੂੰ ਸੁਰਤ ਆਈ ਤੇ ਆਖਨ ਲੱਗਾ। ਜੋ ਮੇਰੇ ਪਿਓਦੇ ਸੀਰੀਆਂਨੂੰ ਵੀ ਰੋਟੀਦੀ ਪਰਵਾਹ ਨਹੀਂ, ਤੇ ਮੈਂ ਭੁੱਖਾ ਮਰਦਾ ਹਾਂ। ਮੈਂ ਉੱਠਕੇ ਆਵਦੇ ਪਿਓ ਕੋਲ ਜਾਵਾਂਗਾ ਤੇ ਓਹਨੂੰ ਆਖਾਂਗਾ ਜੋ ਪਿਓ ਮੈਂ ਤੇਰਾ ਤੇ ਰਬਦਾ ਗੁਨਾਹੀ ਹਾਂ। ਮੈਂਨੂੰ ਹੁਨ ਸਜਦਾ ਨਹਾਂ ਜੋ ਤੇਰਾ ਪੁਤ ਸਦਾਵਾਂ। ਮੈਂਨੂੰ ਆਵਦੇ ਸੀਰੀਆਂ ਵਿਚ ਰਖ ਲੈ। ਫੇਰ ਓਹ ਟੁਰਕੇ ਆਵਦੇ ਪਿਓ ਕੋਲ ਜਾ ਨਿਕਲਯਾ। ਤੇ ਓਹ ਅਜੇ ਦੂਰ ਹੀ ਸੀ ਜੋ ਓਹਦੇ ਪਿਓਨੂੰ ਓਸ ਤੇ ਤਰਸ ਆਯਾ, ਤੇ ਭਜਕੇ ਓਹਨੂੰ ਗਲ ਲਾ ਲਿਆ ਤੇ ਓਹਨੂੰ ਚੁੰਮਯਾ। ਪੁਤ੍ਰਨੇ ਪਿਓਨੂੰ ਆਖਿਆ ਜੋ ਬਾਪੂ ਮੈਂ ਰਬਦਾ ਤੇ ਤੇਰਾ ਗੁਨਾਹੀ ਹਾਂ। ਮੈਂਨੂੰ ਹੁਨ ਲੈਕੀ ਨਹੀਂ ਜੋ ਹੁਨ ਤੇਰਾ ਪੁਤ ਸਦਾਵਾਂ। ਓਹਦੇ ਪਿਓਨੇ ਆਵਦਿਆਂ ਸੀਰੀਆਂਨੂੰ ਆਖਿਆ ਭਈ ਚੰਗੇ ਤੋਂ ਚੰਗੇ ਲੀੜੇ ਕਢ ਲਿਆਓ ਤੇ ਏਹਨੂੰ ਪਨ੍ਹਾਓ ਤ਼ੇ ਹੱਥ ਵਿਚ ਮੁੰਦਰੀ ਤੇ ਪੈਰਾਂ ਵਿਚ ਜੁਤੀ ਪਵਾਓ। ਅਸੀਂ ਖਾਈਏ ਤੇ ਮੌਜਾਂ ਕਰੀਏ ਜੋ ਏਹ ਮੇਰਾ ਪੁਤ੍ਰ ਮਰ ਗਿਆ ਸੀ ਤੇ ਹੁਨ ਜੀਆ ਹੈ ਗਵਾਚ ਗਿਆ ਸੀ ਤੇ ਹੁਨ ਲਭਯਾ ਹੈ। ਫੇਰ ਓਹ ਖੁਸੀ ਮਨਾਵਨ ਲੱਗੇ॥

ਤੇ ਓਹਦਾ ਵੱਡਾ ਪੁਤ੍ਰ ਖੇਤ ਸੀ। ਜੋ ਘਰਦੇ ਨੇੜੇ ਆਯਾ ਤਾਂ ਗਾਵਨ ਤੇ ਨਚਨ-ਦੀ ਅਵਾਜ ਸੁਨੀ। ਤੇ ਇਕ ਸੀਰੀਨੂੰ ਬੁਲਾਕੇ ਪੁਛਿਆ ਜੋ ਏਹ ਕੀ ਹੈ। ਓਸਨੇ ਓਹਨੂੰ ਆਖਿਆ ਜੋ ਤੇਰਾ ਭਰਾ ਆਯਾ ਹੈ, ਤੇ ਤੇਰੇ ਪਿਓਨੇ ਰੋਟੀ ਕੀਤੀ ਹੈ ਜੋ ਭਲਾ ਚੰਗਾ ਘਰ ਆਯਾ ਹੈ। ਓਹਦੇ ਜੀ ਵਿਚ ਗੁੱਸਾ ਆਯਾ ਜੋ ਘਰ ਨ ਵੜਾਂ। ਫੇਰ ਓਹਦੇ ਪਿਓਨੇ ਆਕੇ

ਮਨਾਯਾ। ਉਸਨੇ ਆਵਦੇ ਪਿਓਨੂੰ ਆਖਿਆ ਜੋ ਵੇਖ ਐਨੇਂ ਵਰਹੇ ਮੈਂ ਤੇਰੀ ਟਹਲ ਕੀਤੀ ਤੇ ਕਦੇ ਤੇਰਾ ਮੋੜ ਨਾ ਕੀਤਾ ਪਰ ਤੂੰ ਕਦੀ ਇਕ ਬਕਰੀਦਾ ਪਠੌਰਾ ਵੀ ਮੈਂਨੂੰ ਨਾ ਦਿੱਤਾ ਜੋ ਕਦੀ ਆਵਦੇ ਬੇਲੀਆਂ ਵਿੱਚ ਬਹਕੇ ਖੁਸੀ ਮਨਾਵਾ। ਜਦ ਤੇਰਾ ਏਹ ਪੁਤ੍ਰ ਆਯਾ ਜਿਨਹੇ ਤੇਰਾ ਮਾਲ ਕੰਜਰਾਂ ਵਿਚ ਉੜਾਯਾ ਸੀ ਤਾ ਤੂੰ ਵੱਡੀ ਰੋਟੀ ਕੀਤੀ। ਤਦ ਉਸਦੇ ਪਿਓਨੇ ਓਹਨੂੰ ਆਖਿਆ ਜੋ ਪੁਤ੍ਰ ਤੂੰ ਤਾਂ ਸਦਾ ਮੇਰੇ ਕੋਲ ਹੈਂ। ਜੋ ਕੁਝ ਮੇਰਾ ਹੈ ਸੋ ਤੇਰਾ ਹੈ। ਫੇਰ ਖੁਸੀ ਮਨਾਵਣਾ ਤੇ ਖੁਸੀ ਹੋਵਣਾਂ ਚੰਗੀ ਗਲ ਸੀ ਜੋ ਏਹ ਤੇਰਾ ਭਾਈ ਮਰ ਗਿਆ ਸੀ ਤੇ ਮੁੜਕੇ ਜੀਂਮਿਆ ਹੈ ਤੇ ਗੁਵਾਚ ਗਿਆ ਸੀ ਤੇ ਹੁਣ ਹੱਥ ਆਯਾ ਹੈ॥

(नागरी रूपान्तर)

इक आदमीदे दो पुत्र सीगे। उन्हाँ विचों छोटे पुत्रने पिओनूँ आखिआ जो 'बापू, जेहड़ा हिसा मालदा मैंनूँ आँवदा-है, ओह मैंनूँ दे-दे।' ताँ ओहने माल उन्हाँनूँ वण्ड दित्ता। थोड़े दिनां पिछों छोटे पुत्रने सब कुछ कट्ठा कर-के, इक दूर वलायतनूँ उट्ठ गिआ, ते ओथे आवदा माल भैड़े लछनां विच गवायां। जदाँ सब कुछ लग-गिआ, ताँ ओथोंदे इक सरदार कोल गिआ। ओसने ओहनूँ आवदी पैली विच सूर चरावन घलिआ। ते ओह तरसदा सी जो उन्हाँ छिल्लां-नाल जो सूर खान्दे-सन, आवदा ढिड भरे। ओहनूं कोई खाननूँ नहीं देन्दा-सी। तद ओहनूँ सुरत आई, ते आखन लग्गा जो, मेरे पिओदे सीराआँनूं वी रोटी दी परवाह नाहीं, ते मैं भुक्खा मरदा-हाँ। मैं उट्ठ-के आवदे पिओ कोल जावांगा, ते ओहनूं आखांगा जो, "पिओ, मैं तेरा ते रबदा गुनाही हाँ। मैंनूं हुन सजदा नहीं जो तेरा पुत सदावाँ। मैंनूं आवदे सीरीआँ विच रख-लै।" फेर ओह टुर-के आवदे पिओ कोल जा निकल्या। ते ओह अजे दूर-ही सी, जो ओहदे पिओनूं ओस-ते तर्स आया, ते भज-के ओहनूँ गल ला-लिआ, ते ओहनूं चुम्या। पुत्रने पिओनूँ आखिआ जो, "बापू, मैं रबदा ते तेरा गुनाही हाँ, मैंनूँ हुन लैकी नहीं जो हुन तेरा पुत सदावाँ।" ओहदे पिओने आवदिआँ सीरीआँनूं आखिआ, "भई, चंगे-तों चंगे लीड़े कढ लिआओ, ते एहनूं पन्हाओ; ते हत्थ विच मुंदरी, ते पैराँ विच जुती पवाओ; असी खाइए ते मौजाँ करिए; जो एह मेरा पुत्र मर-गिआ-सी, ते हुन जीआ है; गवाच गिया-सी, ते हुन लभ्या-है।" फेर ओह खुसी मनावन लग्गे।

ते ओहदा वड्डा पुत्र खेत सी। जो घरदे नेड़े आया, ताँ गावन ते नचनदी अवाज

सुनी। ते इक सीरीनूँ बुला-के पुछिआ जो, 'एह् की है ?' ओसने ओह्नूँ आखिआ जो, 'तेरा भरा आया-है। ते तेरे पिओने रोटी कीती-है। जो भला-चङ्गा घर आया-है।' ओह्दे जी विच गुस्सा आया जो, 'घर न वडाँ।' फेर ओह्दे पिओने आ-के मनाया। उसने आवदे पिओनूं आखिआ जो, 'देख, ऐनें वरे मैं तेरी टहल कीती, ते कदे तेरा मोड़ न कीता; पर तूं कदी इक बकरीदा पठोरा बी मैनूँ ना दित्ता, जो कदी आवदे बीलीआँ विच बह-के खुसी मनावाँ। जद तेरा एह् पुत्र आया जिन्हें तेरा माल कन्जरां विच उड़ाया-सी, ताँ तूँ वड्डी रोटी कीती।' तद ओसदे पिओने ओह्नूँ आखिआ जो, 'पुत्र तूँ ताँ सदा मेरे कोल है। जो कुश मेरा है, सो तेरा है। फेर खुसी मनावना ते खुसी होवना चंगी गल सी; जो एह् तेरा भाई मर-गिआ-सी, ते मुड़-के जम्मिआ-है; ते गुवाच गिआ सी, ते हुन हत्थ आया-है।'

(अनुवाद)

एक आदमी के दो बेटे थे। उनमें से छोटे बेटे ने बाप से कहा कि 'बापू, जो अंश संपत्ति का मुझे आता है, वह मुझे दे दे।' तब उसने संपत्ति उनको बाँट दी। थोड़े दिन पीछे छोटा बेटा सब कुछ इकट्ठा करके एक दूर देश को उठ गया, और वहाँ अपनी सम्पत्ति बुरे लच्छनों में खो दी। जब सब कुछ चुक गया, तो वहाँ के एक सरदार के पास गया। उसने उसे अपने खेत में सूअर चराने भेजा। और वह तरसता था कि उन छिलकों से जो सूअर खाते थे, अपना पेट भरे। उसे कोई खाने को नहीं देता था। तब उसको होश आया, और कहने लगा कि 'मेरे बाप के मजदूरों को भी रोटी की परवाह नहीं, और मैं भूखा मर रहा हूँ। मैं उठके अपने बाप के पास जाऊँगा, और उसे कहूँगा कि बाप, मैं तेरा और परमेश्वर का पापी हूँ। मझे अब सजता नहीं कि तेरा बेटा कहलाऊँ। मुझे अपने मजदूरों में रख ले।' फिर वह चलकर अपने बाप के पास जा निकला। और वह अभी दूर ही था कि उसके बाप को उस पर दया आयी, और दौड़कर उसको गले लगा लिया और उसे चूमा। बेटे ने बाप से कहा कि 'बापू, मैं भगवान् का और तेरा पापी हूँ, मैं अब (इस) लायक नहीं कि अब तेरा बेटा कहलाऊँ।' उसके बाप ने अपने मजदूरों से कहा, 'भाई, अच्छे-से-अच्छे कपड़े निकाल लाओ, और इसे पहनाओ; और हाथ में अँगूठी, और पाँव में जूता पहनाओ। हम खायें और मौज करें, कि यह मेरा बेटा मर गया था, और अब जिया है; खो गया था, और अब मिला है।' फिर वे खुशी मनाने लगे।

और उसका बड़ा लड़का खेत में था। जब घर के निकट आया, तो गाने और

नाचने की आवाज सुनी और एक मजदूर को बुलाकर पूछा कि 'यह क्या है?' उसने उसे कहा कि 'तेरा भाई आया है और तेरे बाप ने भोज किया है कि भला-चंगा घर आया है।' उसके जी में क्रोध आया कि 'घर के भीतर न जाऊँ।' फिर उसके बाप ने आकर मनाया। उसने अपने बाप को कहा कि 'देख, इतने बरस मैंने तेरी सेवा की, और कभी तेरा कहा नहीं मोड़ा; पर तूने कभी एक बकरी का मेमना भी मुझे नहीं दिया कि कभी अपने साथियों में बैठकर खुशी मनाऊँ। जब तेरा यह बेटा आया, जिसने तेरी सम्पत्ति बदमाशों में उड़ा दी थी, तब तूने बड़ा भोज किया।' तब उसके बाप ने उसे कहा कि 'बेटा, तू तो सदा मेरे साथ है। जो कुछ मेरा है, सो तेरा है। फिर खुशी मनाना और खुश होना अच्छी बात थी; क्योंकि यह तेरा भाई मर गया था और (इसका) पुनर्जन्म हुआ है; और खो गया था और अब हाथ आया है।'

[सं० १७]

भारतीय आर्य परिवार केन्द्रीय वर्ग

पंजाबी

मालवाई बोली (ज़िला फ़ीरोज़पुर, तह० फ़ाजिल्का)

ਕੋਈ ਰਾਜਾ ਸਕਾਰਨੂੰ ਟੁਰਿਆ ਜਾਂਦਾ ਸੀ। ਰਾਹ ਬਿਚ ਇਕ ਜਟ ਟਿੱਬੇ ਉੱਤੇ ਹਲ ਬਾਹੌਂਦਾ ਸੀ। ਤੇ ਉਹਦੀ ਉਮਰ ਸਤਰ ਅਸੀ ਬਰੇਹਦੀ ਸੀ। ਰਾਜਾ ਉਸਨੂੰ ਵੇਖਕੇ ਬੋਲਿਆ ਜਟ ਤੂੰ ਬੜਾ ਉੱਕਾ। ਜਟ ਬੋਲਿਆ ਕੇ ਰਾਜਾ ਮੈਂ ਨਹੀਂ ਉੱਕਾ। ਇਕ ਚਲਾਇਆ ਤੀਰ ਇਕ ਚਲਾਇਆ ਤੁੱਕਾ। ਰਾਜਾ ਸੁਨਕੇ ਆਪਨੇ ਰਾਹ ਲੱਗਾ ਤੇ ਜਦੋਂ ਆਪਨੇ ਘਰ ਪੁੰਹਚ ਪਿਆ ਤੇ ਦਰਵਾਰ ਲਾਂਇਆ ਆਪਨੇ ਵਜੀਰ ਕੋਲੋਂ ਇਸ ਬਾਤਦਾ ਅੰਤਰਾ ਪੁਛਿਆ। ਵਜੀਰ ਸੁਨਕੇ ਸੋਚਾਂ ਬਿਚ ਪੈ ਗਿਆ। ਜਦੋਂ ਕੋਈ ਜਵਾਬ ਉਹਦੀ ਸਮਝ ਬਿਚ ਨਾ ਆਇਆ ਤਾਂ ਸਤਾਂ ਦਿਨਾਂ ਕੀ ਮੁਹਿਲਤ ਮੰਗ ਲਈ, ਤੇ ਜਿਸ ਪਾਸੇ ਰਾਜਾ ਓਸ ਦਿਨ ਗਿਆ ਸੀ ਪੁਛ ਪੁਛਾ ਕੇ ਓਸੇ ਪਾਸੇ ਵਜੀਰ ਬੀ ਟੁਰ ਪਿਆ। ਚਲਦੇ ਚਲਦੇ ਰਾਹਿ ਬਿਚ ਓਹ ਜਟ ਓਸੇ ਤਰਾ ਹਲਵਾਹੀ ਕਰਦਾ ਮਿਲਿਆ। ਵਜੀਰ ਨੇ ਸੋਚ ਕੀਤੀ ਬਈ ਹੋਵੇ ਨਾ ਤਾਂ ਏਹ ਜਟ ਹੈ ਜੀਹਦੀ ਗਲ ਰਾਜੇਨੇ ਮੇਰੇ ਕੋਲੋਂ ਪੁਛੀ ਹੈ। ਤੇ ਵਜੀਰ ਓਥੇ ਖੜੋ ਗਿਆ। ਜਟ ਕੋਲੋਂ ਵਜੀਰਨੇ ਰਾਜੇਦੇ ਆਨਦਾ ਹਾਲ ਪੁਛਿਆ। ਜਟਨੇ ਆਖਿਆ ਰਾਜਾ ਜਰੂਰ ਆਇਆ ਥੀ। ਗਲ ਬੀ ਮੇਰੇ ਨਾਲ ਏਹੋ ਕੀਤੀ ਸੀ। ਵਜੀਰਨੇ ਜਟ ਕੋਲੋਂ ਏਸ ਗਲਕਾ ਅੰਤਰਾ ਪੁਛਿਆ। ਜਟ ਕਹਿਨ ਲੱਗਾ ਅੰਤਰਾ ਤਾਂ ਦੱਸੂੰਗਾ ਜੇ ਤੂੰ ਮੇਰੀ ਪਾਨੀ ਪੀਨਵਾਲੀ ਝਾਰੀ ਤੇ ਹੁੱਕਾ ਰੁਪੀਆਂ ਕਾ ਭਰ ਦੈ। ਵਜੀਰਨੇ ਹੁੱਕਾ ਤੇ ਝਾਰੀ ਰੁਪੀਆਂ ਨਾਲ ਭਰ ਦਿੱਤੀ। ਜਟਨੇ ਅੰਤਰਾ ਮਨ ਭਾਉਂਦਾ ਵਜੀਰਨੂੰ ਆਖ ਸੁਨਾਇਆ। ਵਜੀਰਨੇ ਜਾਕੇ ਰਾਜੇਨੂੰ ਸੁਨਾਇਆ ਤੇ ਅੰਤਰਾ ਠੀਕ ਠੀਕ ਰਾਜੇਦੇ ਮਨ ਲੱਗਾ। ਪਰ ਰਾਜੇਨੇ ਸੋਚ ਕੀਤੀ ਕੇ ਜਟ ਬਿਨਾ ਏਸਦਾ ਅੰਤਰਾ ਕਿਸੇਨੂੰ ਮਲੂਮ ਨਹੀਂ ਸੀ। ਵਜੀਰਨੇ ਓਸੇ ਕੋਲੋਂ ਪੁਛ ਕੇ ਦੱਸਿਆ ਹੈ। ਏਹ ਸੋਚ ਕੇ ਰਾਜਾ ਜਟ ਕੋਲੋਂ ਜਾਕੇ ਕਹਿਨ ਲੱਗਾ ਜਟ ਤੂੰ ਬੜਾ ਉੱਕਾ। ਜਟ ਬੋਲਿਆ ਰਾਜਾ ਮੈਂ ਨਹੀਂ ਉੱਕਾ। ਇਕ ਭਰਾਈ ਝਾਰੀ ਤੇ ਇਕ ਭਰਾਇਆ ਹੁੱਕਾ। ਰਾਜਾ ਸੁਨਕੇ ਰਾਜੀ ਹੂਆ। ਇਸ ਅਕਲਦਾ ਇਨਾਮ ਦੇ ਕੇ ਘਰਨੂੰ ਮੁੜ ਗਿਆ॥

(नागरी रूपान्तर)

कोई राजा सकारनूं टुरिआ जांदा-सी। राह्-बिच इक जट टिब्बे-उत्ते हल बाहोंदा सी, ते उह्दी उमर सत्तर असीं बरेदी सी। राजा उसनूं वेख-के बोलिआ, 'जट, तूं बड़ा उक्का।' जट बोलिया के, 'राजा, मैं नहीं उक्का। इक चलाइआ तीर, इक चलाइआ तुक्का।' राजा सुन-के आपने राह् लग्गा, ते जदों आपने घर पहुँच-पिआ, ते दरबार लाइआ, आपने वजीर कोलों इस बात दा अन्तरा पुछिआ। वजीर सुन-के सोचाँ-बिच पै-गिआ। जदों कोई जवाब उह्दी समझ-बिच ना आइआ, ताँ सतां दिनाँ-की मुहिलत मङ्ग-लइ, ते जिस पासे राजा ओस दिन गिआ-सी, पुछ-पुछा-के ओसे पासे वजीर बी टुर-पिआ। चलदे-चलदे राहि-बिच ओह् जट ओसे तरा हल-वाही करदा मिलिया। वजीरने सोच कीती, 'बई, होवे ना ताँ एहो जट है जीह्दी गल राजेने मेरे कोलो पुछी-है।' ते वजीर ओथे खड़ो गिआ। जट कोलो वजीरने राजेदे आनदा हाल पुछिआ। जटने आखिआ, 'राजा जरूर आइआ सी, गल बी मेरे नाल एहो कीती-सी।' वजीर ने जट कोलो एस गल-का अन्तरा पुछिआ। जट कहिन लग्गा, 'अन्तरा ताँ दस्सूँगा जे तूं मेरी पानी पीन-वाली झारी ते हुक्का रुपीआँ-का भर-दै।' वजीर ने हुक्का ते झारी रुपीआँ नाल भर-दित्ती। जटने अन्तरा मन-भाओंदा वजीरनूं आख सुनाइआ। वजीर ने जा-के राजेनूं सुनाइआ, ते अन्तरा ठीक-ठीक राजेदे मन लग्गा। पर राजेने सोच कीती के, 'जट बिना एसदा अन्तरा किसेनूं मलूम नहीं सी। वजीर ने ओसे कोलो पुछ-के दस्सिआ-है।' एह् सोच-के राजा जट-कोलो जा-के कहिन लग्गा, 'जट, तूं बड़ा उक्का।' जट बोलिआ, 'राजा, मैं नहीं उक्का। इक भराई झारी ते इक भराइआ हुक्का।' राजा सुन-के राजी हूआ; इस अकलदा इनाम दे-के घर-नूं मुड़-गिआ।

(अनुवाद)

कोई राजा शिकार को चला जा रहा था। रास्ते में एक जाट टीले के ऊपर[1] हल चला रहा था, और उसकी उम्र सत्तर-अस्सी बरस की थी। राजा उसको देखकर बोला, 'जाट, तू बड़ा मूर्ख (है)।' जाट बोला कि 'राजा, मैं नहीं मूर्ख। एक चलाया

१. टीला या टिब्बा पर हल तो आसानी से चलाया जा सकता है लेकिन उससे कोई लाभ नहीं हो सकता, क्योंकि फसल हाथ नहीं लग सकती। इस संबंध में कई लोकोक्तियाँ हैं, जैसे दे० मैकोनैसी की पुस्तक में सं० ६९ और ७१।

तीर, एक चलाया तुक्का।' राजा सुनकर अपनी राह हो लिया, और जब अपने घर पहुँच गया, और दरबार लगाया, अपने मन्त्री से इस बात का अर्थ पूछा। मन्त्री सुनकर सोच में पड़ गया। जब कोई उत्तर उसकी समझ में न आया, तो सात दिन की अवधि मांग ली, और जिस ओर राजा उस दिन गया था, पूछ-पुछाकर उसी ओर मन्त्री भी चल पड़ा। चलते चलते रास्ते में वह जाट उसी तरह हल चलाता मिला। मन्त्री ने विचार किया, 'भाई, हो न हो, यही जाट है जिसकी बात राजा ने मुझसे पूछी है।' और मन्त्री वहाँ खड़ा हो गया। जाट से मन्त्री ने राजा के आने का वृत्तान्त पूछा। जाट ने कहा, 'राजा अवश्य आया था; बात भी मेरे साथ यही की थी।' मन्त्री ने जाट से इस बात का अर्थ पूछा। जाट कहने लगा, 'अर्थ तब बताऊँगा जब तू मेरी पानी पीने वाली सुराही और हुक्का रुपयों से भर दे।' मन्त्री ने हुक्का और सुराही रुपयों से भर दी। जाट ने अर्थ मन-भाता मन्त्री को कह सुनाया। मन्त्री ने जाकर राजा को सुनाया, और अर्थ ठीक-ठीक राजा के मन लगा। पर राजा ने विचार किया कि 'जाट के बिना इसका अर्थ किसी को मालूम नहीं था। मन्त्री ने उससे पूछकर बताया है।' यह सोचकर राजा जाट से जाकर कहने लगा, 'जाट, तू बड़ा मूर्ख (है)!' जाट बोला, 'राजा मैं नहीं मूर्ख, एक तो (रुपयों से) सुराही भरा ली और एक भरा लिया हुक्का।'[1] राजा सुनकर प्रसन्न हुआ; इस बुद्धिमत्ता का (उसे) इनाम देकर घर को लौट गया।

१. जट्ट की तुकबंदी ध्यान देने योग्य है—

इक चलाया तीर, इक चलाया तुक्का।
इक भराई झारी, इक भराया हुक्का॥

[सं० १८]

भारतीय आर्य परिवार केन्द्रीय वर्ग

पंजाबी

मालवाई बोली (नाभा राज्य, जिला फूल)

ਇਕ ਰਾਜੇਦੇ ਸਤ ਧੀਆਂ ਸਨ। ਇਕ ਦਿਨ ਰਾਜੇਨੇ ਉਨ੍ਹਾਂਨੂੰ ਆਖਿਆ ਧੀਓ ਤੁਸੀਂ ਕੀਦਾ ਭਾਗ ਖਾਂਦੀਆਂ ਹੋ। ਛੀਆਂਨੇ ਆਖਿਆ ਅਸੀ ਬਾਪੂ ਤੇਰਾ ਭਾਗ ਖਾਂਦੀਆਂ ਹਾਂ ਤੇ ਸਤਮੀਨੇ ਆਖਿਆ ਮੈਂ ਤਾਂ ਅਪਨਾ ਭਾਗ ਖਾਂਦੀ ਹਾਂ। ਤਾਂ ਰਾਜੇਨੇ ਆਖਿਆ ਮੈਂ ਥੋਨੂੰ ਕਿਹਾ ਜਿਹਾ ਪਿਆਰਾ ਲਗਦਾ ਹਾਂ। ਛੀਆਂਨੇ ਆਖਿਆ ਤੂੰ ਸਾਨੂੰ ਖੰਡ ਬਰਗਾ ਪਿਆਰਾ ਲਗਦਾ ਹੈਂ। ਤੇ ਸਤਮੀਨੇ ਆਖਿਆ ਤੂੰ ਮੈਨੂੰ ਲੂਣ ਬਰਗਾ ਪਿਆਰਾ ਲਗਦਾ ਹੈ। ਤਾਂ ਰਾਜੇਨੇ ਹਰਖ ਕੇ ਆਖਿਆ ਏਹਨੂੰ ਕਿਸੇ ਲੰਗੜੇ ਲੂਲੇ ਨਾਲ ਬਿਹਾ ਦੇਓ ਦੇਖੋ ਫਿਰ ਕਿਕੂੰ ਅਪਨਾ ਭਾਗ ਖਾਊਗੀ। ਤਾਂ ਓਹ ਇਕ ਲੰਗੜੇ ਨਾਲ ਬਿਹਾ ਦਿੱਤੀ। ਓਹ ਵਿਚਾਰੀ ਲੰਗੜੇਨੂੰ ਖਾਰੀ ਵਿਚ ਪਾ ਕੇ ਮੰਗਦੀ ਖਾਂਦੀ ਪਈ ਫਿਰਦੀ। ਇਕ ਦਿਨ ਖਾਰੀਨੂੰ ਇਕ ਛੱਪੜ ਤੇ ਕੰਢੇ ਤੇ ਧਰ ਕੇ ਆਪ ਮੰਗਨ ਚਲੀ ਗਈ। ਤਾਂ ਲੰਗੜੇਨੇ ਕੀ ਦੇਖਿਆ ਕਿ ਕਾਲੇ ਕਾਂ ਛੱਪੜ ਵਿਚ ਬੜ ਕੇ ਬੱਗੇ ਹੋ ਹੋ ਨਿਕਲਦੇ ਆਉਂਦੇ ਹਨ। ਤਾਂ ਉਨਾਂਦੀ ਰੀਸਮਰੀਸੀ ਲਗੜਾ ਬੀ ਰੁੜ੍ਹਦਾ ਪੈਂਦਾ ਛੱਪੜ ਵਿਚ ਜਾ ਡਿੱਗਾ ਤੇ ਓਹ ਨੌ ਬਰ ਨੌ ਹੋ ਗਿਆ। ਤਾਂ ਜਦ ਓਹਦੀ ਬਹੂ ਮੰਗ ਤੰਗ ਕੇ ਆਈ ਤਾਂ ਓਹ ਆਉਂਦੀਨੂੰ ਰਾਜੋ ਬਾਜੀ ਹੋ ਕੇ ਖੜ ਗਿਆ॥

(नागरी रूपान्तर)

इक राजेदे सत धीआँ सन। इक दिन राजेने उन्हाँनूं आखिआ, 'धीओ, तुसीं कीदा भाग खांदीआँ-हो?' छीआँने आखिआ, 'असी, बापू, तेरा भाग खांदीआँ-हाँ।' ते सतमीने आखिआ, 'मैं तां अपना भाग खाँदी-हाँ।' तां राजेने आखिआ, 'मैं थोनूँ किहा-जिया पिआरा लगदा-हाँ?' छीआँने आखिआ, 'तूँ, सानूँ खण्ड-बर्गा पिआरा लगदा-है।' ते सतमीने आखिआ, 'तूँ मैंनूँ नून बर्गा पिआरा लगदा है।' तां राजेने हरख-के आखिआ, 'एहनूँ किसे लङ्गड़े-लूले-नाल बिहा-देओ। देखो फिर किकूँ अपना भाग खाऊगी।' ताँ ओह इक लङ्गड़े-नाल बिहा-दित्ती। ओह विचारी लङ्गड़ेनूँ खारी-विच पा-के मङ्गदी खाँदी पई फिर दी। इक दिन खारीनूँ इक छप्पड़-ते कण्ढे-ते धर-के

आप मङ्गन चली-गई; ताँ लङ्गड़ेने की देखिआ, कि काले काँ छप्पड़-विच बड़-के बग्गे हो-हो निकलदे-आओंदे -हन। ताँ ओनांदी रीसम-रीसी लङ्गड़ा बी रुढ़दा पैंदा छप्पड़-विच जा डिग्गा; ते ओह् नौ-बर-नौ हो गिआ। ताँ जद ओह्दी वहू मङ्ग-तङ्ग-के आई; ताँ ओह् आउंदीनूँ राजी-बाजी हो-के खड़-गिआ।

(अनुवाद)

[निम्नलिखित कथा सारे भारतवर्ष में प्रचलित है। इसका दूसरा पाठान्तर इस सर्वेक्षण के भाग ५, खण्ड २, पृ० ३०९ (अंग्रेजी) में मिलेगा। ध्यान देने की बात यह है कि इसका आरम्भ बादशाह लियर की कहानी से कितना मिलता-जुलता है।]

एक राजा की सात लड़कियाँ थीं। एक दिन राजा ने उनको कहा, 'बेटियो, तुम किसका भाग्य खाती हो?' छओं ने कहा, 'हम, बापू, तेरा भाग्य खाती हैं।' और सातवीं ने कहा, 'मैं तो अपना भाग्य खाती हूँ।' तब राजा ने कहा, 'मैं तुम्हें कैसा प्यारा लगता हूँ?' छओं ने कहा, 'तू हमें खाँड जैसा प्यारा लगता है।' और सातवीं ने कहा, 'तू मुझे नमक जैसा प्यारा लगता है।' तब राजा ने क्रुद्ध होकर कहा, 'इसको किसी लँगड़े-लूले के साथ ब्याह दो। देखो फिर किस तरह अपना भाग्य खायेगी।' तब वह एक लँगड़े के साथ ब्याह दी गयी। वह बेचारी लँगड़े को डाले में डालकर माँगती-खाती फिरती थी। एक दिन डाले को एक तालाब के किनारे पर रखकर आप माँगने चली गयी; तो लँगड़े ने देखा कि काले कौवे तालाब में घुसकर गोरे हो-होकर निकलते आते हैं। तब उनकी रीस में लँगड़ा भी बहता-घिसटता तालाब में जा गिरा; और वह (तुरन्त) नया से नया हो गया। तब जब उसकी बहू मांग-वांग कर आयी, तो वह (उसके) आते ही राजी-खुशी होकर खड़ा हो गया।

[सं० १९]

भारतीय आर्य परिवार

केन्द्रीय वर्ग

पंजाबी

मालवाई बोली

(पटियाला राज्य, थाना गोबिन्दगढ़)

دیکھو کھبّے ہتّھہ نال ہتّھي دب چھڈّي ھے سجّے ہتّھہ وچہ بُراسي
ھے - سوھیں روکھہ دے ھیٹھ حقہ اور جل دا توڑا دھرا ھے - اونہے اک مڈّا
بیٹھا ھے - ھالي بچارہ نِہہ پھٹي نال اُٹھا ھے - ھل اور بلداں نوں لیکے
مونہہ انّدھیرے کھیت وچہ پہونچا ھے - سکھر دوپہرے تیویں روٹي
لیاوندي ھے - ایہہ جوتا ڈھال دیندا ھے - بلداں نوں ککھہ پاوندا ھے - آپ
ہتّھہ مونہہ دھو ٹھنڈا ہو کے روٹي کھاندا ھے حُقّہ پیندا ھے - بلداں نوں
باني پلاوندا ھے تھوڑا چر پے رھندا ھے - تیویں ساگ لے جاندي ھے -
بھاھلا کم ھوندا ھے - تاں بچارہ اسي دھندے وچہ آتّھن کر دیندا ھے - نہیں
تاں ھور کم دھندا کردا ھے - دن چھپے ھل اور بلداں نوں لیکے گھر
اوندا ھے - روٹي دا بھار لیاوندا ھے - بلداں موھرے پاوندا ھے - تیویں دھار
کڈّدي ھے - روٹي پکاوندي ھے - ایہہ چاو نال منڈے کڑیاں وچہ بیٹھہ کے
کھاندا ھے - پھر اِس موج نال لتّاں نِسال کے سوندا ھے کہ بادشاھاں نوں
پھلّاں دے بچھاونے اوتے بھي نہیں تھیاوندي *

(नागरी रूपान्तर)

देखो, खब्बे हत्थ-नाल हत्थी दब छड्डी-है, सज्जे हत्थ-विछ पुरानी है। सोहें रोखदे हेठ हुक्का और जलदा तौड़ा धरा-है। उत्थे इक मुण्डा बैठा है। हाली बिचारा पुह फटी नाल उठा-है। हल और बल्दाँनूं ले-के, मूँह-अँधेरे खेत-विछ फउँचा-है। सिखर दो-पहरे तीवीं रोटी लियाउँदी-है। एह जोत्ता ढाल दिंदा-है। बल्दाँनूं कख पाउँदा-है। आप हत्थ मूँह धो ठण्डा हो-के रोटी खाँदा-है, हुक्का पींदा-है। बल्दाँनूं पानी पलाउँदा-है। थोड़ा चिर पै रहन्दा-है। तीवीं साग ले जाँदी-है। भाहला कम्म हूँदा-है ताँ विचारा इसी धन्दे-विछ आत्थन कर दिंदा-है। नहीं-ताँ होर कम्म धन्दा करदा-है। चर्हीदा भार लियाउँदा-है। बल्दाँ मूहरे पाउँदा-है। तीवीं धार कडदी है। रोटी पकाउँदी-है। एह चाओ-नाल मुंडे-कुड़्याँ-विछ बैठ-के खाँदा है। फिर इस मौज-नाल लत्तां निसाल-के सोंदा-है, कि बादशाहाँनूं फुल्लांदे बिछाउने-उत्ते भी नहीं थिआउँदी।

(अनुवाद)

देखो, बायें हाथ से हत्था दबा रखा है, दाहिने हाथ में चाबुक है। सामने पेड़ के नीचे हुक्का और पानी का बरतन रखा है। वहाँ एक लड़का बैठा है। किसान बेचारा पौ फटते ही उठा है। हल और बैलों को लेकर मुँह अँधेरे खेत में (जा) पहुँचा है। भरे दोपहर में स्त्री खाना लाती है। यह हल खोल देता है। बैलों को तिनके डालता है। खुद हाथ-मँह धो, ठण्डा होकर खाना खाता है, हुक्का पीता है, बैलों को पानी पिलाता है। थोड़ी देर लेट जाता है। स्त्री साग ले जाती है। बहुत काम होता है तो बेचारा इसी धन्धे में शाम कर देता है। नहीं तो और काम धन्धा करता है। चरी का बोझा लाता है। बैलों के आगे डालता है। स्त्री दूध दुहती है। खाना पकाती है। यह चाव के साथ लड़के-लड़कियों में बैठकर खाता है। फिर ऐसी मौज से टांगें पसार कर सोता है कि जो बादशाहों को फूलों की सेज पर भी नहीं मिलती।

भट्टिआनी

भाटी (या जैसा कि पंजाब में कहा जाता है, भट्टी) राजपूत जाति का एक मुसलमान क़बीला है जो पंजाब और उत्तर-पश्चिमी राजपूताना में व्यापक रूप से बिखरा पाया जाता है। ये लोग उत्तरी बीकानेर और फीरोज़पुर जिले के उस भाग में जो उससे सटा हुआ है, विशेषत: प्रबल हैं। देश के इस भाग को भट्टिआना कहा जाता है और इसके प्रमुख नगरों में भट्नेर का प्रसिद्ध गढ़ है। १९वीं शती के आरम्भ में देश के इस भाग में भट्टियों के महत्त्व के कारण भट्टी शब्द इस क्षेत्र के रहने वाले सभी मुसलमानों पर लागू हो गया और उनका नाम राठ या पछाडा का लगभग पर्याय बन गया—यह नाम घग्घर घाटी के (एक भिन्न जाति के) पछाडा मुसलमानों को दिया गया था।[1]

हमने देखा कि पछाडा मुसलमानों द्वारा बोली जाने वाली पंजाबी की बोली का एक नाम राठी भी था, और जैसा कि अभी स्पष्ट किया गया है, यही नाम बीकानेर के भट्टियों की बोली को दिया गया है, जबकि फ़ीरोज़पुर के भट्टियों की बोली को स्थानीय स्तर पर राठौरी नाम से जाना जाता है। ये दो राठी बोलियाँ एक नहीं हैं, क्योंकि जैसा कि हमने देखा, पछाडा मुसलमानों की राठी पश्चिमी हिन्दी के साथ पोवाधी पंजाबी का मिश्रित रूप है, और भट्टियों की राठी या राठौरी उत्तरी बीकानेर की बागड़ी के साथ मालवाई पंजाबी का मिश्रण है।

यह तो जाना गया होगा कि राठी एक जातीय भाषा है। फ़ीरोज़पुर की फ़ाज़िल्का तहसील के दक्षिण में सब लोग (भट्टी हों या नहीं) एक भाषा बोलते हैं जिसे स्थानीय ढंग से बागड़ी कहा जाता है। किन्तु भाषा के इस रूप के नमूने की, जो फ़ीरोज़पुर से प्राप्त हुए हैं, परीक्षा करने से लगता है कि यह बागड़ी है ही नहीं। यह बिल्कुल वही बोली है जो बागड़ी की प्रधानता लिये हुए, बागड़ी और पंजाबी का मिश्रण, भट्टी राठी है।

१. सिरसा बन्दोबस्त रिपोर्ट, १८७९-८३, पृ० ८९।

फ़ीरोज़पुर के भट्टी कई (प्रायः उपजातियों के) नामों से पाये जाते हैं, जैसे वट्टू, जोया, रस्सीवट्ट या राठौर। अन्तिम नाम के कारण इस जिले में उनकी बोली को राठौरी नाम दिया गया है। यह सतलुज के दक्षिण तट के ऊपर-ऊपर काफी दूर तक फ़ाज़िल्का और ममदोत तहसीलों में बोली जाती है, और यह वही बोली है जो बीकानेर की राठी और फ़ाजिल्का की 'बागड़ी'—केवल बागड़ी से अधिक मिश्रित विकृत पंजाबी है। इन दो भाषा-रूपों का अनुपात स्थानभेद से भिन्न-भिन्न है, किन्तु इन तीनों क्षेत्रों में भाषा का सामान्य लक्षण एक ही है, और इसलिए कि इस मिश्रित भाषा के भेदों के लिए किसी सामान्य नाम की आवश्यकता है ही, मैंने इसे, इसके केन्द्रीय स्थल भट्टिआना से, भट्टिआनी कहा है। भट्टिआनी नाना नामों के अन्तर्गत इसके बोलने वालों की संख्या निम्नलिखित बतायी गयी है—

बीकानेर की राठी	२२,०००
फ़ीरोजपुर (फ़ाज़िल्का) की बागड़ी	५६,०००
फ़ीरोज़पुर की राठौरी	३८,०००
कुल भट्टिआनी	१,१६,०००

सन् १८२४ में सीरामपुर के ईसाई प्रचारकों ने बाइबिल के नव विधान का अनुवाद इस बोली में किया था जिसे उन्होंने 'भटनेर भाषा' कहा है। भट्टिआनी के नमूनों में मैं बीकानेर की राठी में अपव्ययी पुत्र की कथा का सम्पूर्ण रूपान्तर, और तथा कथित बागड़ी एवं फ़ीरोज़पुर की राठौरी में उसके अंश, दे रहा हूँ। अंत में, तुलना के लिए, मैं एक वैसा ही अंश सन् १८२४ के सीरामपुर के भटनेरी उल्था से दे रहा हूँ।

बीकानेर की राठी

पूर्वोक्त टिप्पणियों की पुष्टि नीचे दिये गये अपव्ययी पुत्र की कथा के भाषान्तर से हो जायगी। यह बोली पंजाबी और बागड़ी का सम्मिश्रण है जिसमें यत्र-तत्र पश्चिम में बोली जानेवाली लहँदा से उधार लिया गया मुहावरा मिल जाता है। हेंक, एक, लहँदा है; दे (पुल्लिग बहुव०), के, पंजाबी है, और हा (पुल्लिग बहुव०), थे, बागड़ी है। इसी प्रकार अन्यत्र जासाँ, जाऊँगा, बागड़ी का भविष्यत् रूप है जिसमें विभक्ति पंजाबी की जुड़ी है; भाज-गे, दौड़कर, बागड़ी है; खाँदे हा, वे खाते थे, आधा पंजाबी है तो आधा बागड़ी; तुसांडा, तुम्हारा, पंजाबी है; एवं थारो, तुम्हारा, बागड़ी है। अधिक विस्तार में जाने की आवश्यकता नहीं जान पड़ती।

[सं० २०]

भारतीय आर्य परिवार **केन्द्रीय वर्ग**

भटि्टआनी (राठी) बोली **(बीकानेर राज्य)**

हेक आदमीदे दोय पूत हा। उसदे छोटे पूत पिऊनूँ आखा हे पिऊ माल विच जेड़ा मेरा हिसा होवे मैंनूँ देहे। उसनूँ तदाँ माल बाँट दीता। ढेर दहाड़े नहीं हुए छोटा पूत सब कुज उठा करने दूर देस जांदा रहा ओर उथे लुचपणे विचे आपणा माल गमा दीता। ओर वो सबो कुज भजा चुका तब उस देस विचे डाढा काल पया ओर वो गरीब हो गया। ओर वो उस देसदे रैणेवालेदा नोकर हो गया। ओर उसने तिसनूँ अपने खेत्र विच सूरनूँ चरावणनूँ घाला। ओर उसने उन छीलड़ा नाल अपणा डिढ भरणा चाता था जिनाँनूँ सूर खांदे-हा। ओर कोई उसनूँ कुज नाहीं देता-हा। जदाँ उसनूँ चेता आया ओर उसैं अखा के मेरे पिऊदे कितने मेहेनतीओंनूँ फादल टिकियां बणदी थीं ओर असाँ भूख नाल मरदा हाँ। में उठीने पीऊ नाल जासाँ ओर उसनूँ अखसाँ हे बाबा मैंने बेहेस्तनूँ काण्ड कीती ओर तुसाडे आगे गुना कीता। असाँ फिर तुसाडा पूत कहावणे के लायक नहीं हूं। आपदे मेहेनतीआं विच हेकदी जागे मैंनूँ कर लो। तदाँ वो उठते आपदे पीऊदे पासे गिया। मगर वो दूर हा तदाँ पिऊ उसनूँ देखते तरस कीता। ओर भाजगे उसनूँ गले नाल लगाते उसनूँ चूमा। पुत्र उसदे बापनूँ अखा हे पिऊ मैंने बेहेस्तने काण्ड कीती ओर आपदे सामने गुना कीता ओर फिर थारे पुत्र तेरा कुहावण लायक नहीं हूँ। मुड़ उसदे पिऊने आपदे नोकराँनूँ अखा पुत्रनूँ थीगड़े अछे पधावो ओर उसदे हथ विच मुदडी ओर पेरों जूती घतावो ओर आपां खाते मजे करें। क्यूँके पुत्र मेरा मुया हा मरते मुड़ आया। खड़ी गया हा मुड़ लाभ्या है। तदाँ वो मजे करण लगे।

उसदा वडा पुत्र खेत्रेच हा। जदाँ वो अमदा हुया घरदे कोल आया तदाँ बाजते नचणदा खड़का सुणा। आपदे नोकराँ विचूँ हेक नोकरनूँ आपदे कोल सदते अखा के... ...[1] उस अखा तेरा भीरा आया है आपदे पिऊने चंगा खाँणा कीता है इस वास्ते जो उसनूँ भल चंगा लाद्धा है। उसने कावड़ कीती। उस घर विच आवण न चाया। इस वास्ते उसदा पिऊ वाहार आते उसनूँ मनावण लगा। उस पिऊनूं जवाव दीता की वेखो मैं इते वराँ-तूँ तुहाडी खिदमत करदा-हा। आपदे हुकमनूँ कदे अदुल न कीता। आप मैनूँ कदे हेक लेला भी न दीता के मैं आपदे बेलीआँ नाल खुसी करदा हा। मगर आपदा ए पुत्र जो कंजरीआंदे नाल रलते आपदा सब कुज भेजा-देता जू आया उसदे वास्ते आप चंगा खाँणा कीता। पिऊ उसनूँ अखा पुत्र तूँ नित मेरे नाल रहेदा-है। जो कुज मेरा वो सबो कुज तेरा है। मगर डाढी खुसी करणी ठीक हाई। क्यूंके तेरा भीरा मुया हुवा मुड़ जी आया-है, खिड़ी गया-हा मुड़ लाभ गया-है।

(अनुवाद)

एक आदमी के दो पुत्र थे। उसके छोटे पुत्र ने पिता को कहा, हे, पिता, सम्पत्ति में जो मेरा हिस्सा हो मुझे दे। उसको तब सम्पत्ति बाँट दी। बहुत दिन नहीं हुए थे, छोटा पुत्र सब कुछ उठाकर दूर देश जाता रहा और वहाँ बदमाशी में अपनी सम्पत्ति गँवा दी। और (जब) वह सब कुछ लगा चुका तब उस देश में प्रबल अकाल पड़ा और वह गरीब हो गया। और वह उस देश के रहनेवाले का नौकर हो गया। और उसने उसको अपने खेत में सूअरों को चराने भेजा। और उसने उन छिलकों से अपना पेट भरना चाहा जिनको सूअर खाते थे। और कोई उसको कुछ नहीं देता था। जब उसको होश आया और उसने कहा कि मेरे बाप के कितने श्रमियों को फालतू रोटियाँ मिलती थीं और हम भूख से मरते हैं। मैं उठकर बाप के पास जाऊँगा और उसे कहूँगा, 'हे बाबा, मैंने स्वर्ग की ओर पीठ की और तुम्हारे आगे पाप किया। मैं फिर तुम्हारा पुत्र कहलाने लायक नहीं हूँ। अपने श्रमियों में एक की जगह मुझे रख लो।' तब वह

१. मूल पाठ में ये शब्द नहीं मिलते।

उठकर अपने बाप के पास गया। किन्तु अब दूर था तब बाप ने उसे देखते ही दया की और दौड़कर उसे गले लगाकर उसे चूमा। पुत्र ने अपने बाप को कहा, 'हे पिता, मैंने स्वर्ग की ओर पीठ की और आपके सामने पाप किया और फिर तुम्हारा पुत्र कहलाने लायक नहीं हूँ।' तब उसके बाप ने अपने नौकरों को कहा कि पुत्र को कपड़े अच्छे पहनाओ और उसके हाथ में अँगूठी और पाँवों में जूता पहनाओ और हम लोग खाते हुए मजे करें। क्योंकि पुत्र मेरा मर गया था, मरते लौट आया। खो गया था फिर मिला है। तब वे मजे करने लगे।

उसका बड़ा बेटा खेत में था। जब वह आता हुआ घर के पास आया तब (गाने) बजाने (और) नाचने का शब्द सुना। अपने नौकरों में से एक नौकर को अपने पास बुलाकर कहा कि....। उसने कहा तेरा भाई आया है, आपके पिता ने अच्छा भोज किया है इसलिए कि उसको भला चंगा पा लिया है। उसने क्रोध किया। उसने घर में आना न चाहा। इसलिए उसका बाप बाहर आकर उसे मनाने लगा। उसने बाप को उत्तर दिया कि देखो, मैं इतने बरसों से तुम्हारी सेवा करता था। आपकी आज्ञा का कभी उल्लंघन नहीं किया। आपने मुझे कभी एक मेमना भी नहीं दिया कि मैं अपने साथियों के साथ मौज करता। किन्तु आपका यह बेटा जिसने वेश्याओं के साथ मिलकर आपका सब कुछ खो दिया जब आया (तो) उसके लिए आपने अच्छा भोज किया। बाप ने उसको कहा, 'बेटा, तू नित्य मेरे साथ रहता है। जो कुछ मेरा है वह सब कुछ तेरा है। पर बहुत मौज करना ठीक था। क्योंकि तेरा भाई मरा हुआ फिर जी गया है, खो गया था फिर मिल गया है।

फीरोज़पुर की तथाकथित बागड़ी

बीकानेर की सीमा के आस-पास पंजाब के ज़िला फीरोज़पुर की तहसील फ़ाज़िल्का में बागड़ी बोलनेवालों की संख्या छप्पन हज़ार बतायी गयी है। प्रेषित नमूनों के परीक्षण से पता चलता है कि इस बोली में बागड़ी के विशिष्ट लक्षणों में एक भी नहीं पाया जाता, जैसे संबंध कारक का गो इत्यादि। बीकानेर की राठी की तरह यह भी पंजाबी का विकृत रूप है जिसमें बागड़ी के कुछ रूप घुल-मिल गये हैं। इस मिश्रित बोली का कोई महत्त्व नहीं समझा जाता, इसलिए, उदाहरणार्थ, अपव्ययी पुत्र की कथा से एक संक्षिप्त उद्धरण दे देना पर्याप्त होगा। मूल उदाहरण फ़ारसी और गुरमुखी अक्षरों में लिखा गया था।

[सं० २१]

भारतीय आर्य परिवार केन्द्रीय वर्ग

पंजाबी

भट्टिआनी (तथाकथित बागड़ी) बोली (फीरोज़पुर, तहसील फ़ाज़िल्का)

एक मानस-रा दे बेटा हा। वाँ मिआँ छोड़ो बेटो बाप-ने कहिओ, 'ओ बाप माल-रा हिसा जिका आवे मि-ने दे।' जणा पाछे वि-ने माल-रा पाँती वाँट-दीनी। थोरे पाछे छोटकीओ बेटो सगलो धन-माल भेलो कर-के दूर देस-ने उठ-गिओ। जठे आपनो माल हरामकारी मैं खो-दीओ। जणा सगलो माल खो-दीनो, बीं देस-रे एक भागवान-के जा-लागिओ। बा-ने अपने खेत-मै सूर चराव भेजिओ। बै-रे जी डवकिओ कि ऐ छूतका-हूँ खा-लिओ, जिका सूर खै-हैं; कि बी-ने ऐसो भी को-मिले-नी।

(अनुवाद)

एक आदमी के दो बेटे थे। उनमें छोटा बेटा (ने) बाप से कहा, हे बाप, सम्पत्ति का अंश जो आये मुझे दे।' तब पीछे उसने सम्पत्ति का हिस्सा बाँट दिया। थोड़ा (समय) पीछे छोटा बेटा सारी धन-सम्पत्ति बटोरकर दूर देश को उठ गया। वहाँ अपनी सम्पत्ति हरामकारी में खो दी। जब सारी सम्पत्ति खो दी, उस देश के एक भाग्यवान के यहाँ जा लगा। उसने अपने खेत में सूअर चराने भेजा। उसके जी (में) उठा कि ये छिलके भी खा लूं, जिनको सूअर खाते हैं; किन्तु उसको ऐसा भी कोई नहीं देता (था)।

फीरोज़पुर की राठौरी

तथाकथित बागड़ी की अपेक्षा फ़ीरोज़पुर की राठौरी कहीं अधिक सम्मिश्रित बोली है। बाहरी तत्त्व वास्तविक बागड़ी न होकर कुछ-कुछ बीकानेरी हैं, जैसा कि छै, है, के प्रयोग से प्रकट है। अपव्ययी पुत्र की कथा की आरम्भिक पंक्तियाँ दे देना पर्याप्त होगा।

[सं० २२]

भारतीय आर्य परिवार केन्द्रीय वर्ग

पंजाबी

भट्टिआनी (राठौरी) बोली (फ़ीरोज़पुर, तहसील फ़ाज़िल्का)

इक्के गुवा-रे दी बेटा सीं। ओन-मा-ले छोटा बेटा वापेने किओ, 'माले मान्हे जुतना हिस्सो मनें आवा -छै, ऊ मने देओ।' ई माल वण्ड दीनो-छै। थोड़ा दिने-मैं सारो माल कट्ठो करते दूर देसने ले-गिओ। अपनो माल भैड़ी लच्छे-मैं उत्ते गाल-दीनो। जदे गाल-दीनो, उत्ते देसे साहूकारे धोरे नोकर हो-गिओ-छी। उन्ने कहिओ 'जा-के सूरन्ने वाही-मही चरा लिआ।' ओह-रो जी कीदो ऊनहूँ छिलडूँने खाते अपना ढिड भर-लै, जिन्हूनूँ सूर खाते। ऊने अस भी नहीं मिलते।

(अनुवाद)

एक गँवार के दो बेटे थे। उनमें से छोटे बेटे ने बाप को कहा, 'सम्पत्ति में से जितना हिस्सा मुझे आता है, वह मुझे दो।' इसने सम्पत्ति बाँट दी। थोड़े दिन में सारी सम्पत्ति इकट्ठी करके दूर देश को ले गया। अपनी सम्पत्ति बद-चलनी में वहाँ नष्ट कर दी। जब नष्ट कर दी, वहाँ देश के अमीर के पास नौकर हो गया। उसने कहा, 'जाकर सूअरों को खेत में चरा ला।' उसका जी किया उन्हीं छिलकों को खाकर अपना पेट भर ले जिनको सूअर खाते (थे)। (किन्तु) उसको ऐसे भी नहीं मिलते (थे)।

भटनेरी

अन्त में उसी कथा के भाषान्तर से एक वैसा ही उद्धरण दे रहा हूँ जो सीरामपुर वाले सन् १८२४ के अनुवाद में प्राप्त है। इससे स्पष्ट हो जायगा कि इसके सामान्य लक्षण वही हैं जो पिछले नमूनों में भी हैं।

[सं० २३]

भारतीय आर्य परिवार केन्द्रीय वर्ग

पंजाबी

भट्टिआनी (भटनेरी) बोली (सीरामपुर मिशन, १८२४)

कँइ मानखदे दोय गभरु हन्दा । फेर वाँ-माँय-ता छोटोडे भायजीनूँ आख्या, 'हे भायजी, मायादी जो पाँती पडदी, वा असें दो।' फेर उँ वाँदे कोल मायादी पाँत्याँ किती । फेर घणा दन न हुयाँ-ता छोटोडो गभरु आपरो सारो भेलो करर दूर देशनूँ परो-गयो। फेर उथे जङ्ग-रस-में जीर अपणी माया उडाय-दी। तद उँदी सारी खुट-गयाँ-ता उँ देश में घणो करडो काल पडियो। फेर उँ घटाव-में पडन लग्यो। फिर उँ जायर उँ देश दे काई बस्तीवालेंदे नाल मिल-गयो। फेर उँ शूवर चरावण लिये अपणे खेत्त में उँनू पठ्यो। फेर शूवर जो खाँवदा-हन्दा उँ छावडाँ-ता उँ अपणो पेट भरन चायो। फेर कँई उँनू न दिया।

(अनुवाद)

किसी आदमी के दो लड़के थे। तब उनमें से छोटे ने बाप को कहा, 'हे पिता, सम्पत्ति का जो अंश पड़ता है, वह हमें दो।' फिर उसने उनके पास सम्पत्ति के हिस्से किये। तब बहुत दिन नहीं हुए थे छोटा लड़का अपना सब (कुछ) बटोर करके दूर देश को चला गया। तब वहाँ बदमाशी में जीकर अपनी सम्पत्ति उड़ा दी। तब उसकी सब (सम्पत्ति) समाप्त हो गयी तो उस देश में बहुत कड़ा अकाल पड़ा। तब वह गिरावट में पड़ने लगा। तब वह जाकर उस देश के किसी रहने वाले के साथ मिल गया। फिर उसने सूअर चराने के लिए अपने खेत में उसे भेजा। तब सूअर जो खाते थे उन छिलकों से उसने अपना पेट भरना चाहा। तब (भी) किसी ने उसको न दिये।

लहँदा में विलीयमान पंजाबी

लाहौर का ज़िला रावी नदी के दोनों ओर स्थित है। पूर्वी ओर (रावी और सतलुज के बीच वारी दोआव में) पंजावी की जो बोली वोली जाती है वह माझी है। रावी के पश्चिम में (रावी और चनाव के बीच रचना दोआब में) पंजाबी की लाहौरी बोली पर लहँदा के बढ़ते हुए प्रभाव के चिह्न दिखाई देते हैं।

यह पहले ही कह दिया गया है कि प्राचीन भाषा का वह रूप, जिससे लहँदा का विकास हुआ है, किसी समय में अवश्यमेव अपने वर्तमान क्षेत्र से बाहर दूर तक पूर्व की ओर फैला हुआ था। पूर्वी पंजाव में यह भाषा केन्द्रीय वर्ग की एक भाषा द्वारा आच्छादित हो गयी है, और परिणामस्वरूप वह भाषा वनी है जिसे पंजाबी कहा जाता है। ज्यों-ज्यों हम गंगा-दोआब से पश्चिम की ओर बढ़ते हैं त्यों त्यों मूल लहँदा-आधार के अवशेष अधिकाधिक स्पष्ट होते जाते हैं। हमें पहले ही कुछ उल्लेखनीय निदर्शन माझी बोली में प्राप्त हुए हैं जो निश्चयतः पंजाबी का उत्कृष्ट और शुद्धतम रूप है। जब हम रावी पार करके रचना दोआब में आते हैं तो लहँदा-आधार और अधिक स्पष्ट होता जाता है, और लहँदा और पंजावी के बीच की परम्परागत सीमा-रेखा गुजरात जिले को पार करके इस दोआब के बीचोंबीच चनाव नदी पर गुजरांवाला में रामनगर के निकट से शुरू होकर और मंटगुमरी जिले के उत्तरी कोने की ओर ठीक दक्षिण में बढ़ती हुई लगभग उत्तर-दक्षिण जाती है। वहाँ से यह सीधे दक्षिण की ओर (रास्ते में रावी पार करती हुई) सतलुज के किनारे मंटगुमरी जिले के दक्षिणी कोने तक चली जाती है। इस प्रकार मंटगुमरी जिले का एक भाग, जो इस परम्परागत रेखा के पूर्व में स्थित है, बारी दोआब में पड़ता है, किन्तु भाषा की दृष्टि से वह रचना दोआब के उत्तरपूर्व में है।

उपरिकथित रेखा शुद्ध रूप से परम्परागत है जिसे इस सर्वेक्षण के लिए अपनाया गया है। भारत में सर्वत्र भाषाओं के परस्पर विलीन होने के उदाहरण मिलते हैं, किन्तु भारत में कहीं भी विलयन इतना क्रमिक नहीं होता जितना लहँदा और पंजाबी

के बीच में। केन्द्रीय वर्ग की भाषा की लहर जो पहले धुर पूर्वी लहँदा पर छायी थी, धीरे-धीरे जैसे ही हम पश्चिम की ओर बढ़ते हैं, अपना बल खोती गयी और इस प्रकार लहँदा का आधार अधिकाधिक सुस्पष्ट होता गया है। यह लहर उपरिवर्णित रेखा के पश्चिम की ओर फैल गयी, किन्तु उस समय तक वह इतनी छिछली और क्षीण हो गयी कि यह भाषा अब लहँदा छापवाली पंजाबी नहीं रही बल्कि पंजाबी छापवाली लहँदा हो गयी। मोटे तौर पर हम इस रेखा को इन दो स्थितियों की सीमा के रूप में रख सकते है; किन्तु इस रेखा के समीपस्थ प्रदेश में, दोनों ओर, स्थानीय बोली इतनी अनिश्चित है कि उसे समान यथातथ्यता के साथ किसी भाषा के साथ वर्गीकृत किया जा सकता है, और अनेक अधिकारी विद्वान् दावा कर सकते हैं कि गुजरांवाला और मंटगुमरी के तुरन्त पश्चिम की भाषा पंजाबी है, लहँदा नहीं। ऐसे दावा का मैं विरोध नहीं करता। विषय की परिस्थिति ऐसे विरोध को असंगत बना देती है। दूसरी ओर, जो रेखा मैंने खींची है वह सुविधाजनक है और मोटे तौर पर पंजाबी की पश्चिमी सीमा का परिचय देती है।

इस रेखा के पूर्व की ओर पहले तो गुजरात ज़िले का उत्तरपूर्वी आधा भाग है; फिर रचना दोआब में सियालकोट का ज़िला, गुजरांवाला का आधा ज़िला, लाहौर का रावी पार का भाग और मंटगुमरी का छोटा सा हिस्सा है। रावी पार करके बारी दोआब के भीतर, इस रेखा के पूर्व की ओर, मंटगुमरी ज़िले का पूर्वी आधा भाग, जिसमें मोटे तौर पर दीपालपुर और पाकपट्टन तहसीलें हैं, आता है। इस समूचे क्षेत्र में भाषा एक ही है,—लहँदा का प्रबल अन्तःप्रवाह लिये हुए पंजाबी। मैं तीन नमूने दे रहा हूँ—एक पश्चिमी लाहौर से, दूसरा इस क्षेत्र के उत्तर में सियालकोट से और एक और धुर दक्षिण में मंटगुमरी के अन्तर्गत पाकपट्टन से।

जब सीमा-रेखा मंटगुमरी के दक्षिणी कोने पर सतलुज को स्पर्श करती है, तो वह कुछ मीलों तक उस नदी का अनुसरण करती है और बहावलपुर को पार करती हुई उस रियासत के उत्तर-पूर्वी कोने को अपने भीतर ले लेती है। यहाँ की भाषा वही है जो पाकपट्टन की, अतः उसके किसी नमूने की आवश्यकता नहीं है। यहाँ लहँदा में विलीन होती हुई पंजाबी का विवेचन समाप्त होता है।

हम इस मिश्रित बोली के बोलने वालों की संख्या का अनुमान ही कर सकते हैं, जैसा कि नीचे दी गयी तालिका में। गुजराँवाला के आँकड़ों में प्रान्त के दूसरे भागों से चनाब नहर कालोनी में आकर बसे हुए पंजाबी बोलनेवाले लगभग १,५५,००० लोग

सम्मिलित हैं। उनमें अधिकतर लोग माझी बोलते हैं। जो आँकड़े दिये गये हैं उन्हें स्थानीय अधिकारियों ने पंजाब में बोली जानेवाली भाषाओं की कच्ची सूची प्रकाशित होने के बाद संशोधित किया है। इसी प्रकार बहावलपुर के आँकड़े भी संशोधित रूप में हैं—

उत्तर-पूर्वी गुजरात	४,५७,२००
सियालकोट	१०,१०,०००
पूर्वी गुजरांवाला	५,०५,०००
रावी-पार लाहौर	१७,३९८
पूर्वी मंटगुमरी	२,९२,४२६
उत्तरी बहावलपुर	१,५०,०००
कुल योग	२४,३२,०२४

ऊपर दिये गये लाहौर के आँकड़े बहुत कम लगते हैं, किन्तु मेरे पास इन्हें जाँचने का कोई साधन नहीं है, और संभव है इस कमी की पूर्ति माझी बोलनेवाले चनाब के नहरी आबादकारों की संख्या से हो जाती हो।

पुस्तक-सूची

ग्राहम बेली, पादरी टी०,—**पंजाबी व्याकरण**। वज़ीराबाद (अर्थात् उत्तरी गुजरांवाला) में बोली जानेवाली पंजाबी का संक्षिप्त व्याकरण (अंग्रेजी)। लाहौर, १९०४।

कम्मिंग्स, पादरी टी० एफ०, तथा ग्राहम बेली, पादरी टी०,—**पंजाबी नियम-पुस्तक तथा व्याकरण**। उत्तरी पंजाब की बोलचाल की पंजाबी की निर्देशिका (अंग्रेजी)। कलकत्ता, १९१२। (उत्तरी पंजाब के अन्तर्गत सियालकोट, गुजरांवाला, लाहौर, गुजरात और आसपास के जिलों के भागों को लेकर, फीरोजपुर जिला सम्मिलित है।)

पश्चिमी लाहौर की पंजाबी

लाहौर ज़िले के पश्चिमी भाग के भीतर ज्यों ही हम रावी पार करके जाते हैं, तो हमें पंजाबी का लहँदा आधार बहुत अधिक प्रबल रूप से मिलने लगता है। कुछ

स्थानीय विशेषताएँ भी हैं। लाहौर ज़िले के इस भाग की बोली के नमूने के तौर पर मैं अपव्ययी पुत्र की कथा का रूपान्तर दे रहा हूँ जिसमें कुछ निर्देशात्मक रूप भी पाये जाते हैं।

उच्चारण में मूर्धन्य ळ का नितान्त अभाव देखा जा सकता है, जैसा कि माझा की पंजाबी में भी है। मूर्धन्य ण मनमाने ढंग से प्रयुक्त होता है। यथा, हम एक ही वाक्य में **गावन** भी पाते हैं **नच्चण** भी। स्वर-मान भी कुछ शब्दों में अनियमित है। **रह,** रह, धातु की वर्तनी कभी तो रह, कभी रिह और कभी रैह है। इसकी तुलना शाहपुर की लहँदा के रेह से कीजिए।

संज्ञा के रूपान्तर में हम देखते हैं कि करण कारक का परसर्ग **ने** है, **नै** नहीं, और प्रायः इसका व्यवहार नहीं किया जाता (जैसे लहँदा में)। **ने** को यदा-कदा सम्प्रदान के **नूँ** के स्थान पर भी प्रयुक्त करते हैं। जैसे **नौकर-ने आखिआ,** उसने नौकर को कहा।

सर्वनामों में, हमें करण एकवचन एवं कर्ता के लिए **तूँ** का प्रयोग मिलता है। जैसे **तूँ निआज़ दित्ती,** तूने दावत दी। **असाँ** और **तुसाँ** का प्रयोग प्रायः कर्ता के लिए, 'हम' और 'तुम' के अर्थ में होता है। 'वह' के लिए सामान्य शब्द लहँदा का **ओ** है, और तिर्यक् एकवचन **उस** या **उन**। **इहदे,** इसके, के स्थान पर **इंधे** में हमें महाप्राण का विपर्यय मिलता है। 'अपना' के लिए **आपना** है, **आपणा** नहीं। सम्बन्धबोधक सर्वनाम **जेड़ा** है (तुलना कीजिए लहँदा **जेहड़ा**), 'क्या' के लिए **कीह** है।

अस्तित्वसूचक क्रिया नियमिततः लहँदा के रूप ग्रहण करती है; जैसे **हिन,** वे हैं; **आहा** या **हा,** वह था। कभी-कभी हमें **जे,** वह है या वे हैं के अर्थ में प्रयुक्त मिलता है। समापिका क्रिया में हमें भविष्यत् के दोनों रूप मिलते हैं, लहँदा का जैसे **उठिसाँ-(गा),** उठूँगा, में और पंजाबी का जैसे **रहाँगा,** रहूँगा में।

यदा-कदा हमें क्रियाओं से जुड़े सार्वनामिक प्रत्ययों के उदाहरण भी मिल जाते हैं, ऐसे जैसे लहँदा में। जैसे, **दित्तोई,** तू ने दिया। लहँदा वर्तमान कृदन्त भी सामान्य है। जैसे, **करेंदा** (**करदा** के स्थान पर), करता।

हमें लहँदा नकारात्मक सहायक क्रिया के उदाहरण भी मिलते हैं, जैसे **नहाँ,** वह न था, में।

कुछ-एक लहँदा के अभिव्यक्ति-पद भी हैं। इस प्रकार का प्रयोग है **चा,** उठा, धातु, जो क्रिया के अर्थ पर बल देने के लिए उससे पूर्व लगता है। जैसे **चा-कीता,**

किया; **चा-जान**, जान ले। इसी प्रकार के (नमूने में आनेवाले दूसरों के अलावा) विशिष्ट लहँदा अभिव्यक्ति-पदों में हम उद्धृत कर सकते हैं **हिक्क**, एक; **थिगड़ा**, गुदड़ी; **कावीर**, क्रुद्ध; **हत्थों**, विपरीत।

न्यूटन अपने 'पंजाबी व्याकरण' के पृष्ठ ३३ पर कहते हैं कि लाहौर जिले में ने-शब्द बहुधा बेकार में प्रयुक्त होता है। जैसे, **इह बी आख दित्ता-सा ने**, उसने यह भी कहा था। मुझे इसका कोई उदाहरण नमूने में नहीं मिला। प्रश्न यह है कि ऐसे प्रसंग में **ने**, **जे** की तरह, सार्वनामिक प्रत्यय तो नहीं है? लहँदा में मध्यम पुरुष और अन्यपुरुष बहुवचन के लिए **ने** है, और यह नितान्त सम्भव है कि लाहौर में इसका प्रयोग एकवचन के लिए होता है। कश्मीरी में, जो कि लहँदा से बहुत कुछ सम्बद्ध है, अन्यपुरुष सर्वनाम के एकवचन के लिए **अन** का प्रयोग होता है।

[सं० २४]

भारतीय आर्य परिवार केन्द्रीय वर्ग

पंजाबी

रचना दुआब के उत्तर-पूर्व की बोली (जिला लाहौर, तहसील शरकपुर)

ਹਿੱਕ ਆਦਮੀਦੇ ਦੋ ਪੁਤ੍ਰ ਆਹੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਵਿੱਚੋਂ ਪਿਉਨੂੰ ਨਿੱਕੇ ਆਖਿਆ ਪਿਉ ਜੋ ਮੇਰਾ ਹਿੱਸਾ ਰਿਜ਼ਕ ਵਿੱਚ ਹੈ ਓ ਵੰਡ ਦੇ। ਉਸਨੇ ਅਪਨਾ ਮਾਲ ਦੁਹਾਂਨੂੰ ਵੰਡ ਦਿੱਤਾ। ਬਾਹਲੇ ਦਿਨ ਅਜਾਂ ਨਹੀਂ ਹੋਏ ਨਿੱਕੇਨੇ ਸਾਰਾ ਮਾਲ ਇਕੱਠਾ ਚਾ ਕੀਤਾ ਕਿਸੀ ਦੂਰ ਮੁਲਕ ਲੇ ਕੇ ਵਾਂਢਾ ਰਹਾ ਤੇ ਉਥਾਂ ਭੈੜੇ ਕੰਮਾਂ ਵਿੱਚ ਮਾਲ ਵਿੰਞਾਇਆ। ਜਿਸ ਵੇਲੇ ਹੱਛੋ ਮਾਲ ਉਸਨੇ ਲਾ ਲਿਆ ਵੱਤ ਉਸ ਮੁਲਕਦੇ ਵਿੱਚ ਬੌਂਹ ਕਾਲ ਪੈ ਗਿਆ। ਵੱਤ ਉਸਨੂੰ ਲੋੜ ਪਵਨ ਲੱਗੀ। ਵੱਤ ਓ ਗਿਆ ਉਸ ਮੁਲਕਦੇ ਹਿੱਕ ਸ਼ਾਹਰਦੇ ਆਦਮੀਦੇ ਨਾਲ ਨੌਕਰ ਰਾਹ ਪਿਆ। ਉਸਨੇ ਉਸਨੂੰ ਸੂਰਾਂਨੂੰ ਚਾਰਾਵਾਨ ਵਾਸਤੇ ਪੈਲੀਆਂ ਵਿੱਚ ਘੱਲਿਆ। ਜੇੜੇ ਛਿੱਲੜ ਸੂਰ ਖਾਂਦੇ ਆਹੇ ਓ ਵੀ ਢਿੱਡ ਰਾਜ਼ੀ ਹੋਕਰ ਭਰ ਲੈਂਦਾ। ਜਦ ਉਨਨੂੰ ਸੁਰਤ ਆਈ ਉਸ ਆਖਿਆ ਮੇਰੇ ਪਿਉਦੇ ਨੌਕਰ ਕਈ ਹਿਨ ਓ ਰੱਜ ਕੇ ਖਾ ਭੀ ਲੈਂਦੇ ਹਿਨ ਤੇ ਵਧਿਆ ਭੀ ਰਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਮੈਂ ਭੁੱਖ ਨਾਲ ਪਿਆ ਮਰਨਾਂ ਹਾਂ। ਮੈਂ ਉਠਿਸਾਂਗਾ ਤੇ ਵੱਧ ਪਿਉ ਕੋਲ ਵਾਂਦਾ ਰਹਾਂਗਾ ਤੇ ਉਨਨੂੰ ਆਖਾਂਗਾ ਪਿਉ ਮੈਂ ਖੁਦਾਦਾ ਗੁਨਾਹ ਭੀ ਕੀਤਾ ਤੇ ਤੇਰਾ ਭੀ ਕੀਤਾ ਮੈਂ ਇਸ ਗਲ਼ ਜੋਗਾ ਨਹੀਂ ਰੈਹ ਗਿਆ ਜੋ ਤੇਰਾ ਪੁਤ੍ਰ ਮੈਂ ਸਦੀਵਾਂ। ਮੈਂਨੂੰ ਵੀ ਅਪਨਾ ਹਿੱਕ ਨੌਕਰ ਚਾ ਜਾਨ। ਵੱਤ ਓ ਉਠਿਆ ਤੇ ਅਪਨੇ ਪਿਉ ਵਲੇ ਗਿਆ। ਅਜਾਂ ਓ ਢੇਰ ਦੂਰ ਆਹਾ ਉਨਦੇ ਪਿਉ ਉਸਨੂੰ ਵੇਖ ਲਿਆ ਉਨਨੂੰ ਤਰਸ ਆਇਆ ਤੇ ਭੱਜ ਵਗ ਗਿਆ ਤੇ ਉਨਨੂੰ ਗਲ਼ ਵਿਚ ਲਾ ਲਿਆ ਤੇ ਚੁੰਮ ਲਿਆ। ਪੁਤ੍ਰ ਉਨਨੂੰ ਆਖਿਆ ਪਿਉ ਮੈਂ ਖੁਦਾਦਾ ਗੁਨਾਹ ਭੀ ਕੀਤਾ ਹੈ ਤੇਰਾ ਭੀ ਕੀਤਾ ਹੈ ਤੇ ਹੁਨ ਤੇਰਾ ਪੁਤ੍ਰ ਸਦੀਵਾਂ ਜੋਗਾ ਨਹੀਂ। ਵੱਤ ਪਿਉਨੇ ਅਪਣੇ ਨੌਕਰਾਂਨੂੰ ਆਖਿਆ ਚੰਗੇ ਥਿਗੜੇ ਕੱਢ ਲੇ ਆਓ ਤੇ ਉਨਨੂੰ ਪਾ ਦੇਓ ਈਂਦੇ ਹੱਥ ਵਿੱਚ ਮੁੰਦਰੀ ਘੱਤੋ ਤੇ ਪੈਰਾਂ ਵਿੱਚ ਜੁੱਤੀ ਪਵਾਓ। ਆਓ ਖਾ ਲਈਏ ਤੇ ਰਾਜ਼ੀ ਹੋਈਏ ਏ ਮੇਰਾ ਪੁਤ੍ਰ ਮਰ ਗਿਆ ਹਾ ਜੀਂਦਾ ਹੋ ਗਿਆ ਹੈ ਤੇ ਖੜੀ ਗਿਆ ਆਹਾ ਤੇ ਲੱਭ ਪਿਆ। ਤੇ ਓ ਖੁਸ਼ ਹੋਵਨ ਲੱਗੇ॥

ਤੇ ਉਂਦਾ ਵੱਡਾ ਪੁਤ੍ਰ ਪੇਹਲੀਆਂ ਵਿੱਚ ਗਿਆ ਆਹਾ। ਜਿਸ ਵੇਲੇ ਓ ਆਇਆ ਤੇ ਘਰਦੇ ਨੇੜੇ ਆਇਆ ਉਸਨੇ ਗਾਵਨ ਤੇ ਨੱਚਣ ਸੁਣਿਆ। ਉਸ ਹਿੱਕ ਨੌਕਰਨੇ ਆਖਿਆ ਤੇ ਪੁਛਿਆ ਤੇ ਕੀਹ ਹੈ। ਉਸਨੇ ਉਨਨੂੰ ਆਖਿਆ ਤੇਰਾ ਭਿਰਾ ਆਇਆ ਹੈ ਤੇਰੇ ਪਿਉਨੇ ਨਿਆਜ਼ ਇਸ ਵਾਸਤੇ ਦਿੱਤੀ ਹੈ ਤੇਰਾ ਭਿਰਾ ਖੈਰ ਮੇਹਰ ਨਾਲ਼ ਆਇਆ ਹੈ। ਓ ਕਾਵੀਰ

ਹੋਇਆ ਤੇ ਅੰਦਰ ਨਹਾਂ ਜਾਂਦਾ। ਇਸ ਵਾਸਤੇ ਉੱਦਾ ਪਿਉ ਬਾਹਰ ਨਿਕਲ ਆਇਆ ਅਤੇ ਉੱਦੀ ਮਿੰਨਤ ਕੀਤੀ। ਉਸ ਪਿਉਨੂੰ ਆਖਿਆ 'ਦੇਖ ਮੈਂ ਬੌਹ ਵਰ੍ਹੇ ਤੇਰੀ ਖਿਦਮਤ ਕਰੇਂਦਾ ਰਿਹਾ ਹਾਂ ਤੇਰਾ ਆਖਿਆ ਕਦਾਂ ਮੈਂ ਨਹੀਂ ਮਿੱਟਿਆ ਤੇ ਹਿੱਕ ਲੇਲਾ ਵੀ ਨਾਂ ਦਿੱਤੋਈ ਅਪਨਿਆਂ ਬੇਲੀਆਂ ਨਾਲ ਮੈਂ ਖੁਸ਼ੀ ਕਰੇਂਦਾ। ਜਿਵੇਂ ਤੇਰਾ ਏ ਪੁਤ੍ਰ ਆਇਆ ਹੈ ਜਿਸ ਸਾਰਾ ਮਾਲ ਤੇਰਾ ਕੰਜਰੀਆਂ ਤੇ ਗਵਾਇਆ ਹੈ ਉੱਦੇ ਵਾਸਤੇ ਹੱਥੋਂ ਤੂੰ ਨਿਆਜ਼ ਦਿੱਤੀ। ਉਸਨੇ ਉਨ੍ਹਨੂੰ ਆਖਿਆ ਤੂੰ ਹਰ ਵੇਲੇ ਮੇਰੇ ਕੋਲ ਹੈਂ। ਜੇੜ੍ਹਾ ਮੇਰਾ ਮਾਲ ਹੈ ਸਾਰਾ ਤੇਰਾ ਹੀ ਹੈ। ਅਸਾਂਨੂੰ ਹਿੱਕ ਗਲ ਲਾਇਕ ਆਹੀ ਜੇ ਖੁਸ਼ੀ ਕਰੇਂਦੇ ਤੇ ਖੁਸ਼ ਹੋਂਦੇ ਇਸ ਵਾਸਤੇ ਕਿ ਭਿਰਾ ਤੇਰਾ ਮਰ ਗਿਆ ਆਹਾ ਔਰ ਵੱਤ ਜੀਂਵਦਾ ਹੋ ਗਿਆ ਹੈ ਓ ਖੜੀ ਗਿਆ ਆਹਾ ਤੇ ਲੱਭ ਪਿਆ ਹੈ॥

(नागरी रूपान्तर)

हिक्क आदमीदे दो पुत्र आहे। उन्हाँ विच्चों पिउनूं निक्के आखिया 'पिउ, जो मेरा हिस्सा रिज्क-विच्च है, ओ वण्ड-दे।' उसने अपना माल दुहाँनूं वण्ड-दित्ता। बाहले दिन अजाँ नहीं होए निक्केने सारा माल इकट्ठा चा-कीता, किसी दूर मुल्क ले-के वाँढा रहा, ते उथाँ भैड़े कम्माँ-विच्च माल विन्चाइआ। जिस वेले हब्भो माल उसने ला-लिआ, वत्त उस मुल्क दे विच्च बौंह काल पै-गिआ। वत्त उसनूं लोड पवन लग्गी। वत्त ओ गिआ, उस मुल्कदे हिक्क शाहरदे आदमीदे नाल नौकर राह-पिआ। उसने उसनूँ सूराँनूं चारा-वन वास्ते पैलीआँ-विच्च घल्लिआ। जेड़े छिल्लड़ सूर खाँदे-आहे, ओ वी ढिढ राजी हो-कर भर-लैंदा। जब उननूँ सुर्त आई, उस आखिआ, 'मेरे पिउदे नौकर कई हिन, ओ रज्ज-के खा भी लैंदे-हिन, ते वधिआ भी रहुँदा है। मैं भुक्ख नाल पिआ मरनाँ-हाँ। मैं उठिसाँगा ते वद्ध पिउ कोल वाँदा-रहाँगा; ते उननूं आखाँगा, "पिउ, मैं खुदादा गुनाह भी कीता तेरा भी कीता; मैं इस गल जोगा नहीं रैंह-गिआ जो तेरा पुत्र मैं सदीवाँ; मैंनूं वी अपना हिक्क नौकर चा-जान।" वत्त ओ उठिआ ते अपने पिउ वले गिआ। अजाँ ओ ढेर दूर आहा, उन्दे पिउ उसनूँ वेख-लिआ, उननूं तर्स आइआ, ते भज्ज वग-गिआ ते उननूं गल-विच ला-लिया, ते छुम लिआ। पुत्र उननूं आखिआ, 'पिउ, मैं खुदादा गुनाह भी कीता है, तेरा भी कीता-है, ते हुनो तेरा पुत्र सदीवाँ जोगा नहीं।' वत्त पिउने अपणे नौकराँनूं आखिआ, 'चङ्गे थिगड़े कड्ढ ले आओ ते उननूं पा-देओ; इंधे हत्थ-विच्च मुन्दरी घत्तो, ते पैराँ-विच्च जुत्ती पवाओ; आओ; खा-लइए, ते राजी होईए; ए मेरा पुत्र मर-गिआ-आहा, जींदा हो-गिआ-है, ते खड़ी गिआ आहा, ते लब्भ-पिआ।' ते ओ खुश होवन लग्गे।

ते उन्दा वड्डा पुत्र पेहलीआँ-विच्च गिआ-आहा। जिस बेले ओ आइआ, ते घरदे नेड़े आइआ, उसने गावन ते नच्चण सुणिआ। उस हिक्क नौकरने आखिआ ते पुछिया, 'ए कीह है?' उसने उननूँ आखिआ, 'तेरा भिरा आइआ-है। तेरे पिउने निआज इस-वास्ते दित्ती है, तेरा भिरा खैर-मेहर नाल आइआ-है।' ओ कावीर होइआ, ते अन्दर नहाँ जाँदा। इस -वास्ते उन्दा पिउ बाहर निकल-आइआ, अते उन्दी मिन्नत कीती। उस पिउनूँ आखिआ, 'देख, मैं बौंह वर्हे तेरी खिदमत करेंदा रिहा-हाँ, तेरा आखिआ कदाँ मैं नहीं सिट्टिआ, ते हिक्क लेला वी नाँ दित्तोई, अपनिआ बेलीआँ-नाल मैं खुशी करेंदा। जिवें तेरा ए पुत्र आइआ-है, जिस सारा माल तेरा कन्जरीआँ-ते गवा-इआ-है; उन्दे वास्ते हत्थों तूँ निआज़ दित्ती।' उसने उननूँ आखिआ, 'तूँ हर बेले मेरे कोल है; जेड़ा मेरा माल है, सारा तेरा-ही है; असाँनूँ हिक्क गल लाइन आही, जे खुशी करेंदे ते खुश होंदे; इस वास्ते कि भिरा तेरा मर गिआ आहा, और वत्त जींवदा हो-गिआ-है; ओ खड़ी गिआ-आहा, ते लब्भ-पिआ-है।'

(अनुवाद)

एक आदमी के दो बेटे थे। उनमें से बाप को छोटे ने कहा, 'पिता, जो मेरा हिस्सा सम्पत्ति में है, वह बाँट दे।' उसने अपनी सम्पत्ति दोनों को बाँट दी। बहुत दिन अभी नहीं हुए छोटे ने सारी सम्पत्ति इकट्ठी कर ली, किसी दूर देश लेकर जाता रहा, और वहाँ बुरे कामों में सम्पत्ति खो दी। जिस समय सब सम्पत्ति उसने लगा दी तब उस देश के अन्दर बहुत अकाल पड़ गया। तब उसे आवश्यकता पड़ने लगी। तब वह गया, उस देश के एक शहरी आदमी के पास नौकर रह पड़ा। उसने उसको सूअरों के चराने के लिए खेतों में भेजा। जो छिलके सूअर खाते थे, (उनसे) वह भी पेट राजी होकर भर लेता। जब उसे होश आया, उसने कहा, 'मेरे बाप के यहाँ नौकर कई हैं, वे पेट भरकर खा भी लेते हैं और फालतू भी (बच) रहता है। मैं भूख से पड़ा मरता हूँ। मैं उठूँगा और फिर बाप के पास जाता रहूँगा; और उसको कहूँगा, 'पिता, मैंने परमेश्वर का पाप भी किया और तेरा भी किया; मैं इस बात के योग्य नहीं रह गया कि तेरा पुत्र मैं कहलाऊँ; मुझे भी अपना एक नौकर जान ले।' तब वह उठा और अपने बाप की ओर गया। अभी वह बहुत दूर था, उसके बाप ने उसको देख लिया, उसको दया आयी, और दौड़कर चल पड़ा और उसको गले लगा लिया और चूम लिया। पुत्र ने उसको कहा, 'पिता, मैंने भगवान् का पाप भी किया है, तेरा भी किया है, और अब तेरा पुत्र कहलाने योग्य नहीं।' तब बाप ने अपने नौकरों को

कहा, 'अच्छे (अच्छे) कपड़े निकाल लाओ और इसको पहना दो; इसके हाथ में अँगूठी डालो, और पैरों में जूता पहनाओ; आओ खायें और खुश हों; यह मेरा बेटा मर गया था, जिन्दा हो गया है, और खो गया था, और मिल गया।' और वे खुश होने लगे।

तब उसका बड़ा बेटा खेतों में गया (हुआ) था। जिस समय वह आया और घर के निकट पहुँचा, उसने गाना और नाचना सुना। उसने एक नौकर से कहा और पूछा, 'यह क्या है?' उसने उसको कहा, 'तेरा भाई आया है। तेरे बाप ने भोज इसलिए दिया है, तेरा भाई कुशलपूर्वक आया है।' वह क्रुद्ध हुआ, और भीतर नहीं जाता (था)। इसलिए उसका बाप बाहर निकल आया, और उसकी मिन्नत की। उसने बाप को कहा, 'देख, मैं बहुत बरस तेरी सेवा करता रहा हूँ; तेरी आज्ञा का कभी मैंने उल्लंघन नहीं किया, और एक मेमना भी (तूने) न दिया, अपने साथियों के साथ मैं खुशी मनाता। जिस तरह तेरा यह पुत्र आया है, जिसने सारी सम्पत्ति वेश्याओं में गँवा दी है, उसके लिए उलटे तूने भोज किया।' उसने उसको कहा, 'तू हर वक्त मेरे पास है, जो मेरी सम्पत्ति है, सारी तेरी ही है; हमें एक बात उचित थी कि खुशी मनाते और खुश होते, इसलिए कि भाई तेरा मर गया था, और फिर जिन्दा हो गया है, वह खो गया था, और मिल गया है।'

सियालकोट, पूर्वी गुजरांवाला और उत्तरपूर्वी गुजरात की पंजाबी

लहँदा और पंजाबी के बीच की परम्परागत सीमा-रेखा गुजरात में पब्बी पर्वत श्रेणी के उत्तरी सिरे से शुरू होती है, और रामनगर के पास गुजरांवाला में प्रवेश करती हुई उस ज़िले को दो लगभग बराबर भागों में विभाजित करती है। इस रेखा से पूर्व के क्षेत्र के अन्तर्गत सारा सियालकोट, गुजरांवाला का पूर्वी आधा भाग और उत्तरपूर्वी गुजरात है। इसके पूर्व में गुरदासपुर की माझी पंजाबी, और दक्षिण में पश्चिमी लाहौर की मिश्रित बोली है जिसका वर्णन अभी अभी किया गया है।

इस क्षेत्र की बोली का पूर्ण वर्णन गत पृष्ठ १५८ पर संदर्भित ग्राहम बेली और कम्मिंग्स के ग्रन्थों में हुआ है। यह पश्चिमी लाहौर की बोली से बहुत कुछ मिलती-जुलती है, और नमूने के तौर पर मैं फ़ारसी लिपि में सियालकोट से प्राप्त एक लोककथा, अक्षरान्तर और अनुवाद सहित दे रहा हूँ।

नमूने में की निम्नलिखित विशेषताओं का ध्यान रहे। ये लगभग सभी विशेषताएँ लहँदा के प्रभाव के कारण हैं। बलाघात-पूर्ण अक्षर के बाद, और अन्यत्र भी, **ह्** ध्वनि का लोप करने की प्रबल प्रवृत्ति है। जैसे **राहे**, रहे, के स्थान पर **राए**; **ए** या हे, है, इत्यादि। हमें आदर्श पंजाबी के -ना (-दा की जगह) वाले वर्तमान कृदन्त का उद्भव **देंदा** या **देन्ना**, देता, शब्द में मिलता है। सारे भारतीय आर्य देश में, अनुनासिक से पूर्ववर्ती **द** का उच्चारण विकल्प से **न** किया जा सकता है।

संज्ञाओं के रूपान्तर में, सम्बन्ध कारक के परसर्ग का व्यवहार ऐसा ही होता है जैसा लहँदा में। इस प्रकार हमें **दे** की जगह **दिआँ** या **देआँ**, पुल्लिंग बहुवचन से मेल खाता हुआ मिलता है।

सर्वनामों में कुछ अनियमितताएँ हैं। 'हमारा' के लिए **साड्डा**, **असोड्डा** या **असाड्डा** है (बेली **साड्डा** देते है)। 'तुम्हारा' के लिए **तुसाड्डा** या **तोहाड्डा** है (बेली **तुहाड्डा** देते हैं)। अन्यपुरुष का तिर्यक् रूप एकवचन **ओस** है (जैसे **इह**, यह का तिर्यक् एकवचन **एस** है), और इसका तिर्यक् बहुवचन **ओनाँ** या **ओहनाँ**। **जेड़ा** या जेहड़ा, 'जो' के लिए है, और इसका तिर्यक् एकवचन **जिस**, या मालवाई रूप जिन, होता है।

अस्तित्ववाची क्रिया के निम्नलिखित रूप आते हैं—**आँ** या **हाँ**, मैं हूँ, हम हैं; **एँ**, तू है; **ए** या **हे**, वह है; **साण** या **हैसाण**, वे थे।

और अधिक विवरण के लिए पाठक का ध्यान पहले संदर्भित व्याकरणों में दिये गये पूर्ण ब्यौरे की ओर दिलाया जाता है।

[सं० २५]

भारतीय आर्य परिवार केन्द्रीय वर्ग

पंजाबी

रचना दुआब के उत्तर-पूर्व की बोली (जिला सियालकोट)

ساڈا وڈا مہر مٹھہ ہویا اے اوسنے آکھیا کہ میرا ناں جہان
وچ مشہور رئے - بادشاہ اکبر نے اوسدے پاسوں لڑکیدا ساک منگیا -
اوس اگوں آکھیا توں بادشاہ اے - میں زمیندار آں - ساڈا تساڈا بر
نہیں مچدا - اوس آکھیا تینوں ایس گل وچ کی اے - میرا دل
ایا اے - جس وقت اوسنے ساک دینا چا کیتا تاں اوسنے آکھیا میرے
گھر آڈھوک - اوناں بد میل منڈل آکٹھا کیتا - اوس آکھیا بادشاہ
میری لڑکیدا ساک منگدا اے - توہاڈی کی صلاح ہے - کیسے آکھیا
دینے ہاں تے کیسے آکھیا نہیں دیدیندے - باھتیاں نے کہیا کہ دیندے
ہاں - اوناں ساک دیدتا - بادشاہ آ ڈھوکا - مہر مٹھہ نے سارے
بھرا بلاے روٹی کھوان واسطے اور جنجدی خدمت واسطے - کجھ جت
بادشاہ ول گئے - جت وقت وہ دو راتیں مہر مٹھہ دے گھر رئے اوتھے
کیسے آکھیا کہ کجھ دیئے کہ آساندا ناں رئے - بادشاہ ول جیڑے لوک
آے ساں اوناں نال وی مراسی خدمت واسطے گئے ساں - ہور جیڑے
لوک مہر مٹھہ ول میل آے ساں اوناں نال وی مراسی آے ساں -

ھن جیڑے ویلے کوٹھے تے بہہ کے دبرات کرن لگے رپیے سکہ اکبر بادشاہ
دے سان ۔ مہر مٹھہ اوناں لوکاں دیاں مراسیاں نوں جہڑے اوس ول
میل آے سان اک اک رپیا دتا ۔ ہور جہڑے جٹ بادشاہ دے
نال جنجی آے سان اوناں دیاں مراسیاں نوں آٹھ آٹھ آنے دتے کہ اوناں
اساڈی گھٹدی کیتی اے ۔ مڑ ویاہ کے بادشاہ نوں ڈولا دتا ٭

(नागरी ८)

साड्डा वड्डा मह्‌र मिठा होइआ-ए। ओसने आखिआ कि, 'मेरा नाँ जहान-विच मशहूर रए।' बादशाह् अकबर ने ओसदे पासों लड़कीदा साक मङ्गिआ। ओस अग्गों आखिआ, 'तूँ बादशाह् एँ; मैं ज़मींनदार आँ। साड्डा तुसाड्डा बर नहीं मिचदा।' ओस आखिआ, 'तैनूँ एस गल-विच की ए? मुरा दिल आइआ-ए।' जिस वक्त ओसने साक देना चा-कीता ताँ ओसने आखिआ, 'मेरे घर आ ढुक्क।' ओनाँ तद मेल-मण्डल अकट्ठा कीता। ओस आखिआ, 'बादशाह् मेरी लड़कीदा साक मङ्गदा-ए। तोहाड्डी की सलाह् है?' किसे आखिआ, 'देन्ने-हाँ', ते किसे आखिआ, 'नहीं दे देंदे।' बहुतिआँने कहिआ कि, 'देंदे-हाँ।' ओनाँ साक दे-दित्ता। बादशाह् आ-ढुक्का। महूर मिठेने सारे भिरा बुलाए, रोटी खवान वास्ते और जन्जदी खिदमत वास्ते। कुज जट बादशाह्-वल गए। जित वक्त वोह् दो रातीं मह्‌र मिठेदे घर रए, ओथे किसे आखिआ कि 'कुज देइए, कि असाड्डा नाँ रए।' बादशाह् वल जेड़े लोक आए-साण, ओनाँ नाल वी मिरासी खिदमत वास्ते गए-साण; होर जेड़े लोक मह्‌र मिठे वल मेल आए-साण, ओनाँ नाल वी मिरासी आए-साण। हुण जेड़े वेले कोठे-ते बहि्-के खैरात करन लग्गे, रुपए सिक्का अकबर बादशाह दे साण; मह्‌र मिठे ओनाँ लोकाँदेआँ मिरासीआँनूँ जेह्‌ड़े ओस वल मेल आए-साण, इक-इक रुपैआ दित्ता; होर जेह्‌ड़े जट बादशाह् दे नाल जन्जी आए-साण, ओनाँदेआँ मिरासीआँनूँ अठ-अठ आने दित्ते कि, 'ओनाँ असाड्डी घटदी कीती-ए।' मुड़ विवाह्-के बादशाहनूँ डोला दित्ता।

(अनुवाद)

हमारा बुज़ुर्ग महर मिठा हुआ है। उसने कहा कि 'मेरा नाम संसार में प्रसिद्ध रहे।' बादशाह अकबर ने उसके यहाँ से लड़की का नाता माँगा। उसने आगे से (उत्तर में) कहा, 'तू बादशाह है, हमारी तुम्हारी बराबरी नहीं है।' उसने कहा, 'तुझे इस बात में क्या ? मेरा दिल आ गया है।' जिस समय उसने नाता देना (स्वीकार) कर लिया तो उसने कहा, 'मेरे घर बरात लाओ।' उसने तब घराती (बन्धु-बान्धव) इकट्ठे किये। उसने (उनसे) कहा, 'बादशाह मेरी लड़की का नाता माँगता है। तुम्हारी क्या सलाह (सम्मति) है?' किसी ने कहा, 'हम देते हैं।' और किसी ने कहा, 'नहीं देते।' बहुतों ने कहा कि, 'देते हैं।' उसने नाता दे दिया। बादशाह बरात लेकर आ गया। महर मिठा ने सब भाई बुलाये, खाना खिलाने के लिए और बरात की सेवा के लिए। कुछ जाट बादशाह के पक्ष में गये। जिस समय वे दो रात महर मिठा के घर (में) रहे, वहाँ किसी ने कहा कि, 'कुछ दें ताकि हमारा नाम हो।' बादशाह के पक्ष से जो आदमी आये थे, उनके साथ भी मीरासी[1] सेवा के लिए गये थे; और जो लोग महर मिठे के पक्ष में घराती आये थे, उनके साथ भी मीरासी आये थे। अब जिस समय छत पर बैठकर दान करने लगे, रुपये का सिक्का अकबर बादशाह (के नाम का) था; महर मिठे ने उन लोगों के मीरासियों को जो उसके (अपने) पक्ष में घराती आये थे, एक-एक रुपया दिया; और जो जाट बादशाह के साथ बराती (होकर) आये थे, उनके मीरासियों को आठ-आठ आने दिये कि 'उन्होंने हमारा निरादर किया है।' इसके बाद विवाह (कार्य) करके बादशाह को (लड़की का) डोला दिया।

पूर्वी मंटगुमरी की पंजाबी

लहँदा में विलीयमान पंजाबी के एक और उदाहरण के रूप में मैं यहाँ अपव्ययी पुत्र की कथा के उस भाषान्तर का उद्धरण प्रस्तुत कर रहा हूँ जो मंटगुमरी जिले की पाकपट्टन तहसील से प्राप्त हुआ है। विशेष टिप्पणी की आवश्यकता नहीं है। भाषा वैसी ही है जैसी पश्चिमी लाहौर और सियालकोट की।

१. मीरासी भिखारी-भाटों की एक जाति। जो विवाहों में सम्मिलित होते हैं और कुछ पा जाते हैं।

[सं० २६]

भारतीय आर्य परिवार केन्द्रीय वर्ग

पंजाबी

बारी दुआब के पूर्व-मध्य की बोली (ज़िला मंटगुमरी, तहसील पाकपट्टन)

हिक्क आदमीदे दो पुत्तर आहे। उन्हाँदे विच्चूँ लौढे पुत्तर पेओनूँ आखिआ, 'पेओ, माल ते रिजकदा हिस्सा जेहड़ा मैनूँ आँउँदा है, मैनूँ देह।' तदाँ पेओ माल ते रिजक उन्हाँनूँ वण्ड दित्ता। थोड़े दिहाँ-तूँ पिच्छे लौढे पुत्तर सारा कुझ हिकट्ठा करके हिक्क दुरेडे देस चला-गिआ। उत्थे आपदा माल रिजक भैड़े कम्माँ-विच लुटा-दित्ता। जिस वेले पल्ले कुझ नाँ रिहा, ताँ उस देस-विच वड्डा काल पै-गिआ। उह टिक्की-तूँ वी आजत हो गिआ; ताँ उस देस-विच हिक्क वड्डे आदमींदे कोल गिआ। उस वड्डे आदमीं उसनूँ आपदी वाहीआँ-विच सूराँ चरावणदा छेडू वणा-दित्ता। उस-दा दिल एह आखदा-हा, 'जेह्ड़ीआँ शईं सूर खांदे-हैन, उन्हाँदे नाल आपदा ढिढ भराँ, जो उसनूँ कोई नहीं देंदा-आह।

(अनुवाद)

एक आदमी के दो बेटे थे। उनमें से छोटे बेटे ने बाप से कहा, 'पिता, सम्पत्ति और धन का हिस्सा जो मुझे आता है, मुझे दे।' तब बाप ने धन-सम्पत्ति उनको बाँट दी। थोड़े दिनों पीछे छोटा बेटा सब कुछ इकट्ठा करके एक दूर के देश को चला गया। वहाँ अपनी धन-सम्पत्ति बुरे कामों में लुटा दी। जिस समय पल्ले कुछ न रहा, तो उस देश में बड़ा अकाल पड़ गया, वह रोटी के लिए भी असमर्थ हो गया; तब उस देश में एक बड़े आदमी के पास गया। उस बड़े आदमी ने उसको अपने खेतों में सूअरों को चरानेवाला चरवाहा बना दिया। उसका दिल यह कहता था, 'जो चीज़ें सूअर खाते हैं, उनसे अपना पेट भरूँ', क्योंकि उसको कोई (कुछ) नहीं देता था।

डोगरा अथवा डोगरी

मैं पंजाबी की डोगरी बोली के दो नमूने दे रहा हूँ। दोनों जम्मू राज्य से प्राप्त हुए हैं। बोली के विवरण के लिए देखें, गत पृष्ठ ६१ इत्यादि।

उदाहृत बोली से गुरदासपुर और सियालकोट की डोगरी कुछ भी भिन्न नहीं है, यद्यपि इन दोनों ज़िलों में, जैसा कि अपेक्षित भी है, यत्र-तत्र आदर्श पंजाबी के रूपों का व्यवहार करने की प्रवृत्ति अवश्य है।

जम्मू का पहला नमूना अपव्ययी पुत्र की कथा का भाषान्तर है। दूसरा एक छोटा-सा लोकगीत है। प्रत्येक नमूना पहले चम्बा के टाकरी अक्षरों में दिया जा रहा है, और इसके बाद साधारण डोगरी लिखावट के सामने नागरी लिपि में रूपान्तर और उसके नीचे (हिन्दी) अनुवाद रखा जा रहा है।

[सं० २७]

भारतीय आर्य परिवार केन्द्रीय वर्ग

पंजाबी

डोगरी बोली (जम्मू राज्य)

पहला उदाहरण

(चम्बा के टाकरी अक्षरों में)

[illegible]

पहला उदाहरण [क]

(जम्मू के डोगरी अक्षरों में)

(नागरी अक्षरों में, हिन्दी अनुवाद सहित)

एक (इक) आदमीदे दो पोत्तर (पुत्तर) थे। उदे (उँदे) वीचा (विच्च)
एक आदमी के दो पुत्र थे। उनमें से
निकड़ैने बाबा-की (बब्बे-की) आखेआ (आखिआ) जे, 'हे बापो (बापू)-जी,
छोटे ने बाप को कहा कि, 'हे बापूजी,
जाएदातीदा जे हेसा (हिस्सा) मेकी (मिकी) पोजदा (पुजदा)
सम्पत्ति का जो हिस्सा मुझे प्राप्त होता
हेए (है), सहे (सै) मेकी (मिकी) दई-दओ (देई-देओ)।' ता (ताँ) उसनै माल
है, सो मुझको दे दो।' तब उसने सम्पत्ति
उने-की वड़ी-दता (वण्डी-दित्ता)। अतै थुड़े (थोड़े) देण (दिणे) पेछे (पिच्छों)
उन्हें बाँट दी। और थोड़े दिन पीछे
नेकड़ै (निकड़ै) पुतरने (पुत्त-रैने) सब-केजा (किझ) कण्ठा (किट्ठा) करी,
छोटे पुत्र ने सब कुछ इकट्ठा करके,
दूर देसे-दा पैडा (पैंडा) कीता, अतै उथाँ (उथे)
दूर देश की यात्रा की, और वहाँ
अपना माल लुच-पणे-कने (कन्ने) उडाई-दता (दित्ता)।
अपनी सम्पत्ति बदमाशी में उड़ा दी।
अते जद सब खर्च करी-चुका (चुक्किआ), उस
और जब सब खर्च कर चुका, उस
मुल्ख (मुल्खै)-विच बडा काल पी-गेआ (पै- गिआ),
देश में बड़ा अकाल पड़ गया, और
अते ओह कङ्गाल होण लगा (लग्गिआ); अते उस मोल्खाद (मुल्खैदा)
वह कंगाल होने लगा; और उस देश के
इक बडे जाएदती-वालेदे जाई लगा (लग्गिआ)।
एक बड़े अमीर के जाकर लग गया।

(नागरी अक्षरों में, हिन्दी अनुवाद सहित)

ओसनै (उसनै) ओसी (उसी) खेत्रें-विच सूर चारनै भेजा (भेजिआ)
उसने उसको खेतों में सूअर चराने भेजा
अतै ओसदी (उसदी) मर्जी थी जे उने सेकड़े (सिकड़े)-कने (कन्ने)
और उसकी इच्छा थी कि उन छिलकों से
जेड़े (जेह्ड़े) सूर खादेन (खाँदेन) अपणा ढह्ड (ढिढ) भरे।
जो सूअर खाते हैं अपना पेट भरे,
जे कुई (कोई) ओसी (उसी) नही (नहीं) दिदा (दिन्दा)-था। तद होछअ (होशे)
जो कि कोई उसे नहीं देता था। तब होश
विच आए आ (आइआ) आखाआ (आखिआ), 'मेरे बाबदे (बब्बेदें) किनै (किन्नै)
में आया, कहा, 'मेरे बाप के (यहाँ) कितने
मजोरा (मजूरें)-की मती रुटी (रुट्टी) हुअ (है), अते आऊँ भूखा
मजदूरों को ढेर रोटी (मिलती) है और मैं भूखा
मराँ। मेहा (में) उठीए (उठीएँ) अपणे बाबे (बब्बै) -कछ जाअ (जाङ)।
मरूँ। मैं उठकर अपने बाप के पास जाऊँगा।
अतै उसी आखाङ (आखङ) जे, हे बाबू-जी (बापू-जी), मेहा (मे)
और उसे कहूँगा कि, हे बापू जी, मैंने
आस्मानादा (आस्मानीदा) अतै तुसाड़ा पराद कीत (कीता) हो (है);
आकाश (भगवान्) का और तुम्हारा अपराध किया है;
इस जुग (जोग) नही (नहीं) जे भरी (भिरी) तुसाड़ा पोतर (पुत्तर) खुअ (ख्वाँ);
इस योग्य नहीं कि फिर तुम्हारा बेटा कहलाऊँ;
मँकी (मिकी) अपणे मजोर (मजूरे)-विचा इक जनेह (जिनेहा) बनाउ (बनाओ)।' तअ
मुझे अपने मजदूरों में एक के समान बना लो।' तब
(ताँ) ओठीअए (उठीए) अपणे बाब (बब्बे)-पास चलेआ (चलिआ); तअ (ते)
उठकर अपने बाप के पास चला, और

पहला उदाहरण [ग]

(जम्मू के डोगरी अक्षरों में)

(नागरी अक्षरों में, हिन्दी अनुवाद सहित)

अजे दूर था जे उसी देखा (देखिआ); उसदे
अभी दूर था कि उसे देखा; उसके
बबा (बब्बे)-की तर्स आ-एआ (आइआ), अतै दरुड़ी (दौड़ीए) उसी गले-
बाप को दया आयी और दौड़कर उसे गले
कने (कन्ने) पई-लते (लई-लीता), अतै मता चुमिआँ। पोतरे (पुत्तरै)-
(के साथ) लगा लिया, और बहुत चूमा।
ने उसी अखाआ (आखिआ) जे 'हे बापू-जी, मेह (मे)
पुत्र ने उसे कहा कि 'हे बापू जी, मैंने
आस्माणा (आस्माणी) अते तोलड़ा (तुसाड़ा) प्राद कीता, अतै होण (हुन) इस
आकाश (भगवान्) का और तुम्हारा अपराध किया, और अब इस
जुग (जोग) नही (नहीं) जे भरी (भिरी) तोलड़ा (तुसाड़ा) पोतर (पुत्तर) खुआ (खवाँ)।'
योग्य नहीं कि फिर तुम्हारा पुत्र कहलाऊँ।'
बावऽने' (बब्बेने) अपणे नौकरै (नौकरे)- की आखेआ (आखिआ) जे 'खरे
बाप ने अपने नौकरों से कहा कि 'अच्छी
थुँ (थों) खरी पोछक (पोशाक) कडी (कड्डी) लईआउ (लिआओ), अतै उसी लउआउ (लोआओ);
से अच्छी पोशाक निकाल लाओ, और उसे पहनाओ;
हुर (होर) उसदे हथ छाठी (छूठी), अतै पेरे (पैरे) जोड़ा लउआउ (लोआओ),
और उसके हाथ (में) अँगूठी और पैरों में जूता पहनाओ,
अतै अस खाचे (खाचै) ते खोछी (खुशी) मनहचै (मनाचै), की (कि) जे
और हम खायें और खुशी मनायें; क्योंकि
मारा (मेरा) एह पोतर (पुत्तर) मुएदथा (मोइदा-था), होन (हुन) जी पैआ (पेआ); गुअचा (गोआचा)-
मेरा यह बेटा मर गया था, अब जी पड़ा; खो
दा था, होन (हुन) मेलेआ (मिलिआ)।' ता ओह खुछी (खुशी) कर्णे (करन) लगै (लगे)।
गया था, अब मिला।' तब वे खुशी मनाने लगे।

(नागरी अक्षरों में, हिन्दी अनुवाद सहित)

अतै उसदा बड पोतर (पुत्तर) खैतर (खेत्रै) -वच (विच) था। जा (जाँ) घर (घरे)-
और उसका बड़ा बेटा खेत में था, जब घर के
कछ आएआ (आइआ), गाने तै नच्नैदी बलेल सोनी (सुनी)। तअ (ताँ)
निकट आया, गाने और नाचने का शोर सुना। तब
एक (इक) नउकरा (नौकरे)-की सदेआ (सदिआ), तै पोछा (पुछिआ) जे 'एहे (एह)
एक नौकर को बुलाया और पूछा कि 'यह
कहे (केह)?' उसनै उसी आखेआ (आखिआ) जे, 'तेरा भरह (भरा) आएआ (आइआ),
क्या?' उसने उसको कहा कि 'तेरा भाई आया,
तै तेरे बाबने (बब्बेने) बड़ी धाह्म (धाम) कीती, इस करी
और तेरे बाप ने बड़ा भोज किया (है), इस करके
जे ओह राजी-बाजी आई-गेआ (गिआ)।' ओस्नै (उसनै) रहु (रोह)
कि वह राजी-बाजी आ गया।' उसने रोष
करैआ (करिआ); नही (नहीं) चैहा (चाहिआ) जे अन्दर जाए। ता (ताँ) उसदै
किया; नहीं चाहता था कि भीतर जाये। तब उसके
बाबने (बब्बेने) बाह्रै आई ओसी (उसी) मनाए (मनाइआ)। ओस्नै (उसनै) बाबे (बब्बे)-
बाप ने बाहर आकर उसे मनाया। उसने बाप
की ओतर (उत्तर) देता (दित्ता), देख (दिख), एत्नै (इत्नै) बरे (बरें) दा आऊँ तेरी
को उत्तर दिया, 'देख, इतने वर्षों से मैं तेरी
टह्ल करणाँ-हे (करना-हाँ), अतै कदै (कदें) तेरे होक्मे (हुक्मे) बाहर नही (नहीं) होएआ (होइआ),
सेवा करता हूँ, और कभी तेरी आज्ञा के बाहर नहीं हुआ;
तआ (ताँ) तोद (तुध) कदै (कदें) एक (इक) बकरीबा बचा (बच्चा) माकी (मिकी)
भी (बी) तू ने कभी एक बकरी का बच्चा मुझे

(नागरी अक्षरों में हिन्दी अनुवाद सहित)

नही (नहीं) देता (दित्ता) जे अपणं जारं (यारें) कनै (कन्नै) खुछी (खुशी) मनाँ;
नहीं दिया, कि अपने मित्रों के साथ खुशी मनाऊँ;
अतै जदे (जद) तेरे (तेरा) एह पोतर (पुत्तर) आएआ (आइआ) जेसनै'ए (जिसनै)
और जब तेरा यह पुत्र आया, जिसने
तेरा माल कन्जरा (कन्जरे) है उडा (उडाइ)-दुद (दित्ता) (सिओ)। उस्द (उसदे) वसत (वास्ते)
तेरी सम्पत्ति वेश्याओं में उड़ा दी, उसके लिए
बड़ी धहम (धाम) कीती।' उसनै ओसी (उसी) आखा (आखिआ), है पोतर (पुत्तर),
बड़ा भोज किया।' उसने उसे कहा, 'हे पुत्र,
तू (तूँ) सदा मेरै कछ ह (हैं), तै जे-केज (किज्झ) मेर (मेरा) ह (है),
तू सदा मेरे पास है, और जो कुछ मेरा है,
सह (सेह) तेर (तेरा) है। भरी (फिरी खुछी) (खुशी) मनाई तै खुछी (खुशी) करणी
सो तेरा है। फिर खुशी मनाना और खुश होना
चही-दी-है; की जे तेरा एहे भरह (भरा) मुए (मोई)-
चाहिए; क्योंकि तेरा यह भाई मरा
द (दा)-था, सह (सेह) जी'ई (जी) पएआ (पेआ)-है, 'अतै गुआची (गोआची)
हुआ था, सो जी पड़ा है; और खो
गए'आ (गिआ)-द'आ-था, सह (सेह) होण (हुण) मली (मिली)-ग'आ (गिआ)-है।
गया था, सो अब मिल गया है।'

(नागरी अक्षरों में)

हाँ-रे, जीआ घह्‌बरओंदा (घबराओंदा), चेत (चित) मेरा
गदीए-की (गद्दीए-की) चउह्‌दा (चाउँदा) केत (किल) जेद (विध)
मिलए (मिलिए) गदीए-की (गद्दीए-की) जाए-के (जाई-के)? ॥१॥

हाँ-रे, पन्ज ठग चुराँ (चोराँ) गदीएदा (गद्दीएदा); रहा (राह्)
भही (भी) लुट्-लैदे (लँदे); ताअरे (तारे) गेन्दी (गिन्दी)
नु (नूँ) रँएन (रैण) बेहवै (विहावै) ॥२॥

हाँ-रे, इछ्क (इश्क) ओनुखा (अनोखा) [illegible] (गद्दीएदा)
होएआ (होइआ); कैत (कित) बेद (वि[illegible]) [illegible] [illegible]जए)
गदीएकी (गद्दीएकी) जाअ-कै (जाई-के) ॥३॥

हाँ-रे, कर-कै (के) म्हह्‌बता (मुहब्बत) [illegible]
राह् वैच (विच) रहदे (रहन्दे); तारे गेन्दी [illegible] [illegible]) नो (नूँ) रेहण
(रैण) बैहावे (बिहावे) ॥४॥

(अनुवाद)

हाँ रे, जी घबराता है, चित्त मेरा
गदी[1] को चाहता है; किस विधि मिले
गदी को जाकर? ॥१॥
हाँ रे, पांच ठग-चोर[2] गदी को
रास्ते में भी लूट लेते हैं; (इधर) तारे गिनती
की रात बीत गयी ॥२॥
हाँ रे, प्रेम अनोखा बहू को
गदी का हुआ है; किस विधि मिले
गदी को जाकर ॥३॥
हाँ रे, करके प्यार पुरुष से
राह में (प्रतीक्षा में) रहती है; तारे गिनती
की रात बीत गयी ॥४॥

१. पहाड़ी गडरियों की एक जाति। यहाँ बोलनेवाली गदी की पत्नी है।
२. पाँच विषय—काम, क्रोध, अहंकार, लोभ, मोह।

कण्डिआली

जम्मू राज्य के आग्नेय कोण में रावी नदी सीमा बनाती है। दूसरी ओर पर्वतीय प्रदेश है जिससे पंजाब के ज़िला गुरदासपुर का ईशान कोण बनता है। इस जिले की मुख्य भाषा तो पंजाबी है, किन्तु उक्त प्रदेश में और उसके आसपास निम्नलिखित पहाड़ी बोलियाँ बतायी गयी हैं—

		बोलने वालों की संख्या
गूजरी	.	६०,०००
डोगरी	.	६०,०००
कण्डिआली	.	१०,०००
	कुल जोड़	१,३०,०००

इसमें गूजरी को पहाड़ी भाषाओं के अन्तर्गत लिया जायगा। डोगरी का विवरण अभी पीछे दिया गया है। कण्डिआली रावी के निकटस्थ शाहपुर-कण्डी के आस-पास के प्रदेश की बोली है। यह कोई अलग बोली नहीं है, केवल साधारण डोगरी है जिसके साथ आदर्श पंजाबी घुल-मिल गयी है। इसका कोई लम्बा नमूना देना अनावश्यक है। इसका लक्षण जताने के लिए अपव्ययी पुत्र की कथा के भाषान्तर से कुछ वाक्य दे देना पर्याप्त होगा। यह कहना कठिन है कि 'ए' को पंजाबी की तरह दीर्घ लिखना चाहिए या डोगरी की तरह मात्रा-चिह्न के बिना। मैंने डोगरी पद्धति का अनसरण किया है।

[सं० २९]

भारतीय आर्य परिवार केन्द्रीय वर्ग

पंजाबी

कण्डिआली बोली (जिला गुरदासपुर)

कुसे मनुक्खेदे दउँ पुत्तर थे। उन्हाँ-बिच्चों लौकड़ेने वब्बे-की आखिआ, 'बापू-जी, मे-की मेरा घरेदा हिस्सा दै-देओ।' उनीं उन्हाँ-की रसोटी वण्डी दित्ती। थोरियाँ दिनाँ पिछ्छों लौकड़े पुत्तरेने सारी रसोटी किट्ठी कित्ती, कुसे दूर मुल्के-की चली-गेआ। उत्थँ उँनीं लुच-पने-विच सव-किछ (उच्चारण किश) गवाई-अड़िआ। जदूँ ऊदे कछ किछ (किश) बी नहीं रेहा, ताँ उत्थैं मता काल पई-गिआ। उस-की भुक्ख पई-गई, उस पासेदे कुसे सह्‌रीए-कछ गेआ। उनीं उस-की सूराँदी गवालिआ लाइ-दित्त।

(अनुवाद)

किसी आदमी के दो बेटे थे। उनमें से छोटे ने बाप को कहा, 'बापूजी, मुझे मेरा घर का हिस्सा दे दो।' उसने उनको सम्पत्ति बाँट दी। थोड़े दिन पीछे छोटे बेटे ने सारी सम्पत्ति इकट्ठी की, किसी दूर देश को चला गया। वहाँ उसने बदमाशी में सब कुछ गँवा दिया। तब उसके पास कुछ भी न रहा, तो वहाँ बड़ा अकाल पड़ गया। उसको भुखमरी पड़ गयी तो उस तरफ के किसी शहरी के पास गया। उसने उसे सूअरों का चरवाहा लगा दिया।

काँगड़ी बोली

ज़िला काँगड़ा (कुल्लू, लाहौल और स्पिती को छोड़कर) होशियारपुर के उत्तर और चम्बा रियासत के दक्षिण की ओर स्थित है। इसके पूर्व में मण्डी रियासत और पश्चिम में गुरदासपुर का उत्तरपूर्वी कोना है। होशियारपुर की भाषा आदर्श पंजाबी है, चम्बा और मण्डी की बोलियाँ पश्चिमी पहाड़ी के रूप हैं, और गुरदासपुर के उस भाग की, जो काँगड़ा के पश्चिम में है, प्रमुख भाषाएँ डोगरी के नाना रूप हैं। काँगड़ा ही में, उत्तरी सीमा के एक भाग में, चम्बा के निकट गद्दी लोग, जो उस क्षेत्र में बसे हुए हैं, एक प्रकार की पहाड़ी बोलते हैं। शेष ज़िले में हमें पंजाबी का एक रूप मिलता है जो पड़ोस की डोगरी और पहाड़ी से मिश्रित है और जिसमें कश्मीरी के प्रभाव के लक्षण प्रकट हैं। काँगड़ी बोली बोलने वालों की संख्या अनुमानतः ६,३६,५०० है।

काँगड़ी बोली साधारण गुरमुखी लिपि का व्यवहार नहीं करती, बल्कि टाकरी के उस रूप में लिखी जाती है जो चम्बा में प्रचलित है। मूलतः यह विचार था कि नमूने चम्बा-टाकरी टाइप में मुद्रित किये जायें, जैसा कि डोगरी के विषय में किया गया है; किन्तु इस टाइप के पर्याप्त मात्रा में पाने की कठिनाई का अनुभव किया गया और उसकी जगह छपाई के लिए तैयार की गयी पाण्डुलिपि की शिलामुद्रीय अनुलिपियाँ दी गयी हैं। यह पाण्डुलिपि काँगड़ा के निवासी द्वारा नहीं लिखी गयी। और, क्योंकि लिपिपद्धति की व्याख्या डोगरी का वर्णन करते समय कर दी गयी है, और साथ ही यह बोली अत्यन्त महत्त्वपूर्ण बातों में डोगरी के समान है, इसलिए इस भाषारूप का वृत्तान्त मैंने डोगरी के बाद रखा है।

उच्चारण में एक ह्रस्व ए सामान्य है, जैसे सॅह, वह; टॅहल, सेवा; बब्बॅदा, पिता का। कभी-कभी, कश्मीरी की तरह, संज्ञाओं के अन्त्य -आ के स्थान पर दीर्घ ऊ लगता है; जैसे मॅहणू (लगभग शुद्ध कश्मीरी), मनुष्य; छेलू, मेमना। यह सामान्य रूप से पड़ोस की पहाड़ी बोलियों में भी मिलता है।

संज्ञा के रूपान्तर में सब पुल्लिंग संज्ञाओं का तिर्यक् एकवचन एकारान्त होता है,

चाहे उनके अन्त में व्यंजन रहा हो चाहे स्वर। जैसे, बब्बे, बब्ब, पिता, का तिर्यक् रूप। पुल्लिग तिर्यक् एकवचन बनाने का यह ढंग, और सम्प्रदान-कर्म कारक का को से निर्माण, दोनों बातें डोगरी की विशेषताएँ हैं। आकारान्त पुल्लिग संज्ञाओं के तिर्यक् बहुवचन के अन्त में -एआँ होता है। जैसे, घोड़ेआँदा, घोड़ों का, किन्तु घरांदा, घरों का।

स्वरों में अन्त होने वाली और कुछ एक व्यंजनों में अन्त होने वाली स्त्रीलिंग संज्ञाओं का तिर्यक् एकवचन -आ जोड़ने से, और व्यंजनों में अन्त होने वाली शेष स्त्रीलिंग संज्ञाओं में -ई जोड़ने से बनता है। निम्नलिखित तालिका उन नाना परिवर्तनों को स्पष्ट करती है जो संज्ञाओं में हो जाते हैं—

कर्ता	तिर्यक्	कर्ता	तिर्यक्
पुल्लिग			
घोड़ा, घोड़ा	घोड़े	घोड़े	घोड़ेआँ
घर, घर	घरे	घर	घराँ
बिच्चू, बिच्छू	बिच्चुए	बिच्चू	
स्त्रीलिंग			
बिट्टी, बेटी	बिट्टीआ	बिट्टीआँ	बिट्टीआँ
जुणास, स्त्री	जुणासा	जुणासाँ	जुणासाँ
बैहण, बहन	बैहणी	बैहणीं	बैहणीं

करण कारक इस प्रकार से बनता है—

एकवचन—	बहुवचन—
घोड़ें	घोड़ेआँ
घरें	घराँ
बिच्चूएँ	बिच्चूआँ
बिट्टीएँ	बिट्टीआँ
जुणासें	जुणासाँ
बैहणीं	बैहणीं

यह बात उल्लेखनीय है कि करण बहुवचन का रूप सदा वही होता है जो तिर्यक् बहुवचन का।

सम्प्रदान-कर्म का प्रत्यय है कि या जो।[१] अधिकरण का प्रत्यय है बिच। अन्य रूपों में संज्ञा के कारक पंजाबी का अनुसरण करते हैं।

विशेषण पंजाबी के नियमों का अनुसरण करते हैं, सिवाय इसके कि करण कारक में आने वाली संज्ञा का विशेषण भी उसी कारक में रखा जाता है। जैसे, लौहड़ें पुत्तरें, छोटे बेटे द्वारा।

१. 'जो' प्रत्यय वस्तुतः संबन्धकारकीय परसर्ग 'जा' का अधिकरण रूप है। काँगड़ी में अब इसका प्रयोग नहीं होता, किन्तु कुछ परिवर्तित रूप में यह सिन्धी में विद्यमान है। इसकी व्युत्पत्ति सं० कार्यकः>प्रा० कज्जउ से ध्वनि-नियमों के अनुसार 'क' का लोप होने से है। 'जो' का अधिकरण रूप इसके कतिपय परसर्गों के साथ प्रयोग से स्पष्ट हो जाता है। ये परसर्ग मूलतः अधिकरण कारकीय संज्ञाएं हैं। जैसे 'साम्हने' वास्तव में 'साम्हना' (सामना) का अधिकरण रूप है। इसीलिए इससे पूर्व संबंध कारक रहता है, और जैसा कि सभी भारतीय आर्य भाषाओं में है, संबंध कारक विशेषण होते हैं तथा काँगड़ी बोली में, लिंग और कारक संबंधी इनका अन्वय 'साम्हने' से होता है। अतः 'तिजो साम्हने', तेरे सामने, में 'तिजो' संबंध कारकीय अप्रयुक्त 'तिजा', तेरा, का अधिकरण रूप है। इसी प्रकार 'बिच', में, प्राचीन अधिकरण कारकीय 'विच्चे', बीच में, का संक्षिप्त रूप है, और 'तिजो बिच', तुझ में, वास्तव में 'तेरे बीच में' है। ठीक इसी प्रकार हिन्दी 'को' भी मूलतः 'का' का अधिकरण रूप है।

पहले दो पुरुषवाची सर्वनामों का रूपान्तर इस प्रकार होता

	मैं	हम		तुम
कर्ता	मैं	अस्साँ	तू	तुस्साँ
करण	मैं	अस्साँ	तैं, तुध	तुस्साँ
सम्प्र०-कर्म	मिन्जो	अस्साँजो	तिजो	तुस्साँजो
अधिकरण	मिन्जो-बिच	अस्साँ-विच	तिजो-बिच	तुस्साँ-बिच
सम्बन्ध	मेरा	म्हारा, अस्साँडा	तेरा	तुम्हारा, तम्हारा, तुस्साँडा

म्हारा और तम्हारा रूप पहाड़ी से लिये गये हैं।

नीचे अन्य सर्वनामों के मुख्य-मुख्य रूप दिये जा रहे हैं—

	वह	यह	जो	सो	कौन	क्या
एकवचन						
कर्ता	ओह	एह	जो, जेह	सेह, सैह	कुण	किआ, क्या
करण	उनीं	इनीं	जिनीं	तिनीं	कुनीं, किनीं	—
तिर्यक्	उस	इस	जिस	तिस	कुस, कुह	केस (सम्प्र०कजो)
बहुवचन						
कर्ता	ओह	एह	जो, जेह	सेह, सैह	कुण	—
तिर्यक्	उनाँ	इनाँ	जिनाँ	तिनाँ	किनाँ	—

करण एकवचन की सानुनासिकता प्रायः लुप्त हो जाती है। करण बहुवचन का रूप वही है जो तिर्यक् का। तिर्यक् बहुवचन में प्रायः -ह- डाला जाता है। जैसे **उन्हाँ**, **इन्हाँ** आदि। कोई का **कोई**, तिर्यक् **कुसी** होता है। कुछ को **किछ** कहते हैं। आप का **अप्पू**, तिर्यक् वही, सम्बन्ध **अपणा** होता है।

अदेहा, ऐसा; इसी प्रकार से **तदेहा**, **जदेहा**, **कदेहा**।

अस्तित्ववाची और सहायक क्रिया का रूपान्तर नीचे दिया जाता है—

वर्तमान काल, मैं हूँ, आदि

	एकवचन	बहुवचन
उ०	हाँ, है	हाँ, हूँ, हैं
म०	हे, है	हाँ, हा, हैं
अ०	हे, है	हाँ, है, हिन, हन

भूतकाल में एकवचन पुल्लिग था या थू; स्त्री० थी; बहुव० पुं० थे; स्त्री० थिआँ बनता है।

कर्तृवाच्य में संज्ञार्थक क्रिया और कृदन्त पंजाबी का अनुसरण करते हैं। इस प्रकार वर्तमान कृदन्त है मारदा या मारना, मारता। संभावनार्थ सहायक क्रिया के सदृश चलता है। जैसे, मारे या मारैं, तू मारे; मारां, मारूँ। उत्तम पुरुष बहुवचन पंजाबी की तरह मारीए हो सकता है। अन्य कालों में केवल भविष्यत् है जिसमें अनियमितताएँ हैं और जिसके पुल्लिग के रूपान्तर नीचे दिये जा रहे हैं। स्त्रीलिंग रूप पंजाबी के सादृश्य पर आसानी से पूरे किये जा सकते हैं।

भविष्यत्, मैं मारूँगा, आदि

	एकवचन	बहुवचन
उ०	मारगा, मारघा, मारांगा, मारांघा	मारगे, मारघे
म०	मारगा, मारघा	मारगे, मारघे
अ०	मारगा, मारघा	मारगे, मारघे

यदाकदा हमें भविष्यत् काल के छिटपुट पहाड़ी रूप मिल जाते हैं, जैसे होन, वह होगा; भोला, वह होगा।

भूत कृदन्त में कभी-कभी -इ- का लोप हो जाता है, जैसे हिन्दुस्तानी में। यथा, लगया के स्थान पर लग्गा, लगा; मिलिआ के स्थान पर मिला, मिला।

एक आकारान्त आदरसूचक आज्ञार्थ रूप होता है। जैसे, रक्खा, रखिए।

अभ्यासार्थ संयुक्त क्रिया बहुधा साधारण निश्चित वर्तमान के अर्थ में प्रयुक्त होती है। जैसे मारा करदा-हाँ, मारा करता हूँ या मारता हूँ।

आरम्भार्थ संयुक्त क्रिया संज्ञार्थक क्रिया के अविकृत रूप से बनती है, तिर्यक् रूप से नहीं। जैसे करणा लग्गा, करने लगा।

ध्यान रहे कि पंजाबी और हिन्दुस्तानी संरचना के विपरीत, बोलणा, बोलना, का व्यवहार भूतकाल में सकर्मक क्रिया की तरह होता है। जैसे लौहकें पुत्तरें बोलिआ, छोटा लड़का बोला।

पुस्तक-सूची

लयाल, सर जेम्स ब्रॉडवुड—काँगड़ा जिला, पंजाब, के भूमिकर बन्दोबस्त का प्रतिवेदन, (अंग्रेजी) १८६५-७२। लाहौर, १८७४ (परिशिष्ट ४, शब्दसूची; परिशिष्ट ५, कहावतें)।

काँगड़ा गजटीयर के पिछले संस्करण के प्रथम परिशिष्ट में स्वर्गीय ई० ओ' ब्राएन (प्रसिद्ध मुलतानी शब्दसूची के लेखक) के "काँगड़ा जिले के विशिष्ट शब्दों की सूची सहित काँगड़ा घाटी की बोली पर टिप्पण" (अंग्रेजी) हैं। इनका परिवर्तित परिवर्धित नया संस्करण पादरी टी० ग्राहम बेली द्वारा तैयार किया गया है और इन महाशय की "उत्तरी हिमालय की भाषाएँ" (अंग्रेजी), लन्दन, १९०८ में मुद्रित है।

काँगड़ी बोली के नमूने के रूप में मैं पहले अपव्ययी पुत्र की कथा का रूपान्तर; दूसरे, एक लघु लोककथा और तीसरे, कुछ स्थानीय लोकोक्तियाँ दे रहा हूँ।

(नागरी रूपान्तर)

कुसी माह्णुएदे दो पुत्तर थे। तिनाँ-बिचा लौह्के पुत्रें बब्बे कनें बोलिआ जे, 'हे बापू-जी, जे किछ घरेदे लट्टे-फट्टे बिचा मेरा हिसा होए, सेह् मिन्जो देओ।' ताँ बब्बे तिनाँ-की अप्णा लट्टा-फट्टा बण्डी दित्ता। मते दिन नहीं बीते जे छोटा पुत्तर सभ-किछ किट्ठा करी-के दूर देसे-की चला-गिआ; फिरी तित्थू लुच्पणे बिच दिन कट्दे कट्दे अप्णा लट्टा-फट्टा उडाई-दित्ता। जाँ सेह् सभ-किछ भुग्ती-चुक्का ताँ तिस मुल्खे बिच बड़ा काळ पेया, होर सेह कंकाळ होई-गिआ। होर सेह तिस मुल्खेदे माह्णुआँ विचा इक-सी आद्मिएँ बाल रेह्णा लग्गा, जिनी तिसजो अप्णे लाह्ड़े बिच सूराँ चारणाँ भेजिआ। सेह् कक्ख-कूड़ा-सिकड़ाँ कने जिनाँ-की सूर खाँदे थे अप्णा पेट भरणा चाँहदा-था। होर कोई आदमी तिस-की किछ नहीं दिन्दा-था। ताँ तिस-की याद आई, होर बोलिआ जे, 'मेरे बब्बे बाल कितणे-ही मजूराँ-की खाने-ते भी रोटी घुल्ली रेंह दी-हे, होर मैं भुक्खा मरा करना हाँ। मैं उट्ठी-करी अप्णे बब्बे बाल जाँघा होर तिस-की गल्लाँघा जे, "हे बापू-जी, मैं सुर्गे-ते उल्टा होर तिजी साम्हणे पाप कीता-हे। हुण मैं तुम्हारा पुत्तर गुलुआणे जोग नहीं हाँ। मिन्जो अप्णे मजूराँ बिचा इक-सी बराबर समझी-करी रक्खा।" ताँ सेह उट्ठी-करी अप्णे बब्बे बाल गिआ, होर सेह् दूर-ही था जे तिस्दे बब्बे तिस-की दिक्खी-करी दया कीती, होर खिट्ट देई-करी तिस्वे गलें लग्गी-करी फाओं लए। पुत्रे तिस कने बोलिआ, 'हे बापू-जी, मैं सुर्गे-ते उल्टा कनें तुम्हारे साम्हणे पाप कीता है, होर फिरी तुम्हारा पुत्तर गुलुआणे जोग नहीं हाँ।' ताँ-भी बब्बे अप्णे नौकराँ-की बोलिआ जे, 'सभ्नाँ-ते खरे कप्ड़े कड्ढी-करी इस-की लोआ; कनें इस्दे हत्थें गूठी, होर पैराँ बिच जुत्ते पोआ; होर खाईए कनें आनन्द करीए। केंह् जे एह मेरा पुत्तर मरी-गिआ-था, फिरी जींदा होइआ-हे; गुआची-गिआ-था, फिरी मिला-हे।' ताँ सेह् मौज कर्णा लग्गे।

तिस्-दा बड़ा पुत्तर लाह्ड़े बिच था। होर जाँ सेह आओंदा होई घरे नेड़े पुज्जा, ताँ तिनी बाजे कनें नाचेदी ओआज सुणी। होर तिनी अप्णे नौकराँ बिचा इक-सी आद्मीए-की सद्दी-करी अप्पू बाल पुच्छिआ जे, 'एह् किआ हे।' तिनी तिस कने बोलिआ जे, 'तुम्हारा भाऊ आइआ हे, होर तुम्हारे बब्बे बड़ी उम्दी रसो कीती हे, इस गल्ला-करी जे तिस-की भला-चङ्गा मिला हे।' अप्पर तिनी जळ्णी कीती, होर अन्दर जाणा नहीं चाहिआ। इस गल्ला-करी तिस्दा बब्ब बाहर आई-करी मनाणा लग्गा। तिनी बब्बे-की उत्तर दित्ता जे, 'मैं इत्णिआँ बर्साँ-ते तुम्हारी टेहल कर्दा हाँ, होर कद्दी

तुम्हारे हुकमे-ते बाहर नहीं होइआ। होर तुस्साँ कदी मिन्जो इक छेलू भी नहीं दित्ता जे मैं अपणे मित्राँ कने मौज कर्दा। अप्पर तुम्हारा एह पुत्तर जे कन्जरिआँदे साथें तुम्हारा लट्टा-फट्टा खाई-गिआ हे, जिहाँ सेह आइआ तिहाँ, तुस्साँ तिस-की बड़ी छैळ रसो बणाई-हे।' बब्बें तिस-की बोलिआ जे, 'हे पुत्तर, तू सदा मेरे कने हे। जे-किछ मेरा हे, सेह सभ तेरा हे। अप्पर मौज करणी कने खुसी होणी ठीक था, किहिआँ-करी जे एह तेरा भाऊ मरी-गिआ था, फिरी जीं'दा होइआ-हे; गुआची-गिआ-था, फिरी मिला-हे।'

(अनुवाद)

किसी आदमी के दो बेटे थे। उनमें छोटे पुत्र ने बाप को कहा कि, 'हे बापू जी, जो कुछ घर के सामान में मेरा हिस्सा हो, सो मुझे दो।' तब बाप ने उनको अपना सामान बाँट दिया। बहुत दिन नहीं बीते थे कि छोटा बेटा सब-कुछ इकट्ठा करके दूर देश को चला गया, फिर वहाँ बदमाशी में दिन काटते काटते अपना सामान उड़ा दिया। जब वह सब कुछ समाप्त कर चुका तो उस देश में बड़ा अकाल पड़ा, और वह कंगाल हो गया। और वह उस देश के आदमियों में एक आदमी के पास रहने लगा, जिसने उसे अपने खेत में सूअर चराने भेजा। वह तिनके-कूड़ा-छिलके (आदि) से जिन्हें सूअर खाते थे अपना पेट भरना चाहता था। और कोई आदमी उसको कुछ नहीं देता था। तब उसे स्मरण हुआ और बोला कि मेरे बाप के पास कितने ही मजदूरों के खाने से भी रोटी बची रहती है, और मैं भूखा मरा करता हूँ। मैं उठकर अपने बाप के पास जाऊँगा और उसको कहूँगा कि 'हे बापू जी, मैं स्वर्ग से उलटा (हो गया) और तुम्हारे सामने पाप किया है। अब मैं तुम्हारा पुत्र कहलाने योग्य नहीं हूँ। मुझे अपने मजदूरों में एक को समझ कर रख (लो)।' तब वह उठकर अपने बाप के पास गया, और वह दूर ही था कि उसके बाप ने उसको देखकर दया की, और दौड़कर उसके गले लगकर चुम्बन लिये। पुत्र ने उसको कहा, 'हे बापू जी, मैं स्वर्ग से उलटा (हुआ) और तुम्हारे सामने पाप किया है, और फिर तुम्हारा पुत्र कहलाने योग्य नहीं हूँ।' तो भी बाप ने अपने नौकरों को कहा कि 'सब से अच्छे कपड़े निकाल कर इसको पहनाओ; साथ ही इसके हाथ में अँगूठी, और पैरों में जूते पहनाओ; और खायें एवं आनन्द मनायें। क्योंकि यह मेरा बेटा मर गया था, फिर जिन्दा हुआ है। खो गया था, फिर मिला है।' तब वे मौज करने लगे।

उसका बड़ा बेटा खेत में था। अब जब वह आते हुए घर के निकट पहुँचा, तब उसने बाजे के साथ नाचने की आवाज सुनी। और उसने अपने नौकरों में एक आदमी को बुलाकर अपनी ओर, पूछा कि 'यह क्या है?' उसने इससे कहा कि 'तुम्हारा भाई आया है, और तुम्हारे बाप ने बड़ा अच्छा भोज किया है, इस कारण से कि उसको भला-चंगा मिला है।' किन्तु उसने क्रोध किया, और भीतर जाना नहीं चाहा। इस कारण से उसका बाप बाहर आकर मनाने लगा। उसने बाप को उत्तर दिया कि 'मैं इतने बरसों से तुम्हारी सेवा करता हूँ, और कभी तुम्हारी आज्ञा के बाहर नहीं हुआ। और तुमने कभी मुझे एक मेमना भी नहीं दिया कि मैं अपने मित्रों के साथ मौज करता। किन्तु तुम्हारा यह पुत्र जो वेश्याओं के साथ तुम्हारा सामान खा (पी) गया है, जब वह आया तब तुमने उसका बड़ा बढ़िया भोज किया है।' पिता ने उसको कहा कि 'हे बेटा, तू सदा मेरे साथ है। जो कुछ मेरा है, वह सब तेरा है। पर मौज करना और खुश होना ठीक था, क्योंकि जो यह तेरा भाई मर गया था, फिर जिंदा हुआ है; खो गया था, फिर मिला है।'

[सं० ३१]

भारतीय आर्य परिवार | केन्द्रीय वर्ग

पंजाबी

काँगड़ी बोली | (जिला काँगड़ा)

दूसरा उदाहरण

(चम्बाई टाकरी हस्तलिपि)

(नागरी रूपान्तर)

इक-सी बुड्ढीएँ पंजाह् रुपय्ये इक-सी कराड़े बाल थैणी रक्खे-थे। कने तिस-ते कह्‌दी-कह्‌दी बुड्ढी थोड़ा थोड़ा सौदा लेंदी-थी। जाँ इक दिन बुड्ढीएँ कराड़े-ते अप्णी थैणी मङ्गी, ताँ कराड़ें लेखा करी पन्ज रुपय्ये बाकी देणा कड्ढे। फिरी भी बुड्ढी तिस-ते पाओ-पाओ सौदा कह्‌दी-कह्‌दी लेंदी-रही। जाँ फिरी लेखा होइआ, ताँ पन्ज रुपय्ये बाकी भी बुड्ढीआदे मुकी-गए। इस गल्लादा गल्लाण लोकाँ एह् कीता जे,—

'पन्ज पन्जाहाँ लै-गए,
पन्जा-की लै पाओ।
दम्म कराड़ाँ बस पेई,
ताँ बुड्ढी आओ जाओ।'

(अनुवाद)

एक बुढ़िया ने पचास रुपये एक बनिया के पास जमा रखे थे। और कभी-कभी बुढ़िया थोड़ा-थोड़ा सौदा लेती थी। जब एक दिन बुढ़िया ने बनिया से अपनी जमा (पूँजी) माँगी, तो बनिया ने लेखा करके पाँच रुपये शेष देने के निकाले। फिर भी बुढ़िया उससे पाव-पाव सौदा कभी-कभी लेती रही। जब फिर लेखा हुआ, तो पाँच रुपये शेष भी बुढ़िया के चुक गये। इस बात का कथन लोगों ने यह किया कि,—

'पाँच ने पचास को ले लिया,
पाँच को पाव ले गया।
धोखे से बनिये के वश में पड़ी,
तो बुढ़िया आओ जाओ।'[1]

१. अन्तिम वाक्य मेरी समझ में नहीं आया। इस उदाहरण के लेखक ने यह अर्थ दिया है कि "लोगों ने बुढ़िया को सलाह दी कि इस बनिया से लेन-देन बंद करो।"

(नागरी रूपान्तर)

खेती खस्मे सेती।
जिस खेतीआ खस्म ना जाए,
सेह खेती खस्मे-की खाए ॥१॥
पर हत्थें बण्ज, सुनेहें खेती,
कद्दी ना होन बतिह्माँदे तेंती ॥२॥
घर जाँदे ढोले बज्नें,
घर जाँदे बौह्‌ते सज्णें,
घर जाँदे, बौह्‌तिएँ धीए,
घर जाँदे बाह्‌रीएँ बीएँ ॥३॥
ग्रास देणा। बास नहीं देणा ॥४॥

(अनुवाद)

खेती खस्मे सेती (खेती मालिक पर निर्भर है)।
जिस खेती में मालिक न जाए
सो खेती मालिक को खाए ॥१॥[1]
दूसरे के हाथ में व्यापार, सन्देश से खेती,
कभी बत्तीस के तेंतीस नहीं होंगे ॥२॥[2]
घर जाते (उन्नत नहीं होते) हैं ढोल बजाने (मौज करने) वाले।
घर जाते हैं, बहुत अतिथियों (वाले),
घर जाते हैं, बहुत लड़कियों (वाले),
घर जाते हैं, बाहर का बीज (बोने वाले) ॥३॥[3]
(अपरिचित को) कौर देना (अच्छा), वास देना नहीं (अच्छा) ॥४॥[4]

१. तुलना कीजिए, मैकोनैकी के संग्रह में सं० ६९४, ६९७।
२. तुलना कीजिए, मैकोनैकी, सं० ६९८। मैंने उन्हीं का अनुवाद ले लिया है।
३. मैकोनैकी के संग्रह में सं० ८०१, ८०२ का लगभग यही आशय है।
४. मुझे यह लोकोक्ति मैकोनकी में नहीं मिली।

भटेआली

चम्बा रियासत की प्रमुख बोली चमेआली नाम से जानी जाती है, और वह पश्चिमी पहाड़ी का एक प्रकार है। रियासत के पश्चिम में जम्मू की ओर भटेआली नाम की एक बोली है जो अनुमानतः १४,००० लोगों द्वारा बोली जाती है। यह डोगरी का एक भेद है, किन्तु काँगड़ी की तरह एक मिश्रित प्रकार की भाषा है।

पादरी टी० ग्राहम बेली इस बोली का विवरण अपनी पुस्तक 'उत्तरी हिमालय की भाषाएँ' (लन्दन, १९०८) में देते हैं। नीचे जो इसकी प्रमुख विशेषताओं का ढाँचा दिया जा रहा है वह उसी के आधार पर है, यद्यपि उसमें संलग्न नमूने, "अपव्ययी पुत्र की कथा" के रूपान्तर से संगृहीत कुछ बातें जोड़ दी गयी हैं। यह कथा स्थानीय टाकरी अक्षरों में, अनुलिपि में दी गयी है; अक्षरान्तर मूल की पंक्ति-पंक्ति के अनुसार क्रमबद्ध किया गया है और इस लिपि में लिखाई में आने वाली सामान्य अतथ्य वर्तनी को एकरूप कर दिया गया है ताकि उसका व्याकरणिक ढाँचे में दी गयी वर्तनी के साथ सामञ्जस्य हो जाय।

लिप्यन्तर करने में ह्रस्व ए को एँ करके दिखाया गया है, पूर्व के नमूनों की तरह ए करके नहीं। क्योंकि इसका कार्य नितान्त भिन्न है जो पंजाबी के ह्रस्व इ की तरह है। जैसे भटेआली **मारेँआ** बराबर है पंजाबी **मारिआ** के। बेली ने बहुत जगह ऐसे ए को दीर्घ चिह्नित किया है जिन्हें पूर्ववर्ती पृष्ठों में ह्रस्व चिह्नित किया गया है। इसका अनुसरण भटेआली के सम्बन्ध में भी किया गया है।

कारकीय रूपान्तर—ए के एँ में परिवर्तित होने वाले उपर्युक्त अपवाद को छोड़कर, जो इस प्रसंग में मात्र वर्तनी का ही प्रश्न है, पुल्लिग संज्ञाओं के तिर्यक् रूप की रचना बहुत सी वही है जो काँगड़ी में। करण कारक का रूप भी वैसा ही है।

एकवचन			बहुवचन		
कर्ता	तिर्यक्	करण	कर्ता	तिर्यक्	करण
पुल्लिग					
घोड़ा, घोड़ा	घोड़े	घोड़ें, घोड़ें	घोड़े	घोड़ेँआँ	घोड़ेँआँ
घर, घर	घरे	घरें, घरें	घर	घराँ	घराँ
हाथी, हाथी	हाथी,हाथीए	हाथीएँ, हाथीएँ	हाथी	हाथीआँ	हाथीआँ
स्त्रीलिंग					
कुड़ी, लड़की	कुड़ीआ	कुड़ीआ	कुड़ीआँ	कुड़ीआँ	कुड़ीआँ
भैण, बहन	भैणू, भैणा	भैणू, भैणा	भैणूं, भैणां	भैणूं, भैणां	भैणूं,भैण
गउ, गौ	गाई	गाई	गउआँ	गउआँ	गउआँ

यह ध्यान रहे कि कर्ता बहुवचन सदा वही है जो तिर्यक् बहुवचन। भैण का उच्चारण कभी-कभी भेण होता है।

कारकीय परसर्ग इस प्रकार हैं—

सम्प्र०-कर्म	केँआ, कि, या कने
अपादान	कछा या किछा, विच्चा या बिच्चा
सम्बन्ध	दा
अधिकरण	विच्च, या बिच्च, में

नमूने में हमें कुछ ऐसे रूप मिल जाते हैं जो उपरिलिखित रूपों से भिन्न हैं। एव कभी-कभी ऐसे रूप प्राप्त होते हैं जैसे घोड़ेँआँ के स्थान पर घोड़ाँ। यद्यपि घर जैसी संज्ञाओं का तिर्यक् एकवचन प्रायः एकारान्त होता है, तो भी कभी-कभी आकारान्त होता है, जैसे मुल्ख से मुल्खे भी बनता है मुल्खा भी। ईकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञाओं में तिर्यक् एकवचन के -आ का कभी-कभी लोप हो जाता है, जैसे सुरतीआ-विच्च की जगह सुरती-विच्च, स्मृति में।

सर्वनामों में डोगरी और काँगड़ी आदर्शों से कुछ भिन्नता है, पुरुषवाची सर्वनाम नीचे दिये जा रहे हैं—

	मैं	हम	तू	तुम
कर्ता	मैं	असाँ, असीं	तू	तुसां, तुसी
करण	मैं	असाँ	तैं, तुध	तुसां
सम्प्र०-कर्म	मिकेँआ, मिकी, मेकि	असां-केआ, -की	तुकेआ, तुकी	तुसां-केआ, -की
अपादान	मैं-कछा, मेरे कछा	असां-कछा	तैं-, तेरे-कछ	तुसां-कछा
सम्बन्ध	मेरा	साड़ा	तेरा	तुसाड़ा, तुहाड़ा, तुआड़ा
अधिकरण	मेरे-बिच्च	असां-बिच्च	असां-बिच्च	तुसां-बिच्च

सम्प्रदान में, सामान्यतः कछा की जगह **किछा** हो सकता है।

अन्य पुरुष और संकेतवाचक सर्वनाम के लिए हमें निम्नलिखित रूप मिलते हैं—

	वह		यह	
	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	से, हे, ओ	से, हे, ओ	एह	एह
करण	उन्नी	उन्हाँ	इन्नी	इन्हाँ
तिर्यक्	उस	उन्हाँ	इस	इन्हाँ

सम्बन्ध कारक में, **उद्दा** भी है **उस-दा** भी।

जो, **जे**, करण एकव० **जिनी**, तिर्यक् एकव० **जिस**।

कौन, **कुण**, करण एकव० **कुनी**, तिर्यक् एकव० **कुस**, सम्बन्ध एकव० **कुदा**।

क्या, **क्या**, **के**, सम्बन्ध एकव० **कैदा**।

अन्य सर्वनाम हैं **कोई**, कोई; **किच्छ**, कुछ।

क्रिया रूपान्तर—अस्तित्ववाची और सहायक क्रिया काँगड़ी का अनुसरण करती है। जैसे—

वर्तमान, मैं हूँ इत्यादि

	एकव०	बहुव०
उ०	**हाँ**	**हाँ**
म०	**हैं**	**हाँ**
अ०	**है**	**हन, हिन**

भूतकाल है **था**, स्त्री० **थी**, बहु० **थे**, स्त्री० **थीआँ**। नमूने में एक बार हमें **था** के स्थान पर पहाड़ी **थो** मिलता है।

कर्तृवाच्य क्रिया काँगड़ी का अनुसरण करती है। जैसे,

संभावनार्थ (मारना से)—**माराँ, मारें, मारे,** माराँ या **मारीए, माराँ, मारन**।

भविष्यत् पु० एक वचन **माहरघा,** बहुव० **माहरघे**। इस काल में पुरुष के अनुसार परिवर्तन नहीं होता। स्त्रीलिंग रूप सामान्य ढंग से बनता है।

वर्तमान कृदन्त **मारदा**।

भूत कृदन्त **मारेंआ**। नमूने में, **मिला** और **मिलेआ** दोनों हैं।

ग्राहम बेली वर्तमान काल वहीं देते हैं जो साधारण ढंग से बनता है—वर्तमान कृदन्त में सहायक क्रिया जोड़कर; जैसे **मारदा-हाँ,** मैं मारता हूँ। किन्तु, नमूने में एक दूसरा वर्तमान काल -ना वाला है जो रूप में संज्ञार्थक क्रिया से मिलता-जुलता है। जैसे, **करना**, मैं करता हूँ (सेवा)। याद रहे कि डोगरी वर्तमान कृदन्त के अन्त में -ना हो सकता है।

जब न से तुरन्त पहले र हो तो दोनों की जगह ण हो जाता है। जैसे मरना, मैं मरता हूँ, **मणा**, और करना **कणा** हो जाता है।

निम्नलिखित उदाहरण अनियमित क्रियाओं के हैं—

संज्ञार्थक क्रिया	वर्त० कृ०	भूत कृदन्त	भविष्यत्	संभावनार्थ
पौणा, पड़ना	पोन्दा	पेँआ	पोंघा, पौंघा	पौआँ
हौणा, होना	हुन्दा	होएँआ	हुङ्गा	हौआँ
औणा, आना	औन्दा	अया	औंघा	औआँ
जाणा, जाना	जान्दा	गेँआ, गा	जङ्गा	जाँ
रैंहणा, रहना	रैंहन्दा	रेहा	रैंहङ्गा	रैंहाँ
बैहणा, बैठना	बैहन्दा	बैठेआ	बैहंङ्गा	बौहाँ
खाणा, खाना	खान्दा	खाघा	—	—
पीणा, पीना	पीन्दा	पीता	—	—
देणा, देना	दिन्दा	दित्ता	दिङ्गा	—
लैणा, लेना	—	लेँआ	—	—
गलाणा, कहना	—	गलया, गलाया	—	—
करना या करणा, करना	—	किता	—	—

अया, आया, जन्दा, जाता, जंघा, जाँघ और गलया, कहा, में ह्रस्व अ का ध्यान रहे।

उदाहरणार्थ कुछ वाक्य

१. तेरा क्या नाम है?
   तेरा नां के है?

२. इस घोड़े की उम्र क्या है?
   इस घोड़ेदी कितणी उम्बर है?

३. यहाँ से कश्मीर कितनी दूर है।
   इत्थे कच्छाँ (या इत्थूँ) कश्मीर कितणे दूर है?

४. तुम्हारे पिता के घर में कितने बच्चे हैं?
   तुआड़े बब्बेदे घर कितणे जागत हन?

५. मैं आज बड़ी दूर से चलकर आया।
   मैं अज्ज बड़ें दूरा-कच्छा (किच्छा) हण्डी अया।

६. मेरे चाचा का लड़का उसकी बहन से ब्याहा है।
   मेरे चाचेदा जागत उसदी भैणू-कने बिआहा है।

७. घर में घोड़े की जीन है।
   घरे कच्छे घोड़ेदी काठी है।

८. उसकी पीठ पर जीन बाँध दो।
उसदीआ पिट्ठी-पर काठी बन्न्ही देआ।

९. मैंने उसके बेटे को बहुत पीटा।
मैं उसदा जागत मता मारेंआ।

१०. वह पहाड़ी की चोटी पर ढोर चराता है।
से धारेदे रेहा उप्पर गउआं-बकरीआँ चुगान्दा-है।

११. वह उस पेड़ के नीचे घोड़े पर बैठा है।
से उस रुक्खे-हेठ घोड़े उप्पर बैठेंआ है।

१२. उसका भाई अपनी बहनों से बड़ा है।
उद्दा भाई अपणीआ भेणू-(या भेणा) कछा बड्डा है।

१३. उसका मूल्य ढाई रुपये है।
उसदा मुल ढाई रुपय्ये है।

१४. मेरा बाप उस छोटे घर में रहता है।
मेरा बब्ब (या बापू) उस हल्के घरे रैहन्दा-है।

१५. उसको ये रुपये दे दे।
उसकेंआ एह रुपय्ये देइ-देआ।

१६. वे रुपये उससे ले ले।
से रुपय्ये उस-कछा लेइ-लेआ।

१७. उसको अच्छी तरह पीटो और रस्सी से बाँधो।
उसकेंआ जुगती करि मारो, जोड़ीआ-कन्नें बन्न्हो।

१८. कुएँ से पानी निकालो।
खूहे-कछा पाणी कड्ढो।

१९. मेरे आगे चलो।
मैं अग्गे चलो।

२०. किसका बेटा तुम्हारे पीछे आता है?
कुदा पुत्तर तुआड़े पिच्छे औन्दा है?

२१. वह तुमने किस से मोल लिया है?
से तुस कुस-कछा मुल्लें लेआ-है?

२२. गाँव के दुकानदार से।
गिराएँदे हटीआवाळे-कछा।

(नागरी रूपान्तर)

इकी-अदमीए-दे दो जातक थे। उन्हाँ-विच्चा निक्के बब्बे-कने गलाया, 'हे बापू, घर्बारीदा हेसा जे मेकी, मिल्दा-है मेकी दे।' उन्नी घर्बारी बण्डी-दित्ती। थोरेआँ-रोजाँ-उप्रन्त निक्के जातके सभ-किच्छ किट्ठा करी दूर-मुल्खा-की गेआ। उते जाई-करी जे अप्णी घर्बारी थी, से लुच्पणे-विच्च गुआई। जाँ सभ मुकी-गेआ, उस-मुल्खे-विच्च बड़ा काल पेआ, अते ओ कङ्गाल होई-गेआ। ताँ उस मुल्खे इक-सहुकारे-कछ जाई रेहा। उन्नी अप्णे-खेत्राँ-विच्च सूर चुगाणे-की भेजा, अते उस्दी मर्जी थी जे, 'जे चिज सूर खान्दे-थे, से मैं बी खाँ।' अपण उस-की कोई दिन्दा ना थो। ताँ अप्णीआ सुर्ती-विच्च आई-करी, गलाया जे, मेरे-बब्बेदे कित्णेआँ

(अनुवाद)

एक आदमी के दो बेटे थे। उनमें से छोटे ने बाप से कहा, 'हे बापू, सम्पत्ति का हिस्सा जो मुझे मिलता है मुझे दे।' उसने सम्पत्ति बाँट दी। थोड़े दिनों बाद छोटा लड़का सब-कुछ इकट्ठा करके दूर देश को गया, वहाँ जाकर, जो अपनी सम्पत्ति थी, वह बदमाशी में खो दी। जब सब चुक गया, उस देश में बड़ा अकाल पड़ा, और वह कंगाल हो गया। तब उस देश में एक अमीर के पास जा रहा। उसने (उसे) अपने खेतों में सूअर चराने को भेजा, और उसकी इच्छा थी कि 'जो चीज सूअर खाते थे, वह मैं भी खाऊँ।' पर उसको कोई देता न था। तब अपने होश में आकर बोला कि मेरे बाप के कितने (ही)

(नागरी रूपान्तर)

मजूराँ की रोटीयाँ हिन, अपण मैं भूखें मणा। मैं इते-कछा उठी-करी अप्णे बब्बे-कछ जांघा अते उस-की गलांघा, "हे बापू, मैं सुर्गेदा अते तेरा गुनाह् कित्ता, हुण मैं इस जोगा नहीं जे तेरा पुत्तर बणाँ। अप्णे-मजूराँ-विच्चा इक-मजूरा-साही मे-की बी बणा।" ताँ उठी-करी अप्णे बब्बे-कछ चलेआ। अजे ओ दूर था जे उस्दे बब्बे-की दीखी-करी दर्द आई; दोड़ी-करी उस्-की गळें-कने लाया, कने-सुने दित्ते। पुत्रे उस-की गलाया, 'हे बापू, मैं सुर्गेदा अते तेरा पाप कित्ता, फिरी इस जोगा नही जे तेरा पुत्तर वणाँ।' बब्बे अप्णेआँ-नोक्राँ-की गलाया जे, 'अच्छे अच्छे कपड़े कड्ढी लेई-औओ, अते उस-की लावौओ; अते उस्दे हत्थे गुट्ठी, अते पैराँ जुती; अते धाम लाओ, जे असी

(अनुवाद)

मजदूरों को रोटियाँ (मिलती) हैं, पर मैं भूखा मरूँ। मैं यहाँ से उठकर अपने बाप के पास जाऊँगा और उसको कहूँगा, 'हे वापू, मैं स्वर्ग (भगवान्) का और तेरा पाप किया, अब मैं इस योग्य नहीं कि तेरा पुत्र बनूँ।' तब उठ कर अपने बाप के पास चला। अभी वह दूर था कि उसके बाप को देखकर दर्द हुआ; दौड़कर उसको गले लगाया, साथ ही चूम लिया। पुत्र ने उसको कहा, 'हे बापू, मैं स्वर्ग का और तेरा पाप किया, फिर इस योग्य नहीं कि तेरा पुत्र बनूँ।' बाप ने अपने नौकरों को कहा कि 'अच्छे अच्छे कपड़े निकाल लाओ, और उसको पहनाओ; और उसके हाथ में अँगूठी, और पैरों में जूती; और भोज लगाओ, कि हम

(नागरी रूपान्तर)

खाई-करी खुसी करीए; कीहाँ जे एह मेरा पुत्तर मोयादा-था, हुण जिन्दा होएआ; गुआची-गेआ-था, हुण फिरी मिलेआ।' ताँ ओ खुसी कणा लगे।

अते उस्दा बड्डा पुत्तर खेत्रे-विच्च था। जाँ घरे-कछ अया, गाणे अते नच्च्णेदी उवाज सुणी। ताँ इकी-नोकरे-की सदी-करी पुछेआ जे, 'एह् के है?' उन्नी उस-की गलाया जे, 'तेरा भाई अया, अते तेरे-बब्बे धाम लाई, इस-वास्ते जे उस-की राजी-बाजी मिला।' उन्नी निखरी-करी न चाहेआ जे, 'अन्दर जाँ।' ताँ उस्दे बब्बे बहार आई-करी उस-की पत्याया। उन्नी बब्बे-की जुबाब दित्ता जे, 'दीख, मैं इत्णेआँ-वर्साँ कछाँ तेरी टेहल कर्ना, अते कदे तेरे-गलाया-बिना मैं कोई गल नहीं कित्ती; अपण तुसाँ इक बक्रीदा छेलू सरी-बी न दित्ता

(अनुवाद)

खाकर खुशी मनायें; क्योंकि यह मेरा बेटा मरा था, अब ज़िंदा हुआ; खो गया था, अब फिर मिला।' तब वे खुशी मनाने लगे।

और उसका बड़ा लड़का खेत में था। जब घर के पास आया, गाने और नाचने की आवाज सुनी। तब एक नौकर को बुलाकर पूछा कि 'यह क्या है?' उसने उसको कहा कि 'तेरा भाई आया (है), और तेरे बाप ने भोज किया, इसलिए कि उसको राजी-बाजी पाया।' उसने क्रुद्ध होकर न चाहा कि भीतर जाये, तब उसके बाप ने बाहर आकर उसको आश्वासन दिया। उसने बाप को उत्तर दिया कि 'देख, मैं इतने बरसों से तेरी सेवा करता हूँ, और कभी तेरे कहे बिना मैंने कोई बात नहीं की; पर तुमने एक बकरी का मेमना भी नहीं दिया

(नागरी रूपान्तर)

जे मैं अपणे-मित्राँ-कने खुसी कराँ। जाँ तेरा एह पुत्तर अया, जिनी तेरा माल लुच्पणे-विच्च गुआया, तुसां धाम लाई।' उन्नी उस-की गलाया, 'हे पुत्तर, तू सदा मेरे-कछ रेह् दा-हैं, अते जे किच्छ मेरा है, से तेरा है। अपण खुसी कणा, अते खुसी होणा खरी गल है; कीहाँ जे तेरा एह भाई मोयादा था, से जिन्दा होएआ; गुआची-गेआ था, हुण मिला।'

(अनुवाद)

कि मैं अपने मित्रों के साथ खुशी मनाता। जब तेरा यह पुत्र आया, जिसने तेरी सम्पत्ति बदमाशी में गँवा दी, तुमने भोज दिया।' उसने उसको कहा, 'हे बेटा, तू सदा मेरे पास रहता है, और जो कुछ मेरा है, सो तेरा है। किन्तु खुशी मनाना और खुश होना अच्छी बात है; क्योंकि तेरा यह भाई मर गया था, सो जिंदा हुआ; खो गया था, अब मिला।'

पंजाबी के आदर्श शब्दों और वाक्यों की सूची

	हिन्दी	माझी (अमृतसर)	पोवाधी (अम्बाला)	मालवाई (फीरोजपुर)	डोगरी	काँगड़ी
१	एक	इक्क	इक्क	इक	इक	इक्क
२	दो	दो	दो	दो	दो	दो
३	तीन	तिन्न, त्रै	तिन्न	तिन्न	त्रै	त्रै
४	चार	चार	चार	चार	चार	चोउर
५	पाँच	पञ्ज	पञ्ज	पञ्ज	पञ्ज	पञ्ज
६	छः	छै	छी	छी	छे	छी, छे
७	सात	सत्त	सत्त	सत्त	सत	सत्त
८	आठ	अट्ठ	अट्ठ	अट्ठ	अठ	अट्ठ
९	नौ	नौं	नौं	नौं	नौ	नौ
१०	दस	दस	दस	दस	दस	दस
११	बीस	वीह	बीह	वीह, बीह	बीह	बीह
१२	पचास	पञ्जाह	पञ्जाह	पञ्जाह	पञ्जाह	पञ्जाह
१३	सौ	सौ	सौ	सौ	सौ	सौ
१४	मैं	मैं	मैं	मैं	आउँ	मैं
१५	मेरा, of me	मेरा	मेरा	मेरा	मेरा	मेरा
१६	मेरा, mine	मेरा	मेरा	मेरा	मेरा	मेरा
१७	हम	असी	असी	असीं	अस	अस्सां
१८	हमारा, of us	साड्डा	साडा	असाडा, साडा	साड़ा	म्हारा
१९	हमारा, our	साड्डा	साडा	असाडा, साडा	साड़ा	म्हारा
२०	तू	तूं	तूं	तूं	तूं	तू
२१	तेरा, of thee	तेरा	तेरा	तेरा	तेरा	तेरा

२२	तेरा, thine	तेरा	तेरा	तेरा	तेरा	तेरा
२३	तुम	तुसी	तुसी	तुसीं	तुस	तुस्सां
२४	तुम्हारा, of you	तुहाड्डा	तोहाडा	थुआडा	तुसाड़ा	तम्हारा, तुम्हारा, तुस्सांडा
२५	तुम्हारा, your	तुहाड्डा	तोहाडा	थुआडा	तुसाड़ा	तम्हारा, तुम्हारा, तुस्सांडा
२६	वह	उह	ओह	ओह	ओ, ओतुह	ओह, सोह, सैह
२७	उसका, of him	उहदा	ओहदा	ओहदा	उहदा तिसदा,	उसदा, उद्दा, तिसदा, तिद्दा
२८	उसका, his	उहदा	ओहदा	ओहदा	उहदा	उसदा, उद्दा, तिसदा, तिद्दा
२९	वे	उह	ओह	ओह	ओ, ओह	ओह, सोह, सैह
३०	उनका, of them	उन्हांदा, उन्हदा	उन्हांदा	ओहनां-दा	उंदा	उनांदा, उन्हांदा, तिनांदा, तिन्हांदा
३१	उनका, their	,, ,,	,,	,,	,,	,, ,, ,, ,,
३२	हाथ	हत्थ	हत्थ	हत्थ	हथ	हत्थ
३३	पैर	पैर	पैर	पैर	पैर	पैर
३४	नाक	नक्क	नक्क	नक्क	नक	नक्क
३५	आँख	अक्ख	अक्ख	अक्ख	अख	हक्खी, हाखी, हाखर
३६	मुँह	मुँह	मूंह	मुंह	मुंह	मूंह
३७	दाँत	दन्द	दन्द	दन्द	दन्द	दन्द
३८	कान	कन्न	कन्न	कन्न	कन्न	कन्न
३९	बाल	वाल, केस	वाल, केस	बाल, वाल	बाल	बाल, सरौल (सिर के बाल)

४०	सिर	सिर	सिर	सिर	सिर	सिर, मुण्ड
४१	जीभ	जीभ	जीभ	जीभ	जीभ	जीभ
४२	पेट	ढिड्ढ, ढिड्ड, पेट	ढिड	ढिड	ढिड	पेट, ढिड
४३	पीठ	पिट्ठ	पिट्ठ	पिट्ठ, कण्ड, ढूई	पिट्ठी	पिट्ठ
४४	लोहा	लोहा	लोहा	लोहा	लोहा	लोहा
४५	सोना	सिओन्ना, सोन्ना	सोना	सोनां, सोएनां	सोना	सुन्ना
४६	चाँदी	चांदी	चान्दी	चांदी	चाँदी	चांदी, रुप्पा
४७	बाप	पिउ, पिओ, बाप्पू, बापू	पिउ	पेओ, बापू	बब, बब्बा	बब्ब
४८	माँ	मां, माई, बेब्बे	माँ	माँ	मा	अम्मां, मा
४९	भाई	भरा, वीर, माई	माई, भाईआ, भरा	भरा	भरा	भाऊ
५०	बहन	भैण	भैन	भैन	भैण	बैहन, भैन, बोबो
५१	पुरुष	मनुक्ख, मानस, आदमी	मनुक्ख, माणुस, आदमी	मनुक्ख, आदमी	आदमी	माहणू, मणुक्ख, माणस, आदमी
५२	स्त्री	तींवीं, बड्ढी	तींवीं	तींवीं, तीमीं	जनानी	जुनास, त्रीमत, जनाना
५३	पत्नी	वोहरी, रन्त	बौहटी	रन्न, वौटी	लाड़ी	लाड़ी, जुनास, त्रीमत, जनाना
५४	बच्चा	बच्चा	पुत्त (पुं०), धी (स्त्री०)	छोहर, मुण्डा	जातक	जातक, निका-चका
५५	बेटा (पुत्र)	पुत्त, पुत्तर	पुत्त, पुत्तर, मुण्डा	पुत्त, बेटा	पुतर	जातक, पुत्तर
५६	बेटी	धी, काक्की, कुड़ी	धी, कुड़ी	धी	धी	धी, कुड़ी
५७	दास	गोल्ला	गुलाम	गुलाम, गोला	गुलाम	गुलाम, काम्मां
५८	किसान	जिमींदार	जिमीनदार	किरसान	सामी	पाहू
५९	गड़रिया	आजाली	गडरिआ	अयाली	चरवाल	गुआलू

६०	परमेश्वर	रब्ब, वाह्-गुरु	रब्ब, वोह्-गुरु, राम, अल्ला, खुदा	रब्ब	परमेसर	परमेशर, ठाकर
६१	प्रेत	भूत, परेत	भूत	शतान	पिसाच	शतान
६२	सूर्य	सूरज	सूरज	सुरज	सूरज	सूरज
६३	चाँद	चन्द	चन्द	चन्द	चन्न	चन्दरमां
६४	तारा	तारा	तारा	तारा	तारा	तारा
६५	आग	अग्ग, बसन्तर	अग्ग	अग्ग	अग	अग्ग
६६	पानी	पाणी, जल	पाणी, जल	पाणीं	पानी	पाणी
६७	घर	घर, कुल्ला	घर	घर	घर	घर
६८	घोड़ा	घोड़ा, टट्टू	घोड़ा	घोड़ा	घोंड़ा	घोड़ा
६९	गाय	गाँ, गऊ	गऊ	गाँ	गाओ	गा
७०	कुत्ता	कुत्ता	कुत्ता	कुत्ता	कुत्ता	कुत्ता
७१	बिल्ली	बिल्ली	बिल्ली	बिल्ली	बिल्ली	बिल्ली
७२	मुर्गा	कुक्कड़	कुक्कड़	कुक्कड़	कुक्कड़	कुक्कड़
७३	बत्तख	बत्तक	बत्तग	बत्तख	बत्तक	बत्क
७४	गधा	खोत्ता, गधा	खोता	गधा, खोता	खोता	खोता, गधा
७५	ऊँट	उट्ठ	ऊठ	ऊठ, ओठ	ऊँट	ऊट
७६	पक्षी	पखेरू	पच्छी	पञ्छी	पखेरू	पञ्छी
७७	जा	जाह्	जा	जा	जा	जा
७८	खा	खाह्	खा	खा	खा	खा
७९	बैठ	बौह्, बैठ	बैह्	बैह्, बेठ	बौह्	बह्
८०	आ	आ	आ	आ	आ	आ
८१	मार	मार	मार, कुट्ट	मार	मार	मार
८२	खड़ा हो	खलो, उठ	उट्ठ	खड़ा हो, खड़ो	खरो	खड़ोई-जा
८३	मर	मर	मर	मर	मर	मर

	हिन्दी	माझी	पोवाधी	मालवाई	डोगरी	काँगड़ी
८४	दे	देह	दे	दे	देह	दे
८५	दौड़, भाग	भग्ग, भज्ज, दौड़	भग्ग, नस, दोड़	भज्ज	दौड़	दौड़, नट्ठ, खिट्ट दे
८६	ऊपर	उत्ते, उप्पर	उत्ते	उत्ते	उप्पर	उप्पर
८७	निकट	नेड़े, कोल	कोल, नेड़े	नेड़े	नेड़	नेड़
८८	नीचे	हेथां	हेथां	हैठ	खन्ह	बुन्ह, त्रिक्क, हेठ
८९	दूर	दूर, दुराड्डा	दूर	दूर	दूर	दूर
९०	आगे	अग्गे, सामने, अगेड़े	अग्गे	अग्गे	अग्गें	अग्गे, सम्हुणे
९१	पीछे	पिच्छे	पिच्छे	पिच्छे	पिच्छें	पछांह, पिच्छें
९२	कौन	कौण, केहड़ा	केहड़ा	केहड़ा, कौन	कौन, कुन	कुण
९३	क्या	की	की	की	कि, केह	क्या, किया
९४	क्यों	किउं	काहनूं	कियूं, किओं	की	कजो
९५	और	होर, अते, ते, अर	होर	होर, और, ते	होर	कने
९६	परन्तु	मुड़, पर	पर	पर, नाले	पर	पर
९७	यदि	जे, जद, जदों	जे	जे, जेकर	जेकर	जे
९८	हाँ	हां, आहो, हला	हां, आह	हां, आहो	हां	हां
९९	न, नहीं	नहीं, ना	नांह	नईं, ना	नां	नां, नहीं
१००	हाय	हाए-हाए, ओह-ओह	ओहो, मसोस	हाहा, अमसोस	मसोस	हाए
१०१	पिता	पिओ	पिउ	पेओ	बब्ब, बब्बा	बब्ब
१०२	पिता का	पिओदा	पिउदा	पेओदा	बब्बैदा	बाब्बेदा
१०३	पिता को	पिओनूं	पिउनूं	पेओनूं	बब्बैगी	बब्बेजो, बब्बे-की
१०४	पिता से	पिओ-थों	पिउ-थों, पिउ-कोलों	पेओ-तों	बब्बै-कछा	बब्बे-ते
१०५	दो पिता	दो पिओ	दो पिउ	दो पेओ	दो बब	दोबब्ब

१०६	पिता (बहुव०)	पिओ	पिउ	पेओ	बब, बब्बां	बब्बां
१०७	पिताओं का	पिओंदा	पिवांदा	पेवांदा	बब्बैंदा	बब्बांदा
१०८	पिताओं को	पिओंनूं	पिवांनूं	पेवांनूं	बब्बैंगी	बब्बां जो, बब्बां की
१०९	पिताओं से	पिओं-थों	पिवां-थों,-कोलों	पेवां-तों	बब्बैं-कछा	बब्बां-ते
११०	बेटी	काक्की	धी	धी	धी	धी
१११	बेटी का	काक्कीदा	धीदा	धीदा	धीदा	धीआदा
११२	बेटी को	काक्कीनूं	धीनूं	धीनूं	धीगी	धीआजो, धीआ-की
११३	बेटी से	काक्की-थों	धी-थों,-कोलों	धी-तों	धी-कछा	धीआ-ते
११४	दो बेटियाँ	दो काक्कीआं	दो धीआं	दो धीआं	दो धीआं	दो धीआं
११५	बेटियाँ	काक्कीआं •	धीआं	धीआं	धीआं	धीआं
११६	बेटियों का	काक्कीआंदा	धीआंदा	धीआंदा	धीएंदा	धीआंदा
११७	बेटियों को	काक्कीआंनूं	धीआंनूं	धीआंनूं	धीएंगी	धीआंजो, धीआ-की
११८	बेटियों से	काक्कीआं-थों	धीआं-थों,-कोलों	धीआं-तों	धीएं-कछा	धीआं-ते
११९	एक भला आदमी	इक्क भला मानस	इक्क भला मनुक्ख	इक चंगा मनुक्ख-	इक खरा आदमी	इक्क खरा माणस
१२०	एक भले आदमी का	इक्क भले मानसदा	इक्क भले मनुखदा	इक चंगे मनुक्खदा	इक खरे आदमीदा	इक्क खरे माणसेदा
१२१	एक भले आदमी को	इक्क भले मानसनूं	इक्क भले मनुक्खनूं	इक चंगे मनुक्खनूं	इक खरे आदमी कछ	इक्क खरे माणसे-जो, (-की)
१२२	एक भले आदमी से	इक्क भले मानस-थों	इक्क भले मनुक्ख-थों,-कोलों	इक चंगे मनुक्ख-तों	इक खरे आदमी-कछा	इक्क खरे माणसे-ते
१२३	दो भले आदमी	दो भले मानस	दो भले मनुक्ख	दो चंगे मनक्ख	दो खरे आदमी	दो खरे माणस
१२४	भले आदमी	भले मानस	भले मनुक्ख	चंगे मनुक्ख	खरे आदमी	खरे (अथवा खरां) माणसां
१२५	भले आदमियों का	भले मानसांदा	भले मनुक्खांदा	चंगे मनुक्खांदा	खरे आदमीआंदा	खरे (अथवा खरां) माणसांदा
१२६	भले आदमियों को	भले मानसांनूं	भले मनुक्खांनूं	चंगे मनुक्खांनूं	खरे आदमीआं-कछ	खरे (अथवा खरा)

	हिन्दी	माझी	पोवाधी	मालवाई	डोगरी	काँगड़ी
१२७	भले आदमियों से	भले मानसां-थों	भले मनुक्खां-थों, -कोलों	चंगे मनुक्खां-तों	खरे आदमीआं-कछा	माणसांजो, (-की) खरे (अथवा खरां) माणसां-ते
१२८	एक भली स्त्री	इक्क भली तींवीं	इक्क भली तीवीं	इक चंगी तीमीं	इक खरी जनानी	इक्क जुनास भली माणस
१२९	एक बुरा लड़का	इक्क कुपत्ता मुण्डा	इक्क बुरा मुण्डा	मैड़ा मुण्डा	इक कच्चा लौहड़ा	इक्क बुरा मण्ड्‌
१३०	भली स्त्रियाँ	भलीआं तींवीआं	भली तींवीआं	चंगीआं तीमीआं	खरी जनानीआं	खरीआं श्रीमतीं (अथवा माणसीं)
१३१	एक बुरी लड़की	इक्क मैड़ी कुड़ी	इक्क बुरी कुड़ी	मैड़ी कुड़ी	इक्क कच्ची कुड़ी	इक्क बुरी कुड़ी
१३२	भला, अच्छा	भला, चंगा	चंगा, अच्छा, भला	चंगा	खरा	खरा, भला, अच्छा
१३३	और अच्छा (श्रेयस्)	होरनां-थों चंगा (औरों से अच्छा)	बोहत चंगा	बाहला चंगा	मता खरा	बौहत खरा
१३४	सबसे अच्छा (श्रेष्ठतम)	समनां-थों चंगा	डाहडा चंगा	बाहला-ई-चंगा	मत-गै खरे	बौहत-ही खरा
१३५	उच्च (ऊँचा)	उच्चा	उच्चा	उच्चा	उच्चा	उच्चा
१३६	उच्चतर	होरनां-थों उच्चा	बोहत उच्चा	बाहला उच्चा	मता उच्चा	बौहत उच्चा
१३७	उच्चतम	समनां-थों उच्चा	सम-थों उच्चा	बाहला-ई-उच्चा	गते-गै उच्चे	बौहत-ही उच्चा
१३८	घोड़ा	घोड़ा	घोड़ा	घोड़ा	घोरा	घोड़ा
१३९	घोड़ी	घोड़ी	घोड़ी	घोड़ी	घोड़ी	घोड़ी
१४०	घोड़े	घोड़े	घोड़े	घोड़े	घोड़े	घोड़े
१४१	घोड़ियाँ	घोड़ीआँ	घोड़ीआँ	घोड़ीआँ	घोड़ीआँ	घोड़ीआं
१४२	साँड़	साहन	साहडा	धत्ता, साहन	साहन	साहन
१४३	गाय	गां	गऊ	गां	गाओ	गा
१४४	साँड़ (बहु०)	साहन	सांहडे	धत्ते	साहन	साहन

१४५	गायें	गाईआं	गऊआं	गाईआ	गावें	गाईं
१४६	कुत्ता	कुत्ता	कुत्ता	कुत्ता	कुत्ता	कुत्ता
१४७	कुतिया	कुत्ती	कुत्ती	कुत्ती	कुत्ती	कुत्ती
१४८	कुत्ते	कुत्ते	कुत्ते	कुत्ते	कुत्ते	कुत्ते
१४९	कुत्तियां	कुत्तीआं	कुत्तीआं	कुत्तीआं	कुत्तीआं	कुत्तीआं
१५०	बकरा	बकरा	बर्हा	बक्करा	बकरा	बकरा, बकरू
१५१	बकरी	बकरी	बर्ही	बक्करी	बकरी	बकरी
१५२	बकरियां	बकरे	बर्हे	बक्करीआं	बकरीआं	बकरू
१५३	हरिण	हरन	हरण	हर्न	हर्न	हर्न
१५४	हरिणी	हरनी	हरणी	हरनी	हरनी	हर्नी
१५५	हरिण (बहु०)	हरन	हरण	हर्न	हर्न	हर्न
१५६	मैं हूं	मैं हां	मैं हां	मैं हां	आऊं ह्यां, आं	मैं हां
१५७	तू है	तू हैं	तूं हैं	तूं हैं, है	तू हें, एं	तू हे, है
१५८	वह है	उह है, ई	ओह है	ओह है	ओह है, ऐ, ए	सेह हे, है
१५९	हम हैं	असी हां, हैं	असी हां	असीं हां	अस हैं, ऐं, एं	अस्सां हां, हैं, हूं
१६०	तुम हो	तुसी हो	तुसी ओ	तुसी हो	तुस हो, ओ	तुस्सां हां, हैं हा
१६१	वे हैं	उह हैं, हन	ओह हैंन	ओह हन	ओह हैं, ऐं, एं	सेह हां, हैं, हिन, हुन
१६२	मैं था	मैं सां	मैं सां	मैं सां, सी	आऊं-सा, था, सां	मैं था, थू
१६३	तू था	तूं सैं	तूं सैं	तूं सैं, सी	तूं सा, था	तू था, थू
१६४	वह था	उह सी	ओह सी	ओह सी	ओह सा, था	सेह था, थू
१६५	हम थे	असी सां	असी सां	असीं सां, सी	अस से, थे	अस्सां थे
१६६	तुम थे	तुसी सौ	तुसी साओ	तुसीं सो, सी	तुम से, थे	तुस्सां थे
१६७	वे थे	उह से	ओह सन	ओह सन, सी	ओह से; थे	सेह थे
१६८	हो	हो	हो	हो	हो	हो
१६९	होना	होणा	होणा	होनां	होना	होणा

	हिन्दी	माझी	पोवाधी	मालवाई	डोगरी	काँगड़ी
१७०	होता	होन्दा	होन्दा	हुन्दा	हुन्दा	होन्दा
१७१	होकर	हो-के	हो-के	होआ होआ	होई-के, होईए	होई-के
१७२	मैं होऊँ	मैं हूआं	मैं होवां	मैं होमां	आऊं होआं	मैं होआं
१७३	मैं हूँगा	मैं होआंगा	मैं होवांगा	मैं होमांगा	आऊँ होङ	मैं हुंगा, होंघा, मोला
१७४	मैं	" "	" "	" "	आऊं हुन्दा	" "
१७५	मार	मार	मार	मार	मार	मार
१७६	मारना	मारना	मारणा	मारना	मारना	मारणा
१७७	मारता	मारदा	मारदा	मारदा	मारदा, मारना	मारदा
१७८	मारकर	मार-के	मार-के	मार-के	मारीए	मारी-के
१७९	मैं मारता हू	मैं मारदा-हां, मारना-हां	मैं मारदा-हां (अथवा मारना-हां)	मैं मारदा-हां	आऊं मारना, मारदा	मैं मारदा-हा
१८०	तू मारता है	तूं मारदा-हैं, मारना-हैं	तूं मारदा-हैं, मारना-हैं	तूं मारदा-हैं	तूं मारना, मारदा	तू मारदा-हे
१८१	वह मारता है	उह मारदा-है, मारना-है	ओह मारदा-है, मारना-है	ओह मारदा-है	ओह मारना, मारदा	सेह मारदा-हे
१८२	हम मारते हैं	असी मारदे-हैं, मारने हैं	असी मारदे-हां, मारने-हां	असीं मारदे-हां	अस मारना, मारदा	अस्सां मारदे-हां
१८३	तुम मारते हो	तुसी मारदे-हो, मारने हो	तुसी मारदे-ओ; मारने-ओ	तुसीं मारदे-हो	तुस मारना, मारदा	तुस्सां मारदे-हां
१८४	वे मारते हैं	उह मारदे-हन; मारने-हन	ओह मारदे-हन; मारने-हम	ओह मारदे-हन	ओह मारना, मारदा	सेह मारदे-हां
१८५	मैंने मारा	मैंनैं मारिआ	मैं मारिआ	मैं मारिआ	में मारिआ	मैं मारिआ

१८६	तूने मारा	तैंनैं मारिआ	तैं मारिआ	तूं मारिआ	तुध तारिआ	तैं (अथवा तुध) मारिआ
१८७	उसने मारा	उहनैं मारिआ	ओहने मारिआ	उस मारिआ	उस मारिआ	तिनी मारिआ
१८८	हमने मारा	असांनैं मारिआ	असां मारिआ	असीं मारिआ	असें मारिआ	अस्सां मारिआ
१८९	तुमने मारा	तुसांनैं मारिआ	तुसां मारिआ	तुसीं मारिआ	तुसें मारिआ	तुस्सां मारिआ
१९०	उन्होंने मारा	उन्हांनैं मारिआ	ओन्हां मारिआ	ओहनां-ने मारिआ	उनें मारिआ	तिनां (अथवा तिन्हां) मारिआ
१९१	मैं मारता हूँ	मैं मारदा-हां	मैं मारदा-हां	मैं मारदा-हां	आऊं मारदा-आं	मैं मारदा-हां
१९२	मैं मारता था	मैं मारदा-सी	मैं मारदा-सी	मैं मारदा-सां	आऊं मारदा-सां	मैं मारदा-था
१९३	मैंने मारा था	मैंनैं मारिआ-सी	मैं मारिआ-सी	मैं मारिआ-सी	में मारिआ-सा	मैं मारिआ-था
१९४	मैं मारूँ	मैं मारां	मैं मारां	मैं मारां	आऊँ मारां	मैं मारां
१९५	मैं मारूँगा	मैं मारांगा	मैं मारांगा	मैं मारांगा	आऊं मारङ	मैं मारगा, मारघा, मारांगा
१९६	तू मारेगा	तूं मारेंगा	तूं मारेंगा	तूं मारेंगा	तूं मारगा	तू मारगा; मारघा
१९७	वह मारेगा	उह मारेगा	ओह मारूगा	ओह मारेगा	ओह मारग	सेह मारगा, मारघा
१९८	हम मारेंगे	असी मारांगे	असी मारांगे	असीं मारांगें	अस मारङ	अस्सां मारगे; मारघे
१९९	तुम मारोगे	तुसी मारोगे	तुसी मारोगे	तुसीं मारोगें	तुस मारगिओ	तुस्सां मारगे मारघे
२००	वे मारेंगे	उह मारेंगे	ओह मारणगे	ओह मारनगें	ओह मारगन	सेह मारगे; मारघे
२०१	मैं मारता	„ „	„ „	„ „	आऊँ मारदा	„ „
२०२	मुझे मारा है	मैंनूं मार पैंदी-है	मैंनूं मार पई	मैंनूं मारिआ-है	मिगी मार पई-ए	मिन्जो मारदा-है
२०३	मुझे मारा था	मैंनूं मार पैंदी-सी	मैंनूं मार पई-सी	मैंनूं मारिआ-सी	मिगी मार पई-सी	मिन्जो मारिआ
२०४	मुझे मारा जायगा	मैंनूं मार पऊ	मैंनूं मार पैएगी	मैंनूं मारेगा	मिगी मार पवग	मिन्जो मारघा
२०५	मैं जाता हूँ	मैं जान्दा हां, जान्ना-हां	मैं जान्दा-हां, जानां-हां	मैं जांदा (अथवा जाना) हां	आऊँ जाना (अथवा जांदा)-आं	मैं जांदा-हां
२०६	तू जाता है	तूं जान्दा-हैं, जान्ना-हैं	तूं जान्दा-हैं, जाना-हैं	तूं जांदा-हैं	तूं जाना (जांदा)-एं	तू जांदा-हे

	हिन्दी	माझी	पोवाधी	मालवाई	डोगरी	काँगड़ी
२०७	वह जाता है	उह जान्दा-है, जान्ना-है	ओह जांदा-है जाना-है	ओह जांदा है	ओह जाना (जांदा) —ए	सेह जांदा-हे
२०८	हम जाते हैं	असी जान्दे-हैं, जान्ने हैं	असी जान्दे-हां, जानें-हां	असी जांदे-हां	अस जाने (जांदे) —आं	अस्सां जांदे-हां
२०९	तुम जाते हो	तुसी जान्दे-हो जान्ने-हो	तुसी जान्दे ओ, जानें ओ	तुसीं जांदे-हो	तुस जाने (जांदे)-ओ	तुस्सां जादे-हां
२१०	वे जाते हैं	उह जान्दे-हैं, जान्ने-हैं	ओह जान्दे-हैण, जानें-हैण	ओह जांदे-हुन	ओह जाने (जांदे)-एं	सेंह जांदे-हां
२११	मैं गया	मैं गिआ	मैं गेआ	मैं गिया	आऊँ गिआ, गया	मैं गिआ
२१२	तू गया	तूं गिआ	तूं गेआ	तूं गिया	तूं गिआ, गया	तू गिआ
२१३	वह गया	उह गिआ	ओह गेआ	ओह गिया	ओह गिआ, गया	सेंह गिआ
२१४	हम गये	असी गए	असी गए	असीं गए	अस गए	अस्सां गए
२१५	तुम गये	तुसी गए	तुसी गए	तुसीं गए	तुस गए	तुस्सां गए
२१६	वे गये	उह गए	ओह गए	ओह गए	ओह गए	सेह गए
२१७	जा	जाह	जा	जा	जा	जा
२१८	जाकर (जाता)	जान्दा, जान्ना	जान्दा	जांदा	जाना, जांदा	जाई-के
२१९	गया	गिआ	गेआ	गिया	गिआ, गया	गिआ
२२०	तुम्हारा क्या नाम है	तुहाड्डा नां की है	तुहाडा की नां है	थुआडा की नां है	तुसाड़ा किह ना ऐ	तुस्सांडा किआ नां है
२२१	इस घोड़े की उम्र क्या है ?	एह घोड़ा किन्ने वरि-हांदा है ?	एस घोड़ेदी की उमर है ?	एस घोड़े की किन्नी उमर है ?	उस घोड़े दी उमर किह है ?	एह घोड़ा कितनिआं बरिहांदा है ?
२२२	यहाँ से कश्मीर कितनी दूर है ?	ऐंथों कस्मीर किन्ना है ?	ऐथों कस्मीर किन्ना है ?	कश्मीर एथों किन्नीं वाट है ?	इथों कस्मीर किन्नीं दूर ऐ ?	इत्थूं-ते कश्मीर कितनी दूर है ?
२२३	तुम्हारे बाप के घर	तुहाड्डे पिओदे घर	तुहाडे पिउदे घर	थुआडे पेओदे किन्नें	तेरे बब्बैदे घर किन्नें	तुस्सांडे बब्बेदे घर

	कितने बेटे हैं ?	किन्ने पुत्तर हन ?	किन्नें पुत्तर हन ?	पुत्र हन	पुत्तर हैन ?	कितने जातक हन ?
२२४	आज मैं बहुत चला हूँ	आज मैं बड़ा पैन्डा कीता है	अज्ज मैं बड़ा पैंडा कीता	अज्ज मैं बाहला टुरिआ-फिरिआ हां	अज मैं बड़ा फिरिआं	मैं अज्ज बड़ी दूर जाई आइआ
२२५	मेरे चाचा का लड़का उसकी बहन से विवाहित है	मेरे ताएदा पुत्त उहदी भैंण नाल बीआहा-है	मेरे चाचेदे पुत्तरदा बिआह ओसदी भैण नाल होइआ है	मेरा भरा चाचेदा पुत्त ओहदी भैंनदे नाल बिआहिया होया-है	मेरा चादेदा पुत्तर उसदी धीऊ कन्नें बिहाया-गिआ ऐ	मेरे चाचेदा पुत्तर तिद्दिआ बैहनी कने बिआहिया-है
२२६	घर में सफेद घोड़े की ज़ीन है	चिट्टे घोड़े दी काठी घरिच है	चिट्टे घोड़े दी काठी घर विच्च है	घर-विच बग्गे घोड़े दी काठी है	चिट्टे घोड़े दी काठी घर ऐ	घरे बिच चिट्टे घोड़े दी काठी-है
२२७	उसकी पीठ पर जीन डाल दे	उहदी पिट्ठ-तै काठी पा	ओहदी पिट्ठ-ते काठी पा-देओ	काठी ओहदी पिठ-ते पा-दे	काठी उसदी पट्ठी-पर रख	काठी तिद्दिआ पिट्ठी उप्पर पाई-दे
२२८	मैंने उसके बेटे को (कई) कोड़ों से पीटा	मैंनें उहदे पुत्तनूं बड़े कोटले मारे	मैं ओहदे पुत्तनूं बड़े चाबक मारे	मैं ओहदे पुत्तनूं कोर-ड़ियां-नाल कुट्टिआ	अज मैं उसदे पुत्तरैंगी मते कोरड़े मारे	मैं तिद्दे पुत्तरेजो कोरड़िआं-कने मारिआ
२२९	वह पहाड़ी की चोटी पर ढोरों को चरा रहा है	उह पहाड़ीदी चोट्टी-तै डङ्गर चरा-रिहा-ई	ओह पहाड़ीदे टिब्बे-ते डङ्गर चराओन्दा-है	ओह पहाड़ी दी चोटी उत्ते माल चराउंदा-है	ओह पहाड़ीदी चोटी पर डङ्गर चारदा-ए	सेह धारादिआ चुण्डिआ ऊपर डङ्गर चारा करदा-है
२३०	वह उस पेड़ के नीचे घोड़े पर बैठा हुआ है	उह उस रुक्खदे हेठ घोड़े ते बैठा-होइआ-है	ओह रुखदे हेंटा घोड़े-ते चड़िआ खलोता-है	ओह उस रुखदे हेठ घोड़े-ते चडिया बैठा-है	ओह उस रुक्खै-हेठ घोड़े-पर बैठा-दा-ऐ	सेह उस रुक्खे हेठ घोड़े उप्पर चढ़िआ-है
२३१	उसका भाई उसकी बहन से लम्बा है	उहदा भरा उहदी भैंण-कोलों लम्मां है	ओहदा भरा ओहदी भैण-नालों उच्चा है	ओहदा भरा ओहदी भैंन-नालों उच्चा है	उसदा भरा उसदी भैंनू कछा लम्मा ऐ	तिसदा, भाऊ तिद्दिआ बहनी-ते लम्मां है
२३२	उसका मूल्य ढाई रुपये है।	उहदा मुल्ल ढाई रपइए है।	ओहदा मुल्ल ढाई रप्पीए हैं	ओहदा मुल्ल ढाई रुपैये है	उसदा मुल ढाई रुपये ऐं	तिद्दा मुल्ल ढाई रुपय्ये है
२३३	मेरा बाप उस छोटे	मेरा पिओ उस छोटे	मेरा पिउ ओस छोटे	मेरा पेओ ओस छोटे	मेरा बब उस निक्के	मेरा बब्ब तिस छोटे

	हिन्दी	माझी	पोवाधी	मालवाई	डोगरी	काँगड़ी
	घर में रहता है	घरिच रहिन्दा-है	घर-विच रैहन्दा-है	घर-विच रैहन्दा है	घर-विच रौंहदा-ऐ	घरे-बिच रैंहदा-है
२३४	यह रुपया उसको दे	एह रपईआ उहनूं देह	एह रप्पीआ ओसनूं दे-देओ	एह रुपैया ओहनूं देह	एह रुपया उसी देह	एह रुपय्या तिस-की दै-दे
२३५	वे रुपये उससे ले ले	ओहदे कोलों ओह। रपईए लै लै	ओह रप्पीए ओस-कोलों ले लओ	ओह रुपैये ओस-तों लै-लै	ओह रुपये उसदे कछा लई लै	सेह रुपय्ये तिस-ते लै-ले
२३६	उसे अच्छी तरह पीटो और रस्सियों से बाँध दो	ओहनूं खूब फण्डो ते रसिआं नाल मुस्कां बन्हो	ओहनूं चंगी तरां मारो, रस्सिआं नाल बन्ह लओ	ओहनूं चंगी तरां मार-कुट्ट के रस्सिआंय नाल बन्न दियो	उसी खरा करीए मार ते रस्से कन्नें बन्न	तिस-की मता मारी-करी रस्सियां कने बन्ही-दे
२३७	कुएँ से पानी निकालो	खूओं पानी खिच्च	खूहचों पाणी खिच्चो	खूह बिच्चों पाणीं कड्ढो	खूंहे-विच्चा पानी काड	खूए-ते पाणी धीड़ी लै-आ
२३८	मेरे आगे आगे चल	मेरे अग्गे अग्गे चल	मेरे अग्गे चल्लो	मेरे सामने टुट-फिर	मेरे अग्गें चल	मेरे अग्गे हण्ड
२३९	किसका लड़का तुम्हारे पीछे आता है	तुहाड्डे पिच्छे किहदा मुण्डा आन्दा-ई ?	तुहाडे पिच्छे कीहदा मुण्डा आओन्दा-है ?	किहदा मुण्डा तेरे पिच्छे आउंदा-है ?	कुहदा लौहड़ा तेरे पिच्छें आविआ-दा ऐ ?	कुहदा जातक तुस्सांदे पिच्छे आओंदा-है ?
२४०	तुमने वह किस से खरीदा था ?	तुसी ओह किहदे कोलों मुल्ल लित्ता-सी ?	तुसां ओह कीहदे-कोलों मुल्ल लेआ-है ?	तुसां एह चीज किह-दे कोलों मुल्ल लई-है ?	ओह तुध कुहदै कछार खरीदिया ऐ ?	कुस-ते तुस्सां सैह मुल्ले लिआ ?
२४१	गांव के दुकानदार से	पिण्डदे इक्क हट्टी-वाले कोलों	पिण्डदे हट्टीवाले-कोलों	पिण्डदे हट्टीवाले-तों	गरांदे इक हट्टी-वाले कछा	गराएंदे हटवाणीए-ते